21 वीं सदी के उपन्यासों में नारी चिंतन

पी.के. विश्वविद्यालय, करैरा, शिवपुरी
हिन्दी साहित्य विषय में
पी.एच.डी. उपाधि
हेतु प्रस्तुत

P.K.UNIVERSITY
SHIVPURI (M.P.)

gaurav.ee

द्वारा
श्रृष्टि राजौरिया
नामांकन सं. - 161595204535

शोध निर्देशक
डॉ० विक्रांत शर्मा
"हिंदी विभाग" विभागाध्यक्ष कला संकाय
पी.के. विश्वविद्यालय, शिवपुरी (म०प्र०) पिनकोड–473665

हस्ताक्षर शोध पर्यवेक्षक

हस्ताक्षर बाह्य पर्यवेक्षक

हस्ताक्षर शोधार्थी

[Annexure- II]

CERTIFICATE OF THE SUPERVISOR

This is to certify that the work entitled "21 वीं सदी के उपन्यासों में नारी चिंतन" is a piece of research Work done by श्रृष्टि राजौरिया Under My guidance and supervision for the degree of Doctor of Philosophy of **P.K. UNIVERSITY, SHIVPURI, MADHYA PRADESH -473665** University (M.P) India.

I certify that the candidate has put an attendance of more than 240 day with me. To the best of my Knowledge and belief the thesis:

I – Embodies the work of the candidate herself.

II – Has duly been completed.

III – Fulfill the requirement of the ordinance relating to the Ph.D. degree of the University.

gaurav shree

शोध निर्देशक
डॉ० विक्रांत शर्मा
"हिंदी विभाग" विभागाध्यक्ष
कला संकाय पी.के. विश्वविद्यालय
शिवपुरी (म०प्र०)

Date: .....

[Annexure- III]

DECLARATION BY THE CANDIDATE

I declare that the thesis entitled "21 वीं सदी के उपन्यासों में नारी चिंतन" Is my own work conducted under the supervision of डॉ० विक्रांत शर्मा "हिंदी विभाग" विभागाध्यक्ष कला संकाय पी.के. विश्वविद्यालय शिवपुरी (म०प्र०) at **P.K. UNIVERSITY, SHIVPURI, MADHYA PRADESH -473665.** Approved by Research Degree Committee. I have put more than 240 days of attendance with Supervisor at the center.

I further declare that to the best of my knowledge the thesis does not contain my part of any work Has been submitted for the award of any degree either in this University or in any other University Without proper citation.

gaurav shree

श्रृष्टि राजौरिया

Date: .....

Place: .....

[Annexure- IV]

FORWARDING LETTER OF HEAD OF INSTITUTION

The Ph.D. thesis entitled "21 वीं सदी के उपन्यासों में नारी चिंतन" Submitted by श्रृष्टि राजौरिया Is forwarded to the university in six copies. The candidate has paid the necessary fees and there are no dues outstanding against him/her.

Name …… Seal……

Date: ……

Place: ……... ……...

gaurav shree

(Signature of Head of Institution where the Candidate was registered for Ph.D degree)

Signature of the Supervisor Date:

Date: …….. Address:

……

Place: ……

आभार

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः ।

गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः।

हमारे जीवन में गुरु का स्थान उस परम् परमात्मा से पहले आता है, क्योंकि परमात्मा तो जीवन देता है, लेकिन उस जीवन को सफल हमारे गुरुजन करते हैं। प्रत्येक मनुष्य का कोई-न-कोई सपना अवश्य होता है, जैसे मेरा था- हिन्दी विषय में पीएच.डी. करना, वह भी अपने गुरु डॉ. विक्रांत शर्मा के निर्देशन में। गुरु भला कभी अपने शिष्यों को मना करते हैं, कभी नहीं। जब मैंने अपने गुरु जी से बात की तो उन्होंने मेरे इस सपने को साकार करने में अपनी सर्वश्रेष्ठ भूमिका निभाई है। रूपरेखा से लेकर शोध-प्रबंध के अंत तक मेरा सहयोग गुरु जी ने दिया है। कदम-कदम पर वे मेरा सहारा बने हैं, जब भी कभी मैं चिंतित होती, तो ईश्वर की भाँति उन्होंने मुझे प्रत्येक चिंता से उभारा है। मैं शोध-प्रबंध लेखन कार्य भली-भाँति कर सकती हूँ, यह कह कर उन्होंने हमेशा मुझे मनोबल प्रदान किया है। उनके प्यार से बोले दो शब्द मेरे लिये किसी अमृत से कम नहीं होते थे। वह प्रत्येक पल कदम-कदम पर मेरा सहारा बनकर मेरे साथ खड़े रहे हैं। गुरु ही हैं जो अपने शिष्य को कभी हारने नहीं देते है और हमेशा अपने शिष्य को सफल बनाने में लगे रहते हैं। वह सिर्फ किताबों का ज्ञान ही नहीं देते, बल्कि व्यवहारिक जीवन को जीने की कला भी सिखाते हैं। मेरे गुरु डॉ. विक्रांत शर्मा जी ऐसे व्यक्तित्त्व के धनी हैं कि शब्द कम पड़ जाते हैं, उनके बारे में लिखते-लिखते। आजीवन, मैं उनकी ऋणी रहूँगी व मेरा मस्तक हमेशा उसके सम्मान में झुका रहेगा।

मैं पी. के विश्वविद्यालय के कुलाधीपति श्री जगदीश प्रसाद शर्मा जी का आभार व्यक्त करती हूँ।

मैं पी. के विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. डॉ. रंजीत सिंह जी का आभार व्यक्त करती हूँ।

मैं पी. के विश्वविद्यालय के कुलसचिव एवं प्रशासनिक अधिकारी श्री जितेंद्र कुमार मिश्रा जी का आभार व्यक्त करती हूँ।

मैं पी. के विश्वविद्यालय के शोध पीठ अध्यक्ष प्रो. डॉ. दिनेश बाबू जी का आभार व्यक्त करती हूँ।

मैं अनापेक्षित त्रुटियों के लिए हमेशा क्षमाप्रार्थी रहूँगी और अपने शोध-प्रबंध को बड़े ही विनम्र भाव से आपके अनुशीलन के लिये प्रस्तुत कर रही हूँ।

gaurav shree

शोधार्थी

श्रृष्टि राजौरिया

आमुख

पीएच.डी. उपाधि हेतु शोध प्रबंध प्रस्तुत करना किसी बड़े यज्ञ से कम नही होता और इसकी सफलता का श्रेय केवल शोधार्थी को नही अपितु उसके अन्य सहयोगी मित्रों तथा मार्गदर्शको को समान रुप से जाता है। जिन महानुभवों ने मुझे प्रस्तुत शोध प्रबंध तैयार कराने में सहयोग दिया उन सबके प्रति में नत् मस्तक होकर आभार व्यक्त करती हूं।

आभार प्रदर्शन के अपने इस क्रम में विश्वविद्यालय के प्रध्यापक एवं मेरे उपाध्यक्ष, निर्देशक डॉ. विकांत शर्मा जी की हृदय से आभारी हूँ। जिन्होंने अपनी अति शैक्षणिक व्यततताओ के उपरांत भी मुझे शोध के विषय के विचार से प्रस्तुतीकरण तक प्रतिदिन सहयोग दिया।

मैं रेडियंट इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड साइंस की चेयरर्पसन् श्रीमती रीना बोरासी सेतिया एवं सीईओ श्रीमान आशीष सेतिया जी का हृदय से आभारी हूँ। जिन्होंने मुझे शोधकर्ता में हर संभव सहयोग प्रदान किया।

मैं अपने शैक्षणिक निर्देशक श्रीमान कैलाश बगजाई जी का जिन्होंने मुझे बहुमूल्य प्रोत्याहन दिया। मैं हृदय से सर का आभार मानती हूँ।

मैं अपने महाविद्यालय श्री प्राचार्य श्रीमती डॉ. कमलजीत भाटिया जिन्होंने समय समय पर अपना सहयोग दिया।

मैं आभार मानती हूँ। डॉ. अंजू सिहारे जी का जिनके मार्गदर्शन से में आज यह प्रयास सफल कर पाई हूँ।

मैं अपने सहपाठीयों का हृदय से आभार मानती हूँ जिन्होंने मुझे इस कार्य में सहयोग प्रदान किया।

मैं ग्रंथालय देवी अहिल्या विश्वविद्यालय ग्रंथालय के अधिकारियों एंव कर्मचारियो के स्नेहपूर्ण सहयोग के लिये उनका भी आभार मानती हूँ। साथ ही मैं शोध कार्य में प्रत्यय पंथ अप्रत्यत रुप से सहयोग देने वाले मित्रो एंव महानुभावो का भी हृदय से आभारी हूँ।

मैं अपने पूज्य पिताजी श्रीमान डॉ. अजय वशिष्ठ जी का एवं माताजी श्रीमती सुधा वशिष्ठ जिन्होंने मुझे पूर्ण रुप से सहयोग प्रदान किया। एवं पापा और मां श्रीमान कृष्णकांत राजौरिया जी एवं अर्चना राजौरिया के आशीर्वाद तथा प्रेरणात्मक सहयोग के प्रति नत्-मस्तक हूँ। जिन्होंने थकान एंव निराशा मुझे सतत् प्रेरणा प्रदान की है। मैं आपकी सदैव ऋणी रहूंगी।

मेरे अनुज सुयश राजौरिया एंव माधव वशिष्ठ का स्नेह पूर्ण सहयोग अस्मरणीय है।

अंत में लेकिन सबसे महत्वपूर्ण अपने पति केशव वशिष्ठ के प्रोत्साहक सहयोग एंव हमारी एक वर्षीय पुत्री कु. आर्या वशिष्ठ के त्यागपूर्ण को स्मरण करती हूँ। जिसे केवल अनुभव किया जा सकता है। और जो अभिव्यक्त की सीमाओ से परे है।

मैं केशव वशिष्ठ जी का हृदय से आभार प्रकट करती हूँ, उन्होनें आरंभ से लेकर अंत तक मुझे पूर्ण रूप से सहयोग प्रदान किया।

P.K.University

Ref. No. PKU/2017/06/28/RO- STUD/07 Dated 28/06/17

To,

Shrasti Rajoriya,

Course Work Certificate

Dear Student,

This is to certify that **Shrasti Rajoriya,** (Reg.No. PH16ART003HN) son/daughter of Mr. /Ms. **Krishanakant**, student of Ph.D. (Hindi) has successfully passed the course work examination with 'A' grade from P.K.University, Karera, Shivpuri.

gaurav shree

Registrar

Village - Thanara, Distt. Shivpuri (M.P.)
Conatct : 7241115081, 7241115082, 7241115083, www.pkuniversity.org / www.pkuniversity.edu.in

P.K.UNIVERSITY
SHIVPURI (M.P.)

University Established Under section 2f of UGC ACT 1956 Vide MP Government Act No 17 of 2015

CERTIFICATE OF PLAGIARISM REPORT

1. Name of the Research Scholar	:	Shrasti Rajoriya
2. Course of Study	:	Doctor of Philosophy (Ph.D)
3. Title of the Thesis	:	21वी सदी के उपन्यासो में नारी चिंतन
4. Name of the Supervisor	:	Dr. Vikrant Sharma
5. Department	:	Department of Art
6. Subject	:	Hindi
7. Acceptable Maximum Limit	:	10% (As per UGC Norms)
8. Percentage of Similarity of Contents Identified	:	4%
9. Software Used	:	Ouriginal
10. Date of Verification	:	26.08.2021

Gaurav Shree

27.08.21

Signature of Ouriginal Coordinator
(Librarian, Central Library)
P.K.University, Shivpuri (M.P.)

27/08/21

Signature of Chairman
(Research Cell)
P.K.University, Shivpuri (M.P.)

ADD: VIL: THANRA, TEHSIL KARERA, NH-27, DIST: SHIVPURI, M.P.-473665,
MOB: 7241115081 to 90, Email:registrar.pkuniversity @gmail.com

विवरण		पृ. क्रं.
प्रस्तावना		1
अध्याय – प्रथम स्त्री चिन्तन की चुनौतियाँ		4
1.1	नारी चेतना का परिप्रेक्ष्य	10
1.2	स्त्री विमर्श का मुद्दा विशेष रूप	16
अध्याय – द्वितीय हिन्दी साहित्य में नारी के बदलते रूप		22
2.1	महिलाओं के प्रति सोच में बदलाव जरूरी :	35
2.2	महिलाओं के बदलते नजरियें अपने अधिकारों के लिए :	41
2.3	हिन्दी साहित्य में नारी का सम्मान :	45
2.4	भारतीय नारी में शिक्षा का महत्व :	47
2.5	हिन्दी साहित्य में नारी शक्ति पर विचार:	48
2.6	आदमी की निगाह में औरत	49
2.7.	समाज के आधार पर नारी का चरित्र चित्रण	60
2.7.1	नारी की अवधारणा :	60
2.7.2	नारी का स्वरूप :	61
2.7.3	नारी का चरित्र – चित्रण :	66
2.7.4	नारी और मनोविज्ञान	74
2.7.5	नारी शिक्षा और व्यवसाय	76
2.7.6	राजनीतिक संदर्भ और नारी	80
2.7.7	नारी सांस्कृतिक और धार्मिक संदर्भ	82
2.7.8	कानून और नारी	84
अध्याय – तृतीय हिन्दी उपन्यास में नारी		87
3.1	हिन्दी उपन्यास में स्वतंत्रता से पूर्व नारी :	92
3.2	मध्य कालीन उपन्यास लेखिकाएँ :	97
3.3	स्वतंत्रता के बाद हिन्दी उपन्यास में नारी :	98
3.4	सामाजिक उपन्यास में नारी :	101
3.5	उपन्यास में चित्रित नारी समस्याएँ :	105
3.5.1	दहेज की समस्या :	105
3.5.2	वर्ग–संघर्ष की समस्या :	107
3.5.3	वैवाहिक जीवन की समस्याएँ :	109
3.5.4	बाल विवाह की समस्या :	109
3.5.5	अनमेल विवाह की समस्या:	110

gaurav shree

3.5.6	दहेज प्रथा की समस्याः	112
3.5.7	नारी द्वारा नारी का शोषणः	113
3.5.8	अन्तर्जातीय विवाहः	113
3.5.9	वैवाहिक जीवन की समस्याएँः	114
3.5.10	वैवाहिक जीवन में नारी के चरित्र पर सन्देह की समस्याः	114
3.5.11	नारियों में पर्दा समस्या	115
3.5.12	विवाह विच्छेद की समस्या :	115
3.5.13	नारी कुरूपता की समस्या :	116
3.6	उपन्यास में नारी वादी दृष्टिकोण	117
3.6.1	नारीवादी – दृष्टिकोण से नारी अधिकार से होगा सुधार :	122
3.6.2	पूंजीवाद है महिला गुलामी की जड़ :	122
3.6.3	अक्षय प्रेरणा का स्त्रोत :	123
	अध्याय – चतुर्थ **नारी जीवन का यथार्थ**	127
4.1	यथार्थ परम्पराओं का नवीनीकरण	139
4.2	नारी जीवन के विभिन्न पहलू	151
4.3	नारी व्यक्तित्व का विकास :	156
4.4	नारी जीवन में नारी का परंपरागत रूपः	160
4.5	नारी जीवन के विभिन्न पहलू में शिक्षा का अभावः	163
4.6	नारी के जीवन में सामाजिक परिवर्तन :	165
4.7	नारी विकास के लिए विभिन्न पहलूः	166
	अध्याय – पंचम **नारी अस्तित्व की खोज और नारी मुक्ति**	169
5.1	महिला दृष्टिकोण में नारी मुक्ति	181
5.2	नारीवाद विचारधारा का नया रूपः	190
	निष्कर्ष	199
	संदर्भ ग्रंथ सूची	202
	परिशिष्ठ	

प्रस्तावना

21 वीं सदी के उपन्यासकारो ने अपने उपन्यास के माध्यम से स्त्रियों के शोषण का बखूबी चित्रण किया है विवोच्य उपन्यासों में स्त्रियों के अपने शोषण के विरुद्ध लड़ती नजर आ रही है स्त्रियों को अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है पर वे इन सभी चुनौतियों का सामना डटकर करती है।

संपूर्ण भारत भूमि एक जैसी नहीं है जहाँ के भिन्न–भिन्न क्षेत्र विभिन्न समस्याओं से ग्रसित है और विकास की धारा से आयी थी कोसों दूर है वहा की समस्याएं विशिष्ट है वहां के रिती रिवाज बिल्कुल अलग है इन्हीं विशिष्ट अंचलो को केन्द्र में रखकर अनेक उपन्यास लिखे गये जिसमें वहां की समस्याएं एवं विशिष्टता आम जनता के सामने आई है हमारी संस्कृति में मातृ देवो भवः, पितृ देवो भवः, आचार्य देवो भवः के अनुसार माता का स्थान प्राप्त और गुरु के स्थान से पहले निश्चित किया गया है इसके अलावा ''यत्र नारी पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता'' एवं एक नहीं दो–दो नर से बढ़कर नारी जैसी नारी की महता को सिद्ध करने के लिये काफी है।

नारी की महानता का वर्णन हमारे प्राचीन ग्रंथो में माँ, पत्नी, सखी, बहन आदि के रुप में आदर के साथ वर्णित है इनकी उदारता महानता व कर्तव्यनिष्ठा की गौरवगाथा प्राचीनकाल से ही गाई जा रही है।

समाज में स्त्री के स्वतंत्र अस्तित्व का हमारी सांस्कृतिक मान्यताएं रुठियां पंरपराएं और रिती रिवाज विरोध करते हैं इसलिये सदैव से ही स्त्रियों को पुरुष के बंधन से मुक्त महिलाओं में शिला की कमी के कारण वे अपने प्रयोग करने की तो दूर की बात रही। शहरों की महिलाएँ

अशिक्षित है तथा विभिन्न प्रकार के शोषणो की शिकार है ग्रामीण नारी को स्वतंत्र अस्तित्व समान न होने से उसका शोषण परिवार और समाज में निरंतर हो रहा है परिवार में पति, सास ससुर देवर देवरानी ननंद सौतन आदि के और विधवा असहाय तथा परिव्यक्ता नारियों पर परिवार तथा गांव वालो द्वारा अत्याचार किये जाते है गाँवों में स्त्रियों पर होने वाले अत्याचार में आज तक कोई कमी नहीं आयी है 21 वीं सदी के विवेच्य उपन्यास भी स्त्रियों के शोषण से मुक्त नहीं रहे है।

विभिन्न अंचलो में आज भी स्त्रियों का शोषण विभिन्न तरीकों से हो रहा है कल तक वे घर की दहलीज के पार है अपनी जमीन तलाशती थी कल तक उसके सपने आखों की पलको पर ही चिपके रहते थे। आज वे सपने साकार बन रहे है धीरे–धीरे नारी शक्ति का यह समवेत स्वर आज की गूंज के साथ सर्वत्र प्रतिध्वनित हो रहा है भारतीय समाज पुरुष प्रधान समाज रहा है जहाँ आदिकाल से स्त्री पुरुषों की इच्छानुसार जीवन यापन करती है उसे किसी ने कभी सार्थक व्यक्तित्व ही नहीं माना। लेकिन राख के भीतर दबी आग की चिंगारी के समान स्त्री की अस्थिता समय समय पर अपना रुख दिखाती आई है और आज स्त्री को स्वतंत्र नागरिक के रुप में स्वीकार किया गया है।

सत्य किसी भी एक व्यक्ति में सिमटकर नहीं रहता जब वहीं सत्य अपनी सीमाओ को लांघता एक से दूसरे और दूसरे से तीसरे में आ जुड़ता है तभी व्यापक सत्य कहलाता है फिर यही सत्य साहित्य सृजन की अस्मियता तथा मानवीय चेतना की पहचान भी कराता है।

विवेकानंद ने कहा था यदि किसी देश की प्रगति देखनी है तो वहां की महिलाओं की स्थिति देख लो वास्तव में महिलाओं की प्रगति ही देश

है पिछले कुछ दर्शनों में भारतीय महिलाओं ने कई बड़े बदलावो का सामना किया है।

प्राचीन काल में पुरुषों के साथ बराबरी की स्थिति से लेकर महायुगीन काल के निम्नस्तरीय जीवन और साथ ही कई सुधारों के द्वारा समान अधिकारों को बढ़ावा दिये भारत में महिलाओं का इतिहास काफी गतिशील रहा है आज यह दृष्टिगोचर के आधार पर व अपनी मेहनत से स्वंय को अनुभव के आधार पर व अपनी मेहनत और आत्मविश्वास के आधार पर स्वंय के लिये नारी मंजिले या रास्तो का निर्माण किया है और आर्थिक रुप से सशक्त भी हुई है ऐसा कहा जाता है कि जहाँ नारी की पूजा होती है वहां देवताओं का वास होता है। पंरतु नारी में भी पूज्यनीय योग्यता होनी चाहिए क्योंकि नारी का मूल रुप उसका चरित्र उसके संस्कार लज्जा प्रेम स्नेह ममता मातृत्तव और समर्पण आदि गुणों के साथ ही उसकी चेतना को सराया जायेगा उसे अपने मौलिक अधिकार एवं कर्तव्यों के साथ– साथ आधुनिक सभ्य सबल होना चाहिये।

अध्याय – प्रथम
स्त्री चिन्तन की चुनौतियाँ

कुमार सच्चिनान्नद विश्वविख्यात कवि रवींद्रनाथ टैगोर की गीतांजली पर साहित्य का नोबेल पुरस्कार मिला टैगोर की इन कविताओं में एक दिव्य एवं व्यापक सौन्दर्यानुभूति के दर्शन होते हैं। उन्होंने सौन्दर्य को आध्यात्मिक रूप प्रदान किया और अपने दिव्य नेत्रों से विश्वव्यापी सौन्दर्य की वह झलक देखी जो कण–कण में विद्यमान है, सत्य है, अखंड है, शाश्वत है और जिसमें भोग और त्याग का सामंजस्य है। नारी को सृष्टि की सबसे सुन्दर संरचना कहीं गयी है क्योंकि उसकी जीवन यात्रा में अबला जीवन हाय तेरी यही कहानी ''आँचल में है, ''दूध और आँखों में पानी'' से लेकर तूमुल कोलाहल में मैं ह्रदय की बात रे मन तक की यात्रा है इसकी इस तरह की विरोधाभासी जीवन यात्रा के मूल में एक और हमारी एकांगी प्रवृत्तिमार्गी चेतना है जो सौन्दर्य के इस उपादान को किसी न किसी तरह मांगना चाहता है। समाज का ध्यान आकर्षित करना होता है। उसी को आधार मानकर विशेष दिवस भी मनाया जाता है। विश्व की आधी आबादी महिलाओं की है। शारीरिक रूप से ये पुरूषों की तुलना में अबला मानी जाती है शारीरिक संरचना भी इनकी पुरूषों की तुलना में जटिल होती है। कभी धर्म की आड़ में, कभी परम्परा की आड़ में कभी, पारिवारिक सामाजिक मर्यादा की आड़ में महिलाओं को युग–युग से पुरूषों की ज्यादितियों का उसकी उपेक्षा का शिकार होना पड़ता है। समाज के इस वर्ग के ओर लोगों का ध्यान आकर्षित करने उनकी समस्याओं के प्रति संवेदशील होने के उद्देश्य से हम महिला दिवस मनाते है।[1]

यह सच है कि आज हम इक्कीसवीं शताब्दी में जी रहे है महिलाओं के प्रति समाज के पारम्परिक दृष्टिकोण में परिवर्तन अवश्य आया है लेकिन

[1] मैत्रेयी पुष्पा, कस्तुरी कुण्डल बसै– पृ. सं. 218

आज भी किसी न किसी रूप में उन्हें असमानता, हिंसा, उपेक्षा का शिकार होना ही पड़ता है। पिछले दिनों जिस समय न केवल दिल्ली बस पूरा भारत दामिनी बलात्कार काण्ड पर तप रहा था और बलात्कार की बढ़ती घटनाओं पर अंकुश लगाने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर बहस छिड़ी हुई थी लगभग उसी समय त्रिभुवन अन्तर्राष्ट्रीय विमानस्थल पर सउदी अरब से लौट रही भोजपुर की युवती को प्रहरी और अध्यागमन के कर्मचारियों ने लूटा एक ने उसका धन लूटा और दूसरे ने उसकी अस्मिता भी लूटी इन्हीं घटनाओं के क्रम में बारा में घर से ट्यूशन पढ़ने सुबह–सुबह निकली बिन्दु ठाकुर जली हुई अवस्था में पायी गयी और इस हत्या का रहस्य अभी भी बरकरार है ऐसी अनेक घटनाएँ है जिन्होंने संचार माध्यमों में जगह पायी इसलिए हम इससे रूबरू हुए लेकिन हमारे आसपास ऐसी भी घटनाएँ घटित होती है जो या तो दब जाती है, या दबा दी जाती है निश्चित ही इन घटनाओं के पीछे हमारी पारम्परिक मानसिकता कुन्ठित यौनचेतना और महिलाओं को अबला समझने का मनोविज्ञान है इन कठिनाइयों के बावजूद अच्छी बात यह है कि समय के साथ–साथ महिलाओं की अवस्था में भी परिवर्तन आया है अपने अंदुरूनी आत्मविश्वास तथा आत्म निर्भरता को दर्शाने वाला परिवेश उनकी पहली पसंद है, उनके बनने संवरने में भी आत्मविश्वास का प्रश्न झलकता है। परम्परागत मेहंदी रचाने के साथ–साथ अब उनका आकर्षण टेटू की और भी दृष्टिगत होता है।

यह बदलता हुआ परिवेश ही है कि वह रिश्तों की सीख प्राईम टाईम सीरियलों से लेने लगी है और पति के पीछे–पीछे चलने की जगह खुद हॉलीडेज पैकेज बनाने लगी है, और परेशानी से घिरने पर अपनी आँवाज उठाने लगी है इन परिवर्तनों का कुछ नकारात्मक प्रभाव भी देखने को मिलता है। समाज में रोमांस, झुठ, दिलों का जुड़ना और टूटना धडल्ले से चल रहा है। विवाहोत्तर सम्बंध और हाईटेक रिश्तों के कारण विश्वासघात भी बढ़ा है

उनके व्यक्तिगत का आकर्षण अब आत्मविश्वास भरी मुस्कुराहट में झलकता है। आज वह पुरूषों की अनुगामिनी नहीं बल्कि सहभागिनी है उसके साथ–साथ कदम मिलाकर यात्रा करती है और आवश्यकता पड़ने पर अपने अधिकारों के लिये लड़ती भी है आँकडा गवाह है कि नेपाल में आधी से अधिक जनसंख्या महिलाओं की है लेकिन इस देश का दुर्भाग्य है कि लगभग 70 प्रतिशत महिलाएँ गरीबी रेखा से नीचे अपना जीवन गुजारने के लिए विवश है। शिक्षा के अभाव में अन्य क्षेत्रों में महिलाओं की उपस्थिति न्यून है कृषि क्षेत्र में व्यापक संलग्नता के बावजूद भूमि पर इनका स्वामित्व कम है यह सत्य है कि महिलाओं के अधिकारों के लिए दर्जनों कानून है और अनेक संघ संस्थाएँ उन्हें अधिकार दिलाने के लिए कार्यरत है। लेकिन इसका लाभ कुछ गिनी, चुनी महिलाओं को ही मिला है आज महिलाओं के सामाजिक रूप में अवमूल्यन का सबसे बड़ा कारण दहेज जैसी घातक पारम्पारिक प्रथाएँ है जिसके कारण एक ओर तो महिलाओं को पारिवारिक और सामाजिक धरातल पर तनावों से गुजरना होता है। दूसरी ओर मनोवैज्ञानिक हीनता–बोध से भी गुजराना होता है। इसने कुपरिणामों के रूप में कभी–कभी हत्या, आत्महत्या और आत्मदाह तक की स्थितियों से उन्हें गुजरना होता है।

यह सच है कि इसके विरूद्ध कानून है लेकिन कानून को अमली जाना नहीं पहनाया जा सका है। दहेज हमारे समाज में प्रतिष्ठा के मानदण्ड के रूप में भी स्थापित है और इसे इस रूप में बरकरार रखने में पुरूषों के अतिरिक्त महिलाओं की भी भूमिका कम नहीं आवश्यकता है। इस क्षेत्र में कानून की दोषियों को सही जगह पहुचायाँ जाएँ और हमारे समाज ने मनोविज्ञान में परिवर्तन आए आज स्त्रियों के अस्तित्व पर सबसे बड़ी चुनौती है। भ्रूणहत्या आज जघन्य अपराध नहीं माना जा रहा शहरों से लेकर गाँव गाँव तक इसके संजाल फैले हुए है दिनोदिन इस क्षेत्र में विज्ञान और तकनीक का विकास इसे सहज और सुलभ बनाता जा रहा है लेकिन कहीं न कहीं इस प्रविधि का

दुरूपयोग भी हो रहा है और इसका उपयोग कन्या भ्रूण की हत्या के लिए विशेष रूप से किया जाता है। निश्चय ही कन्याओं के इस जन्म के अधिकार को हनन करने में महिलाओं की भूमिका अधिक सक्रिय होती है और इस क्षेत्र में महिला चिकित्सकों का भी योगदान अधिक होता है। सम्भ्रान्त पुरूष इस अपराध से स्वयं को अलग नहीं रख पाते। इस धरातल पर महिलाऐं इसलिए प्रोत्साहित होती है। क्योंकी वह पुत्रहीनता के तानों को नहीं झेलना चाहती और कहा जाता है कि पुराने जमाने में कन्याओं को जन्म लेते ही परमधाम भेज दिया जाता था और ऐसी हत्याएँ कम होती है। परन्तु किसी न किसी रूप में इस तरह की भ्रूण हत्या वर्षों पूर्व प्रचतिल जन्म लेते ही मार देने की प्रथा की ही यह आधुनिक कड़ी है आज का एक कटु यथार्थ यह भी है कि देश की बिगड़ी अर्थव्यवस्था और राजनैतिक अवस्था के कारण एक साथ इस देश को प्रतिमा पलायन के साथ–साथ क्षम पलायन की स्थिति से भी गुजरना पड़ रहा।

Gaurav Sheel

अपनी आर्थिक अवस्था के सुधार के लिए आज नेपाल की महिलाएँ पुरूषों के साथ–साथ सकिय है अपने गाँवों को छोड़ शहरों की ओर वे आती है जहाँ उनपर गिद्ध दृष्टि रखने वालों की कमी नहीं होती और एक तरह से वे अनैतिक आचार में लिप्त हो जाती है। इतना ही नहीं आज नेपाल की महिलाएँ अपने बेहतर आर्थिक भविष्य के लिए घरेलू नामदार के रूप में सही गलत तरीके से विदेशों की यात्रा करती है जहाँ उन्हें श्रम–शोषण से लेकर यौन–शोषण तक की त्रासदी से गुजरना होता है। इस क्षेत्र की अवस्था ऐसी है कि इसे कम से कम सम्मानजनक तो नहीं कहा जा सकता मगर आश्चर्य है कि सरकार तथ्यों से अवगत होकर भी इस दिशा में ठोस कदम नहीं उठा पा रही।

स्त्री स्वतंत्रता के सवाल आज तक समाधान से दूर खड़ें है मर्दवाद और बाजारवाद के नए गठजोड़ ने स्त्री मुहिम के संघर्ष को दिशाहीन बनाया

है यह समाज कैसी मानसिकता का शिकार है जो एक स्त्री को स्वतंत्र रूप से अपना जीवनयापन तक करने से रोकता है। एक तरफ तो पुराणों में स्त्री को देवी का दर्जा देते है। वहीं दूसरी तरफ परिवेश में अपने आपको परिभाषित करने का मौका ही देते है।

इक्कीसवीं शताब्दी में भी नारी अपने अस्तित्व को ही तलाश रही है घर हो या दफ्तर सभी जगहों पर जिस प्रकार महिलाओं का शोषण हो रहा है। वह चिंतनीय है कभी छल से तो कभी बल से उसे रौंदा जा रहा है जब भी स्त्रियाँ स्वतंत्र रूप से कोई फैसला लेती है तो कभी परिवार वाले मौत की नींद सुला देते है तो कभी समाज ऐसी अनगिनत घटनाएँ अखबार न्यूज चैनल की सुर्खियों में बनी रहती है। यह घटना नारी सुरक्षा पर सवालिया निशान खड़ा करता है कि क्या नारी आज के परिवेश में स्वतंत्र और सुरक्षित है।

कहने को आधी आबादी है लेकिन यह आधी आबादी पूरी की पूरी लहुलुहान नजर आती है। पल–पल कितनी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है इसका जवाब एक स्त्री ही दे सकती है जहाँ वह बेडरूम से निकल कर बोर्डरूम तक पहुंच गई है लेकिन समाज की पितृसतात्मक सोच उसे दोयम दर्जे के लिंग से ज्यादा कुछ नहीं समझती आज समाज आर्थिक स्तर पर स्वावलंबी महिलाओं के प्रति भी क्रूर हो रहा है उनकी बुद्धि प्रखरता अखरती है बिना हाथ फैलाएं बिना किसी समझौते के संघर्षरत स्त्रियों को चरित्रहीन जैसे शब्दों से नवाजा जाता है।

आँकड़ा यह बताता है कि सौ प्रतिशत शिशु भ्रूण हत्या में 99 प्रतिशत कन्या भ्रूण 2013–16 के बीच दहेज के कारण 24000 मौतें 15–49 साल की उम्र की औरतों में मारपीट और रेप का आँकड़ा 70 प्रतिशत है यूनिसेफ के मुताबिक भारत में अजनमें बच्चों के लिंग परीक्षण का व्यापार 1000 करोड़ रूपये के आँकड़े को छू गया है। 2011 की जनगणना के अनुसार पिछले

दशक में 8 मिलियन महिला भ्रूण हत्याएँ हुई है यह वास्तविकता है हमारे देश की स्त्रियों की जिसे हम आधी आबादी कहते है।

स्त्रियाँ कभी रेप का शिकार हो रही है तो कभी अपनों ने ही जुल्म सितम ढाए है शिक्षित हो या अशिक्षित सभी की दशा समाज में एक जैसी ही है अशिक्षित अपने परिवार को ही अपना केन्द्र बनाकर अपना सर्वस्व लगा देती है और बदले में उसे ताने के सिवाय कुछ नहीं मिलता शिक्षित महिलाएँ आँवाज को बंद करने के तमाम प्रयास किये जाते है, जो चिंतनीय है। भारतीय समाज की सबसे निचली सीढी पर खड़ी स्त्री ने समाज की वर्जनाओं को लांघते हुए ब्राह्मणवादी व्यवस्था के मुख्य आधार स्तम्भ पितृ सत्ता धर्म और जातीयता को हमेशा कड़ी टक्कर दी है चाहे वह चिंतन का क्षेत्र हो अथवा संघर्ष का दोनों स्तरों पर उससे अपने अस्तित्व व अस्मिता की लड़ाई को प्राचीन काल से लेकर आज तक जारी रखा है।

जैसे यदि कोई 18 साल से ऊपर की महिला सोच विचार के स्वेच्छा से देवदासी बनना चाहे तो हालांकि इसमें भी मैं देह का साधन बनाने के पक्ष में नहीं हूं क्योकि देह की अपनी गरिमा होती है। चाहे वह स्त्री की हो या पुरूष की परन्तु एक जाति की ही औरतें देवदासी या बेडनी या बार बाला बनने के लिए मजबूर हो तब हम उस मजबूरी को व्यक्तिगत स्वतंत्रता का मुद्दा नहीं बता सकते।

इस चौतरफा शोषण के खिलाफ लड़ने के साथ–साथ उसे अन्य महिला समूह व विचारधाराओं के अलावा उसको अपने समाज परिवार की मुक्ति के साथ खुद की मुक्ति और बराबरी की भी लड़ाई लड़नी है इन सब के बीच वह कैसे इन सब मुद्दो पर अपना तालमेल बैठायेगी, यह भी चिंतन का विषय है आज महिलाओं से जुड़े मुद्दे चाहे वह महिला रिजर्वेशन का मुद्दा हो या कोई अन्य स्त्री मुद्दा, इसके नाम पर उसे अन्य महिला संगठनों द्वारा उसे बार बार कहा जाता है कि जाति के नाम पर महिला आन्दोलन को दो हिस्सों

में मत बांटों या फिर एक बार महिला आरक्षण बिल पास होने दो तब बात करेंगे।

यह कहा जा सकता है कि आज की नारी–पुरूषों की आश्राति नही, वह माँ, बहन, पत्नी या प्रेमिका मात्र नही, उनका स्वतंत्र व्यतित्व भी है जिसकी बदौलत आज वह महत्वपूर्ण पदों को सुशोभित करती है लेकिन ऐसे उदाहरणों को लेकर उनकी स्थिति के सुधार की दिशा में हमें सन्तुष्ट नहीं हो जाना चाहिए उन्हें सामाजिक सम्मान दिलाने की दिशा में चुनौतियाँ आज भी है। इस दिशा में प्रथमता महिलाओं को सचेत होना ही होगा और समाज के उस मनोविज्ञान पर आघात करना होगा जिससे किसी न किसी रूप में महिला मात्र ने अपमान का बोध हो पुरूषों का दायित्व यह है कि नए सन्दर्भों में महिलाओं के सम्बंध में पारंपरिक मान्यताओं को खण्डित करने में व्यवहार और चिंतन के आधार पर अपना योगदान दे।[2]

1.1 नारी चेतना का परिप्रेक्ष्य

उपन्यास एक ऐसी विद्या है जिसमें सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक परिवेश के साथ–साथ परिवारिक संबंधो का भी चित्रण किया जाता है। परिवार में मुख्यतः नारी का चित्रण प्रमुख है नारी पात्रों का उल्लेख आधुनिक उपन्यासों में देखने को मिलता है क्योंकि प्रगतिशील आंदोलन में नारी की अस्मिता को दर्शाया गया है।[3]

समकालीन इक्कीसवीं सदी के उपन्यासों में महिला उपन्यासकारों का प्रमुख स्थान है इनमें मैत्रेयी पुष्पा, चित्रा मुद्गल और महुआ माजी आदि ने अपने उपन्यास कस्तूरी कुण्डल बसै, आँवा मैं बोरिशाइल्ला में नारी का चित्रण किया गया है इन उपन्यासों में हमें यह भी देखने को मिलता है कि समाज में नारी चेतना अन्याय के प्रति विरोध देह प्रदर्शन का विरोध नारी चेतना का

[2] जैनेन्द्र कुमार, त्याग पत्र, पूर्वोदय प्रकाशन पृ.सं. 82–83
[3] कस्तुरी कुण्डल बसै. मैत्रेयी पुष्पा–पृ. सं. 218

परिप्रदय आदि के बारे में विस्तृत रूप से दर्शाया गया है। भारतीय संस्कृति में स्त्री सदियों से शोषित–दलित रही है उस पर होने वाले इन अनगिनत अत्याचारों का चाहे वे परिवार जनों की ओर से लिए जा रहे हो या किसी अन्य की ओर से विरोध करने वाली स्त्री को अच्छी नजर से नहीं देखा जाता। निःसंदेह खुले रूप में उसकी प्रशंसा की जाती है पर अंदर ही अंदर उसकी आलोचना ही होती है। चित्रा मुद्गल इसकी अपवाद है जिन्होंने अपने उपन्यासों में अनेक जगहों पर ऐसी स्त्रियों का चित्रण किया है जो उपन्यास का विरोध करती है आँवा उपन्यास में सुनंदा एक मुसलमान लड़कें सुहैल से प्रेम करती है और उससे गर्भवती हो जाती है उसकी परेशान माँ किशोरी बाई उसका बच्चा गिराना चाहती है पर सुनंदा इन्कार कर कहती है।[4]

बच्चा नहीं गिराऐंगे अपने जांगर पालेंगे और माँ बनती है सुहैल भी उससे प्यार करता है उससे शादी करना चाहता है पर साथ ही वह यह भी चाहता है कि सुनंदा ही इस्लाम क़बूल कर अपना नाम बदले सुनंदा इसके लिए भी इंनकार करती है।[5] सुनंदा को धर्म बदलकर ब्याह करना मंजूर नहीं आखिर उन्होंने सुनंदा के सामने यह विकल्प रखा कि चाहे वह इस्लाम कबूल न करे पर बिरादरी में नाक रखने भर को नाम तो बदल ले सुनंदा इसके लिए भी इन्कार करती है और बिन ब्याह ही सुहैल की सप्तमासी बच्ची की माँ बनती है। सुनंदा ने एण्ड बेकर कंपनी में जहा वह काम करती थी वहाँ जाँच की छुट्टी के लिए आवेदन किया था पर कंपनी ने सुनंदा को नोटिस जारी किया कि अगर वह ब्याह का प्रमाण पत्र प्रस्तुत नहीं करेगी तो कंपनी में न तो उसकी जाँच की छुट्टियों कानून मंजूर होगी न छुट्टियों की तनख्वाह मिलेगी ब्याहता स्त्रियाँ ही जाँच के फायदे की कानूनन अधिकारी है इसके खिलाफ सुनंदा कामगार आधाड़ी के जरिये अपने अधिकार के लिए कंपनी

[4] आवां– चित्रा मुद्गल– पृ. सं. 105
[5] आवां– चित्रा मुद्गल– पृ. सं. 106

प्रबंधन के साथ संघर्ष करती है उसका कहना है कि सुविधा का प्रावधान गर्भवती स्त्री और बच्चे को लेकर है ना कि कुँवारी माँ के विशोषणों के लिए कुँवारी माँ क्या ब्याहता माँ के ही समान जबकि के घोर कष्टों से होकर नहीं गुजरती उसे आराम की जरूरत नहीं होती माँ बनना किसी के निजी मामले की बजाय कंपनी का मामला कैसा हो गया है फिर मैं आत्मनिर्भर हूँ अपनी बच्ची की परवरिश स्वयं कर सकने में समर्थ हूँ। मेरा मातृत्व ब्याह के टुटने प्रमाण पत्र का मोहताज नहीं इतना हीं नहीं सुनंदा कांड को कुछ संकीर्ण विचारधारा के लोग साम्प्रदायिकता से जोड़कर सामाजिक माहौल विषक्त बनाने पर तुले है।

सुनंदा उनका भी विरोध करती है और सभी नारियों को इस साम्प्रदायिकता के विरोध में अपने घर के पुरूषों पर दबाव लाने का एहसास करती है तथा इसमें वह काफी हद तक सफल भी हो जाती है परिणामस्वरूप बोखलाए असामाजिक तत्व उसकी हत्या कर देते है आंवा की नायिका नमिता पांडे में भी अन्याय के विरोध की भावना कूट–कूट कर भरी हुई है किन्तु उसकी अभिव्यक्ति वह सुनंदा के समान व्यवस्था से विद्रोह से नहीं करती वास्तव में ये एक मनौवैज्ञानिक सत्य है कि किसी घटना के प्रति देखने का और उससे प्रभावित होने का रवैया हर एक का अलग होता है। नमिता पांडे के साथ कामगार आधाड़ी के नेता अन्ना साहब अश्लील व्यवहार करते है लेकिन नमिता उसका विरोध केवल कामगार आधाड़ी की नौकरी छोड़ देने के रूप में करती है।

एक जमीन अपनी की अंकिता ऐसी ही संघर्षशील लड़की है घर वालों के विरोध के बावजूद उसने सुधांशु से विवाह किया है उसने जब देखा कि सुधांशु को पत्नी के रूप में एक स्त्री की नहीं केवल नौकरानी चाहिए जो बस उसी के लिए जीती रहे मारपीट सहती रहे और अपने में घुटती रहे तो वह

उसे त्यागकर विज्ञापन एजेन्सी में नौकरी करने लगती है।[6] नौकरी करते समय भी उसे मि. मैथ्यू जैसा बॉस मिलता है, जो अपने किसी खाते के लिए अपने स्त्री मातहत को खातेदार के सम्मुख अपनी वासना की तृप्ति के लिए परोसने से नहीं हिचकता इन्कार में अंकिता की नौकरी चली जाती है पर वह हिम्मत न हारकर दूसरी नौकरी प्राप्त करती है और मालिक के भेष में छिपे इन देह के व्यापारियों को मुहतोड़ जवाब देती है इतना ही नहीं अपने चरित्र पर लांछन लगते देख मि. भोजराज को त्यागपत्र भी देने का साहस दिखाती है।

विज्ञापन की ग्लैमर वाली दुनिया में आने के लिए जहाँ लड़कियाँ कोई भी शर्त स्वीकार कर सकती है वहाँ अंकिता जैसी संघर्षशील युवती किसी की उंगली के उठने पर त्याग पत्र देने के लिए सिद्ध हो जाती है गाँव में माँ के मरने पर भाई भौजाईयों में बंटवारें को लेकर चल रही किचड उछली को देखकर माँ द्वारा दी गयी संपत्ति से भी मुँह मोड़ लेती है चित्रा मुद्गल के उपन्यास साहित्य में अंकिता सबसे अधिक संघर्षशील लड़की के रूप में चित्रित हुई है जो अपने अनुकुल परिस्थितियाँ उत्पन्न करने की क्षमता रखती है उसके सामने आंवा की नमिता परिस्थिति की उपज लगती है।

एक जमीन अपनी उपन्यास में विज्ञापन फिल्मों के संदर्भ में नारी देह प्रदर्शन को लेकर काफी वहस चित्रित हुई वास्तव में मनुष्य के जीवन में कपड़ों का महत्व अपने शरीर को ढकने के साथ–साथ अपनी सुंदरता को बढ़ाने की दृष्टि से भी है लेकिन आज आधुनिकता के नाम पर स्त्रियाँ कम से कमतर होते जा रहे है इसका परिणाम यह होता है।[7] कि लोगों में स्त्रियों के प्रति देखने का दृष्टिकोण बदल जाता है। स्त्री के कपड़ों के अंदर झांकने के दृष्टि मनोकृति इससे पनपती है नीता की विज्ञापन फिल्म में उसके अर्द्धनग्न दृश्य देखकर अंकिता सोचती है हम किसे पहनाना चाहते हैं ये पोशाक फैशन

[6] आवां– चित्रा मुद्गल– पृ. सं. 110–111
[7] एक जमीन अपनी चित्रा मुद्गल – पृ. सं. 85

और आधुनिक की आड़ में इन्हीं का असर है कि पार्टियों में उसने युवतियों को बकायदा होड करते पाया कि आज शाम कौन से कम कपड़े पहनकर लोगों की दृष्टि में आकर्षण का केन्द्र बनेगा लोगों की दृष्टि में आकर्षण का केन्द्र था गिद्ध दृष्टियाँ के बीच मांस का टुकड़ा।

लेखिका व्यक्ति स्वतंत्रता की विरोधी नहीं है किन्तु उसका मानना है कि जब हम समाज में होते हैं। तब कुछ संकेतों का पालन करना चाहिए वह कोई कार्य निजी नहीं होता जो सार्वजनिक हित अहित को प्रभावित करता है। प्रतिक्रिया प्रकट करने का उसे पूरा अधिकार है और करना चाहिए अपने कमरे के भीतर आप नंग रहिए, कौन झांकने आते है किसे आपत्ति हो सकती है मगर घर के बाहर आप एक व्यक्ति नहीं होते समाज होते है लेकिन नीता जैसी कुछ नारियों आधुनिकता के नाम पर अपनी देह प्रदर्शन का लाभ उठाकर रातों रात सफलता की सीढियाँ चढ़ना चाहती है और इसके लिए इन्हे किसी प्रकार का अपराध बोध नहीं सकता उल्टा वे इसका विरोध करने वालों को दाकियानूसी करार देती है अपने देह प्रदर्शन पर नाराज अंकिता से नीता कहती है।[8] उन कपड़ों को पहनकर जब मैं किसी प्रकार संकोच और अश्लील भाव से ग्रस्त नहीं होती या मेरी तरह की अनेक स्त्रियाँ तुम क्यों कर ऐसा महसूस कर रही हो समझ पाने में असमर्थ हूँ दरअसल तुम उन छः महिला सामाजिक संगठनों जैसी दनियानूसी भावना और भावुकता से आक्रांत हो जो अपने स्वार्थ पुराने और नाते स्थापित करने की फिराक में बिकनी और मिडी से झाँकती टांगों से स्त्री की अस्मिता खतरे में पड़ता महसूस करती है नीता की ये सारी बातें अश्लीलता के संदर्भ में पुरूष पक्षधरता की बातें है इसमें पुरूष का ही फायदा है क्योंकि अपनी यौन दृष्टि के लिए उसे अब स्त्री को शिकार बनाने की आवश्यकता नहीं जब नीता जैसी स्त्रियाँ खुद शिकार बनने के लिए तैयार हो।

[8] एक जमीन अपनी चित्रा मुद्गल – पृ. सं. 93

कल तक वे घर की दहलीज के भीतर थी सहमी, सकुचाई, ठिठकी आज वे दहलीज के पार है अपनी जमीन तलाशती कल तक उनके सपने आँखों की पलकों पर ही चिपके रहते थे, आज वे सपने साकार बन रहे है धीरे–धीरे नारी जाति का यह समवेत स्वर आज युग परिवर्तन के इन महान श्रेणी में अपनी यथार्थता की गूंजी के साथ सर्वत्र प्रतिहवनित हो रहा है विश्व के हर कौने में ऐसी हवा चल पड़ी है महिलाओं के विकास के अनुरूप वातावरण बनता जा रहा है नारी भी अपने घर की चार दिवारी में सिमटे दोयम दर्जे से उबरकर अंतर्निहित क्षमता, सुझ बुझ एवं साहस का परिचय देती हुई और हक एवं आत्मविश्वासपूर्ण कदमों के साथ आगे बढ़ रही है पुरूष प्रधान समाज में वह अपने स्वतंत्र अस्तित्व का अहसास दिला रही है।

विवेकानंद ने कहा था यदि किसी देश की प्रगति देखनी है तो वहाँ की महिलाओं की स्थिति देख लो वास्तव में महिला की प्रगति ही देश है पिछले कुछ दशकों में भारतीय महिलाओं ने कई बड़े बदलाओं का सामना किया है प्राचीन काल में पुरूषों बराबरी की स्थिति से लेकर मध्ययुगी काल के निम्नस्तरीय जीवन और साथ ही कई सुधारों के द्वारा समान अधिकारों को बढ़ावा दिए जाने तक भारत में महिलाओं का इतिहास काफी गतिशील रहा है आज यह दृष्टिगोचर हो रहा है कि महिलाओं ने स्वयं को अनुभव के आधार पर व अपनी मेहनत और आत्मविश्वास के आधार पर स्वयं के लिए नई मंजिलें, नए रास्तों का निर्माण किया है, और आर्थिक रूप से सशक्त भी हुई है किन्तु क्या आत्मनिर्भरता सशक्तिकरण का पैमाना है।

''यत्र पूज्यंते नारी तंत्र रमन्ते देवता''

ऐसा कहा जाता है कि जहाँ नारी की पूजा होती है वहाँ देवताओं का वास होता है। परन्तु नारी में भी पूज्यनीय योग्यता होनी चाहियें क्योंकि नारी का मूल रूप उसका चरित्र उसके संस्कार लज्जा, प्रेम, स्नेह, ममता, मातृत्व और समर्पण आदि गुणों के साथ ही उसकी चेतना को सराहा जायेगा उसे

अपने मौलिक अधिकार एवं कर्तव्यों के साथ–साथ आधुनिक सभ्य सबल होना चाहिए प्रश्न है आखिर हम नारी चेतना या विमिन्स लिव का नाम देकर नारी को कहाँ पहुँचाना चाहते है नारी चेतना और नारी स्वतंत्रता ये दोनों बातें अलग है एक और जहाँ नारी चेतना भारतीय संस्कृति एवं मर्यादा संबंधी है वहीं दूसरी और विमिन्स लिव पश्चात धरातल पर नारी की स्वच्छता का हिदायती है नारी चेतना ने करवट तो ली है किन्तु अभी भी चेतना पुरूषवादी सोच के आवरण में दबी चीहकारे भर रही है आवश्यकता है। समाज में स्त्री विमर्श उसे उसके आदर्श रूप में प्रतिष्ठित कर उसे उसका वाजिब स्थान दिलाने को लेकर हो स्त्री को एक देह से अलग एक व्यक्ति के रूप में देखने की आदत का विकास हो।

चेतनामुक्त होकर उचित – अनुचित, न्याय – अन्याय, विवेकपूर्ण – अविवेकपूर्ण, स्वाधीनता दायित्व–दायित्वहीनता शीलता – अश्लीलता के महम धुंध को साफ कर प्रगति पर्याप्त बनने की। तभी हम एक सबल व सशक्त राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका अदा कर सकते है इस तरह नारी चेतना अब जागृत हो उठी है जागी ही नहीं बल्कि उठकर आगे भी बढ़ चली है उसके बढ़ते चरणों को अब कोई रोक नहीं सकता और शीघ्र ही वह अपने गौरवमयी पद पर प्रतिष्ठित होकर रहेगी नारी की जागृत चेतना ही इक्कीसवीं सदी में सतयुगी संभावनाओं का आधार बनेगी।

1.2 स्त्री विमर्श का मुद्दा विशेष रूप

भारतीय साहित्य के परंपरा की और दृष्टि डालने पर यह स्पष्ट होता है। कि साहित्यिक रचनाओं में स्त्री पुरूष दोनों का अंतर्भाव है स्त्री पुरूष के समान ही अनादि काल से लिखती आ रही है मध्यकाल में कबीर के समान ही कश्मीर की भक्त कवयित्री, लल्लेश्वरी ने समाज में प्र्याप्त भ्रष्टाचार, पाखंड और दोहरी नीतियों का विरोध किया कृष्ण भक्त मीरा ने भी राजकुल की मर्यादा से हटकर भक्तिपरक गीत लिखे इसके पश्चात आधुनिक काल में

महादेवी वर्मा ने अतीत के चलचित्र स्मृति की रेखाएँ तथा शृंखला की कडियाँ में भारतीय पुरूष प्रधान मानसिकता से पीड़ित नारी का चित्रण किया है।[9]

भारतीय समाज और साहित्य में एक समय ऐसा था कि स्त्री–पुरूष दोनों का भी महत्व था स्त्री आज और सम्मान की पात्र थी मध्ययुग तक आते–आते उसके सम्मान को धक्का लग गया धीरे–धीरे नारी को भोग और विलास की वस्तु के रूप में देखा जाने लगा पुरूष प्रधान समाज व्यवस्था ने स्वयं को अनेक बंधनों से मुक्त रखकर नारी को दोयम स्थान देकर तत्कालीन साहित्यकारों ने नारी को पुरूष की सहचारिणी, सहगामिनी के रूप में चित्रित किया साहित्य में यह स्थिति हमेशा एक जैसी नहीं रही बल्कि उसमें परिवर्तन होता रहा आधुनिक काल के साहित्यकारों ने नारी चरित्रों को केवल नायिका के रूप में ही चित्रित नहीं किया, तो नारी के उपेक्षित जीवन को न्याय वाले आधुनिक साहित्यकारों में मैथिलीशरण गुप्त वर्मा, अज्ञेय आदि महत्वपूर्ण लेखकों का समावेश होता है।

Gaurav Shree

नारी का व्यक्तित्व सृष्टि के आरंभ से ही देश काल एवं वातावरण के अनुसार कभी दबता, कभी उभरता दिखाई देता है अपनी अस्मिता एवं मूल्याधिकार के लिए उसे निरंतर संघर्ष करना पड़ा है। मानवीय भावना और मानसिक क्षमता के स्तर पर नारी–पुरूष के समकक्ष है फिर भी वह केवल बंधन में जकड़ी रही है प्रत्यक्ष अथवा अपरोक्ष रूप में नर के बिना नारी और नारी के बिना नर अपूर्ण है सभ्यता और संस्कृति का भवन नर–नारी पर आधारित है।

नारी अस्मिता को लेकर समकालीन हिन्दी साहित्य में काफी कुछ लिखा जा रहा है भौतिकवाद की प्रवृत्ति जैसे–जैसे मनुष्य जीवन पर हावी हो रही है वैसे–वैसे नई–नई समस्याएँ मनुष्य के सामने प्रश्न बनकर खड़ी हो रही है

[9] डॉ. नीलम गुप्ता, त्याग पत्र में स्त्री विमर्श पृ. सं. 232–41

इसी दौर में नारी जीवन के कई उतार–चढ़ाव समकालीन हिन्दी साहित्य में देखे जा सकते है।

महिला रचनाकारों के साथ–साथ पुरूष रचनाकारों ने भी नारी चित्रण एवं उसकी भूमिका पर अनेक कहानियों तथा उपन्यासों की रचना की है। गरीब एवं अमीर घर की तथा शोषित एवं विद्रोही नारियाँ इन कहानियों में आई है एक ओर नारी शोषण के खिलाफ लड़ती है एक ओर वह बाजारवाद से प्रभावित होकर धन की चाह में नैतिक–अनैतिक कर्मों को भूल रही है तो दूसरी ओर वह अपने शील को बचाने के लिए स्त्री लोलूप पुरूषी मानसिकता के खिलाफ लड़ रही है। स्वतंत्रतापूर्व साहित्य के मानदण्ड एवं जीवन मूल्य अलग थे परन्तु आज के कथा साहित्य में बदलाव आया है स्त्री यहाँ अधिक उभरकर आयी है। आज के साहित्यकारों ने नारी चित्रण के विभिन्न रूपों को विभिन्न कारणों से उभारा है जिन यातनाओं, पीड़ाओं और कुंठाओं के बीच आज की नारी जी रही है उसे नये साहित्यकारों ने मानसिक धरातल पर विश्लेषित करने का यथासंभव प्रयत्न किया है।[10]

समय के दर्पण में भरतीय नारी का प्रतिबिंद उत्थान–पतन और उत्थान की कहानी कहता है। आज स्त्री विमर्श सभी के लिए बहस का मुद्दा बना हुआ है आज स्त्री ने अपने स्वतंत्र अस्तित्व एवं अस्मिता की रक्षा हेतु बिगुल बजा दिया है वह अपने परवशता के प्रति जागृत हो गई उसने अपनी आंतरिक शक्ति को पहचानकर अपने उपेक्षित जीवन से मुक्ति पाने के लिए अपने दलित रूप को उतारकर फेंका है जिसके दर्शन हमें साहित्य की हर विधा में दिखाई देते है।

विमर्श का तात्पर्य है विचार, विवेचन, परामर्श या जाँच आदि स्त्री विमर्श शब्द ''स्त्री'' और ''विमर्श'' इन दो शब्दों से बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ

[10] जैनेन्द्र कुमार का त्याग पत्र, पूर्वोदय प्रकाशन पृ. 82–83

है। नारी उसके प्रश्न उसके अस्तित्व से जुड़े विभिन्न के माध्यम से स्त्री के जीवन संघर्ष एवं अस्तित्व पर मंथन करना, स्त्री विमर्श है हिन्दी साहित्य प्रेमियों ने इसे आधुनातन रूप भले ही दिया हो लेकिन हिन्दी साहित्य के लिए यह मुद्दा नया नहीं है। किसी भी रूप में क्यों न हो हिन्दी साहित्य में स्त्री तथा उससे जुड़े प्रश्नादि को लेकर विमर्श होता रहा है एक समय था जब हिन्दी ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण भारतीय साहित्य में स्त्री–विमर्श दो ध्रुवो पर टिका रहता था।[11] उसमें स्त्री की छवि या तो सीता–सावित्री जैसी थी या फिर कुलटा जैसी प्राचीन काल से लेकर आज तक के साहित्य, संस्कृति और समाज में नारी संबंधी विविध धारणाएँ प्रचलित रही है ये सारी धारणाएँ पुरूष मानसिकता और दृष्टिकोण से निर्मित है कहीं देवी मानकर यत्र नार्यस्तु पूज्यते रमन्ते तत्र देवता उसकी पूजा की गयी है, तो कहीं पाप की खान हार नरकस्य नारी, और भोग की वस्तु समझकर उसको प्रताड़ित किया गया है। वास्तव में नारी न देवी है और न दानवी है, वह केवल मानवी है।

किसी कवयित्री ने कहा है

नारी न देवी है,

न दासी है, वह भी जीवन की अभिलाषी है[12]

परन्तु नारी के मानवी रूप की हमेशा उपेक्षा की जाती है और केवल मादा के रूप में ही अधिक देखा गया है। संसार के सभी देशों में स्त्री सदैव उपेक्षा और निंदा का पात्र बनकर रह गई है मानवीय गुणों की दृष्टि से विचार किया जाए तो पुरूष की तुलना में स्त्री अधिक मानवीय है नारी की श्रेष्ठता को प्रतिपादित करते हुए महात्मा गांधी ने कहा था कि ''स्त्री को अबला कहना उसका अपमान है यदि शक्ति का अभिप्राय पाशविक शक्ति से है, तो स्त्री सचमुच पुरूष की अपेक्षा कम शक्तिशाली है इस दृष्टि से विचार करे तो

[11] त्यागपत्र में स्त्री विमर्श – डॉ. नीलम गुप्ता पृ. 232
[12] चित्रा मुदगल, एक ज़मीन अपनी – पृ.सं. 29

मानवीय सभ्यता एवं संस्कृति के विकास में उसका स्थान पुरूष से भी ऊँचा है।

स्त्री विमर्श को समझने के लिए स्त्रीवादी दृष्टिकोण की आवश्यकता है। स्त्रियों की अपनी स्वतंत्र वैचारिक क्रान्ति जीवन मूल्य प्रतिमान, मर्यादाएँ, आदर्श और नियम होते है। स्त्री मुक्ति को उसी दृष्टि से व्याख्यातित करने की आवश्यकता है।

नारी ने अपनी शक्ति को कभी जाना और कभी नहीं जाना वर्तमान युग 10 तो उसके न जानने की ही करुण कहानी है। नारीत्व की कोमलता नाम से पुकारी जाने वाली दुर्बलता के साथ सदा से बँधी हुई वेदना और तजनित आपत्ति प्रत्येक युग तथा प्रत्येक परिस्थिति में नवीन रूप में आती रही है, परंतु उसकी वर्तमान दशा करुणतम है उसके आज के और अतीत के बलिदानों में उतना ही अंतर है जितना स्वेच्छा से स्वीकृत नारीत्व की गरिमा से गौरववती के जौहरव्रत और बलात् लाठियों से घेर–घार कर बलिपशु के समान झोंकी जाने वाली नारी के अग्निप्रवेश में आज की मातृशक्ति की वेदना–भार से जर्जर परंतु अपने कष्ट के कारण या निराकरण के साधनों से एकदम अनभिज्ञ मूक पशु के करुण नेत्रों से बहती हुई अश्रुधारा के समान ही निरंतर प्रवाहित हो रही है वह स्वयं अपनी वेदना के कारण नहीं जानती और न अपने असह्य कष्ट के प्रतिकार की भावना से परिचित है जिन कष्टों से उसके जीवन का एक बार भी संस्पर्श हो जाता है उन्हें वह अपने कर्त्तव्य की परिधि में रख लेती है कष्ट सहते–सहते उसमें क्लेश की तीव्रता के अनुभव करने की चेतना भी नहीं रही, उसकी उपयुक्तता–अनुपयुक्तता पर विचार करना तो दूर की बात है।

जीवित मनुष्य के स्पन्दन, कम्पन और विकास से रहित होकर जीने की आज्ञा दी है, अतः युगों से इसी प्रकार जीवित रहने का प्रयास करते–करते यदि वह निर्जीवसी हो उठी तो आश्चर्य की क्या बात है हम जब बहुत समय

तक अपने किसी अंग से उसकी शक्ति से अधिक कार्य लेते रहते हैं तो वह शिथिल और संज्ञाहीनसा हुए बिना नहीं रहता नारी जाति भी समाज को अपनी शक्ति से अधिक देकर अपनी सहन–शक्ति से अधिक त्याग स्वीकार करके संज्ञाहीन–सी हो गयी है, नहीं तो क्या बलिष्ठ–से–बलिष्ठ व्यक्ति को दहला देने वाली, कठोर–से–कठोर व्यक्ति को रुला देने वाली यन्त्रणाएँ वह इतने मूक भाव से सहती रह सकती।

परन्तु आज भी स्त्रियाँ पुरूषी मानसिकता में दबी हुई अपने विचार तथा लेखन को अभिव्यक्त करती हुई दिखाई देती है। सुप्रसिद्ध लेखिका कमल कुमार का कहना है कि सामाजिक सन्दर्भ की तरह साहित्यिक संदर्भ में भी पुरूषों द्वारा निर्मित प्रतिमान मर्यादाएँ आदर्श और नियम स्त्री मुक्ति को अपनी दृष्टि से व्याख्याइत करते रहे है इस तरह जैसे जीवन और समाज में पुरूष कर्ता है सबकुछ कहने और करने में स्वतंत्र है, वैसे ही साहित्य में भी कुछ भी लिखने और स्थापित करने के लिए वह मुक्त और सक्षम है लेकिन स्त्री के लिए बात उल्टी है समय के साथ स्त्री चिंतन का स्वरूप बदला स्त्री विमर्श भी अपने इकहरे, स्पूल या तत्कालीन संदर्भ विशेष रूप को त्याग कर बहुआयामी बनता गया।

****

अध्याय – द्वितीय
हिन्दी साहित्य में नारी के बदलते रूप

नारी घी का कुआँ है और पुरूष जलता हुआ अंगार दोनों के संयोग से ज्वाला प्रज्वलित हो उठती है, यानी नारी और पुरूष एक दूसरे के पुरक है नारी के बिना पुरूष का कोई अस्तित्व नहीं है। पुरूष के अभाव में नारी का कोई मूल्य नहीं दोनों का सम्बंध अभिन्न अखण्ड और अनांदि है आदिकाल से लेकर आज तक का भारतीय इतिहास इस बात का साक्षी है कि नारी किस प्रकार जीवन के क्षेत्र में पुरूष की अभिन्न सहयोगिनी के रूप में अपने नारीत्व को दीपित करती आयी है नारी के सहयोग के अभाव में पुरूष ने सदा एकांकीपन अनुभव किया है और जहाँ भी सहयोगिनी से अभिनव सृष्टि की है। नारी की इसी प्रतिभा से पराजित हो प्रसाद जी की श्रद्धा फूट पड़ी।

नारी तुम केवल श्रद्धा हो,
विश्वास रजत नग पग तल में,
पीयूष स्त्रोत सी बहाकरों,
जीवन के सुन्दर समतल में।[13]

सारा का सारा भारतीय साहित्य नारी के विविध चित्रों रूपी में ओतप्रोत है वास्तव में सत्य यह है कि जिस युग के समाज में नारी का जो स्थान था, उस युग के साहित्य में नारी उसी रूप में चित्रित की गयी है साहित्य समाज का दर्पण होता है। समाज की सारी मान्यताएँ मर्यादा में उसके युग के साहित्य में स्वतः उभर उठती है यही कारण है कि आदिकाल से लेकर आज तक साहित्य में चित्रित नारी के विविध रूप, अपने युग की नारी विषयक मान्यताओं के ही प्रतिरूप है।

[13] डॉ. राजकुमार, नारी के बदले आयाम, अर्जून पब्लिशिंग हाउस 2005

भारतीय इतिहास का प्रारंभ वैदिक युग से होता है। वैदिक युग भारतीय संस्कृति का उज्ज्वलतम युग था, उस युग में नारी का समाज में आदर था वह पुरूषों के साथ ही जीवन के क्षेत्र में कन्धों से कन्धा मिलाकर कार्य करती थी उसे पुरूष के समान अधिकार प्राप्त थे गार्गी मैत्रेयी, विश्वावारा उस युग की ऐसी नारियाँ है, जिन्होंने अपनी प्रतिभा के बल पर ऋषियों का पद प्राप्त किया था तलवारों की झनझनाहटों के बीच हिन्दी साहित्य से न जाने कितने हिन्दु राजवंशों का नाश हुआ लेकिन स्त्रियों की पति भाती इस काल की विशेषता है। पति का मानापमान स्त्री का अपना मानापमान था पति के लिए अपने प्राणों पर खेल जाना उसके लिये साधारण सी बात थी जिसमें उस युग का नारी गौरव, उसका तेज जैसे छल उठता है।

भल्ला हुआ जु मरिया बहिरीया म्हारा कंतु।

लज्जेत तु वयसिअहु जड़ भग्गा घर ऐतु।[14]

अर्थात् नारी कहती भला हुआ जो मेरा कंश (पति) मारा गया यदि वह भागा हुआ घर आता तो में अपनी समवयस्काओं से लज्जित होती परन्तु ऐसे चित्र कम है उन्हीं चित्रों का बाहुल्य है जहाँ नारी ने अपने रूप की आग में राजाओं को झुलसा दिया है।

पृथ्वीराज चौहान ने राजकवि चन्द्र द्वारा रचित पृथ्वीराज रासो में ऐसा ही चित्र निम्नलिखित पंक्तियों में उभर उठा है जिसे समय गौरी पूजन के लिए गयी हुई पद्मावती पृथ्वीराज को देख उसे अपने हाव–भावों द्वारा मुग्ध कर देती है ओर जिसके परिणामस्वरूप उसका अपहरण होता है।

संगह सषिय लिय सहस बाल

रूकमिनिय जेम लल्जत भारत

[14] गुप्ता कमलेश– महिला सशक्तिकरण जयपुर कुमार

पूजिअड गौरी शंकर अनाच

दृच्छिनड अंगकारि लगिअ पाय

फिर देषि–देष पृथ्वीराज राज

हसं मुद्ध–मुद्द चर पहलाज[15]

यह भी वीर गाथा काल की नारी रूप की साक्षात् प्रतिमा समस्त दस्साहसों का मूल स्त्रोत। वीर गाथा काल में नारी का यही रूप उभर सका, शेष सब उसके सौन्दर्य की आग में झुलस गये, कवियों को उनमें कोई आकर्षण न दिखाई दिया

मध्यकाल का प्रारम्भ निर्गुण संतो की वैराग्यपूर्ण उक्तियों द्वारा हुआ इस काल में आचार की शुद्धता पर विशेष जोड़ दिया गया इसलिये संतो ने साधना के पंथ में नारी को बाधा स्वरूप माना उसे माया ठगिनी आदि विशोषणों से विभूषित किया नारी जीवन के उज्ज्वल पक्ष इन संतो की दृष्टि से अपरिचित रहेकबीर की निम्नांकित पंक्तियां संतो की नारी संबंधी विचारधारा का प्रतिनिधित्व करती है।

निरगुन फंसि कर डोले, बोल मधुरी बानी।

नारी तो हम भी करो, नाना नहीं विचार

जब जाना तब परिहरि नारी, बड़ा विकार

नारी की सोई परत, अन्धा होत भुजंग

कबीरा तिनकी कौन गति नित नारी को संग[16]

कबीर ने नारी के ऐसे चित्र क्यों दिये केवल इसलिये कि उस युग में नारी भोग की वस्तु ही समझी जाती थी उसके गौरवमय पक्षों को भुला दिया

[15] सिंह करण बहादुर – महिला अधिकार व सशक्तिकरण
[16] महादेवी वर्मा, श्रृंखला की कड़िया लोकभारती 2001

गया था कबीर संत थे, उन्होंने जनता को नारी की वासनात्मक पक्ष की ओर देखने से सचेत किया वैसे उन्होंने नारी के प्रति घृणा नहीं प्रदर्शित की पतिव्रता नारियों की उन्होनं प्रशंसा की है और सबसे बड़ी बात तो यह कि स्वयं को राम की बहुरिया माना है सती को अंग विरहणी, पतिव्रता आदि रूपों का सम्मान किया।

सूर की राधा प्रणय एवं समर्पण की सौगात है वह जीवन के समस्त बंधनों आकर्षण और सुखों से मुक्त होकर चिस्तर पुरूष की प्रेमिका बनकर उसको पाने के लिये लालयित हो उठती है उनके लिये हरि हारिल की लकड़ी के समान है।

अंखिया हरि–दर्शन की भूखी।

सूर की राधा में विश्वभर की प्रेमिकाएँ मान मनुहार करती है यशोदा में विश्व की माताओं की करूणा, वात्सल्य किसी को प्यार करने के लिए लहर उठती है सूर ने गोपियों की तन्मयता एवं प्रेमाशक्ति में हृदय की रागात्मक अनुभूतियों का सजीव चित्रण प्रस्तुत करके नारी जाति के गौरव को उन्नतिशील बनाया है।

तुलसी ने सीता के अतिरिक्त कौशल्या, मन्दोदरी अनुसूंया आदि नारी के आदर्श गुणों की भूरि–भूरि प्रशंसा की है और उन्हें समाज का गौरव सिद्ध किया है किन्तु जहाँ भी नारी उन्हें अपने वास्तविक पद से गिरती हुई दिखाई पड़ी है वहीं उन्होंने उसकी अघोर निन्दा की है।

डॉ. माता प्रसाद गुप्त ने लिखा है कि प्रत्येक युग के कलाकार नारी चित्रण में प्रायः उदार पाये जाते है किन्तु नारी चित्रण में तुलसी बेहद अनुदा है लेकिन उनका यह ख्याल गलत है।

जिस कवि ने सीता जैसी नारी का चित्रण कर उसे जगत जननी का पद दिया वह नारी जाति के प्रति निन्दनीय विचारधारा कदापि नहीं रखता था

फिर तुलसी बनाने वाली भी तो एक नारी ही थी उनकी पत्नी रत्नावली जिसने धक्के देकर उन्हें राम के वास्तविक महत्व से परिचित कराया था तुलसी रत्नावली के इन शब्दों को कदाचित क्यों न भूले होगें।

अस्थि चरम मय देह मम, तासे जैसे प्रीति।

वैसी जो श्री राम में होत न तो भवभीति।

ऐसी दशा में तुलसीदास के विषय में यह धारणा रखना पर्याप्त भ्रमिक होगा कि उन्होंने नारी जाति की निन्दा की है, उसके प्रति अनुदार रहे है उन्होनें नारी जीवन की वेदना के प्रति अपनी सबसे गहरी सहानुभूति इन पक्तिंयो में प्रकट की है।

कर विधि सृजी नारि जग माहि

पराधीन सपने है सुख नहीं

रीति कालीन कवियों ने नारी के महत्व पक्ष की उपेक्षा करके असके वासनात्मक पहलू को चमकीले रंगो से रंगा है बाह्य सौन्दर्य से अभिभूत हो नारी के विकृत चित्र खींचे सर्वत्र नारी के अन्तः सौन्दर्य की अवेहलना की महत्व से देवी होने पर भी उसे सुरति, सुखिन सी देगा कहीं उसे काम की नाटिका पगड़ी शुभदान एवं नवग्रह की माला बनाया तो नहीं कै गई कोटि करेजन के कतरे–कतरे पतरे करिहा कीरर के रूप में नरवर के समान ठहराया रीति कालीन नारी में झुलसता रहा सामाजिक मर्यादा से शून्य नारी अपनी ही चकाचौंध में झुलसती रही हिन्दी साहित्य में नारी के बदलते रूपों में कुछ बिन्दुओं पर बात की गई है।

जैसे नारी जाति का इतिहास और इसमें देखे गए बदलाव।

- **वैदिक काल :**

वैदिक काल की नारियों ने पुरूषों के समकक्ष स्थिति का आनन्द लिया वैदिक काल की महिलाएँ शिक्षित होती थी उनका विवाह परिपक्वता की वय में ही होता था तथा उन्हें अपने घर को चुनने की आजादी होती थी

- **मध्यकाल :**

मध्यकाल में नारियों की स्थिति में गिरावट आई बाल विवाह पुनर्विवाह पर रोक बहुविवाह, राजपूत महिलाओं द्वारा देवदासी प्रथा जैसी कुरीतियों के माध्यम से नारी शोषण आरंभ हो गया। नारियों को पर्दे के पीछे कैद कर दिया इसके बावजूद अनेक नारियों ने संघर्ष करते हुए राजनीति साहित्य, शिक्षा, और धर्म के क्षेत्र में विशिष्ट उपलब्धियाँ अर्जित कर सम्मान पाया।

- **अंग्रेजी राज :**

अंग्रेजी राज में नारियों की स्थिति में धीमी गति से सुधार आना आरंभ हुआ। नारियों को शिक्षा पाने का अवसर मिला राजा राममोहन राय ने सती प्रथा के उन्मूलन तो ईश्वरचंद्र, विद्यासागर ने विधवा विवाह के पक्ष में बड़ा योगदान दिया आजादी की लड़ाई में अनेक महिलाओं जैसे डॉ. एनी बेसेन्ट, विजयलक्ष्मी पंडित, अरूणा उनसफ अली सुचिता कृपलानी और कस्तुरबा गांधी ने महत्वपूर्ण योगदान दिया।[17]

- **आजाद भारत :**

आजादी के बाद सन् 1950 में जब देश को संविधान मिला तो उसमें नारी सुरक्षा सम्मान और पुरूष के समान अवसर व अधिकार मिले किन्तु अशिक्षा पुरातनवादी सोच तथा कमजोर सामाजिक ढाँचे के कारण नारी जाति उन अवसरों और अधिकारों का पूर्ण रूप से लाभ न उठा पाई। अपने बचपन

[17] नारी के बदलते आयाम पृ. सं. 20

में वह पिता जवानी में पति तथा वृद्धावस्था में पुत्र पर निर्भर रही। इंदिरा गांधी 1966 में देश की प्रथम प्रधानमंत्री महिला बनी।

सुचेता कृपलानी यूपी की मुख्यमंत्री, किरण बेदी प्रथम महिला आईपीएस, कमलजी सिंधू एशियन गेम्स में प्रथम गोल्ड पदकधारी, मेघा पाटकर सामाजिक कार्यकर्ता जैसी अनेक महिलाओं ने पुरूषवादी समाज की सोच को धात बताते हुए अपने महावता नेतृत्व क्षमता और सामर्थ्य का परिचय दिया और इतिहास में अपना नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित करवा दिया

- **बदलाव की बयार :**

स्वतंत्रता की रजत जयंती के बाद का समय विकास का स्वर्ग साबित हुआ देश में कम्प्युटर तथा अन्य टेक्नालॉजी के विकास टी.वी युग का प्रादुर्भाव आधारभूत संरचना के साथ बड़े उद्योगो की स्थापना देश में विकास के कीर्तिमानों की नई इबारत लिख दी बॉलीवुड, फैशन और मनोरंजन की दुनिया में क्रांतिकारी परिवर्तन अया नारियों तक इस नवनिवास की बयार पहुँची और उनकी स्थिति में काफी महत्वपूर्ण बदलाव आया।

आज नारियाँ पुरूषों से किन्हीं भी मायनों में कम और घर की चार दिवारी में कैद नहीं है वे उच्च शिक्षित है, डॉक्टर, इंजिनियर, वैज्ञानिक व अंतरिक्ष यात्री है, तथा हर तरह के उच्चतम पदों पर भी आसीन है वे अपने वस्त्रों व जीवनशैली के साथ अपने जीवनसाथी का चुनाव करने के लिए स्वंतत्र है उसकी सुरक्षा एवं हित रक्षा के लिए संविधान में लगभग 34 एक्ट प्रभावी है, नारियों ने साबित कर दिया है कि वे पुरूषों के समकक्ष नही, बल्कि उनसे बेहर है समाज की कुछ उच्च शिक्षित नारियाँ और उनके संगठन शायद यह समझते है कि मनचाहे, कम वस्त्र पहनना, रोक–टोक रहित मुक्त जीवन जीना, मुक्त सेक्स की राह पर चलना ही वांछित बदलाव है।

इस बदलाव का उनके पास कोई तर्कयुक्त जबाव उनके पास नहीं है इस बात में कोई संशय नहीं है कि नारी अपने जीवन में घर के सीमित दायरे के लिए नहीं बनी है फिर भी नारी को यह भूलना नहीं चाहिए कि घर ही उनका किला है और सबसे बड़ा कार्यक्षेत्र है जिसकी कि वे अकेली आर्किटेक्ट है नारी के द्वारा घर को घर जैसा बनाने रखने में किया प्रयास महान होता है। जिसमें वह अपने बच्चों का पालन पोषण खुशियों व अन्य सामान्य जरूरतों का ध्यान ही नहीं रहे उसे यह भी सुनिश्चित करना होगा कि उसे घर में उतना ही सम्मान मिले जितना कि घर का पुरूष घर के बाहर काम करके अर्जित करता है। जरूरत पड़ने पर उसे इसके लिए कठोर बनकर भी दिखना होगा ग्रामीण क्षेत्रों में भी बदलाव की बयार पहुँचने लगी है।

मनोरंजन व संचार के साधन जैसे टी.वी. व मोबाईल गाँवों में भी पहुँचने लगे है गाँवों की नारी अपने ससुराल आने से इसलिए मना कर रही है कि वहां शौचालय नहीं है यह बड़ा बदलाव है और बदलाव तेज होना चाहिए एक बात और समाज की जो भी रूढ़ियाँ नियम या परम्पराए होती है वे सारी की सारी गलत नहीं होती है अतः जो भी बदलाव हो वह सभी को साथ में बैठकर तर्क करना होना चाहिए और उसमें दूसरों के हितों का अतिक्रमण नहीं होना चाहिए नारी को समय स्थान अपने परिवार अपनी परिस्थिति और क्षमता के अनुसार ही उपयुक्त बदलाव को अपनाना होगा और वह भी क्रमिक तरीके से ताकि अनावश्यक टकराव को टाला जा सके।[18]

नारी ने साबित कर दिया है कि जीवन की दौड़ में वह पुरूषों के समकक्ष ही नहीं बल्कि उनसे बेहतर है वहीं जीवन की असली कलाकार है और पुरूष उसके हाथ का मात्र रंग और कागज है यह दुनिया पल पल बदलती रहती है और नारियों को भी स्वयं को मौजूदा परिस्थितियों के अनुसार लगातार बदलते रहना होगा यह तय है नारी कोई पात्र या वस्तु नहीं है सभी

[18] डॉ. राजकुमार – नारी के बदलते आयाम पृ. सं. – 22

को पता है कि माँ के रूप में एक कमजोर दिखने वाली नारी को भी जब लगता है कि उसके बच्चों पर कोई खतरा है तो उनकी रक्षा करने के लिए वह रणचण्डी का रूप धारण करने में कोई देर नहीं लगती है।

नारी के बदलते आयाम महादेवी वर्मा जी ने भी नारियों की बदलती स्थिति पर काफी विचार किया है महादेवी जी ने कुछ तर्क को बताते हुए कहा है कि–

एक पुरूष के प्रति अन्याय की कल्पना से ही सारा पुरूष समाज उस नारी से प्रतिशोध लेने को उतारू हो जाता है और एक नारी के साथ कुरूतम अन्याय का प्रमाण पाकर भी सब नारियाँ उसके अकारण दंड को अधिक भारी बनाए बिना नहीं रहती इस तरह पग–पग पर पुरूष से सहायता की याचना न करने वाली नारी की स्थिति कुछ विचित्र सी है वह जितनी ही पहुंच के बाहर हाती है पुरूष उतना ही झुंझलाता है और प्रायः यह झुनझुलाहट मिथ्या अभियोगों के रूप में परिवर्तित हो जाती है।

महादेवी वर्मा जी ने नारी के बदलते रूप को कुछ बिन्दुओं में प्रस्तुत किया जो कि इस प्रकार है :

भारतीय शास्त्रों में महिलाएँ पुरूष की संगिनी रही है, छायामात्र नहीं न उन्होंनें नारीजगत में भारतीय संदर्भ का संदेश दिया नारी मुक्ति के विषय में उनका विचार है कि भारत की नारी तो भारत माँ का प्रतीक है वह अपनी समस्त संतान को सुखी देखना चाहती है उन्हें मुक्त करने में ही उनकी मुति है मैत्रेयी, गोपा, सीता और महाभात के अनेक नारी पात्रों को उदाहरण देकर वह निष्कर्ष निकालती है कि उनमें से प्रत्येक पात्र पुरूष की संगिनी रही है छाया मात्र नहीं छाया और संगिनी का अंतर स्पष्ट है छाया का कार्य आधार में अपने आपको इस प्रकार मिला देता है जिसमें वह उसी के समान जान

पड़े और संगिनी का अपने सहयोगी की प्रत्येक त्रुटि को पूर्ण कर उसके जीवन को अधिक से अधिक पूर्ण बनाना।

- **नारी एक अभिशाप हैः**

नारी और पुरूष के पति–पत्नी संबंध पर विचार करते हुए महा देवीजी ललकार भरे स्वर में सवाल उठाती है अपने जीवनसाथी के ह्रदय के रहस्यमय कोने कोने से परिचित सौभाग्यवती सहधर्मिण कितनी है जीवन की प्रत्येक दिशा में साथ देने वाली कितनी है ये सवाल साल 1931 में उठाये गए सवाल है मौजूदा समय में भी इन सवालों के जवाब संतोष प्रदान करने लायक नहीं हो सकते रामायण बन गयी नारी की निमति ऐसी क्यों महादेवी इसे नारीत्व का अभिशाप पर लिखा है अग्नि में बैठकर अपने आपको प्रमाणित करने वाली सी स्वच्छ सीता में नारी की अनंत युगों की वेदना साकार हो गयी है सीता को पृथ्वी में समहित करते हुए राम का ह्रदय विर्दण नहीं हुआ भारतीय संस्कृति और नारी शीर्षक निबंध में उन्होंने प्राचीन भारतीय संस्कृति में नारी के महत्वपूर्ण स्थान पर गंभीर विवेचना की है उनके अनुसार महाशक्ति की रहस्यमयता स्थान रहा है भारतीय संस्कृति में नारी की आमरूप को ही नहीं उसके दिवात्म रूप को प्रतिष्ठा दी है।[19]

- **पुरूष ने नारी के वास्तविक रूप को कभी नहीं देखा :**

महादेवी अपनी लेखनी से सजगता और निडरता के साथ भारत की नारी के पक्ष में लड़ती रही नारी शिक्षा की जरूरत पर जोर से अवाज बुलंद की और खुद इस क्षेत्र में कार्यरत रही उन्होंने गांधीजी की प्रेरणा से संस्थापित प्रयाग महिला विद्यापीठ में रहते हुए अशिक्षित जनसमूह में शिक्षा की ज्योति फैलायी शिक्षा प्रचार के संदर्भ में वे सुधारकों की आदर्शिता और संकुचित दृष्टि पर खुलकर वार करती है वह कहती है वर्तमान युग के पुरूष ने नारी

[19] चित्रा मुदगल, एक ज़मीन अपनी पृ. सं. 29

के वास्तविक रूप को न कभी देखा था न वह उसकी कल्पना कर सका उसके विचार में नारी के परिचय का आदि अंत इससे अधिक और क्या हो सकता था कि वह किसी की पत्नी है नारी में यौन तत्व को ही प्रधानता देने वाली प्रवृत्तियों का उन्होनें विरोध किया उनके अनुसार निर्जीव शरीर विज्ञान ही नारी के जीवन की सृजनात्मक साहित्यों का परिचय नहीं दे सकता उनका मानना है कि अनियंत्रित वासना का प्रदर्शन नारी के प्रति कर त्याग ही नहीं जीवन के प्रति विश्वासघात भी है।

- **आधुनिक नारी :**

महादेवी आधुनिक नारी की स्थिति पर नजर डालते हुए भारतीय नारी के लिए समाज में पुरूष के समकक्ष स्थान पाने की जरूरत पर जोर देती है। साल 1934 में लिखित आधुनिक नारी उसकी स्थिति पर एक दृष्टि लेख में वे कहती है एक ओर परंपरागत संस्कार ने उसके ह्रदय में यह भाव भर दिया है कि पुरूष विचार बुद्धि और शरीर में उसके श्रेष्ठ है और दूसरी उसके भीतर की नारी प्रकृति भी उसे स्थिर नहीं करने देती।

- **नारी में शिक्षा के बदलते रूप :**

शिक्षा में नारियों को पुरूषों की ही तरह शामिल करने से संबंधित है दूसरे रूप में यह नारियों के लिए बनाई गई विशेष शिक्षा पद्धति को संदर्भित करता है वर्तमान दौर में यह बात सर्वमान्य है कि नारी को भी उतना शिक्षित होना चाहिये जितना कि पुरूष हो यह सिद्ध सत्य है कि यदि माता शिक्षित न होगी तो देश की संतानों का कदापि कल्याण नहीं हो सकता शिक्षा वयस्क जीवन के प्रति नारियों के विकास के लिए एक आधार के रूप में विशेष रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है शिक्षा अन्य अधिकारों को सुरक्षित करने के लिए लड़कियों और महिलाओं को सक्षम करने में एक ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है बहुत सी समस्याओं का सामना करती रहती है अगर महिला

शिक्षित हो तो वे अपने घरों की सभी समस्याओं का समाधान कर सकती है नारी शिक्षा राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय विकास में मद्द करता है। महिला शिक्षा एक अच्छे समाज के निर्माण में मद्द करती है।

अगर रूढ़िवादी नजरिये से देखा जाए तो लड़कियों को अक्सर पाठशाला जाने की अनुमति नहीं दी जाती है इसका कारण गरीबी भी देखा जा सकता है क्योंकि घर की आर्थिक स्थित ठीक न होने के कारण भी माता–पिता अपने सभी बच्चों को शिक्षा देने में असमर्थ होते है। जिसके कारण वे अपने बच्चो को स्कूल नहीं भेज पाते और लड़कियों को भी अपने साथ मजदुरी कर ले जाना पड़ता था और एक सोच का भी अंतर आता था पहले कुछ लोगों का सोचना होता था कि लड़कियों को नहीं पढ़ना है सिर्फ लड़कों को पढ़ाना है कई बेटियाँ अशिक्षित ही होती थी लोगों का मानना था कि लड़किया सिर्फ घरों के काम काज के लिए होती है। और इनका बड़ा हो जाने पर विवाह कर दिया जाता था इसलिए भी लड़कियाँ अशिक्षित रहती थी

पुनर्जागरण के दौरान भारत में नए सिरे से महत्व मिलने लगा ईस्ट इण्डिया कंपनी के द्वारा सन् 1854 में नारी शिक्षा को स्वीकारा गया था विभिन्न सरकारी और गैर सरकारी प्रयासों के कारण साक्षरता के दर 02 से बदलकर 06 प्रतिशत तक पहुंचा था कोलकता विश्वविद्यालय महिलाओं को शिक्षा के लिए स्वीकार करने वाला पहला विश्वविद्यालय था स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् सन् 1947 से लेकर भारत सरकार पाठशाला में दाखिला करने के लिए और उनकी स्कूल में उपस्थिति बढ़ाने की कोशिश में अनेक योजनाएँ बनाए है जैसे कि निःशुल्क पुस्तकें, दोपहर का भोजन आदि। लड़कियों और महिलाओं की शिक्षा गरीबी पर काबू पाने में एक महत्वपूर्ण कदम है कुछ परिवारों का काम कर रहे पुरूष दुर्भाग्यपूर्ण दुर्घटना में विकलांग हो जाते है उस स्थिति में परिवार का पूरा बोझ परिवार की महिलाओं पर टिका हुआ रहता है। महिलाओं की ऐसी जरूरतों को पुरा करने के लिए उन्हें शिक्षित किया जाना चाहिए वे

विभिन्न क्षेत्रों में प्रेवेश कर सकती है महिलाएँ शिक्षकों, डॉक्टरों, वकीलों और प्रशासक के रूप में काम कर रही है शिक्षित महिला अच्छी माँ बन सकती है महिलाओं की शिक्षा से दहेज समस्या, बेरोजगारी की समस्या आदि सामाजिक शांति से जुड़े मामलो को आसानी से हल किया जा सकता है।

नास्ति विद्यासमं यानुनीस्ति माह समोगुरू

इसका मतलब यह है कि इस दुनिया में विद्या के समान क्षेत्र नहीं है और माता के समान गुरू नहीं है यह बात पुरी तरह सच है बालक के विकास पर प्रथम और सबसे अधिक प्रभाव उसकी माता का ही पड़ता है। माता ही अपने बच्चे को पाठ पढ़ाती है बालक का यह प्रारंभिक ज्ञान पत्थर पर बनी अमिट लकीर के समान जीवन का स्थायी आधार बन जाता है। असुरक्षा के कारण ही बलात्कार और सामूहिक बलात्कार जैसी घटनाओं के जाल में फसकर महिलाओं का जीवन नर्क बन चुका है वास्तव में कहा जाता है कि महिलाओं की शिक्षा किसी भी पुरूष की शिक्षा से कम महत्वपूर्ण नहीं है। समाज की नई रूप रेखा तैयार करने में महिलाओं की शिक्षा पुरूषों से सौ गुना अधिक उपयोगी है।

शिक्षा प्राप्त करके आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होने का अर्थ यह नहीं है कि नारी शिक्षित होकर पुरूष को अपना प्रतिदर्शित मानते हुए उसके सामने ही मोर्चा लेकर खड़ी हो जाए बल्कि वह आर्थिक क्षेत्र में भी पुरूष के बराबर समानता का अधिकार प्राप्त करके उसके साथ मैत्रीपूर्ण संबंध के समीकर्ण बनाने में सक्षम बने जिस प्रकार शरीर की आवश्यकता भोजन होती है। उसी प्रकार मानसिक विकास के लिए शिक्षा आवश्यक है अगर नारी ही शिक्षित नहीं होगी तो वह न तो सफल गृहणी बन सकेगी और ना कुशल माता समाज में बाल अपराध बढ़ने का कारण बालक का मानसिक रूप से विकसित न होना है अगर एक माँ ही अशिक्षित होगी तो वह अपने बच्चे को सही मार्गदर्शन

करके उनका मानसिक विकास कैसे कर पाएगी और स्वस्थ समाज का निर्माण एवं विकास कैसे संभव हो सकेगा।

भारत में मध्य और पुनर्जागरण काल के दौरान नारियों को पुरूषों से अलग घर की शिक्षा देने की धारणा विकसित हुई थी वर्तमान दौर में यह बात सर्वमान्य है कि नारी को भी उतना शिक्षित होना चाहिए जितना एक पुरूष हो शिक्षा वयस्क जीवन के प्रति नारी के विकास के लिए एक आधार के रूप में विशेष रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है शिक्षा अन्य अधिकारों को सुरक्षित करने के लिए नारियों का सम्मान करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

2.1 महिलाओं के प्रति सोच में बदलाव जरूरी :

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के आगमन के साथ ही कई तरह की परिस्थितियों से जूझ रही महिलाएँ अपनी समस्याओं को लेकर मुखर रही है वैसे तो महिलाएँ आदिकाल से ही संघर्ष करती आ रही है इसी दौरन समय समय पर विकट परिस्थितियों से जूझकर अपनी क्षमता का परिचय दिया है लेकिन आज के जमाने में कामकाजी होने और हर क्षेत्र में भागीदार के कारण कदम कदम पर समस्याओं का सामना करना पड़ता है। आजकल महिलाओं का दायरा केवल घर की चार दीवारी तक सीमित नहीं है भागती छोड़ ती जिंदगी का और करियर की आपाधापी में यह सवाल और भी अहम हो गया है कि विवाह की क्या उम्र होनी चाहिए अगर बात लड़कों की तो उन्हें पहले अपने करियर और समय पर शादी का सवाल और भी अहम हो जाता है। शानदार करियर बनाने की तमन्ना किसी की हो सकती है लेकिन परिवार को पारंपरिक रूप से एक महिला की जिम्मेदारी समझा जाता रहा है वैसे भी भारतीय परिवेश में कामकाजी महिलाओं की जवाबदारी कुछ ज्यादा ही होती है। पुरूष प्रधान समाज की अपनी मानसिकता है तो वहीं महिलाओं को लेकर बुनियादी सामाजिक रूढ़िवादी सोच भी एक मुद्दा है अगर कामकाजी महिला नौकरी में सुबह आठ बजे घर से निकलती है और घर 2 बजे की जगह 4

बजे पहुँच तो घर के लोग आग बबूला हो जाते है समाज को इस सोच को बदलना होगा [20]

महिला सुरक्षा के संबंध में कितने भी नियम या कानून क्यों नहीं बना ले जब तक पुरूषों की मानसिकता में बदलाव नहीं होगा महिला सशक्तिकरण की कल्पना सच नहीं की जा सकती है इसके लिए लड़कों को लड़कियों को भी अपने को कमजोर समझने की मानसिकता से बाहर निकलना होगा आज कामकाजी महिलाएँ घर बाहर दोनों जगह शोषित हो रही है उन्हें कई तरह की मानसिक समस्याओं से जूझना पड़ रहा है समाज में उनकी स्थिति को समझना होगा

- **भारत में महिलाओं की बदलती स्थिति :**

जैसा कि हम सब देखते है और देखते आ रहे हैं कि भारत में महिलाओं की स्थिति सदैव एक समान नहीं रही है इसमें युगानुरूप परिवर्तन होते रहे है उनकी स्थिति में वैदिक युग से लेकर आधुनिक काल तक अनेक परिवर्तन आते रहे हैं तथा उनके अधिकारों में भी बदलाव भी होते रहे है उनको शिक्षा का अधिकार प्राप्त था सम्पत्ति में उनको बराबरी का हक था सभा व समितियों में से स्वतंत्रतापूर्वक भाग लेती थी..... वेद का कथन है कि नारियों को दास की सेना का अस्त्र शस्त्र कहा गया है। स्पष्ट है कि वैदिक काल में भी कहीं न कहीं महिलाएँ नीची दृष्टि से देखी जाती थी शिक्षा, धर्म व्यक्तित्व और सामाजिक विकास में उसका महान योगदान था।[21]

- **वैदिककाल में नारी की बदलती स्थितः**

वैदिक एवं उत्तर वैदिक काल में महिलाओं को गरिमामय स्थान प्राप्त था उसे देवी सहगामिनी, अर्द्धांगिरी माना जाता था स्मृतिकाल में भी ''यत्र

[20] सिंह करण बहादुर, महिला अधिकार व सशक्तिकरण
[21] शालिनी गुप्ता अध्यक्ष परिषद– नोडरमा

नार्मस्तु रमन्ते तत्र देवता'' कहकर उसे सम्मानित स्थान प्रदान किया गया है। पौराणिक काल में शक्ति का स्वरूप मानकर उसकी आराधना की जाती रही है किन्तु 11 शताब्दी से 19 वी शताब्दी के बीच में महिलाओं की स्थिति दयनीय होती गई एक तरह से यह महिलाओं के सम्मान विकास और सशक्तिकरण का अहंकार युग था मुगल शासन सामन्ती वरूवस्था केन्द्रय सप्ता का विनिष्ट होना विदेशी आकमण और शासकों की विलासतापूर्ण प्रकृति ने महिलाओं को उपभोग की वस्तु बना दिया था और उसके कारण बाल विवाह, पर्दा, प्रथा, अशिक्षा आदि विभिन्न सामाजिक कुरीतियों का हीन बना दिया तथा उनके निजी व सामाजिक जीवन को कलंकित कर दिया धार्मिक अनुष्ठानों और याज्ञिक कर्मों में उसकी स्थिति पुरूष के बराबर थी धार्मिक कार्य बिन पत्नी नहीं किया जाता था

- **मध्यकाल में महिलाओं की बदलती स्थिति :**

समाज में भारतीय महिलाओं की स्थिति में महायुगीन काल के दौरान और अधिक गिरावट आयी जब भारत के कुछ समुदायों में सती प्रथा बाल विवाह और विधवा पुनर्विवाह पर रोक सामाजिक जिन्दगी का एक हिस्सा बन गया था बहुविवाह की प्रथा हिन्दु प्रिय शासनों में व्यापक रूप से प्रचलित थी जंहागीर की पत्नी नूरजहाँ ने राजाशाही शक्ति का प्रभावशाली ढंग से इस्तेमाल किया और मुगल राजगद्दी के पीछे वास्तविक शक्ति के रूप में पहचान हासिल की दक्षिण भारत में कई महिलाओं ने गाँवों शहरों और जिलो पर शासन किया और सामजिक एवं धार्मिक सस्थानों की शुरूआत की भक्ति आंदोलन के कुछ ही समय बाद सिंखो के पहले गुरू गुरूनानक ने भी पुरूषों और महिलाओं के बीच समानता का संदेश को प्रचारित किया भक्ति आंदोलन ने नारियों की बेहतर स्थिति को वापस हासिल करने की काशिश की गई नारियों के हर क्षेत्र में बदलाव करने की कोशिश की गई हिन्दुत्व के अंदर महानुभव वरकारी और कई अन्य जैसे भक्ति संप्रदाय हिन्दू समुदाय में पुरूषों

और महिलाओं के बीच सामाजिक न्याय और समानता की खुले तौर पर वकालत करने वाले प्रमुख आन्दोलन थे विवाह में बराबरी का हक और अमृत में समानता की अनुमति देने की वकालत की अन्य सिंख गुरूओं ने भी महिलाओं के प्रति भेदभाव के खिलाफ उपदेश दिऐ।

मध्यकाल में विदेशियों के आगमन से नारियों की स्थिति में जबर्दस्त गिरावट आई अशिक्षा और रूढ़िया जकड़ती गई घर की चार दीवारों में कैद होती गई घरों के काम काज की जिम्मेदारी आती गई घर के बहार जाने की ईजाजत नहीं होती थी शिक्षा का कोई महत्व नहीं होता था एक अबला नारी सादा जीवन यापन करने में अपना समय व्यतीत करती थी अंग्रेजी शासकों के समक्ष नारी–पुरूष समानता नारी शिक्षा, सती प्रथा पर रोक तथा बहु विवाह पर रोक की आँवाज उठायी इसी प्रकार से नारी स्थिति दयनीय होती गई कई वर्षों के बाद आने वाले समय में नारी जगरूकता में वृद्धि हुई और नये नारी संगठनों का सूत्रपात हुआ जिनकी मुख्य मांग नारी शिक्षा, दहेज, बाल विवाह जैसी कुरीतियों पर रोक लगाना है ब्रिटिश शासन के 200 वर्षों की अवधि में नारियों के जीवन में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष अनेक सुधार आये 19 वीं सदी के मध्यकाल से लेकर 21 वीं सदी तक आते आते पुनः महिलाओं की स्थिति में सुधार हुआ और महिलाओं ने शिक्षक, राजनीतिक सामाजिक आर्थिक, धार्मिक प्रशासनिक खेलकूद आदि विविध क्षेत्रों में उपलब्धियों के नए आयामों तक की तय किया स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व तक नारियों की निम्न दशा के प्रमुख कारण अशिक्षा, निर्भरता, धार्मिक जाति बंधन नारी नेतृत्व का अभाव तथा पुरूषों का उनके प्रति अनुचित दृष्टिकोण आदि थे नारियों को विकास की अखिल धारा में प्रवाहित करने शिक्षा के समुचित अवसर उपलब्ध कराकर उन्हें अपने विकास की अखिल एवं अधिकार के प्रति सजग करते हुए उनकी सोच में मूलभूत परिवर्तन लाने आर्थिक सामाजिक दृष्टि से आत्मनिर्भरता और

स्वावलम्बन की ओर अग्रसित करने जैसे अहम उद्देश्यों की पूर्ति हेतु पिछले कुछ दशको में विशेष प्रयास किये गए हैं।

हिन्दुवाद के आदेशों के अनुसार पुरूष नारियों से श्रेष्ठ होते है और नारी भिन्न भिन्न प्रकार की भूमिका निभाती है 20 वीं सदी के उपरांत और अब 21 वीं सदी के प्रारंभ में बराबरी व्यवहार वाले जोडे बनने लगे है नौकरी वाली के साथ पुरूष की मानसिकता में बदलाव आया है नारियाँ धन कमाने लगी है तो पुरूष की मानसिकता में भी परिवर्तन आया है आर्थिक दृष्टि से नारियों की सोच में बहुत बदलाव आया है वह शिक्षा प्राप्त करके आगे बढ़ना चा रही है व्यवसाय से लेकर प्रशासनिक क्षेत्र तक नारियों का दबदबा चला आ रहा है।

देश के सर्वोच्य राष्ट्रपति पद पर श्रीमती प्रतिभा पाटिल, कांग्रेस अध्यक्ष सोनियां गांधी, लोकसभा स्पीकर के पद पर मीरा कुमार उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री मायावती, वसुन्धरा राजे, सुषमा स्वराज, जयललिता, ममता बनर्जी, शीला दीक्षित आदि स्त्रियाँ आगे बढ़कर अपना वर्चस्व दिखा रही है खेल जगत में पी.टी उषा, अंजू बावी जार्ज, सुनिता जैन, सनिया मिर्जा, अंजू चौपड़ा आदि ने उच्च शिक्षा प्राप्त करके विभिन्न क्षेत्रों में अपने बुद्धि कौशल का परिचय दिया आज की नारी राजनीतिक कारोबार कला तथा नौकरियों में पहुँचकर नये आयाम गढ़ रही है आजादी के बाद लगभग 12 महिलाएँ विभिन्न राज्यों की मुख्यमंत्री बन चुकी है। भारत के अग्रणी साफ्टवेयर उद्योगों में 21 प्रतिशत पेशेवर महिलाओं के होने की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी वहाँ सिर्फ नारी स्वयं को स्थापित ही नहीं कर पायी है बल्कि वहाँ सफल भी हो रही है यदि आपको विकास करना है तो महिलाओं का उत्थान करना होगा महिलाओं का विकास होने पर समाज का विकास स्वतः हो जायेगा एक लड़की की शिक्षा एक लड़कें की शिक्षा की अपेक्षा अधिक होनी चाहिए वह बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि लड़कें को शिक्षित करने पर वह अकेला शिक्षित

होता है परन्तु एक लड़की की शिक्षा से पूरा परिवार शिक्षित होता है। शिक्षा वह कुंजी है जो जीवन के वह सभी द्वार खोल देती है जो कि आवश्यक रूप से सामाजिक है संवैधानिक अधिकारों में विभिन्न कानूनों के द्वारा महिलाओं को पुरूषों के समान अधिकार मिलने से उनकी स्थिति में परिवर्तन हुआ महिलाओं को विवाह विच्छेद परिवार की संपत्ति में पुरूषों के समान अधिकार दिये गये।

संयुक्त परिवारों के विघटन होने से जैसे–जैसे एकांकी परिवार की संख्या बढ़ी इनमें न केवल महिलाओं को सम्मानित स्थान मिलने लगा बल्कि लड़कियों की शिक्षा को भी एक प्रमुख आवश्यकता के रूप में देखा जाने लगा महिला शिक्षा समाज का आधार है समाज द्वारा पुरूष को शिक्षित करने का लाभ केवल मात्र पुरूष को होता है। यद्यपि कुछ समय तक महिला शिक्षा के समर्थक कम किन्तु आज समय एवं परिस्थितियों ने महिला शिक्षा को अनिवार्य बना दिया नारी और मुक्ति आज भी नदी के दो किनारे की तरह है जो कभी मिल नहीं पाती सही तौर पर देखा जाए तो लगता है कि भारत ही नहीं विश्व पटल पर अपनी पहचान बनाती हुई नारियों ने अपनी मान्यताएँ बदली है जब जब नारी अपनी उपस्थिति दर्ज कराना चाहती है तब तब जाने कितने रीति, रिवाजों, परम्पराओं, पौराणिक आख्यानों की दुहाई देकर उसे गुमनाम जीवन जीने पर विवश कर दिया जाता है। वर्ष 2001 महिला शसक्तिकरण वर्ष के रूप में मनाया गया इसमें महिलाओं की क्षमताओं और कौशल का विकास करके उन्हें अधिक सशक्त बनाने तथा समग्र समाज को महिलाओं की स्थिति और भूमिका के सबंध में जागरूक बनाने का प्रयास किये गये इससे आर्थिक, समाजिक, सांस्कृतिक सभी क्षेत्रों में पुरूषों के साथ समान आधार पर महिलाओं द्वारा समस्त मानवाधिकारों तथा मौलिक स्वतंत्रताओं का सैद्धांतिक तथा वस्तुतः उपभोग पर तथा इन क्षत्रों में महिलाओं की भागीदारी व निर्णय स्तर तक समान पहुँचाने पर बल दिया गया है। नारी को एक देह से अलग एक नारी

के रूप में देखने की आदत को डालना होगा कोड ऑफ कंडक्ट किसी भी समाज में व्यवस्था के संचालन में तो सहयोगी हो सकते है किसी की मजबूरी किसी के लिए व्यवसाय न बने यह समाज को ध्यान देना होगा

महिलाओं की स्थिति में सुधार ने देश के आर्थिक और सामाजिक सुधार के सामने भी बदल कर रख दिये। दूसरे विकासशील देशों की तुलना में हमारे देश में महिलाओं की स्थिति काफी बेहतर हो गयी है महिलाएँ अब अपनी निजी जिंदगी को लेकर बहुत अधिक जागरूक है जिससे वे अपने परिवार तथा रोजमर्रा की दिनचर्या से संबंधित खर्चों का निर्वाह आसानी से कर सके। वर्तमान समय में भारतीय सरकार द्वारा महिलाओं के उत्थान के लिए अनेक कार्यक्रम एवं योजनाओं का क्रियान्वयन निचले स्तर पर उचित ढंग से न पहुंच सकने के कारण नारियों को उपेक्षित लाभ नहीं मिल पा रहा है हमें नारी शक्ति के उद्धारक नहीं वरन् उनके सेवक और सहायक बनाना चाहिए भारतीय नारियाँ संसार की अन्य किन्हीं भी नारियों की भांति अपनी समस्याओं को सुलझाने की क्षमता रखती है

2.2 महिलाओं के बदलते नजरियें अपने अधिकारों के लिए :

अपने दायित्व और अधिकारों के प्रति जागरूक होना शुरू कर दिया है सुरक्षा के मसले पर कहा गया कि महिला अपनी सुरक्षा अब खुद से करने लगी है वह अपना स्थान हर जगह बनाने लगी है चाहे वह पढ़ाई का स्थान हो या नौकरी का वह एक समान सम्मान पाती है उस स्थान पर बेटा बेटी का कोई अंतर नहीं होता है। अब महिलाएँ सभी क्षेत्रों में पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम कर रही है राजनीति से लेकर खेल तक में महिलाओं ने अपनी प्रतिभा व योग्यता का परिचय दिया है लेकिन अभी भी एक बड़ी आबादी अपने अधिकारों से वंचित है शिक्षा का अभाव जागरूकता फैलाने में बाधा बन रही है महिला दिवस के उपलक्ष्य में जिले की बुद्धीजीवी वकील महिलाएँ यही संदेश दिया है कि उन्हें अपने अधिकारों के प्रति जागरूक रहना

चाहिए जमाना बदल रहा है लड़कियाँ हर क्षेत्र में लड़कों को बराबरी का डटकर सामना दे रही है बावजूद आज भी बड़ी संख्या में महिलाएँ पिछड़ी हुई है उन्हें आगे लाने के लिए युवा पीढ़ी को विशेष ध्यान दिया है[22]

महिलाएँ शोषित होने से बच रही है और अब भी पुरूष महिलाओं को समझने लगे है महिलाओं के प्रति अपना नजरिया बदल लिया है इसके साथ ही समाज में फैली सबसे बुरी बुराई कृत्य भ्रूण हत्या को भी वे महिलाओं ने कई प्रकार से रोक लगाने का प्रयास किया है अब हमारे देश व समाज की महिलाएँ कदम से कदम मिलाकर चल रही है वह अपने अधिकारों के प्रति होती जा रही है महिलाएँ जागरूक हो रही है तथा समाज में जो पिछड़ी महिलाएँ है जो आगे नहीं बढ़ पा रही हे उन्हें भी जागरूक बनाना होगा तभी हमारे समाज व देश का स्वस्थ वातावरण होगा एवं देश का विकास होगा नारियाँ अपने आप को किसी से कम न समझे महिलाओं को अधिक से अधिक शिक्षित होता होगा शिक्षा के प्रयास के साथ ही महिलाओं में अधिकारों के लिए जागरूकता बढ़ेगी उन्होंने कहा कि कॉलेजों में भी महिला प्रकोष्ठ व कानूनी साक्षरता प्रकोष्ठ के माध्यम से बच्चों को उनके अधिकारों के बारे में परिचित करवाया जा रहा है महिला दिवस का सपना उस दिन सही मायने में साकार होगा जब महिलाओं को भी सभी कामों में बराबर की हिस्सेदारी मिलेगी जैसे–जैसे समाज में शिक्षा का ग्राफ बढ़ा है वैसे वैसे महिलाओं के प्रति सोच में बदलाव जरूर आया है महिलाओं को शतप्रतिशत साक्षर करने की जरूरत है परिवार में जो सोच एक लड़कें की होती है वह एक लड़की की भी होने लगी है।

समाज में महिलाओं की शिक्षा से लेकर सुरक्षा तक प्रदेश और केन्द्र सरकार की तरफ से तमाम योजनाएँ संचालित की गई है लेकिन योजनाओं का क्रियान्वयन सही ढ़ंग से नहीं होने के चलते कुछ महिलाएँ आज भी खुद

[22] चित्रा मुदगल, एक ज़मीन अपनी पृ. सं. 183

को उपेक्षित महसूस कर रही आवश्यकता है कि महिलाएँ अपने अधिकार के जिए जागरूक हो गई है वह समाज में अपना स्थान बनाने लगी है नारी शिक्षा यह बातें परिवार की पाठशाला का पहला पाठ होना चाहिए सोच बदलनी चाहिए सारे नियम केवल लड़कियों पर क्यों, तभी हम सोच बदल रहे है लड़का लड़की में बिना भेदभाव किए उनका पालन पोषण करना होगा लड़कियों की पहली पाठशाला उनका घर होता है।

महिलाओं को घर में स्वस्थ और एक सा वातावरण होना चाहिए अभिभावक बच्चों में जैसा संस्कार डालेगे, बच्चे वैसे माहौल में ही ढल जाऐगें लड़किया सुरक्षित माहौल में रहेगी तथा समाज तरक्की करेगा इसके लिए समाज के प्रबुद्दजनों को आगे आना होगा पंचायती राज, ग्राम प्रधान संगठन के तत्वाधान में रामदहिनपुरम स्थित कैंप कार्यालय पर आयोजित घर गृहस्थी के साथ शासन सप्ता का केन्द्र बनी महिलाएँ विषयक गोष्ठी में प्रधान संघ के प्रदेश महासचिव त्रिलोकी नाथ पांडेय ने कहा कि समाज व देश के उत्थान में महिलाओं की अहम भूमिका है महिला के बिना कोई भी अनुष्ठान अधूरा माना गया है इसलिए महिलाओं का स्थान काफी ऊंचा होता है। आधुनिक समाज महिला अधिकारों को लेकर काफी जागरूक है इसका बड़ा कारण स्वंय महिलाएँ है जो अपने अधिकारों को लेकर जागरूक हो गई है उनकी जागरूकता को गति देने के लिए कई देशी, विदेशी, गैर सरकारी तथा स्वयंसेवी संस्थाएं काम कर रहे है लेकिन ग्रामीण स्तर पर इस बदलाव का सबसे बड़ा वाहक बना रहा है महिलाओं में जागरूकता का भारी अभाव है खासतौर पर ग्रामीण क्षेत्रों में स्थिति दयनीय है शिक्षा, स्वास्थय या महिला अधिकारों के प्रति उन्हें जागरूक करने की बेहद आवश्यकता है इसमें समाचार पत्रों और सामाजिक संगठनों को बड़ी भूमिका अदा करनी होगी हालाकि पहले के मुकाबले इस स्थिति में अब बदलाव आया है लेकिन अभी भी बहुत काम करने की जरूरत है जागृत होने की जरूरत है।

आमतोर पर देखा जाता है कि परिवार के महत्वपूर्ण फैसलो में महिलाओं की भूमिका पीछे रहती है ये कोई और नहीं करता बल्कि महिलाएँ ही अपने कदम पीछे खींच लेती है महिला सशक्तीकरण की दिशा में ये स्थिति बाधक है इसमें बदलाव करना होगा महिलाओं को महत्वपूर्ण फैसले लेने होगें परिवार से शुरू होकर समाज और देश तक जाना चाहिए बेटी के जन्म के साथ ही परिवार में उसकी शादी की चिंता की जाने लगती है स्थिति ठीक नहीं है इसमें बदलाव की आवश्यकता है।

बेटियों की शादी के लिए नहीं बल्कि उनको बेहतर शिक्षा के लिए पैसा इकट्ठा करना चाहिए शिक्षित बेटी के भविष्य की चिंता उसके परिजनों को नहीं करनी पड़ती है बल्कि वे खुद अपने फैसले लेने में सक्षम हो जाती है सभ्य समाज में भी पुरूषों की तरह महिलाओं को बराबर की आजादी नहीं है। यहाँ तक कि वे अपने जीवन से जुड़ें फैसले भी खुद नहीं ले पाती है वे क्या करे और क्या ना करें ये परिवार तय करता है बेटियाँ अपनी पसंद की राह चुने, इसकी उन्हें आजादी होनी चाहिए खुद का आत्म विश्वास बढ़ाना होगा महिलाओं में पुराने जमाने में महिला सशक्त थी यही वजह है कि तमाम धार्मिक, गाथाओं में पुत्रों की पहचान उसके माँ से की जा सकती है लेकिन बीच के दौर में इसमें कमी आई ये महिलाओं को अपना खोया हुआ ये आत्मविश्वास वापस लाना होगा और कई महिला इस कार्य को करने में समर्थ नहीं है वह अपने अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ रही है।[23]

[23] औरत, कल आज और कल– आशारानी बोहरा पृ. स. 23

2.3 हिन्दी साहित्य में नारी का सम्मान :

नारी का सम्मान सदा होना चाहिए संस्कृत में एक श्लोक है– "यस्य पूज्यते नार्यस्तु तत्र रमन्ते देवताः" जहाँ नारी की पूजा होती है। वहां देवता निवास करते है" किन्तु आज हम देखते है कि नारी का हर जगह अपमान होता चला जा रहा है उसे योग की वस्तु समझकर आदमी अपने तरीके से इस्तेमाल कर रहा है नारी का हमेशा सम्मान हो नारी सबसे पवित्र रूप माँ के रूप में देखते से आता है माँ को ईश्वर से भी बढ़कर माना गया है क्योंकि ईश्वर की जन्म दात्री भी नारी ही रही है यह एक चिंता जनक पहलू है।

सब धनलिरसा व मेरे बच्चे यही आजकल परिवार की परिभाषा रह गई है फिर बुजुर्ग माता–पिता की सेवा कौन करे यह सवाल आजतक यक्षपत्र की तरह चहुंओर पांव पसारता जा रहा है नई पीढ़ी को आत्मावलोकन करना चाहिए कि अगर आज की लड़कियों पर नजर डाले तो हम पाते है कि लड़कियाँ आजकल बहुत बाजी मार रही है इन्हे इन्हे हर क्षेत्र में हम आगे बढ़ते हुए देखते है विभिन्न परीक्षाओं की मेरिट लिस्ट में लड़किया तेजी से आगे बढ़ रही है किसी समय इन्हे कमजोर जाना जाता था किन्तु इन्होंने अपनी मेहनत और मेघा शक्ति के बल पर हर क्षेत्र में प्रवीणता अर्जित कर ली है इनकी इस प्रतिभा का सम्मान किया जाना चाहिए।

विवाह पश्चात् तो महिलाओं पर और भी भारी जिम्मेदारी आ जाती है घर वालों की सेवा के पश्चात् उनके पास अपने लिए समय ही नहीं बचता है व कोल्हू के बैल की भांती घर परिवार में ही रहकर घर के सभी कामों को करती है संतान के जन्म के बाद तो उनकी जिम्मेदारी और भी बढ़ जाती है घर परिवार को सम्हालना सभी कार्यों को करना एक आम महिला का जीवन व्यापन करना कई बार वे अपने अरमानों का भी गला घोट देती है। घर परिवार की खातिर उन्हें इतना समय भी नहीं मिल पाता है कि वे अपने लिए भी जिएं परिवार की खातिर अपना जीवन को अच्छे से नहीं जीते है और वे

घर परिवार के कार्य करती है पारिवारिक जिम्मेदारियों को निभाते निभाते कहीं न कहीं उनकी आँखों में उनके सपने अधूरे रह गए है।

कुछ महिलाएँ ऐसी है जिन्हें पढ़ने लिखने का मौका ही नहीं मिला उन्हें हमेशा से यही बताया गया है कि उनके जीवन का पहला उद्देश्य सिर्फ घर के काम करना खुद सारे देश की जननी होकर वह अपनी पहचान से ऐसी दूर क्यों है वह समझ ही नहीं पाती कि वह आखिर क्या करें एक तरफ बेटी को घर के काम–काज ठीक से आने चाहिए ओर दूसरी तरफ लड़कें की पढ़ाई पर विशेष ध्यान दिया जाता है। शुरू से ही उन्हें कमजोर बता दिया जाता है कोई भी उन्हें आत्मनिर्भर बनने की शिक्षा नहीं देता जब तक वो बड़ी होती है। खुद को समझ पाती है तब तक बहुत देर हो जाती है नारी के सम्मान की बात करें तो उनको उनकी जिम्मेदारियों और फर्ज घर के बच्चे बच्चे को पता है मगर उनके अधिकारों की बात की जाये तो उससे सभी अंजान होते है।

gaurav shete

नारी खुद इस बात से अंजान होती हे उनके अधिकार क्या है उन्हें उनके अपने निर्णय लेने का भी अधिकार नहीं होता। यह एक विडम्बना नहीं तो क्या है कि भारतीय समाज में नारी की स्थिति अत्यन्त विरोधाभासी रही है इसलिये नारी अपनी क्षमताओं को पहचान नहीं पाती आज भी वह अपनी पहचान से बहुत दूर है हालाकि देश के कई जगहों पर और कई घरों में जागरूकता दिखाई देती है आज जरूरत है महिलाओं को स्वयं आगे बढ़ने की अपने अधिकारों को पहचाने की सबसे पहले नारियों को आत्मनिर्भर बनना होगा उन्हें ये जानना होगा कि उनके अन्दर असीम क्षमताएँ है सबसे ज्यादा उन महिलाओं को जागरूक करना होगा जो पढ़ी लिखी नहीं है या जो पढ़ी लिखी होकर भी घर की चार दीवारों में कैद है आज की युवा अपने कदम से कदम मिलाकर चलने वाली अर्धांगिनी चाहते है इसके लिए वह घर की जिम्मेदारियां भी बांटने के लिए तैयार रहते है।

आज जो भी महिलाएँ बड़े–बड़े पदों पर है जिन्होंने भी कोई मुकाम हासिल किया है अगर उनका परिवार उन्हें सहयोग नहीं देता तो उनके लिए इसी ऊँचाई तक पहुँचना मुमकिन नहीं होता नारियों के विकास के लिए हमें अपने विचारों में बदलाव लाना होगा नई विचारधाराओं को नई सदी के साथ एक नये प्रकाश में आगे बढ़ना होगा जिस प्रकाश में नर और नारी एक समान दिखाई दे नारी का सारा जीवन पुरूष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने में ही बीत जाता है। पहले पिता की छतृछाया में उनका बचपन बीतता है। पिता के घर में भी उसे घर का कामकाज करना होता है। तथा साथ ही अपनी पढ़ाई भी जारी रखनी होती है। उसका यह क्रम विवाह तक जारी रहता है यही कहना ठीक होगा कि हर महिला का सम्मान करें क्योंकि दुनिया की आधी आबादी के बलबूते पर ही आदमी यहाँ तक आया है उसे ठुकराना नहीं चाहिए जिस नारी के बलबूते पर आदमी यहाँ तक आया, उसका तिरस्कार, अपमान कतई उचित नहीं का जा सकता है। भारतीय संस्कृति में महिलाओं को देवी दुर्गा व लक्ष्मी आदि का यथोचित सम्मान दिया गया है उसे उचित सम्मान दिया जाना चाहिए।

Saurav Shree

2.4 भारतीय नारी में शिक्षा का महत्व :

आज हमारे देश की योग्य नारियाँ देश विदेश में उच्च शिक्षा प्राप्त कर रही है वे कुशल डॉक्टर, इंजीनियर, आईपी.एस अफसर तथा पुलिस की बड़ी नौकरियों एवं सेना में काम कर रही है कुछ ऐसे सेवा के क्षेत्र भी है जिसमें महिलाएँ अपनी अग्रणी भूमिका निभाती है।

शिक्षा प्रचार के कारण महिलाएँ एक शिक्षक के रूप में भी अपनी विशिष्ट भूमिका निभा रही है एयरहोस्टेस के रूप में तो नारियाँ काम करती ही है अब वो विमान चालक के रूप में भी काम करने लगी है यह सब नारियों की शिक्षा तथा उनकी लगन का ही परिणाम है जो उन्हें देश सेवा की अग्रणी पंक्ति में समान स्थान दिला रहा है पुलिस में भी सिपाहियों से लेकर ऊँचे–ऊँचे

पदों तक में नारियों की भागीदारी बढ़ रही है ऐसा विचार किया जा रहा है कि सरकारी सेवा विधान सभा तथा लोकसभा के चुनावों में नारियों के लिए कम से कम 30 सीटे आरक्षित की जाये। ग्राम प्रधान के रूप में नारियों की लोकप्रियता बढ़ती जा रही है ऐसा विश्वास किया जाता है। शिक्षा प्राप्ति में उनका प्रतिशत बढ़ने से स्वतंत्र नारियाँ देश की सभी प्रकार की सेवाओं में अग्रणी भूमिका निभा सकेगी।

हिन्दुस्तान की आजदी के बाद जिस तेजी के साथ शिक्षा की ओर जोर दिया जाना चाहिए था वह नहीं हो सका हर इंसान आस–पास के वातावरण को देखकर कर यह अंदाजा लगा लेता है कि नारी शिक्षा का फैलाव हो गया है। बहुत सी लड़कियाँ स्कूल जाने लगी हे ऊँची पढ़ाई पढ़कर ऊँचे ओहदे पर भी तैनात हो गई है लेकिन ऐसी महिलाओं की संख्या बहुत कम है शिक्षा का स्तर बढ़ने के साथ–साथ रोजगार के अवसरों में जो तेजी आनी चाहिए थी वह नहीं आई इसकी वजह से पुरूषों की तरह ही नारियों में भी हताशा की भावना बढ़ने लगी है।

2.5 हिन्दी साहित्य में नारी शक्ति पर विचारः

राजाराम मोहन राय, ईश्वरचन्द, विद्यासागर जैसे महान विचारक एवं समाज सुधारकों ने इन कुरीतियों से नारी को होने वाली हानियों को अनुभव किया तो उन्होंने नारी स्वाधीनता की आँवाज उठाई जिसमें नारियों में कुछ जागृति के लक्षण उत्पन्न होने लगे और अनेक महिलाओं को आगे बढ़ाने के प्रयास किया गया। मानव समाज का मार्गदर्शन कराने में प्रशासनीय कार्य कर दिखाया।

नारी उस वृक्ष की भाँति है जो विषम परिस्थितियों में भी तपती रहते हुए भी राहगीरों को छाया प्रदान करता है। नारी की कोमलता एवं सहनशीलता को कई बार पुरूष ने उसकी निर्बलता मान लिया और इसलिए उसे अबला

कहा किन्तु वो अबला नहीं वो तो सबला है। वर्तमान समय में नारियाँ एक सुयोग्य गृहणी होने के साथ–साथ राजनीति, धर्म, कानून, न्याय सभी क्षेत्र में पुरूष की सहायक और प्रेरक भी है। आज की नारी जागृत एवं संक्रिय हो गयी है वह अपने अंदर नीति शक्तियों को जानने लगी है जिससे आधुनिक नारी का समाज ने केवल सम्मान अपितु प्रतिष्ठा भी बढ़ाई है व्यवसाय एवं व्यापार जैसे पुरूषों एकाधिकार वाले क्षेत्र में जिस प्रकार महिलाओं ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई हे वो काबिले तारीफ है आज के दौर में नारी किसी भी रूप में पुरूषों का सामना कर रही हे यह संभव हो पा रहा है उस शक्ति के द्वारा जो प्रत्येक नारी के अंदर प्रकृति द्वारा प्रदत्त है और उसे कुंठित नहीं होने देती है। देश की आधी जनसंख्या यानी की महिलाएँ जितनी ज्यादा आत्मनिर्भर होगी वह देश उतनी ही तरक्की करेगा इसके लिए महिलाओं और पुरूष दोनों का जागरूक होना अति आवश्यक है आज की युवा पीढ़ी काफी हद तक जागरूक भी है युवाओं में एक नया उत्साह देखने को मिलता है।

युवा वर्ग पीढ़ी पढ़ी लिखी और नौकरी पैशा लड़की से शादी करना चाहता है उन्हें सिर्फ घर के काम करने वाली लड़की नहीं चाहिए आज के युवा अपने कदम से कदम मिलाकर चलने वाली अर्द्धांगिनी चाहते है इसके लिये वह घर की जिम्मेदारियाँ भी बांटने के लिए तैयार रहते है।

2.6 आदमी की निगाह में औरत

भारतीय उपमहाद्वीप में स्त्री पुरूष के संबंधों के बारे में खुलकर बात करने की मनाही नहीं है, पर आज भी इसे एक संदिग्ध कर्म की श्रेणी में रखा जाता है कई लोगों के लिए तो हाफने झपने के लिए मजबूर करने वाला संकोच में डाल देने वाला या बेचेन कर देने वाला अशोभनीय कृत्य होता है। पर सच यह है कि स्त्री पुरूष के संबंधों की कथाएँ भी बहुत सारी वासना, प्रेम, घृणा और आवेग से लिथड़ी हुई है किसी गहरी काली शाम में जैसे किसी समृद्ध के तट पर रहस्मयी चट्टानें एक दूसरे को देख रही होती है। कुछ

उदास आँखों से कुछ उसी तरह स्त्री और पुरूष बहुत पास होकर भी दूर होते है उनकी देह और मन पर अंसख्य आशंकाओं की परते चढ़ी रहती है और उन परतों के नीचे उनके मन की कोमल गोपन दुनिया होती है। भारत जैसे पिछड़े समाजों में दुर्भाग्य से पुरूषों को बहुत जल्द चरित्रवान होने का अभिनय सीखना पड़ता है यही अभिनय स्त्रियों को भी सीखना पड़ता है। चरित्र की पूरी धारणा ने पुरूषों व स्त्रियों दोनों को सबसे ज्यादा ठगा है, नुकसान पहुँचाया है पुरूषों के मामले में चरित्रवान होने का मतलब केवल औरतों से दूरी बनाकर रखना होता है। चरित्र यहाँ कोमल रूई के जैसा फाहे होता है। जो जरा से स्पर्श में बिखर जाता है। सारा चरित्रवान होने का अभिनय करते करते कई बार उस स्थिति में पहुँच जाता है जब स्त्री को अपने लिए अबूझ और रहस्यमय बना लेता है उसकी बाहरी और भीतरी दुनिया में दरार पड़ जाती है वक्त के साथ वह दरार फिर कभी नहीं भर पाती चरित्रवान होने के बेवकुफी भरे दबाव के कारण ही वह बहुत सारे अवैध व अनुचित रास्तों से स्त्री तक पहुँचाने का प्रयास करता है कई बार ये रास्ते उसे खंडित रिश्तों, भटकाव, वैश्यालयों विकृतियों व पोर्न सामग्री की दुनिया में ले जाकर छोड़ देते है वह सत्य जो भरपूर उजाले में मिल सकता है वह उसे ढुँढने के लिए अंधकार की तरफ चल देता है।[24]

अबूझ रहस्यमय चीजों के साथ आम तौर पर मानवीय समता का व्यवहार नहीं किया जाता है या तो उन्हें नष्ट किया जाता है या दूर कर दिया जाता है या फिर उनकी मुर्तियाँ गढ़कर उन पर फूल माला चढ़ाई जाती है गाँवों में बहुत सारी स्त्रियों को रहस्यमय मानकर उनकी छायाँए अगर की गई है, तो उनके पीछे स्त्रियों के पाप अपराध नहीं बल्कि पुरूष दृष्टिकोण जिम्मेदार रहे है।

[24] पत्ताखोर – मधु काकरिया पृ. स. 8, 12

अगर आदमी की निगाहों की बात करें तो उन निगाहों ने किसी ही तरह से स्त्रियों को देखा है, भोगा है ओर उसे अपने अनुसार ढाला है आधुनिकता के आगमन से पहले पुरूष को स्त्रियों के बारे में अपने दृष्टिकोण को ज्यादा निद्वंद भाव से जीने की छूट थी स्त्री के बारे में पुरूष की निगाह ही शासक निगाह थी लेकिन आधुनिकता ने दृष्टियों या दृष्टिकोणों को उनके सुरक्षित किलों से खींचकर बाहर निकाल लिया है ठीक वैसे ही जैसे विला हारने के बाद सामंत को कैदकर बाहर लाया जाता था और उस पर मुकदमा चल सकता था औरतों के बारे में आदमी की पुरानी निगाहै अब अदालत में खड़ी है उन पुरानी अकड से भरी गंदी निगाहों से जिरह की जा सकती है उन्हें अपना पक्ष रखने की छुट है पर खुद को सही सिद्ध करने की नही। पुरूष की निगाहै स्त्री के बारे में स्थिर नहीं रहती है बल्कि वे बदलती है लेकिन कुछ चीजें नहीं भी बदली है और उनमें से यह है कि आदमी की निगाहों में वहीं स्त्री सही मायने में स्त्री होती है। ये दमित इच्छाएँ इतनी जटिल होती है कि खुद पुरूष को उनके सही रूप की ठीक जानकारी नहीं होती है। इन सारी दमित इच्छाओं के सामने पुरूष रह रहकर शर्मिंदा होता है। पर उन्हीं के सहारे वह जीवन को जीने लायक भी बनाता है इन दमित इच्छाओं में अपना शासन थोपना अपनी कल्पनाएँ थोपना और अपनी शक्ति थोपने का पूरा खेल संचालित होता है।[25]

फिर सत्ता की कंडीशनिंग की उसमें बड़ी भूमिका होती है ऐसा नहीं है कि आदमी को हमेशा इस खेल में विजय मिलती है वह बहुत बार हारता और परास्त भी होता है। पर वह कहीं न कहीं इस उम्मीद से भरा रहता है कि खेल में उसे विजय दिलाने वाली स्त्रियों को वह तलाश लेगा या फिर ऐसी स्त्रियाँ जो पुरूष से हारने में सार्थकता देखती है, वे खुद चलकर उसके

[25] एक जमीन अपनी – चित्रा मुद्गल – 183

पास आ जाएगी पितृ सत्ता उसे हिसंक घृणित तथा आक्रमक बनाकर उसके व्यक्तित्व के पूरे सौंदर्य को नष्ट कर देती है।

इसलिए नारीवाद अगर यह कहता है तो ठीक ही कहता है कि पितृसत्ता केवल स्त्रियों के खिलाफ नहीं बल्कि पुरूषों के खिलाफ भी है वह स्त्री को अगर स्वतंत्रता से वंचित करती है, तो पुरूष को उसकी मानवीयता से औरत हो या आदमी वे एक दुसरे के बारे में सब कुछ जान चुकने के अहसास से भरे होते है पर फिर भी उनमें एक दूसरे को जानने की अंततः जिज्ञासा का समुह लहराता रहता है वे एक दूसरे के प्रति सार्वजनिक उदासीनता का दिखावा करते है और निकट आने के लिए उतनी ही तीव्रता से सपने बुनती है लगता है जैसे आकर्षण के अनगिनत बीज मन की नम मुलायम दुनिया में दबे होते हैं। जो हल्के से खाद पानी का स्पर्श पाते ही लहलहा उठते हैं। विश्व साहित्य में ऐसे कितने ही चरित्र है जिनमें कई बार प्रेम पाकर भी प्रेम की तड़प से घिरे पात्र है इनमें नायिकाएँ है और नायक भी बार बार अन्ना कैनेसिना की नायिका याद आती है जिसका भरापुरा खुशहाल घर है, बेटा है पर वह विवाहेत्तर संबंध की कल्पना से भरी हुई है जब उसका पति कुलीनता व सामाजिक प्रतिष्ठा का हवाला देकर रोकता है तो वह कहती है देर हो चुकी है, देर इसके बाद वह रात में देर तक अंधेरे में आँखें खोल लेती है और तात्सताय के शब्दों में मानो अंधेरे में वह खुद अपनी आँखों की चमक देख रही है खुद को अपराधिनी व दोषी मानने की पीड़ा से घिर गई है लेखक की दृष्टि में वह प्रेम की साकार प्रतिमा के रूप में उभरी है पर ताल्सताय बड़े लेखक होने के कारण प्रेम को लेकर उसके गहरे सामाजिक द्वंद्व को भी बखूबी उभारा है प्रेम वहाँ अकेलेपन का चुनाव है और उस अकेलेपन की दहशत में एक त्रासद आत्महत्या की निर्यात छिपी है।

आदमी की निगाह में औरत कभी संपूर्ण मनुष्य का दर्जा हासिल नहीं कर पाती है क्योंकि आदमी के मन में संपूर्ण होते कि कोई दबी लालसा होती

है। यह दबी लालसा सदा अधूरी रह जाती है क्योंकि वास्तविकता में संपूर्ण पुरूष बन जाने जैसी कोई स्थिति कभी होती ही नहीं है न डमरू होगा न वृंदावन न क्षीर सागर। वह बहुत ही करूण ढ़ंग से समर्पित स्त्री के सामने ही संपूर्ण पुरूष बन सकता है। स्त्री पर उठा हाथ या लात उसे बनने का अहसास देती है। स्त्री को दुनिया का आखिरी उपनिवेश भी इसी कारण माना जाता है पर उसे स्त्री से डर भी लगता है कि कहीं वह उसके वस्त्र, क्षरित और दुर्बल पुरूषत्व को जिसे वह छिपाकर रखता है अपनी आँखों से देख न ले इसलिए वह स्त्री को पहले से ही शाश्वत रूप से कमजोर दुर्बल घोषित कर देता है आदमी यही जानता है कि वह दब रहा है, टूट रहा है, समझौते कर रहा है चेतना पर भयानक जख्म और रिसते हुए घाव लेकर जीता है उसका यह भेदभाव व ऊँचनीच से भरी दुनिया में हर क्षण या तो आहत होते है, खासतौर पर रोजगार व आर्थिक सुरक्षा के मौर्चे पर तो उनके व्यवहार बेहद अटपटे और पीड़ादाय हो जाते है यानी इस व्यवस्था में पुरूष स्त्री के बराबरी के व्यवहार की क्षमता खो देता है। वह स्त्री के साथ संबंध को अपने अहम की सुरक्षा के आखिरी मोर्चे के रूप में देखने लग जाता है।

खासतौर पर उम्र के साथ जब रोमांस की भावना घटने लगती है तो यह समस्या गंभीर होती जाती है इसके बाद वह स्त्री को अधीन बनाने के अपने पारंपरिक अधिकार को रिक्लेम करता है या फिर वह स्त्री की उपेक्षा कर उसे दंडित करता है वह जानता है कि स्त्री सबसे ज्यादा उपेक्षा से डरती है और वह उसी हथियार का सबसे ज्यादा सहारा लेता है।

सामाजिक संरचना परिवार की इकाइयों से निर्मित होता है, जिसमें नारी की भूमिका प्रमुख है स्त्री पुरूष के सहयोग सम्मिलन से ही यह सुचारू रूप से चलता है। आधुनिक महिलाएँ अपने पति को नचाने में कुशल है पति को सर्वस्व मानना तो दूर अपशब्द कहने में भी संकोच नहीं करती है पप्ताखोर

उपन्यास में मधु कांकरिया जी वनश्री का चित्रण उसी प्रकार की नारी के रूप में किया है।

हेमंत बाबू की पत्नी हर दिन झगड़ा करती है हेमंतबाबू अपनी पत्नी वनश्री द्वारा डॉट सुनने का कारण है कि वह अपने बेटे आदित्य का पक्ष लेते है मेरे पापा पर माँ स्कूल की प्रिंसिपल की तरह बरस रही थी पापा शायद माँ की कोई फरमाइश पूरी करना भूल गये थे भूले तो भूले पर जिस मस्तमौलापन और हाथी चाल से झूमते हाथों में दमकती गई किताब लेकर वे घुसे कि माँ भीतर तक मचमचा उठी भरपूर ताकत से उन्होंने किताबों को राकेट की तरह हवा में उछाल दिया

वनश्री का स्वभाव विद्रोही लड़ाकू बताया गया है बार – बार पति पत्नी द्वारा सताया जाता है। माँ ने फिर एक बार घोषणा की, की इस आदमी में न कमाने की कूब्बत है और न बच्चें संभालने की और न फिर होंठ टेढे करते हुए माँ ने एक शब्द फेंका था पिता पर वास्टर्ड आज स्त्री पुरूषों के बीच संबंधों का दृष्टिकोण बदल रहा है।

नैतिकता शब्द युगीन पृष्ठभूमि में बौद्धिकता के तले कुचला जा रहा है प्रेम की नई परिभाषा गढ़ी जा रही है जिसमें न शील का आग्रह है न चरित्र की उदारता बस है तो स्व का आग्रह और सुधा की तृप्ति आंवा उपन्यास में चित्रा मुद्गल ने स्त्री पुरूष के जीवन स्थिति को बखान किया है मानव गतिविधियाँ जब अस्त व्यस्त हो सकती है और समाज व्यवस्था बिगड़ जाती है इसलिए अपेक्षाकृत अधिक महत्वपूर्ण एवं प्रासंगिक जीवन को मानव जीवन में प्रश्रय देना ही उचित है अशिक्षित परिवारों से अधिक शिक्षित परिवारों में स्त्री पुरूष संबंध हवस्त होते नजर आते है आज की लड़कियाँ विवाह के पश्चात भी स्वतंत्र जीवन जीना चाहती है।

इसमें लेखक ने विवाह की ऐसी समस्या को अंकित किया है जो नारी स्वतंत्रता पर आधारित है परिवार एक ग्रहस्थ समूह है जिसमें माता–पिता और संतान के साथ–साथ रहते है इनकी दृष्टि में दंपत्ति और उनकी संतान रहती है चित्रा मुद्गल अपने एक जमीन उपन्यास में परिवार में स्त्री पुरूष के अपवित्र संबंधों का वर्णन करती है मनुष्य के व्यक्तिगत को चलाने और उसका विकास करते हुए संबंधों एवं व्यवहारों को बनाए रखने की आधारभूमि है और व्यवहारों को बनाये रखने की आधारभूमि है मेहता उपन्यास का नायक है उसकी पत्नी कोकिला अपने पति से दांपत्य जीवन में अतुप्त होकर अपने देवर के साथ अपनी यौन इच्छाओं को पूर्ण करती रहती है जब देवर की मंगनी निश्चित होती है। तो असुरक्षा का अहसास करती है क्योंकि देवर नई जिंदगी की शुरूआत से पहले अपनी भाभी को दूर रखने लगता है माँ ने भाई का रिश्ता तय कर दिया मंगनी होते ही एकाएक भाई का मन कोकिला की और विरक्त होने लगा वह बहुत कोशिश करती उसे घेरने की भाई को शायद यह मान हो चुका था जन्मदिन के चार दिन बाद कहीं जाकर स्मिता ने ममता को फोन लगाया अब तू बता झल्लोसनी एक हो गया तेरा जन्म दिन उपर से नई नौकरी कब खिला पीला रही। इतवार को मार गोली चल बता देना पर जरा पहले विक्रम को भी न्यौता विक्रम, विक्रय कौन मेरा नया दोस्त शरत से मित्रता खत्म ही समझ बेवकुफ हे आंवा उपन्यास में चित्रा मुद्गल ने स्त्रियों के संघर्ष उनके अस्मिता बोध पुरूष के विरोध में उठने वाले स्वर के रूप में प्रस्तुत किया है उपन्याास की एक और नारी सुनंदा विवाह संस्था के बाहर माँ बनना स्वीकार करती है।

सुनंदा किशोरी बाई की बेटी है जिसका मुसलमान प्रेमी सुहैल विवाह करने के लिए राजी है परन्तु उसमें इस्लाम धर्म अपनाने की शर्त रखता है। इस स्थिति में सुनंदा विवाह से इनकार कर देती है क्योंकि केवल शादी करने के लिए वह अपने व्यक्तित्व की पहचान खोने को तैयार नहीं सुनंदा के माध्यम

से लेखिका यह संदेश देना चाहती है कि स्त्री को अपने स्वयं की लड़ाई घर से ही आरंभ करनी है क्योंकि उसकी आँवाज को दबाने की पहल घर में ही होती है। आदमी को हमेशा यह भय सताता रहा है कि अगर औरत उसकी बराबरी करने लगी तो क्या होगा फिर बराबरी में न आ जाए इसलिए पुरूष मानसिकता को इसी बात में भलाई नजर आती है कि उसे सहेली की बजाय पहेली बनाकर रखो सामाजिक रितियाँ मूल्य निर्धारण में अहम भूमिका निभाती है प्रेम मानव जीवन की मृदुतम भावना है जो विभिन्न युगों में भिन्न भिन्न रूपों में विद्यमान रही है जब हम प्रणय को मूल्य मानते है तो हमारा मंतव्य क्या है प्रणव के प्रति मूल्य दृष्टि का अर्थ होगा कि या तो हम इसे मानव जीवन की सार्थकता अथवा सफलता की शर्त या कसौटी मानते है या फिर ऐसी शक्ति है जो जीवन को प्रफुल्लता और उसके साथ ही पूर्णता प्रदान करती है दोनों स्थितियों में इसकी काम्यता अथवा महत्ता प्रभावित होती है। आंवा उपन्यास में लेखिका कहती – अपने लाभ के लिए समाज दो प्रेमियों को जो कि स्वयं आत्मनिर्भर होकर अपने और अपने परिवार के लिए पालन पोषण में समर्थ हो सकते है उन्हें जाति धर्म के साम्प्रदायिक उन्माद में झोंक देता है तो दूसरी तरफ दलित और स्वर्ण के विवाह बंधन में बांधने का प्रस्ताव रखकर राजनीतिक सीढियाँ बढ़ने की पृष्ठभूमि बनाकर उसे सही मानता है। खेवाड़े के माध्यम से पवा नमिता पर अपनी मंशा जाहिर करता है। जीवन साथी के रूप में ब्राहम्ण और दलित का गठबंधन सुंदर बुद्धिमती संताने ही नहीं देता, राजनीति में भी फलदायी समीकरण सिद्ध होगा, स्वर्ण अवर्ण दोनों के वोट झोली में होंगे आदमी औरत अपने संबंधों को किस तरह का नाम दे वह उनकी मानसिकता पर ही निर्भर करता है।

स्त्री पुरूष दोनों समाज में मुख्य पहलु माने जाते है स्त्री बिना पुरूष, पुरूष के बिना स्त्री का जीवन परिपूर्ण नहीं हो सकता। दांपत्य जीवन स्त्री पुरूष को एक अलग प्रकार का अनुभव दे डालता है।

मैं बोरिशाइल्ला उपन्यास में माखोनी बाउदी नामक स्त्री पात्र के दृश्यचरित्र का वर्णन किया गया है। जिसका पति शहर में नौकरी करने जाता है और महिनें में एक बार वह अपनी पत्नी के यहाँ आता है। माखोनी बावड़ी अपने पति को धोखा देती हुई अपने एक रिश्तेदार कनाई दा नामक पुरूष से अवैध संबंध स्थापित करती है माखोनी का यह अनैतिक व्यवहार समाज के लिए एक प्रश्न चिन्ह बन जाता है परन्तु पति एवं परिवार के अन्य सदस्यों की दृष्टि में वह अपराधि मानी जाती है प्रत्येक मानव के लिए सामाजिक प्रक्रिया से संबोधित होना आवश्यक है क्योंकि यही वह मिट्टी है जिसमें समस्त मूल्य अंकुरित होते है।

समाज के रीति रिवाजों को निभाना पुरूष और स्त्री दोनों को आवश्यक है स्त्री पुरूष संबंधो को भी उसे सावधानी से निभाना पड़ता है, क्योंकि ये संबंध जितने ही मजबूत रहेंगे वह परिवार भी उतना ही मजबूत रहेगा स्त्री पुरूष के बीच अन्य कोई तीसरा हस्तक्षेप करेगा तो परिवार अपना अस्तित्व ही खो सकता है इस प्रकार का संदर्भ मैं बोरिशाइल्ला उपन्यास में प्रस्तुत किया गया है।

स्त्री पुरूष के संबंधों का वर्णन करते हुए मैं मैत्रेयी पुष्पा कहती हैं कि ग्रामीण परिवेश में स्त्री कमजोरी का फायदा उठाने वाले पुरूष समाज में अधिक मात्रा में मिल जाते है ऐसी स्त्रियों की मदद करने के लिए सामाजिक संगठनों को आगे आना चाहिए तभी स्त्रीवर्ग को न्याय मिल सकता है। स्त्री पुरूष संबंध सकारात्मक भावना से चलते है तो परिवार में सुखमय वातावरण बना रहता है आज के आधुनिक समाज में तो स्त्री पुरूषों के बीच मित्रता पनपना स्वभाविक है भारतीय समाज में भी आजकल यह भी देखने को मिलता है कि स्त्री पुरूषों में भी मित्रता जम रही है श्रृंगारिक भावनाएँ व्यक्ति को मोहमाया में फंसा देती है।

एक जमीन अपनी उपन्यास में चित्रा मुद्गल आज के आधुनिक समाज में सामाजिक संबंधो में पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव किस प्रकार पनप रहा है चित्रित किया उपन्यास में परिवार में अपवित्र संबंध का उदाहरण है कि माँ ने भाई का रिश्ता तय कर दिया मंगनी होते ही एकाएक भाई का मन कोकिला की और विरक्त होने लगा वह बहुत कोशिश करती उसे घेरने की मगर भाई को शायद यह मान हो चुका था।

चित्रा मुद्गल ने एक जमीन अपनी उपन्यास में स्त्री पुरूष संबंधों में आ रही परिवर्तनशीलता को बहुत ही रोचक ढंग से प्रस्तुत किया है कोकिला का पति मेहता अंकिता की और आकर्षित होता है। अंकिता और मेहता के बीच बहुत अच्छी दोस्ती होने लगती है एक दिन शाम को मेहता अपने कई अनुभवों से मुक्ति पाने के लिए अंकिता के घर चला जाता है ताकि उससे बातें करते रहे उपन्यास में स्त्री पुरूष संबंधों का गहन विश्लेषण विमर्श है मेहता से ही नहीं अंकिता हरीन्द्र जो पत्रिका रिपोर्टर है उससे भी अच्छी मित्रता रखती है अंकिता ऐसे स्वभाव की है कि सिर्फ वह अपने दिल को जो सही लगता उसके लिए किसी हद तक भी कर गुजरने को तैयार रहती है कुछ वर्ष पहले उसके घर वालों ने उसका विवाह प्रतिष्ठित परिवार में करना चाहते थे। किन्तु अंकिता सुधांशु से विवाह की बात को लेकर माँ और परिवारजन से झगड़ कर बैठती है और कहती है कि मैंने डेढ वर्ष पहले ही सुधांशु से रजिस्टर्ड मैरिज कर ली है अब मेरी शादी करने की आवश्यकता नहीं और कोई फर्क नहीं पड़ेगा।

समाज में आये दिन होने वाले परिवर्तनों का प्रभाव जीवन बोझ को नई दिशाओं दशाओं और संभावनओं से भरता रहा है पुरूष और स्त्री इन परिवर्तनों के भोक्ता है। नियति से ही पुरूष और स्त्री के जीवन में जो भेद है उसे पुरूष ने और भी अधिक विषय बना दिया है परन्तु नारी जागरण की दिशाओं

और संभावनाओं में प्रगति होने के कारण नारी जीवन और जगत में मृत्युगत संक्रांति हुई है स्त्री पुरूष के दांपत्य संबंधों में बड़ा परिवर्तन दिखाई देता है।

इक्कीसवीं सदी में नारी अपने अस्तित्व के प्रति सचेत है, संकटग्रस्त जीवन में भी अपने को परिवार के साथ जीना चाहती है इसी कारण वह कई बार आत्मलांछना की समाज द्वारा शिकार होती रहती है यद्यपि संस्कारों के जकड़ म से नारी मुक्ति पाना चाहती है किन्तु मन पर पड़े संस्कारों की गहरी छाप से मुक्ति पाना असंभव सा लगता है। देश में असंख्य नारियाँ है जो परंपरागत भारतीय मानसिकता से जुड़ी है वह चाहकर भी बने बनाये दायरे से बाहर नहीं आ सकती है पुरूष द्वारा शोषण होने पर भी उससे जुड़कर रहने की मांग करता है।

नारी की समस्या को बदलते जीवन में सुधार नहीं लाया है केवल परिवर्तन नगरीय और महानगरीय समाजो में कुछ शिक्षित बौद्धिक वर्गों की नारी भी अधिकारों के प्रति संचेत हुई है पुरूष के भी नारी के प्रति अपनी दृष्टि बदल रही है बदलते सामाजिक परिवेश में अपने स्वतंत्र अस्तित्व तथा अस्मिता के प्रति संचेत होकर नारी अपने पुरूष के समकक्ष स्थापित करने लगी आज की और अपने कार्य व्यवहार एवं वैचारिक चिंतन में नई मानसिकता लिए हुए है।

आदमी की निगाह में औरत के अवसर दो आयाम होते है एक और वह औरत को परिवार संस्कृति के अनुसार जीते देखना चाहता है और इस इच्छा का विकास औरत को पत्नी माँ या बहन बनाने के रूप में होता है। दूसरी और वह औरत को परिवार संस्कृति से विच्छिन्न असहाय दशा में देखना चाहता है जहाँ वहीं औरत उसके लिए तवायत, बदचलन बन जाती है पुराने समाजों में ही आज भी ऐसा होता है।

2.7. समाज के आधार पर नारी का चरित्र चित्रण

2.7.1 नारी की अवधारणा :

भारतीय समाज पुरूष प्रधान समाज रहा है जहाँ आदिकाल से स्त्री पुरूषों की इच्छानुसार जीवन यापन करती है उसे किसी ने कभी सार्थक व्यक्तित्व ही नहीं माना लेकिन राख के भीतर दबी आग की चिनंगारी के समान स्त्री की अस्मिता समय समय पर अपना रूख दिखाती आई है और आज स्त्री को स्वतंत्रचेतना नागरिक के रूप में स्वीकार किया गया है। सत्य किसी भी एक व्यक्ति में सिमटकर नहीं रहता जब वहीं सत्य अपनी सीमाओं को लांघता एक से दूसरे और दूसरे से तीसरे में आ जुड़ता है तभी व्यापक सत्य कहलाता है फिर यही सत्य साहित्य सृजन की अस्मिता तथा मानवीय चेतना की पहचान भी करता है।

आधुनिक युग के प्रारंभ होने के साथ जहाँ बदला वहीं मूल्य भी बदले स्त्री अस्मिता में भी नए विमर्श का समायोजन हुआ कई एक पुरूष कथाकारों और स्त्री कथाकारों ने भी एक एक स्त्री के नजरियें से स्त्री को देखने परखने और उनकी समस्याओं से जुझने की कोशिश की लेकिन कई बार इस कोशिश में स्त्री परम्परागत छवि लिए महिमामयी बन कर उभरी या फिर संस्थागत मूल्यों में दबती पिसती कारूणिक छवि लिए पुरूषों ने सुरक्षा और संरक्षण की भीख मांगती वेचारी सी भारतीय जीवन में स्त्री की अवधारणा का सत्य अपने स्वरूप आधार और सामाजिक परिप्रेक्ष्य की असलियतों से किस प्रकार आगे जुझता हुआ सही मानवीय परिप्रेक्ष्य में आगे जुझता हुआ सही मानवीय परिप्रेक्ष्य में आगे बढ़ता है यह चिंतनीय प्रश्न के रूप में सामने आता है साथ ही यही जानना भी जरूरी है कि हिन्दी साहित्य में भी स्त्रियों की चिंताओं को पुरूषों ने ही मर्दवादी नजरों से देखते जानने का प्रयत्य किया।[26]

[26] डॉ. उमैला गुप्त हिन्दी कथा साहित्य के विकास में महिलाओं का योगदान पृ. सं. 104

2.7.2 नारी का स्वरूप :

अपने अस्तित्व को जानना मनुष्य के लिए एक ऐसा महत्वपूर्ण कार्य है जो जीवन को सत्य, शिव और सुन्दर बना देता है हमारे उपनिषदों में कहा गया है, आत्मान विधि अर्थात् अपने को जानों भगवतगीता कहती है कि सभी प्रकार के ज्ञानों में आत्मज्ञान सबसे महम्वपूर्ण है हमें इस बात का गहरा ज्ञान होना चाहिए कि मनुष्य होने का अर्थ दया है।

मनुष्य से श्रेष्ठ कुछ नहीं है किंचित मनुष्य असीम संभावनाओं का ऐसा पंजीकृत रूप है जो स्वतंत्र कर्म द्वारा अपनी उच्चतम सफलताओं को प्राप्त कर सकता है यह निर्मल आनंद की प्राप्ति तभी उसे होती है। जब वह अपनी स्वतंत्रता की रक्षा के लिए भी सदैव तत्पर और सक्रिय रहे अतः यह एक दृष्टि है सोचने विचारने की दृष्टि जो वस्तुपरक की उपेक्षा आत्मपरक अधिक है आधुनिक संदर्भों में कार्ल यास्पर्स के अनुसार अस्तित्व कोई विचार नहीं बल्कि अनुभूति का सर्वाधिक ठोस रूप है उनके अनुसार इसका रूप सूदम विचारों की तरह निराकार नहीं होता विश्व में अपने को असीम सप्ता के रूप में जानना हमें एक ऐसी सत्ता की और जागरूक बनाता है जो सृजन की संभावनओं अर्थ और आशा से भरी है।

नारी एक ऐसी संपूर्ण मानवीयता है जो पुरूष से शारीरिक भिन्नता लिए असीम संभावनाओं का वैसा ही पंजीकृत रूप है जो अपनी आंतरिकता वैयक्तिकता और स्वतंत्रता द्वारा जीवन के उच्चतम सौपानों को स्पर्श कर सकती है लेकिन दिनोंदिन विकसित होती सभ्यता और आर्थिक सामाजिक परिस्थितियों की विसंगतियों और जटिलताओं के साथ केवल लिंग आधार पर किए गए सामाजिक वर्गीकरण में स्त्री का अस्तित्व क्रमशः पेजीदगियों के घेरे में उलझता गया समाज का स्वरूप सत्ता प्रधान होता गया और स्त्री अस्मिताहीन दुर्बल शोषित शृंखला की कडियों में महादेवी वर्मा लिखती है पुरूष के समान स्त्री भी कुटुम्ब समाज नगर तथा राज्य की विशिष्ठ सदस्य

है तथा उसकी प्रत्येक क्रिया का प्रतिफल सबके विकास में बाधा डाल सकता है और उनके मार्ग को प्रशस्त भी कर सकता है प्रायः पुरूष का जीवन अधिक स्वच्छंद वातावरण में विशिष्ठ व्यक्तियों के संगत द्वारा बनता है और स्त्री का संकीर्ण सीमा में परम्परागत रूढ़ियों में जिससे न उसे कुटुम्ब से बाहर किसी वस्तु का अनुभव हो और न अपने उत्तरदायित्व का ज्ञान।

सुभद्रा कुमारी चौहान ने स्त्री की अवधारणा को बहुत महत्वपूर्ण माना और नारी को महत्व देने के लिए समाज से विनम्र गुजारिश भी की मनुष्य की आत्मा स्वतंत्र है फिर चाहे वह नारी शरीर के अंदर निवास करती हो पुरूष शरीर के अंदर इसी से पुरूष और स्त्री का अपना अपना व्यक्तित्व अलग रहता है। नारी के मन को पहचानों और उसके चारों और फैलने और विकसित होने के अवसर दो यह न भूल जाओं कि उसका अपना भी एक व्यक्तित्व मानव सभ्यता की शुरूआत से ही अर्थात् आदिम युग से ही स्त्री की गुलामी दिखने लगी है मनुष्य जब पहाड़ों या जंगलों में रहता था तो शिकार कर जीवनयापन करता नारी–पुरूष साथ–साथ जीवन जीते किन्तु जैसे–जैसे जैविक स्थितियों की भिन्नता ने पुरूष के शारीरिक बल की अधिकता और नारी के मातृत्व भाव को प्रमाणित किया, वैसे वैसे नारी का परावलेखन भी बढ़ने लगा कार्य क्षमता का बंटवारा हुआ नारी गर्भस्थ शीशु की देखभाल के लिए घर पर रहने लगी और पुरूष अपनी संतान की रक्षा हेतु अधिक सावधान और कर्मठ हुआ ज्ञान और गतिविधियों के विस्तार के साथ संचय की प्रवृत्ति पनपी और शारीरिक बल में श्रेष्ठ होने के साथ–साथ जैविक सीमाओं से भी ग्रस्त पुरूष नारी का स्वामी और घर का मालिक बना।

ब्राह्मण धर्म की महता का निरस्तीकरण और बौद्धों की धार्मिक स्वतंत्रता के साथ–साथ अब विदेशी आक्रमणों के मन में एक बार पुनः सामाजिक व्यवस्था में मांग का बल दिया इस युग में शांति और सुरक्षा की दृष्टि से नारी स्वतंत्रता पर रोक लगने लगे पर्दा प्रथा अनिवार्य थी सती न होने की स्थिति

में विधवा स्त्री ऐसे दुर्व्यवहार होते थे कि वह सती होकर मर जाना ही बेहतर समझती थी वैदिक युग के पश्चात का काल ईसा से 800 वर्ष पूर्व से लेकर ईस्वी सन् 2000 तक नारियों की स्थिति में महत्वपूर्ण परिवर्तन का काल रहा है इस युग में मनु संहिता के साथ–साथ धर्मसुत्र, कौटिल्य–अर्थशास्त्र और अनेक महाकाव्यों की रचनाएँ हुई नारियाँ और शुत्रों का एक मात्र मार्ग भक्ति ही है।

मनस्मृति के अनुसार – नारी–पुरूषों से कभी तृप्त नहीं होती। वह न तो रूप देखती है न वहस उसे तो केवल नर चाहिए।

नेता रूप परीक्ष्तेः नासा बयसि स्थिता।

सुरूप था विरूपं व मुमानित्येव भुंजाती।

आर्यों के आगमन से वैदिक धर्म (2000 से 800 ई.पू.) की स्थापना हुई उसके बाद तो दिनोंदिन स्त्रियों की स्थिति नीचे ही गिरती चली गई यह युग मातृ सप्ता प्रधान तथा आणेयी आदि विश्वविख्यात विदूषियाँ थी इस युग में स्त्री सहज मानवी के रूप में स्त्रीत्व गुणों सहित समागत थी वह गरिमापूर्ण ढंग से जीवन यापन करती थी दरअसल वह समाज मातृसत्ता प्रधान था मातृत्व को देवी शक्ति माना जाता था।

दिन प्रतिदिन बढ़ती रूठिवादिता और कर्ममांडो की लोह श्रृंखला को सर्वप्रथम बौद्ध धर्म ने एक बारगी झनझोर दिया उन्होंनें नारी को वैदिक युग की स्वतंत्रता के निकट ले जाने का पुर्नप्रयास किया स्त्री शिक्षा और पुनर्विवाह को बढ़ावा देते हुए ये लोग अपने संघ में स्त्रियों को भी भिखारनियों के रूप में योग्य माना इस प्रकार स्त्री अवधारणा का स्वरूप धीरे धीरे अपूर्ण और एकाग्रचित होने वाली परिभाषाओं में कैद होता गया और दूसरों के बनाए मिथक के सांचे में बंद स्वयं नारी भी किस प्रकार धीरे धीरे अपना मानवीय स्वरूप भूल आदर्श छवि बनने की होड़ में अन्य बनती गई।

सीमान्त उपदेश को लिखने वाली महिला लेखिका ने अपना नाम अज्ञात रखते हुए हिन्दु समाज में विधवा पर ढाए जुलमों का रोंगटे खड़ें कर देने वाला वृत्त सामने रखा है इस तकलीफ में सती होने का अच्छा रिवाज था तड़पाकर मारने से बहुत औरतें मर जाती है ग्रहस्थ जीवन में स्त्री को एक आदर्श रूप में चित्रित किया गया भगवद्गीता के बदले पति भक्ति से ही मोक्ष प्राप्त हो सकेगा – ऐसी धारणाओं को मान्यता प्रदान की। मध्यकाल का भक्ति आंदोलन दरअसल एक ऐसा जनांदोलन था जो परम्परा और संस्कृति दोनों को साथ लिए भारतीय की तत्कालिन व्यवस्था रूढ़ियों के साफ चित्रण के साथ ही उन बंधनों को तोड़ फेंकने की निर्दय निर्भयता भी लिए हुए था इस युग में कीर्तन और सत्संग के धार्मिक नृत्य में सहभागिता के रूप में नारीयाँ घर से बाहर निकलने की छुट पा सकी जिन भाषा में रचित भक्ति गीतों के प्रचलन में अनेक महिला संतों की रचनात्मक सामने आयी और आत्मनिर्भता का साधन बनी।

नारी अवधारणा का जो निर्वाह अन्य धर्मों में होता दिखा पड़ता है उससे यह मानने में कठिनाई होती है। कि भारत में स्त्रियों की दुर्दशा का कारण भारतीय पुरूषों की मानसिकता या अनुस्मृति हो रही है स्त्री अस्मिता स्वरूप की यह पौराणिक कथा द्रोपदी के चीर की भाँति खिचंती ही चली गई क्योंकि समृद्धतम आधुनिक कहे जाने वाले पश्चिमी राष्ट्रों ने भी स्त्री के संवैधानिक अधिकारों की पूर्ति में इतनी देर लगाई कि इनकी नीयत पर संदेह हो उठे लम्बे समय तक संघर्षवद्ध रहने के बाद नारियों को मत देने का हक 1971 में प्राप्त हो सका और स्त्री को अपने अस्तित्व का अधिकार प्राप्त हुआ आधुनिकता काल में अंग्रजों के आगमन से हालांकि बहुत सी बुराईयाँ पैदा हुई किन्तु स्त्रियों की चेतना में मुक्ति का भाव भी रेखांकित किया गया आधुनिक युग के पुराणों भारेतन्दु हरिश्चन्द्र की यह आकांक्षा नारी नर संग हो तो ही जग आनंद है आधुनिक काल में विभिन्न सुधारवादी प्रयासों के पश्चात

स्त्रियों में अवधारणा का प्रवेश महात्मागांधी के स्वाधीनता आंदोलन में जुड़न के समान स्तर होता है। महात्मा गांधी का स्वाधीनता आंदोलन में प्रवेश केवल राजनैतिक दल नहीं वरन् व्यापक सांस्कृतिक और सामाजिक महत्व भी रखता है। गांधी जी की पहल के कारण ही हमारे देश में अन्य समृद्धतम देशों के मुकाबले नारियों को काफी पहले ही मत देने का अधिकार प्राप्त हो गया था सरोजनी नायडू को महिला होते हुए भी राष्ट्रीय कांग्रेस की अध्यक्षत बनाया गया।

इस प्रकार महात्मागांधी की प्रेरणा और स्वाधीनता संग्राम की विस्फोटक शक्ति ने भारतीय स्त्रियों की जागृति तथा भक्ति में सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान दिया महात्मा गांधी ने कहीं कहा था – जब भारत की आजादी का इतिहास लिखा जाएगा तो उसमें भारतीय नारी का प्रमुख हिस्सा स्वर्णाक्षरों में अंकित किया जाएगा स्त्री अधिकारों की प्रबल समर्थिका स्व. कमलादेवी चट्टोपाध्याय गांधी जी के योगदान के संबंध में कहती है कि – जब भारतीय नारी का इतिहास लिखा जाएगा तो उसमें यह दर्ज होगा कि भारतीय स्त्री के उज्ज्वल भविष्य का रेखांकन गांधी जी ने किया था जब कि नारियों ने गांधी जी की खींची हुई रेखाओं के भीतर अपने शानदार भविष्य के चित्र में चटक और आकर्षक रंग भरे थे स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद समानता के लिए स्त्रियों के संघर्ष में बहुत तेजी आई अब नारी को अपनी अस्मिता की पहचान हो चली थी देर तक उन्हें घरों में गुड़िया या दासी बनाकर नहीं रखा जा सकता मनुष्य के रूप में अपने अधिकारों का दावा करना उन्हें आ गया था 1920 के दशक में कुछ आत्मचेतना तथा विश्वासपन्न नारियों ने महिला आंदोलन की नींव रखी और अनेक संस्थाओं व संगठनों का निर्माण हुआ इन सबसे प्रमुख समिति 1927 में स्थापित ऑल इण्डिया वूमेन्स कांफ्रेंस परम्परा एक ऐसी कृतबद्धता है जो मानव जीवन के अंत और बाहर दोनों पक्षों का स्पर्श करती है।

इस क्रमबद्धता के अभाव में मनुष्य का मूल्यात्मक परिचय संभव नहीं हो सकता अतीत में नारी के स्वरूप से किसी परिचित अथवा वंचित थी और जिनके प्रयासों द्वारा किन–किन संघर्षों से जूझता यह चिंतन अभिव्यक्ति पाता आधुनिक युग में नारी कथाकारों के साहित्य के माध्यम से पल्लवित हो सका है।

भारतीय संविधान में स्त्री और पुरूष की पूर्ण समानता के नियम बनाए गए 1956 के हिन्दू उत्तराधिकारी कानून ने पिता की संपत्ति में बेटी को बेटे के निमयों में कुछ छुट दी गई और स्त्री पुरूष दोनों के लिए ही विवाह को अनिवार्य बना दिया गया बाल विवाह प्रथा बलात्कार विरोधी संबंधी अनेक कानून ऐसे बनाए गए जिनसें समुचित सामाजिक वातावरण का पुनर्निर्माण संभव हो सका सदियों से इस नारी अवधारणा को कई आधारों की प्रमुख भूमिका रही जिन आधारों पर नारी स्वरूप टिका है उन पर नारी अवधारण की संपूर्ण नींव टिकी हुई है साहित्य समाज का दर्पण माना गया है लेकिन यह केवल दर्पण नहीं होता है। वरन इसमें समाज की परम्परा जीवन दृष्टि और दर्शन तथा सामयिक स्वार्थ और चिंताओं का भी प्रतिबिम्ब होता है।[27]

कृष्णा सोबती कहती है – जो सार्थक नहीं है उससे छुटकारा पाना उतना ही जरूरी है जितना नए को अपनाना भारतीय समाज में नारी अवधारणा का जो प्रचलित रूप चला आया उससे यह स्पष्ट होता है। कि आज की नारी से स्वच्छवादी और पुरानी रूढ़ियों से उभरकर नारी स्वरूप की पहचान बनाई है।

2.7.3 नारी का चरित्र – चित्रण :

नारी का चरित्र चित्रण निम्नलिखित रूप में दिखाया गया समाज में तमाम संगठनों की सक्रियता और शिक्षा के व्यापक प्रचार–प्रसार के बावजूद

[27] इण्डिया टुडे साहित्य वार्षिकी पृ. सं. 23 लेखन–लेखन होता है।

नारी के मुक्त विकास में हम अनेक बाधाओं को देख सकते है इसका प्रमुख कारण सत्तावादी सामाजिक संस्था का वर्चस्व था जो अपनी विचारधारा का कट्टर समर्थन और नई विचार या किसी स्त्री सुलभ विशेषताओं के कारण स्त्रियों का कार्य केवल गृहस्थी संभालने , बच्चों के लालन पालन, देखरेख करने तक ही समित है

अतः इस विभिन्नता के कारण उन्हें किसी अन्य कार्य में उपयुक्त समझना भूल है किसी विचारधारा के आधार पर ही शैक्षणिक, व्यवसायिक सामाजिक और सांस्कृतिक नीति का निर्माण होता है। अतः नारी अवधारणा के नये संदर्भ की तलाश इस विचारधारा को खारिज कर नये संदर्भ की तलाश करने वाले तार्किक तथ्यों की तलाश के साथ ही प्रारंभ होती है। आधुनिक स्त्रीवाद की आज कोई परिभाषा नहीं क्योंकि मुक्ति भी यह अवधारणा विभिन्न नारियों के विभिन्न आधारों पर परिस्थितियों पर निर्भर करती है यह तो एक प्रकार से व्यक्ति होने का सलीका है जिसके जरिये समाज में नारी की परिस्थिति उसके जीवन के व्यापक फलक और उसकी अंतर्गत को समझने में सुविधा हो सके इस नारीवाद की जिस परिभाषा को अपनी जागरूक समझ और चेतना के आधार पर विश्व की अधिकतम नारियों पर सामाजिक दमन का अत्याचार के खिलाफ आई ऐसी जागरूकता जो इनका विरोध करे और अनुकूल संहिता का निर्माण करें सर्वप्रथम तो नारी मुक्ति के इस अभियान में लगा 'वाद' शब्द हिंसा उत्तेजना वर्चस्व की मांग अवधारणा के नाम पर टकराहट की चाह, नारीत्व से इंकार अनेक अर्थों से हाशियें पर धकेलेन के प्रयास भी किए गए। कई बार पश्चिमी फैशन कहकर हाशियें पर धकेलने के प्रयास भी किए गए।

कई बार पुरूष प्रधान समाज ने इसे एक आचरण विचारधारा कहकर इसके बहिष्कार की भी कोशिश की और भारतीय शुद्धतावादी अवधारणा की आड़ ले प्रतिरोध के हथकंड़े अपनाये किन्तु नारीवाद चैतन्य नारियों ने ऐसे

हथकंड़े की पोल खोलकर रख दी उनके अनुसार जिस वैदिक संस्कृत में मैत्रयी, गार्गी के श्लोकों में अर्द्धनारीश्वर की परिकल्पना उस पर अर्थात् विचारधारा का यह अशुद्धवादी आरोप केवल विषय से दूर भटकने के लिए है।

प्रभा खेतान तो यहाँ तक कहती है जेण्डर और सेक्स अलग अलग चीजें है जेण्डर का अर्थ संवेदन ज्ञान है जिसमें अत्यंति ढंग से पुल्लिग अर्थ को आदर्शीकृत किया जा रहा शारीरिक लिंग भेद को वेबजह सामाजिक वर्णभेद बना दिया गया है। आधुनिक नारियों की इस नई सोच ने एक नये नारी को जन्म दिया जिसे आसानी से स्वीकृति नहीं मिली यदि नारी को मानव के प्राकृतिक एवं सहज अधिकार से वंचित रखना हो तो दशकों पहले अन्याय और असंगति के आरोप से बचने के लिए यह सिद्ध करना पड़ेगा कि नारीत्व में बुद्धि का अभाव है। अन्यथा नया संविधान निरंकुश शासन का जीता जागता प्रतीक बन जाएगा।

यह सच है कि एक मानवीय प्रकार नारी योनी में जन्म लेकर जिन आधारों पर अपने मानवाधिकारों से वंचित किया जाता है वे नैसर्गिक होने के बजाय समाज के विशिष्ठ सत्ताहीन वर्ग के निरंकुश आचरण से समाज में एक नई अवधारणा उत्पन्न हो गई।

आधुनिक समाज में इसकी युगीन संबंधता और आवश्यकता को देखकर जो लोग इसे फैशन की लहर मानते थे वे भी स्वीकार करने लगे है कि फेमिनिज्म एक नया सामाजिक क्षेत्र है और इसकी अनदेखी संभव नहीं नये नारी क्षेत्र का स्वीकार हमारी अर्थ व्यवस्था के नये चरण का ही स्वीकार है आधुनिक चेतन्यता से भरे इसी नारीवादी विचारधारा का प्रभाव हिन्दी साहित्य लेखन पर भी पर्याप्त रूप से पड़ा अनेक लेखकों में स्त्रियों से संबंधित समस्त व्यवस्था की रूढ़ियों पर प्रहार किया जिसके व्यापक भाव लक्षित हुए है अनेक नारी कथाकार भी सामने आई जिन्होंने बड़े साहस के साथ प्रभावित रूप से

अपने जीवनानुभव को लेखबद्ध किया और पुरानी परम्परागत मान्यताओं से टकराने का कौशल अपने चरित्रों में संजोया आज की स्त्री ने सामाजिक और निजी संबंधों दोनों स्तरों पर अपनी–अपनी अवधारणा पहचानने की कोशिश की है।

गीता पढ़ पढ़कर सीता बन चुकी स्त्री ने भात पकाते हुए लम्बा संघर्ष झेला है आंचल में दुध और आँखों में नारी शाश्वत नारी की पुरानी छवि एक एक कर नारी अवधारणा के नये संदर्भों द्वारा छिन्न–भिन्न होती है। और वह मुखर हो पुरूष के समानांतरण अपनी पहचान स्थापित करना चाहती है भारतीय समाज में पुरूष और स्त्री की अवधारणाओं में पर्याप्त अंतर माना जाता रहा है पुरूषत्व की अवधारणा जहाँ केन्द्रीय और सकारात्मक होती है। वहीं स्त्रीत्व की मूल अवधारणा ही नकारात्मक है पुरूष समाज के साथ अपने विभिन्न संबंधों की जकड़ के बावजूद अपने स्व. की तलाश के लिए स्वतंत्र हो सकता है जब कि नारी को मानवी रूप में पैदा होने के बावजूद तरह तरह के सामाजिक बंधनों को निभाने के बाद भी नारी अपने स्व को सतत विस्मृत कर माँ, बहन, भाभी, पत्नी, पुत्री रूप में ही मर जाना होता है। उसे स्त्री को बनाने के लिए एक विशिष्ठ तालिम दिया जाता है। मनोविज्ञान में शरीर संरचना को अस्तित्व की नियति माना गया है। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार व्यक्ति की प्रवृत्ति और झुकाव अलगाव की ओर होते है फ्रायड ने इस बात को स्वीकार किया है कि लिंग की आराधना वास्तव में पितृ सत्ता का प्रतीक है।

फ्रायड – के अनुसार पुरूष और स्त्री में मानसिक भिन्नता है नारियाँ मुख्यतः घरेलू कलात्मक विषय भावना स्नेह की अभिव्यक्ति रखती है उनके अनुसार पुरूत्व कार्यशीलता में आराम लेता है और नारीत्व निष्क्रियता में आराम लेता है इसके विपक्ष में महादेवी वर्मा तर्क प्रस्तुत करती है नारी अत्यधिक त्याग केवल इसलिए नहीं करती अत्यधिक सहनशील केवल इसलिए नहीं होती कि पुरूष उसे हीन समझकर इसके लिए बाध्य करता है यदि हम ध्यान

से देखेंगे तो ज्ञात होगा कि उसे ये गुण मातृत्व की पूर्ति के लिए प्रकृति से मिले है।

इसमें कोई संदेह नहीं कि नारी और पुरूष की शारीरिक संरचना में बहुत अंतर है मानव शरीर की बात है कि ऐसी कुछ परिस्थितियाँ होती है। जिनमें पारस्परिक सम्पर्कों के माध्यम से ही अस्तित्व की उपस्थिति का एक मात्र आधार हमारा शरीर है पुरूष और नारी के शरीर की बनावट गर्भधारण की संपूर्ण प्रक्रिया घर और बाहर के कार्य क्षेत्र आदि समाज व्यवस्था के आधार तत्व है पुरूष की भाँति नारी आचरण कर मुक्त होने की परिकल्पना उसे न केवल असफलता की राह पर ले जाती है बल्कि अपने प्रति अन्याय के रास्ते पर भी ले जाएंगी उसे हमेशा समानता और सभ्यता का अंतर पहचान कर आगे बढ़ना होगा जैसा कि महोदवी वर्मा कहती है, दो वस्तुओं का अंतर सदैव ही उनकी श्रेष्ठता और हीनता का घोतक नहीं होता, यह मनुष्य प्राय भुल जाता है। नारी ने भी यही भाँति अपनाई मनोवैज्ञानिक दृष्टि से शारीरिक विकास के विचार से और सामाजिक जीवन की व्यवस्था में स्त्री में विशेषज्ञ अंतर रहा है और भविष्य में भी रहेगा , परन्तु यह मानसिक या शारीरिक भेद न किसी की श्रेष्ठता का प्रतिवादन करता है और न किसी हीनता का विज्ञापन करता है।

यह एक मनोवैज्ञानिक सत्य है कि जब दो मानव साथ रहते है तो इनमें से एक कोटि दूसरी कोटि पर अपनी सत्ता काबिज करना चाहती है यदि दोनों एक दूसरे के प्रभाव से मुक्त रहे तो एक पारस्परिक संबंध स्थापित हो सकता है। पुरूष और नारी की सत्ता भौतिक और सामाजिक जीवन में भी अनुकुलता पाती है नारी अवधारणा का आधार स्वतः कमजोर होने लगता है दूसरों के साथ उसके संबंध क्या है उसकी अवधारणा यही तक सीमित होकर रह जाती है इस प्रकार वह स्वयं होने के बजाए किसी की पुत्री किसी की पत्नी, बहन या माँ के रूप में जनित योग्य रह जाती है।

यह एक आश्चर्यजनक किन्तु सत्य घटना है कि जीवन भर में दूर दराज के अब तक किसी नारी लेखिका ने इतिहास दर्शन नहीं लिखा है पुरूष दृष्टि ने जब तक नारी को शरीर भोग्या अथवा वादी से अधिक कुछ समझा ही नहीं है तो उसे किसी अन्य प्रकार के ऐतिहासिक मूल्यांकन की भी उसे आवश्यकता नहीं पड़ी रोमिला थापर कहती है कि मीराबाई और रजिया जैसी उच्च कुल की नारियों को अपनी प्रतिमा का उपयोग करने की अधिक स्वतंत्रता प्राप्त थी परन्तु मीराबाई जोगन बनकर और रजिया पुरूष शासकों का रूप धारण कर के ही ऐसा कर सकी थी एक हिन्दु राजकुमारी देवलरानी में सल्तनत के शहजादे खिज खाँ से प्रेम की गाथाएँ लिखी गई मगर रोमांस पूर्ण भावनाओं तथा नारियों का गुण कविताओं तथा गाथा गीतों तक ही सीमित रहा नारी समाज का ऐसा जीव है जिसका निर्माण समाज करता है उसे नारी बनाना सिखाती है और जीवन पर्यन्त सामाजिक संबंधों में उसकी परिभाषाएँ तय करता है वह एक वस्तु की तरह माता–पिता के यहाँ पाली जाती है और युवा होते ही रातों रात ऐसे अजनबियों को ससूराल के नाम पर सौंप दी जाती है जिनके हर बर्ताव के बदले उसे मौन, लज्जाशील, संकोची, स्नेही या समर्पित बनाना है एक पशु भाँति विवाह बाजार में उसका बकायदा मोल भाव किया जाता है और उसके बावजूद सैकड़ों नारियाँ दहेज के कारण जला दी जाती है।

समाज में इस स्थिति के जिम्मेदार सिर्फ पुरूष ही नहीं बल्कि नारीत्व भी नारी को उनकी दृष्टि से देखता है इसमें आश्चर्य नहीं स्वयं नारियाँ पुत्र जन्म पर ढोल और बेटियों के जन्म पर सिर पीटने लगती है सास ननद एवं स्वयं माँ उस बच्ची के जन्म लेते ही अपने उपर बोझ महसूस करती है और समाज उसे तिरस्कार की दृष्टि से देखना शुरू करता है यह संपूर्ण व्यवहार वह घर की चारदिवारी से शुरू होकर आजीवन तक सहन करती है।

भारतीय सभ्यता विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक है आज भी हम अपने पांच हजार साल पुराने मित्रों और आचारों में से अनेक का पालन करते है, लेकिन जहाँ नारी जाति को समान अधिकार या बराबरी देने की बात है अधिक मंत्र निषेधात्मक उत्पत्तियों के लिए हुए है, यदि कहीं नारियों के पक्ष में किसी प्रकार के श्लोक या 'वचन' कहे भी गए है, तो उनका प्रचार–प्रसारण कहीं देखने को नहीं मिलता दरअसल समाज पुरूष प्रधान है और चूंकि सांस्कृतिक आर्यत्नो की तेजस्विनी और स्वतंत्र व्यक्तित्व स्वामिनी मानकर प्रायः स्मरणीया तो माना गया है लेकिन व्यवहार में समाज में उनके इन गुणों को नकारात्मक पक्ष देते हुए पतियों के कोप मृत्यु और महासंग्रामों का उत्तरदायी अधिक ठहराया गया है।

नारी अवधारणा के महत्वपूर्ण तत्व के रूप में हम धार्मिक आधार कों मान सकते है धर्म सर्वाधिक लोकमान्य तथा अंधी श्रद्धा भक्ति से जुड़ा एक ऐसा आधार है जिसके तहत व्यक्ति न केवल इस लोक व परलोक में भी धर्म मानव को गुलाम बनाने की प्रक्रिया मेहतब ऐतिहासिक भूमिका निभाता है जब मानव लकीर का फकीर हो किसी भी धार्मिक मान्यता को समयानुकूल उचित तर्क की कसौटी से दूर कर देता है उसकी श्रद्धा अंधी हो जाती है मनुस्मृति की वर्ग व्यवस्था ने मनमाने स्वार्थी को धर्म का चमकीला आकर्षण है 'रूठ' बना दिया ईश्वर भी पुरूष था उसे प्राप्त करने का अधिकार केवल पुरूषों का रहा है।

स्त्रियों के लिए हालांकि उत्पीड़न रोकने और हक दिलाने संबंधी कानून बड़ी संख्या में पास होते रहते है लेकिन आचरण के प्रति गहरा विद्यमान है क्योकि कानून और समाज के स्वरूप में गहरी विंसगतियां है कानून जिसे अपराध मानता है, समाज व्यवस्था उसे अपनी परम्परा और रीति रिवाज मानते है।

भारत में स्त्री अधिकारों संबंधी कानूनों को मोटेतौर पर दो भागों में बाँटा जा सकता है एक वे जो पारंपरिक समाजों में स्त्री को पुरूष के समान अधिकार दिलाने की कोशिश करते है दूसरे वे है जो आधुनिक नागरिक समाज को हिंसा और उपभोक्तावादी हमलों से बचाने का दावा करते है।

अरूण त्रिपाठी का मानना है कि नारी अधिकारों के बहाने कभी कभी पारंपरिक और आधुनिक समाज इन कानूनों को हथियार बनाकर एक दूसरे पर हमला करते नजर आते है, और इस दौरान नारी अधिकारों और समाज में विवाद खड़ा होता है। वहीं काम आधुनिक समाज उत्पादकता विकास और लोकतांत्रिक अधिकारों के बहाने कर डालता है आखिरकार है तो दोनों ही समाज पुरूष प्रधान समाज में नारी के लिए कोई सुनवाई नहीं कानून की विसंगतियों और समाज के पुराने दोगलेपन और कट्टरता के बीच हमारा आधुनिक भारतीय समाज भी समरथ को नहीं दोषगुसाई वाली अवधारणा का आँखें मूंद पालन लिए जा रहा है।

इस प्रकार समाज व्यवस्था के विभिन्न जैविक, मानसिक, ऐतिहासिक सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक संवैधानिक और आर्थिक आधारों में स्त्री का निम्नतम स्थान और इन आधारों की वास्तविकता की खोज हुई है जिसमें नारी अवधारणा को बहुत भारी आधार माना गया है। नारी मुक्ति चेतना के माध्यम से आधुनिक नारी ने अपने आपको अपनी दबी हुई आकांक्षाओं से उभारते हुए अपने आप को साबित किया है कि नारी में वो शक्ति है जो पुरूष कदापि नहीं कर सकते एक नारी स्वयं को विभिन्न एवं परिवर्तनों को झेलती हुई समाज में हर दिशा में अपनी भूमिका बखूबी से निभा रही है इस प्रकार समाज स्त्री के लिए कहीं कोई सुनवाई नहीं कानूनी की विसंगतियों और समाज के पुराने दोगलेपन और कट्टरता के बीच हमारा आधुनिक भारतीय समाज भी समरथ को नाही दोष गुंसाई वाली अवधारणा का आँखें मूंद पालन किए जा रहा है।

2.7.4 नारी और मनोविज्ञान

भारत में आज भी नारी को चाहे वह शिक्षित हो या अनपढ़ पुरूष की भाँति उसे न तो विचाराभिव्यक्ति की स्वंतत्रता है न राय देने व आत्म निर्णय का अधिकार ही प्राप्त है चन्द्रकिरण सोनेरेम्स की धारणा है कि सब मिलाकर आज इन बीसवीं सदी की समाप्ति में भी हमारे भारतीय समाज में नारी–पुरूष के समान नहीं है उससे कुछ नीचे स्तर की मानी जाती है।

आधुनिक नारी आत्माविश्वास को प्राप्त कर चुकी है वह कोरी भावना बहने वाली स्थिति को त्यागकर बुद्धि का नियंत्रण करने लगी है मनुष्य के मन से मनोविज्ञान का गहरा संबंध है मनोविज्ञान के माध्यम से व्यक्ति के मानसिक अनुभूति और अंतर्द्वन्द्व को समझा जा सकता है। नारी और मनोविज्ञान को आपस में देखे तो मालूम होता है। कि मनोविज्ञान के माध्यम से उसके अतीत से सूक्ष्म परीक्षण करने से बताया जा सकता है जब व्यक्ति चेतना पर बल दिया जाता है तो उसके साथ ही व्यक्ति के अकेलेपन के एहसास को अधिक तीव्र बना दिया जाता है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी चेतना के बंधन में बंधा हुआ है उसका अपना ढ़ंग है जो उसकी विगत अनुभूतियों से निर्मित होता है।

मनोविज्ञान का मानव जीवन से गहरा संबंध है जो मानव के संपूर्ण जीवन की व्यथा को सापेक्ष रूप से उजागर करता है। आधुनिक युग में नारी के प्रेम, कुण्डा, विषाद, अकेलापन की स्थितियों से उभारने एवं दर्शाने में अहम भूमिका रखता है।

नारी के मन का चेतन प्रवाह मनोविज्ञान से ग्रसित है वह परम्परागत मान्यताओं को टिकाए रखने के लिए अपने अस्तित्व का बलिदान देने को तैयार नहीं परिवार पति बच्चों वाले बने बनाए प्रेम से बाहर निकलने लगी है अब वह बहन, बेटी या पत्नी ही नहीं बल्कि उसका अपना व्यक्तित्व को

वर्तमान नारी की मनोस्थिति परम्परागत नारी नहीं रही जो रूढ़ियों के बोज तले दबी रहे ग्रहस्ती की चक्की में पिसती रहे भावनात्मक दृष्टि से अब वह इतनी भावुक भी नहीं है कि उनकी भावनाओं को बनाया जा सके।

आज शिक्षा के परिणाम स्वरूप वह आत्म गौरव अनुभव करने लगी है अपने पक्ष में भावुक हुए बगैर तटस्थ और स्वतंत्र निर्णय ले पाने की शक्ति उसने बटोर ली है सदियों से सामाजिक पारिवारिक बंधनों से जकड़ी नारी आज प्रतीकार की स्थिति में आ चुकी है अब उसे किसी के आश्रय की नहीं बल्कि बराबरी के हक की तलाश है

आज मनोविज्ञान के माध्यम से सदियों से पदरहित नारी आज अपने पैरों पर खड़ी होने लगी है घर गृहस्थी संभालने के बावजूद उसका कर्मक्षेत्र भी चारदीवारी को लांघकर विस्तृत फलक गृहण करने लगा है अब वह घर में घुट–घुटकर जीने वाली नारी नहीं मुक्त वातावरण में सांस लेती है।

लेखिकाओं ने नारी को किसी सिद्धांत आदर्श या विचारधारा के माध्यम से चित्रित न करके उसे वैयक्तिक व सामाजिक परिवेश में स्वतंत्र इकाई के रूप में चित्रित किया है इनकी कथा नारियाँ अपने अस्तित्व के प्रति जागरूक है अधिकारों के प्रति सजग है स्वंतत्र्योत्तर महिला कथाकारों ने नारी को पुरूष विरचित देवी दानवी के प्रेम से निकालकर 'मानवी' के रूप में प्रस्तुत किया। मुन्नू भण्डारी उषा प्रियंवदा में मेहरूनिसा परवेज मृदुला गर्ग शशिप्रभा शास्त्री जैसी अनेक स्वंतत्र्योत्तर लेखिकाओं ने नारी के बदलते समय के साथ पूरी सच्चाई से साहित्य में चित्रित किया। ये लेखिकाएं साहित्य सृज्ज के माध्यम से नारी जगत में हो रही क्रांति को वैचारिक आधार प्रदान करने और नूतन पुरातन के बीच हदग्रस्त नारी को उपयुक्त आधारभूत प्रदान करने के लिए निरंतर प्रयासरत् रही है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि नारी और मनोविज्ञान का गहरा संबंध है आधुनिक नारी न तो समर्पित है और न ही आदर्श प्रिय आज नारी अपने स्वच्छन्द जीवन के माध्यम से अपने बलबूते पर समाज में एक मिसाल कायम की है चाहे राजनीतिक क्षेत्र हो या सामाजिक महत्वपूर्ण योगदान दिया है जिससे उसने साबित कर दिया है कि एक नारी संपूर्ण समाज को किसी दिशा तक ले जा सकती है उसे सिर्फ अधिकार चाहिए भारतीय नारी अपने विकसित हो रहे रूप में साकार हुई है जो नारी और मनोविज्ञान का घनिष्ठ संबंध है, जिससे नारी के संपूर्ण मनोस्थितियों का खुलेरूप से चित्रण हुआ है।

2.7.5 नारी शिक्षा और व्यवसाय

मानव सभ्यता की शुरूआत से ही अर्थात् आदिम युग से ही नारी की गुलामी दिखने लगी है मनुष्य जब जंगलों या पहाड़ों की गुफाओं में रहता था तो शिकार कर जीवनयापन करता स्त्री–पुरूष दोनों साथ–साथ स्वतंत्र जीवन जीते किन्तु जैसे–जैसे जैविक स्थितियों की भिन्नता ने पुरूष के शारीरिक बल की अधिक और नारी के मातृत्व को प्रभावित किया वैसे वैसे नारी का परावलम्बन भी बढ़ने लगा कार्य क्षमता का बंटवारा हुआ नारी गर्भस्थ शिशु की देखभाल के लिए घर पर रहने लगी और अपनी संतान की रक्षा हेतु अधिक सावधान और कर्मठ हुई।[28]

नर और नारी जीवनरूपी दो पहिए है एक के बिना दूसरे का काम नहीं चल सकता। अतः दोनों को एक दूसरे का सम्मान करना चाहिए भारतीय महापुरूषों ने इसलिए नारी की महिमा का बखान करते हुए मनु कहते है जहाँ नारी का सम्मान होता है। वहां देवता निवास करते है स्वार्थी और अहंकारी पुरूषों ने नारी को अबला और पुरूष की आज्ञाकारिणी मानकर उसकी गरिमा को गिरा दिया उसे अशिक्षा और पर्दे की दीवारों में कैद करके एक दासी

[28] डॉ. उमेश माथुर, आधुनिक युग की हिन्दी लेखिकाएं पृ. सं. 241

जैसा जीवन बिताने को बाध्य कर दिया शिक्षित नारी दो कुलों का उद्धार करती है नारी को अशिक्षित रखकर देश की आधी जनता का विनाश किया जा रहा हे उसे समाज में सभ्य ढंग से जीना आता है। शिक्षा नारी में आत्मविश्वास एवं साहस की भावना पैदा करती है यह एक कहावत है कि संसार में हर सफल पुरूष के पीछे एक नारी होती है। सुभद्रा कुमारी चौहान जैसी नारियों ने न केवल स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया बल्कि अपनी रचनाओं से देश में योगदान दिया स्वतंत्र भारत की नारी ने अंगडाई ली है वह फिर से अपने पूर्व गौरव को पाने के लिए बेचेन हो उठी है।

शिक्षा, व्यवस्था, विज्ञान, सैन्य, सेवा, चिकित्सा कला, राजनीति हर क्षेत्र में वह पुरूष के कदम से कदम मिला कर चल रही है वह सरपंच है, जिला अध्यक्ष है, मेयर है, मुख्यमंत्री है, प्रधानमंत्री है, राष्ट्रपति आज नारी शिक्षा के माध्यम से भविष्य को उज्ज्वल बनाना चाहती है वह शिक्षा के द्वारा स्वावलम्बी स्वतंत्र व्यक्तित्व सामाजिक दायित्वों को पूर्ण रूप से निभाना चाहती है जिससे समाज में संपूर्ण राष्ट्र को नई दिशा प्राप्त हो सके मनुष्य एक सामाजिक प्राणी रहा है अपने को सामाजिक रिश्तों को स्तर पर पहचान लेने के बाद 'स्वयं' की तलाश में वह अपने भीतर की ओर मुड़ता है। धर्म, अर्थ और काम की सतत् प्राप्ति के बाद वह हमेशा मोक्ष पाने की दिशा में प्रत्यत्नशील होता है। भारतीय समाज मूलतः पितृसतात्मक समाज रहा हे जहाँ पुरूष को इतनी प्रधानता दी जाती है कि उसे मानव ही नही, मानवता का भी सही और आदर्श रूप माना जाता है। सामाजिक संबंधो के अतिरिक्त उसका एक 'स्व' भी होता है। जबकि नारी के साथ इसके विपरीत है उसके लिए मात्र नारी होकर जीना सही सामाजिक संदर्भ में नारी होने के लिए पर्याप्त नहीं है।

आदिकाल से हमारा देश नारी पूजक रहा है तभी तो नारायण से पूर्व लक्ष्मी, महादत के पूर्व भवानी, राम के पूर्व सीता और कृष्ण के पूर्व राधा का नामोच्चारण होता है। भारतीय नारी ने अपने जौहर दिखाए भारतीय नारी कभी

नर के समक्ष समान अधिकारिणी ही बन पाई समाज का पचास प्रतिशत भाग नारी वर्ग है, किन्तु समाज के निर्माण में उसकी भूमिका को नजरअंदाज किया जाता है। सच तो यह है कि समाज में पुरूष वर्ग नारी का विस्तार नहीं चाहता उसे भय है कि नारी अभ्युदय से उसका अस्तित्व और एकाधिकार समाप्त हो जाएगा अशिक्षा और रूढ़िवादी दृष्टिकोण ने नारी शिक्षा की स्थिति को सोचनीय बना रखा है हमारे देश की प्राचीन समय की नारी को समाज में पूरा सम्मान प्राप्त था विदेशी और विधर्मी आक्रमणकारियों के आगमन के साथ ही भारतीय नारी का मान सम्मान घटा चला गया वह अशिक्षा और पर्दे में कैद हो गई। उसके ऊपर तरह–तरह के पहरे बिठा दिए गए सैकडों वर्षों तक भारतीय नारी इस दुर्दशा को ढ़ोती रही।

सामयिक जीवन में परित्यक्षित मुख्य परिवर्तन नारी का स्वांबलंबिता के नौकरी आदि करना है इन वर्किंग वूमेन को अनेक रूपों में पुरूषों के सहयोग पूर्ण व्यवहारों से निरंतर जूझना पड़ता है लेखिकाओं ने ऐसी नारियों की समस्याओं को भी अपने नारी चिंतन का आधार बनाया है रजनी पनिकर ने तो मानो मशीनरी भाव से नौकरी पेशा नारी की कठिनाइयों को प्रस्तावित करने का प्रयास किया है उनका विश्वास है कि हमारे समाज में पुरूष अभी तक इतने प्रगतिशील नहीं हुए है कि वे अपनी आदतों को छोड़ दे और नौकरी करने वाली पत्नी का हाथ बंटाये समान योग्यता के आधार पर नौकरी पाते हुए भी नारी को पुरूष सहकर्मियों की अपेक्षा अधिक परिश्रम और सावधानी बरतनी पड़ती है क्योंकि अयोग्य या काम में जरा सी भी ढीली नारी को उसके पुरूष साथ खूब उल्लू बनाते है वह घर के भीतर और बाहर भी दया कि पात्र है प्रायः देखा गया है कि नारियाँ अपने काम के प्रति अधिक दायित्व महसूस करती है उन्हें भी उसी तरह संघर्ष और ईर्ष्या का शिकार होना पड़ता है जैसे पुरूषों को फिर भी हमारे साहित्यकार उनका चित्रण सही रूप में क्यों नहीं कर पाते।

अधिक परावलंबिता भारतीय नारी की सबसे बड़ी विवषता रही है इस कारण पति के समक्ष अथवा अन्य दशाओं में उसे सदैव झुककर चलना पड़ता है लेकिन वर्तमान युग में नारी शिक्षा प्राप्त करके अपने 'स्व' को पहचानने लगी और वह हर क्षेत्र में रोजगार की तलाश करने लगी आज की नारी अधिक स्वावलम्बिता अर्जित कर अपने पैरों पर खड़ी होने लगी है आज की नारी एक साथ दोहरी भूमिका निभा रही है।

आज की नारी को उसका वास्तविक श्रेय प्राप्त हो उसके लिए अनेक साहित्यक लेखिकाएँ प्रयत्नशील है ऐसे न होते देखकर रजनी पनिकर अत्यन्त खेदपूर्वक कहती है कि अपनी आजीविका कमाने वाली नारी का संघर्ष ज्यों का त्यों बना हुआ है। पुरूषों की प्रवृत्तियां वैसी ही है नारी के कार्य क्षेत्र आज भी उतनी ही दिक्कत उठानी पड़ती है जितनी पहले उठानी पड़ती थी उनको पुरूषों का सहयोग न घर में होता है। और न व्यवसाय में आज कि महिला ने नारी शक्ति का वास्तविक रूप अपना लिया है जो नारी को अबला से उभारकर समाज को एक निश्चत दिशा प्रदान करने वाली नारी के रूप में उभरकर आई है अर्थ मानव जीवन का निर्धारक ताव है आर्थिक पक्ष के द्वारा ही मनुष्य के भविष्य की नींव निर्धारित है आज के मध्यमवर्ग के सम्मुख अनेक आर्थिक समस्या पड़ी है जिनमें बेरोजगारी की समस्या शोषित और शोक का संघर्ष दहेज समस्या, परिवार का टूटना आदि प्रमुख है इन सब संघर्षों का कारण अर्थ ही है क्योंकि मान की आवश्यकता आगे बढ़ गई है।

समाज में अपना मूल्य स्थापित करने की चेतना उसमें आ गई है इस प्रकार हम कह सके है कि आज का व्यवसायिक युग है आर्थिक समस्या आज के मध्य वर्ग के सम्मुख सर्वाधिक मुँह खोले खड़ी है जिसके कारण यौवन की दहलीज पर पैर रखते ही वह अपने उज्ज्वल भविष्य के बारे में सोचने को मजबूर होती है। चन्द्राकिरण सौनरेक्सा कहती है, नौकरी, पेशा स्त्री के सन्दर्भ में भी यह बात लागू होती है उसे पति के पुरूषोचित अहम को संतुष्ट करने

के लिए घर में जहाँ तक संभव हो झुककर पूर्ण समर्पिता गृहलक्ष्मी के सभी कर्तव्य पूरे करने होते है जहाँ पहले नारी अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए मृत्यु तक का वरण कर लेती थी वहीं आज भी नारी विभिन्न समस्याओं को झेलकर अपना जीवन सुखमय बनाना चाहती है आज की औरत न तो अतीत के वैभव को भोग पाती है न ही वर्तमान स्वच्छंदता का आलिंगन करती है वह बीच में है, उससे बाहर नौकरी करने की आशा भी की जाती है और घर पर पति या घर वालों के आदेश की गुलामी भी भोगनी पड़ती है इस प्रकार कहा जा सकता कि आज की नारी सिर्फ घर की चार दीवारी तक ही नहीं वह हर क्षेत्र में अपना योगदान देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

2.7.6 राजनीतिक संदर्भ और नारी

अरस्तु के अनुसार मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और हम जिस युग में रहते है वह राजनीति का युग है हमारे दैनिक जीवन में राजनीति का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि विज्ञान साहित्य, धर्म, उद्योग, नीति कूटनीति आदि क्षेत्रों में तथा व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र तथा विश्वजनीत संबंध में भी राजनीति हो गई है अरस्तु साहित्य की अभिव्यक्ति में राजनैतिक चेतना का समाहार के अपरिहार्य स्थिति बन गई है आज जीवन के हर क्षेत्र में महिलाएँ अपना अपना महत्वपूर्ण स्थान बना चूकी है अनेक परिस्थितियों ने महिला के व्यक्तिगत विकास को बाधित किया है किन्तु आज मानव समाज सभी पक्षों को समझते हुए नारी को समाज में नये अवसर प्रदान कर रहा है आधुनिक युग में नारी ने अपनी सशक्तता का प्रदर्शन आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक, वैज्ञानिक खेलकूद इत्यादि के क्षेत्र में किया समय समय पर नारी की आर्थिक और सामाजिक सबलता पर चर्चा होती रही, किन्तु राजनैतिक क्षेत्र में नारी की स्थिति पर विचार करने को आवश्यकता है। महिला शिक्षा ने उसके स्वरूप को तेजी से बदला वह घर परिवार की चार दीवारी और चूल्हे चौके की घुटन को छोड़ कर पुरूष के समान आगे आ रही है

उसका प्रदत्त रूप अर्जिता रूप में परिवर्तित हो गया है। आज की नारी देश के उच्च पदों पर आसीन है राजनीति में महिला आरक्षण प्रदान के बाद भी यह विधेयक राजनीतिक भंवर में फंसकर रह गया है। आज महिलाएँ विश्व मतदाताओं का आधा हिस्सा बन चुकी है। भारतीय संविधान में भारतीय नागरिक चाहे वह पुरूष हो या महिला समान अधिकार है और लेकतंत्र की स्पष्ट नीतियों में इस बात का भी उल्लेख है कि समस्त सार्वजनिक प्रतिनिधित्व में सभी वर्गों को समान प्रतिनिधित्व मिलना चाहिए भारतीय परिस्थितियों में महिलाएँ पुरूषों की अपेक्षा वोट के अधिकार का कम प्रयोग करती है।

जहाँ चुनावों की बात आती है तो भारतीय मतदाताओं को कुछ महिलाओं के लिए ही वोट देने का अवसर मिलता है पिछले कुछ वर्षों से संसद में महिला आरक्षण विधेयक लगातार पटल पर रखा जाता है और बिना किसी निर्णय के टाल मटोल की नीति का शिकार होता आ रहा है चूंकि नारी चेतना की बात करने वाली कुछ महिलाएँ और कुछ महिला संगठन इस मुद्दे को निरंतर उठाते आ रहे है जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में महिला और पुरूष के बीच संपूर्ण समानता की बात कहीं जाती है महिलाओं ने आर्थिक सामाजिक और राजनीतिक प्रगति के लम्बे और कठिन मार्ग पर चलकर प्राप्त किया है स्त्री पुरूष समानता को राजनीतिक संदर्भ में देखे तो पुरूष नेताओं की लम्बी व महिलाओं की सीमित सूची ही राजनीति में दिखाई देती है। भारतीय संदर्भ में महारानी लक्ष्मीबाई, रजिया सुल्तान, नूरजहाँ, इंदिरा गांधी सरोजनी नायडू, वंसुधरा राजे जैसी महिलाओं ने अपने आपको सिद्ध किया है महिला आरक्षण को कानून स्वरूप प्रदान करने के लिए 10 नवम्बर 1999 केन्द्रीय मंत्री मण्डल ने अपनी सहमति प्रदान की किन्तु विवादों के चलते उसे पारित नहीं किया जिस प्रकार आरक्षित वर्ग के आम सदस्य को आरक्षण का लाभ नहीं मिल पाता उसी प्रकार राजनीति के क्षेत्र में महिला आरक्षण पुरूष राजनीतिकों की चार दीवारी में ही सिमटकर न रह जाए।

महिलाओं को नेतृत्व व अपना प्रभाव सिद्ध करने के अवसर मिले ताकि मतदाता की समझ को बदला जा सके। योग्यता के समान बंटवारें के आधार पर महिलाओं के राजनीति में प्रवेश से प्रतिभावान नेताओं की संख्या में इजाफा होगा स्त्री पुरूष के बीच ही नारी के सशक्तीकरण की सार्थकता है अतः ऐसी कोई स्त्री वादी व्याख्या की जानी चाहिए जो स्त्री के रूप में और अपनी शर्तों पर नये युग के अनुरूप बनने का अवसर दे और उसे हर क्षेत्र में सचमुच बराबरी की भागीदारी मिले।

2.7.7 नारी सांस्कृतिक और धार्मिक संदर्भ

स्त्रियों, में रीति रिवाज, स्थिति के कारण परम्परा या धार्मिक बंधनों का अंधानुकरण करने के बजाय पहले उन्हें बुद्धि की कसौटी पर परखना चाहिए व्यक्ति के प्रति सम्मान तथा व्यक्तिवाद की इस स्वीकृति ने नारी स्थिति पर भी विचार किया। इंग्लैंड के जॉन स्टुअर्ट मिल (1806–1873) ने सर्वप्रथम नारी को नये संदर्भों से जोड़ने की कोशिश की और उनके समानाधिकार की बात करते हुए पहली बार मताधिकार देने के अधिकार की मांग की।

महात्मा गांधी ने नारी के कार्यक्षेत्र में समानाधिकार देने की वकालत की बाल विवाह, विधवा, पुनर्विवाह, देवदासियों की मुक्ति के साथ–साथ उन्होंने पर्दा प्रथा बंद करने के औचित्य से सशक्त तर्क सामने रखे। समाज से इस प्रकार की प्रेरणा पाकर नारी संगठन सक्रिय हुए और अपनी स्थितियों को देखकर वे अपने व्यक्तित्व को पहचानने लगी। आर्थिक सहायता की कमी को लेकर माध्यमों या सांस्कृतिक साहित्यिक माध्यमों के अभाव में जागृति लाने का कार्य बखूबी से निभाया था सांस्कृतिक चेतना के फलस्वरूप अब सामान्य जनता की उपेक्षा को राष्ट्रीय अपराध माना जाने लगा है तथा ऐसे धर्म के प्रति अनास्था या अविश्वास प्रकट किया जाने लगा है जो दुखियों के आंसू न पौछ सके तथा अनाथों को रोटी का टुकड़ा न दे सके धर्म के नाम पर आज समाज में ढोंग या पाखण्ड बढ़ता जा रहा है।

आज का शिक्षित मानव, जप, माला, छापा, तिलक को नहीं अपितु मानव की पूजा को धर्म मानता है। धार्मिक रीतियाँ और रूप हो गई है और हमारे लिए बंधन बन गई है कृष्णा सोबती मानती है कि साहित्य और समाज का गहरा संबंध है जो तथाकथित नैतिकता और धर्म के चौखटों के बाहर इंसान की जिंदगी का एक बहुत बड़ा हिस्सा फैला पड़ा है। उसकी उम्मीद आस्थाएँ उसकी कमजोरी प्यार और अधिक संघर्ष इन सबको किसी एक के नाम पर छांट देना उन्हें किसी दायरे से बाहर कर उस पर फैसले देना नहीं। कृष्णा सोबती ने अपनी लम्बी साहित्यिक यात्रा में हर नई कृति के साथ अपनी क्षमताओं का अतिक्रमण किया है 'निष्कर्ष' में विशेष रूप से प्रकाशित डार के बिछुडी से लेकर 'मित्रों मरजाती' ऐ लड़की, दिलो दनिश, हम हशमत और समय सरगम तक जो बौद्धिक उत्तेजना आलोचनात्मक विमर्श सामाजिक और नैतिक बहसे साहित्य संसार में पैदा की है। कृष्णा सोबती ने अपनी लम्बी साहित्यिक यात्रा में नई कृति के साथ अपनी क्षमताओं का अतिक्रमण किया है सामाजिक समस्याओं में प्रेम और विवाह समस्या उनके साहित्य में प्रमुख रूप से मुखरित है धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष भारतीय संस्कृति के चार आधार स्तम्भ स्वीकार किए गएँ है वर्तमान भौतिकवादी संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में अध्यात्म और धर्म प्रधान सांस्कृतिक मूल्यों का हास हो रहा है अब धर्म सर्व सामान्य जनता के लिए अफीम माना जाने लगा है।

परम्परागत धर्म से लोगों का विश्वास उठ रहा है धर्म रहित नवीन मूल्यों का विकास हो रहा है क्योंकि अब भारत धर्म निरप्रेक्ष्य राज्य है वर्तमान में महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में भी धर्म निरपेक्ष राष्ट्र समाज कानून तथा धर्म निरपेक्ष चेतन की धारणा स्थापित हुई है अध्यात्म का स्थान भौतिक दर्शन ने ले लिया है सामाजिक जागरण के युग में सामाजिक परिवर्तन के कारण संस्कृति में भी परिवर्तन आया है क्योंकि संस्कृति समाज सापेक्ष है वर्तमान समाज में जो सांस्कृतिक चेतना आई है उसकी पृष्ठभूमि में औद्योगिक

क्रांति मृतप्राय सामग्री व्यवस्था वैज्ञानिक दृष्टिकोण पश्चात्य प्रभाव और पाश्चात्य शिक्षा की प्रधानता रही है विज्ञान के विकास तथा पाश्चात्य संस्कृति के संपर्क के कारण आज हमारे धार्मिक कटूरता के बंधन शिथिल हो गए है तथा धर्म के प्रति उदारवादी दृष्टिकोण अपना लिया गया है। अब विचार के केन्द्र बिन्दु ईश्वर लोक परलोक एवं मोक्ष के स्थान पर मानव एवं मानव जगत की समस्याएं है डॉ लक्ष्मीकांत सिन्हा इस संबंध में मानते है कि सामाजिक आर्थिक व सांस्कृतिक क्षेत्र में मार्क्स के आगमन से आर्थिक मान्यताओं को जो नया मूल्य मिला उससे संसार की मान्यताओं को नया मोड़ मिला।

2.7.8 कानून और नारी

साहित्य और कानून की निगाह एक नहीं हो सकती साहित्य जीवन का दर्पण है जिन्दगी की बंदिश नहीं अतः नैतिकता जो पैमाना न्याधिकरण में प्रस्तुत किया जाता है। वह मानव पर लागू करना मानव व्यवहार को मर्यादित कर देना अनुचित है साहित्य सिर्फ इस दृष्टि से आंतरिक समय और बंदिश रखता है जो उसके बहाव को चढ़ाव को खुद ही सहेजता–समेटता है सत्य को अपने में संजोता है और खुलेपन में पनपने देता है भारत में नारी अधिकारों संबंधी कानूनों को मोटे तौर पर से भागों में बाँटा गया है जिसमें कानून सिर्फ कागजों में ही वो नारी की अवधारणा को बचाने के लिए नहीं समाज के पुराने दोगलेपन और कट्टरता के बीच हमारा आधुनिक भारतीय समाज की गुसाई वाली अवधारणा का आँखें मूद पालन किए जा रहा है नारी और अनुराग नारियों कोमल महिलाएँ और मर्यादा ये ऐसे शब्द है जिनमें निष्ठा आस्था अंधविश्वास की जगह तो है मगर समझ तर्क कानूनी का स्थान नहीं है। मर्द समाज ने औरतो से जवाब सुनना कभी पसंद नहीं किया और न ही उसकी समझदारी का आदर किया महिलाओं के लिए जो कानून बने उसका लाभ उसको उठाने नहीं दिया गया दरअसल नारी की अतह शक्ति से हमेशा घबराए, मगर जिन मर्दों के मन में औरत को लेकर कोई भ्रांति नहीं रही

उन्होंने औरत के लिए हमेशा रास्ता साफ किया उन्हें अपने बराबर खड़ा किया और उसके महत्व को समझाया माना कि ऐसी नारी जिन्दगी को तोड़कर नया जीवन तराशने की कायल नहीं है मगर सवाल तो वहीं खड़ा है कि इस स्थिति से पूर्ण संतुष्ट है या फिर तनहा रह जाने के डर से आतंकित हो उठती है जो हर मोड़ पर नए तरह के संघर्ष में है सामना करने की चुनौती देगा उनके लिए संबंध को जिन कानून और अधिकार से बड़ा जोखिम है आज की नारी को पारिवारिक व्यवस्था से जूझना पड़ता है उस अनुशासन को गड़ना कठिन है यदि संयुक्त परिवार न भी हो तो पति अपनी तयशुदा आदतों में कुछ भी बदलाव के लिए तैयार नहीं होता और नारी को सहज रूप से सब कुछ गृहण करने पर विश्वास करती है।

विद्रोह करना अपनी बात ऊपर रखना सच पर डटे रहना, उनके खिलाफ खड़े होना यह सारी बातें उन्हें अर्थहीन लगती है जबकि यह सारी अधुरी लगने वाली शर्तों की चर्चा माँ, बहन या सखी से कर दिल हलका कर लेती है और फिर जिन्दगी की जद्दोजहद में कोलहू या बेल बन जुट जाती है यही उनका सच है आज नारी अपने अधिकारों के प्रति पहले से कहीं अधिक सजग हो रही है वह चेतना का आधार शिक्षा तो है साथ ही वे योजनाएँ भी है जो रेडियो, टी.वी., सेमीनार, वर्कशॉप और लेखों द्वारा महिलाओं के उत्थान के लिए प्रसारित और प्रचारित की जा रही है यदि वे आर्थिक रूप से स्वावलंबी हो जाए यह अर्धसत्य है आज औरतों को कमाने की आजादी जरूर परिवार ने दी है मगर उनकी कमाई पर पूरा अधिकार परिवार का होता है। वह अपनी मर्जी से उस धन को खर्च करने का साहस नहीं जुटा पाती है जो ऐसा करती है उनका स्वागत ताने और कटाक्ष से चलता है और कभी कभी कलह को भीषण रूप भी धारण कर लेता है जिसके कारण वह न अपनी इच्छाओं को पूरा कर पाती है और न एक बार मिला जीवन भरपूर तरीके से अपनी शर्तों

पर जी पाती है वे पीड़ित नारी जो दूसरों पर निर्भर है उनको देखते हुए नारी ऐसा बनावटी जीवन जीती है।

बहुत सी ऐसी विवाहित महिलाएँ जो वैचारिक के स्तर पर इस तरह की कोई जिम्मेदारी महसूस करती है न बेसहारा माँ बाप का आर्थिक सहारा बन पाती है, ना ही सामाजिक बंधन निभा पाती है आज की तारीख में भी हिन्दुस्तान किसी भी तर्क या कानून से महत्वपूर्ण है यह बात अलग है कि बंधन जब कानून के रूप में अपनाए गए होंगे। तब भी इस तरह की कठिनाइयों का सामना करना पड़ा होगा नारी को पहचानने के लिए समय है कि नारी स्वयं अपने लिए कानून बनाएँ और प्रयोग करें क्योंकि आज वे जीवन ने हर कार्य क्षेत्र में मौजूद है उनका कर्तव्य केवल मर्दों को आगे बढ़ाना नहीं बल्कि अपने वर्ग को भी दिशा बोध देना है यदि कानूनी समझ रिश्ते की नींव हिलाती है तो हिलने दे बनावटी जिन्दगी से कहीं बेहतर है नारी और कानून की बात करें तो शिक्षा का चलन पहले महिलाओं में इतना आम नहीं था जितना स्वतंत्रता के बाद हुआ। महिला मुक्ति की बात आती है तो हमारे सामने मध्यवर्ग की औरतों की समस्याओं का खाका होता है, जिनके हर समाज में बदलाव की संभावना होती है। और जीवन मूल्यों का संरक्षण भी होता है। इसलिए अपने प्रति इनका सजग रहना बेहद जरूरी है और विशेषकर उन कानूनों को जानना जो महिला समाज की रक्षा के लिए बनाए गए है मध्यवर्ग किसी भी समाज का मेरूदण्ड होता है। इसलिए उनमें हर बदलाव की आशा बंध जाती है।

****

अध्याय – तृतीय

हिन्दी उपन्यास में नारी

हिन्दी नारी महिला उपन्यास में प्रारंभिक पीढ़ी की लेखिकाओं ने जहाँ घरेलू नारी के जीवन की त्रासदी तथा यातना के चित्रण के साथ उसकी स्थिति में सुधारों–मुख विषयों पर उपन्यास लिखे वहीं महिला लेखक ने अपने अनुभव क्षेत्र को विस्तार देते हुए ऐसा उपन्यास लिखा है जिसमें समाज की दोहरी नैतिकता का पर्दाफाश घर परिवार से बहार निकलकर कार्य करने वाली स्त्री को दोहरी भूमिका का यथार्थ अंकलन नारी–पुरूष संबंधों की सुक्ष्मतओं की नये रूप में प्रस्तुती और मानवीय सकारात्मकता तथा संबंधों के बिखराव से उत्पन्न सूनेपन का चित्रण है इसके साथ ही काम संबंधों के यथार्थ को जैविक जरूरत के रूप में खुलेपन के साथ व्यक्त किया गया।

इस काल की लेखिकाओं ने अपने उपन्यास में विषय बनाया इस काल की महिला लेखिकाओं ने समाज में व्याप्त विभिन्न समस्याओं को भी अपने उपन्यासों में विषय बनाया इस काल की महिला लेखिकाओं ने समाज में पर्याप्त लिंगभेदी मानसिकता और व्यवहार में दोहरेपन के प्रति तीव्र आक्रोश व्यक्त किया है पुरूष प्रधान समाज में नारी सदियों से दोयम दर्जे की नागरिक बनकर रही है सारे मूल्य मान्यताएँ परंपराएँ संबंध और रिश्ते नाते नारी चुपचाप सहती रही है नारी रचनाकारों ने पुरूष सत्तात्मक व्यवस्था में पनपती विसंगतियों, विपदाओं, विडम्बनाओं को बड़ी गहराई से एक एक कर उभेरा है।[29]

नैतिकता के परंपरागत नारी निरपेक्ष विचारों व्यवहारों को अपनाने वाली नारी की मूक एक अंतर्व्यथा को वाणी दी है अतः नारी पक्ष को प्रबलता से

[29] डॉ. शैल रस्तोगी, हिन्दी उपन्यासों में नारी पृ. स. 164

प्रस्तुत करना नारी में व्यक्तित्व की पहचान की भूख जगाना इक्कीसवीं सदी के महिला रचनाकार की और एक उपलब्धि है

दाम्पत्य जीवन में पति के व्यक्तित्व का विकास होता रहता है परन्तु नारी का व्यक्तित्व अधिकांशतः कुंठित हो जाता है। अतः दामपत्य जीवन के भीतर से स्वतंत्र व्यक्तित्व की चाह इस काल की लेखिकाओं के साहित्य में मुखरता से व्यक्त हुई है नारी को यदि अपनी स्वतंत्र पहचान स्थापित करनी है तो उसे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होना पड़ेगा आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने के लिए उसे घर की देहली लांघकर कामकाजी नारी के घर बाहर की टकराहट को भावनात्मक संघर्ष के रूप में प्रस्तुत किया है।

रचनाकारों ने सदियों से दबी नारी की अंतपीड़ा को वाणी दी है तथा कई जगह तीखा आक्रोश प्रकट किया है इसके कारण पारिवारिक संबंधों का टूटना भी उन्होंने अनिवार्य माना है इन रचनाकारों में मैत्रेयी पुष्पा, चित्रा, मुद्गल, प्रभा खेतान, असगर, वजाहत, महुआ, माजी, गीतांजली, श्री मनीषा कुलश्रेष्ठ और अलका सराबगी आदि प्रमुख है इक्कीसवीं सदी के दशक के महिला लेखक का एक सशक्त प्रवाह हिन्दी साहित्य में प्रवाहित हुआ। इस काल की रचनाओं में नारी उपन्यास के लिए चर्चा प्रस्तुत करने का प्रयास है नारियों द्वारा किये गये लेखन, पुरूष लेखन यह भी कहना गलत है इससे महिला लेखन को पुरूष लेखन से साबित करने के षड्यंत्र की बू आती है उनकी बात से सहमत होते हुए भी यहाँ केवल अध्ययन की सुविधा की दृष्टि तथा अध्ययन क्षेत्र को सीमित करने की दृष्टि से महिला लेखन कहा जा रहा है।

इस काल की लेखिकाओं ने सामाजिक विषयों पर उपन्यास लिखे है दहेज प्रथा, कन्या विक्रय, वृद्ध विवाह, पुरूषों के दुराचार, पर्दा प्रर्था, बहुविवाह के परिणाम स्वरूप आदि तत्कालीन सामाजिक कुरीतियों को इन लेखिकाओं ने अपने उपन्यासों का विषय बनाया है।

हिन्दी उपन्यास में नारी ने अपने कथा साहित्य में मुख्य सरोकार समकालीन जीवन स्थितियों में मनुष्य के भीतरी संसार का उद्‌घाटन किया लेकिन यह भीतरी कशमकश भी बदलते जीवन परिवेश का आत्मीय ब्यौरों और कलात्मक नजर के साथ अंकन भी करती चली है महिला उपन्यासकारों ने अपने उत्साह में ये भूला देते है कि कथा साहित्य के व्यापक के निवास पर अलग अलग रंगों के रूप में भी उनका कुछ महत्व हो सकता है इन्होंने जीवन रहित संवेदना का या संवेदनाविहीन जीवन स्थितियों के अर्थ को पूर्ण रूप से उजागर किया है।

आज का समय महिला उपन्यासकारों के लिए उपन्यास लेखन की और महिला एवं पुरूष दोनो ही अग्रसर हुए है जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मात्रात्मक ही नहीं अपितु गुणात्मक परिवर्तन भी आया है आधुनिक जीवन में मूल्य की सर्वाधिक चर्चा रही है साहित्य की लोकप्रिय विद्या उपन्यास के माध्यम से वर्तमान में बदलते मूल्य अपना अस्तित्व खोए रहे है आधुनिक युग में उपन्यास के महत्व को प्रतिपादित करते हुए एक विद्वान लिखते है।

मध्ययुग में जो स्थान महाकाव्य का था, उससे भारतेन्दु युग में जो स्थान नाटक का या वहीं युग के अनुकूल उससे भी कहीं अधिक महत्वपूर्ण स्थान आज उपन्यास का है आज की नारी उपन्यास साहित्य में अनेक विशेषताएँ दिखाई दी है अगर हम मूल्य स्तर की बात करें तो उनमें आधुनिकता के बोझ के साथ न्याय और इसके साथ ही समकालिन मानव की संवेदनाओं को कई अभिव्यक्तियों और आशाओं को संक्षेप बनाने का प्रयास किया गया है। इसी प्रकार अनेक महिला कथाकारों एवं पुरूषों के रचना का अवलोकन करने पर पाया गया कि मोहन–राकेश के उपन्यासों में आधुनिक संवेदना को दाम्पत्य जीवन की अभिशप्त और तनावपूर्ण स्थितियों में फैलाया है।

महिला उपन्यासकारों में नारी की नारी के प्रति संपूर्ण दृष्टिकोणों को बड़े ही खुले एवं बेक्षिक ढंग से समाज के सापेक्ष अपने जीवन की अधेड़बुन

को दर्शाया गया है। महिला उपन्यासकारों ने मूल्य विघटन समकालिन जीवन की जटिल संवेदना व्यंग्य दृष्टि के जरिये सामाजिक स्थितियों की जूहडता को खोलकर रखा गया है। इस प्रकार समकालिन उपन्यासों में सामाजिक यथार्थ को पहचानने की क्षमता मिलती है आज की कुसंकटाकूल आर्थिक सामाजिक, राजीनितिक और मनोवैज्ञानिक परिस्थितियों में जीवन संघर्षपूर्ण और उलझन मय हो गया है।

आज का युग राष्ट्रीय सीमाएँ पार कर अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में पर्दाफाश कर रहा है आज की नारी में उपभोक्तावादी संस्कृति को बोलबाला है मानव सभ्यता समाज में परिवर्तित विचारधाराओं से प्रभावित हो रही है अनेक महिला उपन्यासकारों ने बच्चें को केन्द्र में रखकर मुन्नु भण्डारी का आपका बंटी ममता कालिया का बेघर, गिरिराज किशोर की यात्राएँ, कृष्णा सोबती का सूरजमुखी अंधेरे में, अमृता प्रीतम्का समय सरगम उपन्यास है इन उपन्यासों में क्रुर सच्चाइयों का यथार्थ से समाना होता है। आज वैज्ञानिकता के युग में मानव के सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन होने के कारण सामाजिक मूल्यों में बिखराव हुआ है।

हिन्दी उपन्यास में महिलाओं का विशेष योगदान रहा है दूसरा इनके साहित्य की प्रायः उपेक्षा होती रही है यदि उपन्यास साहित्य में महिलाओं को उजागर किया भी गया तो इनके दृष्टिकोण का व्यापक चित्रफल उभरकर सामने नहीं आ सका, नारी होने के नाते इनकी प्रेम समस्या पुरूष की प्रेम समस्या से भिन्न है नारी अपने स्वतंत्र अस्तित्व को न केवल पहचाने लगी है अपितु उसे स्थापित भी करने लगी है।

नारी के जीवन के प्रेम की अनुभूति उसके केन्द्र में है और इसकी अपनी सीमाएँ भी है एक नारी के जीवन में व्याप्त संत्रास, घुटन, त्रासदी प्रेममय भाव और व्यापार को नारी मन की उपेक्षा कौन अधिक सच्चाई से प्रकट कर सकता है आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने नारियों के विषय चुनाव

को संगत बतलाये हुए कहा है यह विचित्र बात है कि स्त्री जब साहित्य लिखती है स्त्रियों के बारे में ही लिखती है और पुरूष जब साहित्य लिखता है तब भी स्त्रियों के संबंध में ही लिखता है दोनों में अंतर यह होता है। कि नारी लेखन का उद्देश्य है अपने विषय में फैला हुए भ्रम को पैदा करना है। महिला उपन्यासकारों का लेखन चुनने के पीछे यह भाव प्रमुख रूप से रहा है।

जाके पांव न फटी विवाई वो क्या जाने पीर पराई।

पुरूष उपन्यासकारों की अपेक्षा नारी मन के चित्रण में महिलाओं की अधिक समर्थ सिंह हो सकी है। सूर्यबाला के अनुसार – अनुभव यही कहता कि लेखिकाओं का क्षेत्र अधिकतर घर और नारी मन रहा है जब कि पुरूष का घर बाहर दोनों, लेकिन हम इस क्षति की पूर्ति भी कर लेती है नारी मन की अचाह गहराइयों में बैठकर और इतना तो मैं दावे के साथ कह सकती हूँ कि नारी के अंदर इतने गढ़ लिपिस्म गुफाएँ और प्राचीन है कि इन्हे भेद पाना आसान नहीं जितनी समस्या से नारी भेद सकती है पुरूष नहीं।

महिला उपन्यासकारों द्वारा रचित रचनाओं में संसार के सभी पक्षों के चित्रों को उजागर किया गया है और अपनी सरलता के कारण जन जीवन की जीवित शास्त्र बन गई है महिला लेखिकाओं ने नारी मन की विभिन्न भावनाओं का चित्रण किया है साथ ही आज की पढ़ी लिखी युवतियों के विचार ईश्वर के संबंध में कहती है कि ''

'भगवान' तो कुछ भी नहीं सिर्फ एक विचार है, जिसे हमने अपने देखे हुए सपने के हिसाब से एक शरीर एक नाम दे दिया है उसे रहने को मंदिर दे दिया है मैं हलावों में किसी झुठ कल्पना और लोगों की बकवास में विश्वास नहीं करती महिला उपन्यास साहित्य मूलतः हमारे समाज के मध्यवर्ग पर आधारित है।

मध्यवर्ग की नींव एक और तो उसकी आर्थिक स्थिति पर है दूसरी और उसके परिवार की केन्द्र बिंदु स्त्री पर हिन्दी उपन्यास में सर्वथा एक नई चेतना आई नारी को देखने समझने मूल्यांकन की नई दृष्टि और जीवन के नवीन विवेचना का सहारा लेकर उपन्यासकारों ने नारी चरित्र को अपने उपन्यासों में संपूर्णता से उभारा है उसके प्रति किए गए सामाजिक अन्यायों का खुलकर पर्दाफाश किया है और उन्हीं के परिप्रेक्ष्य में नारी के उत्थान पतन को आंका है नारी के अंतर्मन के विश्लेषण का कार्य आठवें दशक के उपन्यासकारों में महिला उपन्यासकारों ने बड़ी सजीवता से किया है इन्होंने मानव जीवन के अंकन में मनोविज्ञान के चेतनावादी दृष्टिकोण का सहारा लिया है।

3.1 हिन्दी उपन्यास में स्वतंत्रता से पूर्व नारी :

जब मनुष्य आदिम अवस्था में था सामाजिक दृष्टि से नारी हमेशा एक गुलाम की स्थिति में रही है दोयम दर्जे पर रही है कभी कभी तो वह मनुष्य श्रेणी में भी नहीं गिनी गई आर्य समाज में जहाँ नारी को माता के रूप में पुण्य माना वहीं वह भूल गया कि वह पहले पत्नी है और माता बाद में पत्नी के रूप में तो उसे दासी ही माना गया।[30]

वैदिक काल में उसकी स्थिति में परिवर्तन आया स्वतंत्रता से पूर्व इस पुरूष प्रधान समाज में लिखने का साहस करने वाली जिस नारी को हम सबसे पहले स्मरण करते है दुर्भाग्य से उसका नाम अज्ञात है दरअसल विरोध के जिस तेवर में इसने उस व्यवस्था में चुनौती दी है, उसके दुष्परिणाम का उसे संभवत भली भाँति पता था।

1882 में लिखी गई सामन्ती उपदेश इस अज्ञात हिन्दु लेखिका ने लिखी है जिसकी शैली हालांकि उपदेशात्मक ही है किन्तु मौलिकता के तर्क उसमें

[30] डॉ. शैल रस्तोगी हिन्दी उपन्यासों में नारी पृ. सं. 233

आधुनिक सर्जनात्मक गुणों को समाहित किए सामने आते है इसी अज्ञात लेखिका का लेखन हमें नारी मुक्ति के अनुशासन के प्रथम साक्ष्य के रूप में प्राप्त होता है। जो पुरूष प्रधान समाज की हालत से आरोपित परम्परा में अपनी जाति की घुटता, पिसता देख विद्रोह से भर उठी थी।

डॉ. राजेन्द्र प्रताप का कथन है आजादी से पूर्व उपन्यास के सरोकार राष्ट्रीय और सामाजिक थे तो आजादी के बाद मूल्य विघटन, राजनीतिक प्रपंच सर्वव्याप्त भ्रष्टाचार और व्यवस्थागत दबावों में पिसते लोग इन सबसे उपर वैयक्तित्व मूल्यों की प्रतिष्ठा का प्रयास पूर्व भारतीय समाज में मनुष्य का व्यक्तित्व परिवार प्रथा सामान्यता प्रचलित थी अतः पारिवारिक जीवन आर्थिक रूप से सुरक्षित था

भारत में उपन्यास लेखन का प्रारंभ अठारवीं सदि के उतराई में हुआ यद्यपि इसके लिए परिस्थितयाँ पिछले पचास वर्षों से बन रही थी बंगाल का उच्च मध्यवर्ग अंग्रेजी शिक्षा एवं संस्कृति से प्रभावित होने के कारण उपन्यास के सम्पर्क में सबसे पहले आया।

gaurishree

भारत में अंग्रेजी उपन्यासों का प्रभाव सर्वप्रथम बंगला के पाठकों पर रहा जो अंग्रेजी भाषा एवं सभ्यता के अधिक परिचित थे फोर्ट विलियम कॉलेज ने हिन्दी उर्दु की अनेक ग्रंथ कथाओं का प्रकाशन 19वीं सदि के प्रथम दशक में किया परिणामतः बंगाल में मध्यवर्ग में उपन्यास लेखन की रूचि पनपने लगी।

साहित्य समाज में होने वाले परिवर्तनों से अछुता नहीं रह सकता यूरोप में जहाँ पूंजीवाद के विकास के साथ मध्यवर्गीय चेतना जागृत हुई तथा रिचर्डस, हेनरी फिल्डिंग जैन आस्तिन के उपन्यासों के मध्यवर्ग का सटीक चित्रण हुआ पूर्व भारतीय समाज में मनुष्य का व्यक्ति रूप में कोई स्थान नई

था स्वतंत्रता से पूर्व, संयुक्त परिवार प्रथा सामान्यता प्रचलित थी अतः पारिवारिक जीवन आर्थिक रूप से सुरक्षित था।

भारतेन्द्र जी द्वारा सम्पादित हरिश्चन्द्र चन्द्रिका नामक पत्रिका में 1875 ईवीं प्रकाशित एक कहानी के लिए उपन्यास शब्द का प्रयोग किया गया हिन्दी प्रदीप नामक मासिक पत्रिका के 1879 ईवीं के एक अंग से बालकृष्ण भटट द्वारा रचित रहस्य कथा उपन्यास छपना प्रारंभ हुआ।

डॉ. गोपाल राम गहमरी ने देवरानी जेठानी की कहानी को हिन्दी का पहला उपन्यास माना है जो 1870 ई. में छपी थी आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लाला श्री निवास दास कृत परीक्षा गुरू 1882 ई. को हिन्दी का पहला उपन्यास स्वीकार किया है इन सभी कृतियों में मध्य वर्ग के जीवन को केन्द्र बनाया गया है। तिलस्मी ऐयारी, जासूसी उपन्यास रोमांस बहुल उपन्यास लिखे गए अंग्रेजी व बंगला से कई उपन्यास के अनुवाद हुए। सामाजिक उपन्यासों का लक्ष्य समाज सुधार था।

gaurav shree

प्रेमचंद के उपन्यासों में समाज सुधार की प्रवृत्ति थी इस काल में उपन्यासों में लोकरंजन की प्रवृत्ति है किन्तु लोकरंजन की नहीं प्रेमचंद पूर्व हिन्दी उपन्यास अपने विकास के प्रारंभिक चरण में था अतः इस काल में नारी को अपने अस्तित्व का पूर्ण अधिकार था वह पति की मृत्यु के बाद अपना जीवन अपनी इच्छा से सती के रूप में ले लेती थी।

भारतीय समाज पुरूष प्रधान समाज रहा है जहाँ आदिकाल में नारी–पुरूषों की इच्छानुसार जीवन यापन करती थी उसे किसी ने कभी सार्थक व्यक्तित्व नहीं माना लेकिन राख के भीतर दबी राख की चिंगारी के समान नारी की भूमिका समय समय पर अपना रूप दिखाती आई है।

प्रेमचंद के आगमन से पूर्व हिन्दी कथा साहित्य घुटनों से लड़खड़ाते उस बालक के समान था जिसे अपने पैर जमाने के लिए जीवन की कठौर

वास्तविक धरातल की तलाश थी मनुष्य की चेतना वर्तमान में है, किन्तु उसके दोनों छोर अनोखी रीति से अतीत और भविष्य को छूते रहते है उसकी स्मृतियाँ मन को विगत की और आकृष्ट करती है और उन स्मृतियों में कामनओं का पुट देकर वह भविष्य में होता है।

स्मृति और कामना का यह मेल उपन्यास के चेतन प्रवाह पद्धति की विशिष्ट देन है पुरूषों द्वारा की गई ह्रदय प्रशंसा की आड़ में उनकी कलूषता का पर्दाफाश कर उन्होंने नारियों को गहनों के प्रेम साज श्रृंगार की प्रवृत्ति धन लोलूपता आश्रम और संरक्षण पाने की चाह में पुरूषों के गुलाम बनने जैसी बेडियों के महिन और मजबुत धागों में उलझ जाने की प्रेरणा दी है देवी देवताओं और धर्म की आड़ लेकर नारियों पर ढाये जा रहे पुरूषों के जुल्मों को ललकारती हुई यह साहसी और दबंग नारी लेखिका नारियों के लिए एक सर्वथा नये धर्म का आह्वान करती है ऐसे पुरूषवादी लेख में जितने भी उपन्यास लिखे गए उन सभी उपन्यासों में नारियों के लिए रहन सहन के तरीके धर्म की शिक्षा, नैतिक कर्तव्यों के गढ़े गए उपदेश भरे है।

संसार में हर तरह के अन्याय ओर गुलामी का अंत हो जाएगा पर औरत की गुलामी और अन्याय कभी खत्म नहीं हो सकेगा सारी आधुनिकता और शिक्षा प्रसार के बावजूद बल्कि ज्यों–ज्यों रोशनी बढ़ेगी यह अंधेरा और घना होगा नए–नए ढंग से।

डॉ. रामदर्शन दास के शब्दों में कहते है कि हिन्दी साहित्य कोश में पुरूष साहित्यकारों के समक्ष अपनी अद्‌भुत प्रतिमा के साथ प्रकाश मान कुछ ऐसी देवियाँ है जिन्हाने अपनी प्रतिमा और कृतियों द्वारा हिन्दी साहित्य में चार चांद लगा दिए उसके मष्तिक को और भी उन्नत कर दिया है उनकी कृतियों में हिन्दी साहित्य को प्रगतिशील जीवन की अनुप्रेरणा मिली है इतना होने पर भी आज तक हिन्दी साहित्य में कोई ऐसी पुस्तक नहीं लिखी गई। जिससे

उन साहित्यिक देवियों का परिचय और उनकी कृतियों की झांकी देखने को मिल सकें।

प्रेमचन्द के आगमन से पहले के कथा साहित्य में बंगमहिला अर्थात् राजेन्द्र बाला घोष और उनकी कहानी दुलाई वाली 1907 को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है इससे हम कह सकते है कि जब हिन्दी कथा साहित्य आम आदमी के यथार्थ से कोसों दूर काव्यात्मकता और पाणिनीय भाषा आदर्शों के जंगल में पड़ा था सर्वप्रथम बंग महिला के लेखन में हमें अनेकानेक सृजनात्मक गुण और सामाजिक सरोकारों की प्रधानता देखने को मिलती है।

बंग महिला ने अपनी रचनाओं में सामाजिक जीवन के विराट अनुभव को केन्द्र में रखा था ओर दृश्य–परिदृश्य की अनेक त्रिज्याएँ खींची। शास्त्रीय दृश्यों में उन्हें तथ्य बनाया नारियों की भूल अन्तवेदना ने उन्हें बैचेन किया गाँवों के अनुभूत जीवन ने उन्हें आंचलिक लेखन शिल्प दिया और इन सबके कारण उनमें जिस सृजनसत्ता ने जन्म लिया उसने एकदशक बाद प्रेमचन्द को जन्म दिया।

gaurishree

विकास के इसी क्रम में रामेश्वर नेहरू के संपादन में 1916–1917 में नारी दर्पण पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ हुआ जिसके माध्यम से अनेक नारी कथाकार सामने आई और बौद्धिक विकास को व्यावहारिक और क्रियात्मक बनाने के संपादकीय में छपी थी

आलोच्य युग की ऐसी विषमताओं के बीच कुछ नारी ने उपन्यास लिखने का भी साहस दिखाया हालाकि यह कहने और मानने में उन्हें कोई कठिनाई नहीं है कि प्रेमचन्द से पूर्व जिस मनोरंजन तथा घटना चमत्कारों से भरे काल्पनिक घटनाओं से उपन्यास की विषयवस्तु को ग्रस्त कर रखा था उससे लेखन इन नारियों का नहीं रहा।

मूल्यगत संग्रहण की स्थिति में उन नारी लेखिकाओं ने पुरूष लेखकों के समान की भावुकता और कल्पना के आधार पर नारी आदर्श और सामाजिक नैतिक आचारों की प्रतिष्ठा को ही अपने लेखन का मुख्य विषय बनाया समय और अनुभव के कारण नारी साहित्य के प्रारंभिक उपन्यासों की कमी के कारणों का विश्लेषण करती है।

धर्म और नारी मर्यादा के आदर्शों पर आधारित इस उपन्यास के बाद रूकमनी देवी द्वारा मेम और साहब नामक उपन्यास लिखा गोपाल देवी नामक स्त्री ने दयावती उपन्यास लिखा गिरिजा देवी ने कामना कुसुम नामक उपन्यास लिखा इस बात का बहुत ही आश्चर्य है कि समाज में कड़े प्रतिबंधों को सहती हुई जिन नारियों ने अभिव्यक्ति का साहस दिखा उनके इस लेखन को अपरिपक्व की संज्ञा देकर हाशिये पर धकेल दिया गया।

एक प्रख्यात आलोचन का कहना है कि इन लेखिकाओं ने नारी चरित्र अपरिपक्व अविकसित रहे इनमें आदर्शों का ही अधिक्य है इसलिए इन उपन्यासों का साहित्य में कोई स्थायी मूल नहीं हिन्दी कथा साहित्य में मौलिक उपन्यास लिखने वाली लेखिकाओं में सबसे पहले शैल कुमारी देवी का नाम लिया जाता है। इन्होंने 1926 में उमा सुंदरी नामक प्रथम उपन्यास लिखा है डॉ. नीहार गीते के अनुसार उमा सुंदरी शैलकुमारी देवी दि.सी. 1926 एक महिला द्वारा लिखा हुआ हिन्दी संसार का प्रथम मौलिक उपन्यास है।

3.2 मध्य कालीन उपन्यास लेखिकाएँ :

प्रारंभिक उपन्यासकार साध्वी सती पतिप्राणा अबला इन्होंने सुहासिनी नामक उपन्यास (सन् 1890 धर्मेन्द्र प्रेम वनारस) लिखा जो एक चरित्र प्रधान और पतिपरायण स्त्री की आदर्शवादी कहानी है शब्दों पर बंगला भाषा का गहन प्रभाव तथा लिंग की अनेक त्रुटियाँ देखने को मिलती है।

स्वतंत्रता पूर्व के आरंभिक दौर की लेखिकाओं का लेखन चाहे वह अन्नपूर्णा देवी का हो या उषा देवी मिश्रा या शिवरानी देवी या कौशल्य अश्क का इस में कलम पकड़ने का साहस करना ही कहूंगी उनके अनगठ लेखन के मूल में घर परिवार के ह्रदय और वे पारंपरिक उदात्त चरित्र थे जो पाठक के समक्ष आत्मीय सुदृढ़ नैतिक व्यक्तित्व का पुष्ट खाका रचते हुए मनुष्यता और मूल्यों की वकालत करते थे उनकी नारियाँ समाज में स्थापित स्वीकृत पारंपारिक नारी दबि सतीत्व, पत्नीत्व, मातृत्व को ही अपना अस्तित्व बोध मानकर चलने वाली नारियाँ रही है इस प्रकार प्रारंभिक कालीन उपन्यास ने अपने उपन्यासों के मख्यतः सामाजिक और धार्मिक मर्यादाओं के प्रति श्रद्धा व्यक्त की है, विद्रोह अथवा क्रांति उनका लक्ष्य नहीं था।

इन लेखिकाओं के बारे में चित्रा मुदगल टिप्पणी देते हुए कहती है कि कलम पकड़ने का साहस भी नारियों में पैदा हुआ यह भी तो एक महत्पूर्ण उपलब्धि है।[31]

Gaurav Shete

3.3 स्वतंत्रता के बाद हिन्दी उपन्यास में नारी :

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का कथन है आजादी से पूर्व उपन्यास के सरोकार राष्ट्रीय और सामाजिक ये तो आजादी के बाद मूल्य विघटन, राजनीतिक प्रपंच सर्वपर्याप्त भ्रष्टाचार और व्यवस्थागत दबावों में पिसते लोग और इस सबसे उपर वैयक्तिक मूल्यों की प्रतिष्ठा का प्रयास इन्हीं सबके बीच कहीं टूट रहे थे नैतिकता के प्रतिमान हिन्दी उपन्यास में महिलाओं के उपन्यासों का रचनात्मक स्तर पर उनमें अनेक नवीन प्रवृत्तियाँ दिखाई देती है।

युग संवेद एवं बौद्धिक संवेदना के कारण ऐसी विशेषताओं का प्रभाव स्वाभाविक है क्योंकि रचनाकार का अपना दृष्टिकोण है जिसके माध्यम से वह यथार्थ को अन्वेषित करता है वर्तमान उपन्यास लेखन दृष्टि का परिप्रेक्ष्य

[31] शीला रजवार, महिला उपन्यासकार मूल्य चेतना पृ. सं. 22

सर्जनात्मक रूप में सामाजिक यथार्थ बोध से उत्पन्न मूल्यों प्रवृत्तियाँ एवं युगीन स्थितियों को निरूपित किया ये प्रवृत्तियाँ आज के जीवन में जीवन परिवेश से अदभूत है।

समाज में सर्वत्र संघर्ष व्याप्त है जिसका परिणाम है नवीन स्थापनाएँ नये आदर्श नये मूल्य अर्थात् नया समाज प्राचीनता के प्रति विद्रोह और नवीनता के प्रति आग्रह बढ़ता जा रहा है लगता है कि मानवता पलट रही है और लक्ष्य तक पहुँचने के लिए प्रयासरत है पुरातन के प्रति विद्रोह मानक अपने अतीत से विश्वत होकर वर्तमान को ही सब कुछ समझता हुआ प्रगति के पथ की और बढ़ने का दावा कर रहा है महिला उपन्यासकारों के उपन्यास में समाज के इस बदलते स्वरूप का चित्रण बखूबी हुआ है तथा इसमें नवीनता के दर्शन हो रहे है।

आधुनिक समय की महिला उपन्यास विश्व व्यापी मूल्य संक्रमण के प्रभाव से अछूते नहीं है वैसे भी चेतना का संबंध मनोविज्ञान से है और चेतना हर नारी की विशेषता होती है। नारी उपन्यासकारों के भिन्न भिन्न दृष्टिकोणों में ही इस प्रकार की वैचारिकता प्रक्रिया दिखाई पड़ती है इनमें कुछ विशेषताएँ पूर्ववर्ती उपन्यासों में भी मिलती है।

यथा यथार्थवाद प्रकृतिवाद आदर्शवाद आदि लेकिन यहाँ की प्रवृत्तियाँ सर्जनात्मक धरातल की आवश्यकता के रूप में न आकर लेखकीय चिंतन के रूप में मुखरित हुई है अर्थात् सामाजिक शून्य स्थिति एवं वस्तुपरक दृष्टिकोण से व्यंजित हुई है जीवन की जटिल एवं परम्परा बोध की रूढ़ियों से संबंध भाव चेतना के परिवर्तित ने वर्णित किया है

युग के परिवर्तन के साथ मानव मूल्यों आस्थाओं एवं विचारों में परिवर्तित धारणाओं के प्रत्यत दर्शन आठवें दशक के महिला लेखन में होता है। स्वतंत्रता के बाद भारत में लिखे गए उपन्यासों की सूची बहुत लम्बी है क्योंकि अनेक

उपन्यासों ने अलग अलग कारणों से पाठकों का स्थान आकृष्ट स्वतंत्र्योत्तर उपन्यासों में से कुछ दृश्य की मौलिकता के कारण चर्चित रहे है तो कुछ अपनी चरित्र सृष्टि के कारण कुछ उपन्यासों में किए गए भाषिक प्रयोग उनकी विशिष्टता रेखांकित करते है।

स्वतंत्रता के बाद की महिला उपन्यासकारों ने समाज का संक्रमणकाल समाज में वृद्धजनों और नारियों की स्थिति क्या है यह उसके सांस्कृतिक विकास का सबसे बड़ा मापदण्ड माना जा सकता है उस समाज में नारी–पुरूष के आपसी संबंध कैसे हैं चूंकि हर वर्ग हर पीढ़ी और समुदाय के संबंधों में सर्वाधिक समान्य घटक के रूप में नारी–पुरूष का परस्पर संबंध ही है, भारतीय समाज की मानसिकता थोड़ी संकीर्ण दिखाई पड़ती है।

यह संकीर्णता नारी और पुरूष के आपसी संबंधों की व्याख्या करने में ही नहीं बल्कि नारी–पुरूष को देखने के अलग नजरिए की भी वकालत करती है इस संदर्भ में कृष्णा सोबती का कहना है क्या हम याद करना पसंद करेंगे कि भारतीय मानसिकता अपने समूचें आदर्शों तामझाम के साथ बराबर एक खास तरह की संकीर्णता का शिकार रही है साहित्यिक गतिविधियों को तत्कालीन गतिविधियाँ प्रभावित एवं प्रचलित करती है।

स्वाधीनता आंदोलन के दौरान किए गए संघर्ष में जहाँ हिन्दी उपन्यासों में चित्रित किया गया वहीं स्वाधीनता के उपरांत लिखी गई औपन्यासिक कृतियों में आजादी के मोह, भंग नेताओं की स्वार्थपरता एवं गांधीवादी मूल्यों के विघटन का पर्याप्त चित्रण हुआ।

स्वाधीन भारत में लिखे गए उपन्यासों में विषय वैविध्य है, जीवन की व्यापकता है चिंतन, की प्रोढ़ता है तथा शैली शिल्प के नये प्रयोग है इन्होंने उपन्यासों में परम्परागत रूढ़ियों स्थापित मान्यताओं के विरूद्ध नारी स्थिति का वास्तविक चित्रण किया है प्रेम, वात्सल्य, विवाह वासना, ममता आदि की सशक्त अभिव्यक्ति की है।

3.4 सामाजिक उपन्यास में नारी :

स्वतंत्रता के बाद महिला उपन्यासों में अस्तित्व के प्रति जागरूकता सामाजिक अराजकता नैतिक उच्छृंखला खोखलापन, अनास्था, निराशा एवं तृष्ण, घृणा नवीन मूल्यों का चित्रण हुआ है।

परम्परागत सामाजिक मूल्यों को नकारते हुए युगीन उपन्यासों नें भारतीय जीवन में आधुनिकीकरण के परिवर्तित परिवेश से परस्पर मानवीय संबंधों के विघटित रूप को चित्रित किया है महिला उपन्यासकारों ने व्यक्तित्व के निर्माण में मूल प्रवृत्तियों के महत्व को स्वीकार करते हुए उनकी स्वच्छेद अभिव्यक्ति में बाधक सामाजिक मर्यादाओं मान्यताओं की संगतता पर भी विचार किया है जिससे व्यक्ति और समाज के प्रति अवरूद्ध होती रही है।

आठवें दशक के महिला उपन्यासकारों के मूल्य चेतना, सामाजिक राजनैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक यथार्थ में समाज के स्थान पर व्यक्ति को प्रतिष्ठा मिली अतः समाज निरपेक्ष व्यक्ति चिंतन का विकास हुआ है। परम्परागत बंधन शिथिल हो चुके है इसी प्रकार व्यक्ति की अहं भावना ने व्यक्ति को लक्ष्य और समाज को निर्मित रूप में स्वीकार है नारी का मूल्यांकन नारी के रूप में होने लगा है अब उसकी सत्ता मात्र सापेक्ष नहीं है।

आठवें दशक की महिला उपन्यासकारों ने मुन्नू भण्डारी का महाभोज मृदुला गर्ग का उन पचास दिन अर्मता प्रीतम्का पिंजर कृष्णा अग्निहोत्री का अभिषेक आदि प्रमुख है सामाजिक क्षेत्र में भी नारी प्रतिष्ठा की भावना ने परम्परागत मूल्यों को समाप्त कर दिया है वैवाहिक जीवन की रूढी मान्यताएँ बदल चुकी है।

विवाह के परम्परागत बंधन शिथिल हो गए है तथा विवाह दो आत्माओं का पुनर्मिलन या जन्म जन्मान्तर का संबंध स्वीकार न किया जाकर समझौता अथवा मैत्री संबंधी माना जाने लगा और प्रेम विवाह अंतजार्तिय विवाह विधवा

तलाकोपरांत पुर्नविवाह को समाज में मान्यता मिलने लगी है हिन्दी महिला उपन्यासारों के उपन्यासों में मानव जीवन का आर्थिक पक्ष भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि इसका सामाजिक पारिवारिक या वैयक्तिक रूप होता है।

पारिवारिक संबंध केवल सामाजिक आधारों को लेकर ही नहीं चलता उसके लिए मधुरिमा का आधार दोनों की मानसिक परिपक्वता के साथ आर्थिक सम्पन्नता भी है एक आलोचक लिखती है दाम्पत्य जीवन में आर्थिक सम्पन्नता भी है और मतभेद तथा वाद विवाद होते है वहीं दूसरी और मानसिक तनाव आक्रोश घुटन और निराशा का बीजारोपण हो जाता है जिसके कारण दोनों में संबंध विच्छेद हो जाता है।

महिला उपन्यासकारों ने आर्थिक संबंधों को लेकर पारिवारिक जीवन में जो परिवर्तन आया है तथा परिवर्तन के फलस्वरूप जो चेतना आई है उसका चित्रण किया है आर्थिक चेतना के फलस्वरूप अब न तो नारी का शोषण किया जा सकता है आज बढ़ते हुए प्रगतिशील भौतिकवादी युग में नारी स्वयं भी अपने जीविकोपार्जन के लिए आत्मनिर्भर होने में ही जीवन की सफलता को स्वीकार करने लगी है क्योंकि आर्थिक परिवेश सामाजिक संबंधों को परिवर्तित करता है।

महिला उपन्यासकारों ने वर्तमान में देश को संपूर्ण सामाजिक संबंधों को परिवर्तित करता है शासनतंत्र का संपूर्ण ढांचागत लाल फीताशाही, भाई, भतीजावाद और भ्रष्टाचार की सुदृढ़ नींव पर आधारित है।

कृष्णा सोबती मानती है कि साहित्य और कानून की निगाह एक नहीं हो सकती साहित्य जीवन का दर्पण है जिंदगी की बंदिश नही। अतः नैतिकता का जो पैमाना न्यायाधिकरण में प्रस्तुत किया जाता है। वह मानव पर लागू करना या उसके सांचे में मानव व्यवहार को मर्यादित कर देना अनुचित है

साहित्य सिर्फ इस दृष्टि आंतरिक समय और बंदिश रखता है जो उसके बहाव को चढ़ाव को खुद ही सहेजता–समेटता है सत्य को अपने में संजोता है राजनैतिक चेतना के फलस्वरूप आज उच्चवर्ग के प्रति सचेत है।

गांधी जी भी अराजकतावाद के विरोधी नहीं थे। उनका ख्याल था कि नौकरशाही और पूंजीवाद महिला उपन्यासकारों ने वर्तमान समाज के यथार्थ चित्रण को बहुत ही रहस्मय ढंग से किया नैतिक मान्यताओं में क्रांतिकारी परिवर्तन आया है विश्व की बढ़ती हुई जनसंख्या और उसको रोकने के प्रयतनों ने परम्परागत नैतिक मूल्यों को विखलित कर दिया है यौन संबंधों में स्वेच्छाचरिता बढ़ी है।

स्वतंत्रता युग में नारी जीवन की भूमिका एवं उसकी समस्याओं को लेकर हिन्दी उपन्यास और कहानीकारों ने तेजी से साथ काम किया है आज भी चल रहा है आज के सामाजिक परिवेश में नारी की स्थिति नारी पुष्प के पारस्परिक संबंध नारी के प्रति पुरूष का संकुचित दृष्टिकोण एवं पुरूष के साथ आधुनिक नारी की सहायता का सही चित्रांकन कथा साहित्य के माध्यम से सफल हुआ है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात परिस्थितियों में परिवर्तन के कारण उपन्यास विधा के पश्चात परिस्थितियों में परिवर्तन के कारण उपन्यास विधा को समृद्ध करने में लेखिकाओं का प्रयास सराहनीय रहा है नारी होने के नाते इन्होंने नारी चरित्रों का पुरूषों से भी अधिक सूगम चित्रांकन कर अपनी अपूर्व प्रतिभा का परिचय दिया है।

महिला लेखिकाओं ने नारी मन की विभिन्न भावनाओं का चित्रण किया है साथ ही आज की पीढ़ी में पढ़ी लिखी युवतियों के विचार विमर्श के संबंध में परम्परा से हटकर है महिला कथाकारों के उपन्यास प्रायः नारी जीवन

नारी–पुरूष संबंधों आधुनिक नारी की समस्याओं से जुड़े हुए है इनका लेखन नारी जगत को बेहतर बनाने का प्रंशसनीय प्रयास है।

भारतीय समाज की स्थिति एवं परिवेश में एक नारी की स्थिति व उसके संघर्षमय जीवन की दयनीय स्थिति का चित्रण कर इन्होंने मूल्यों की स्थापना की है इनके कथा साहित्य में जिन्दगी का व्यापक कोलाहल सुनाई देता है आज धर्म के प्राचीन संदर्भ में परिवर्तन हो गया है।

महिला उपन्यासकारों ने भी इस विषय पर सजग दृष्टि से विचार किया है वे मानती है कि धार्मिक रीतियों और नितियाँ आज रूढ़ हो गई है और हमारे लिए बंधन बन गई है वे इनके बारे में कहती है कि हमें बाँधा इस लिए गया है कि हम ठीक से खुद को न जान पाए धर्म की इतनी मोटी परत चढ़ी रही तो जानना हो भी कैसे सकता।

धर्म की परत हमारे व्यवहार को कंट्रोल में रखती है आज का भारतीय समाज छूआ–छूत की भावना को कहीं पीछे छोड़ आया है एक युग था जब उच्च जाति के लोग निम्न जाति के लोगों के हाथ का न खाते थे, न पानी पीते थे।

वर्तमान भारतीय व्यक्ति आर्थिक दबावों से घिरकर स्वकेन्द्रीत हो गया है परिणाम, प्रेम, स्नेहे, करूणा, दया, सेवा जैसे भावनात्मक मूल्यों का दिखावा आ गया है कृत्रिमता व्याप्त हो गई है कथनी और करनी में अंतर से व्यक्तित्व को पहचानना कठिन हो गया है।

एक ध्यानाकर्षक तथ्य यह है कि लेखिकाओं ने अपने कथा साहित्य में पुरूष विचित्र नारी का खण्डन किया पुरूषों की रचना में नारी या तो नारी होती है या फिर दानवी लेकिन महिलाओं ने नारी के रूप में प्रस्तुत किया महिलाओं द्वारा रचे नारी पात्रों में गुण दोष दोनों का समन्वय देखने को मिलता है यही कारण है कि महिला उपन्यासकारों ने जो नारी चरित्र प्रस्तुत किए वे

अपेक्षाकृत प्रभावशील विश्वसनीय और सजीव लगता है यू भी नारी होकर नारी हदय को पढ़ने का सामर्थ्य निर्विवाद है।

देश में आए सांस्कृतिक सामाजिक राजनैतिक पतन की और महिला उपन्यासकार सचेत है इन्होंने समाज की पूर्ण सच्चाई की तस्वीर अपने उपन्यास में उतारी है साथ ही अपना आक्रोश एवं यथार्थ का बखूबी से चित्रण किया है जो संपूर्ण समाज के सापेक्ष एक कड़वा सत्य है।

आजादी के बाद उपन्यासों में नवीन जीवन मूल्यों के वर्णन के साथ विद्रोह का स्वर स्पष्ट दिखाई देता है इस काल में खुद उपन्यासकार मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित हुए और इन्होंने समाज की संपूर्ण समस्याओं का निरूपण यथार्थ रूप में किया। कृष्णा सोबती, अमृता, प्रीतम, मुन्नू भण्डारी आदि महिला उपन्यासकारों का अपना महत्वपूर्ण स्थान है।

3.5 उपन्यास में चित्रित नारी समस्याएँ :

सृष्टि योजना में नारी का स्थान पुरूष की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण है इसी कारण यह वह जगत की पूज्यनीय है पुरूष प्रधान समाज में नारी सुरक्षा नहीं पा रही है पुरूष का सच्चाप्रेम उसे नहीं मिला है पुरूषों की उद्धृत काम वासना का शिकार होकर नारी पतितावस्था को पहुँच रही है परिस्थितियों के बहाव में नारी अनेक पुरूषों के संपर्क में आ रही है और वह अपने सतीत्व की रक्षा नहीं कर पा रही है।

नारी के आत्मसमर्पण का अनूचित लाभ उठाकर पुरूष उसे धोखा दे रहा है पुरूष के द्वारा अनेक स्थानों में छली गयी नारियों का चित्रण इक्कीसवीं सदी के उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में किया है।

3.5.1 दहेज की समस्या :

भारतीय समाज में बेटी के जन्म लेते ही माँ बाप चिंताग्रस्त हो जाते हैं क्योंकि विवाह के समय वर पक्ष को गरीब माँ बाप दहेज देने में असमर्थ होते

है दहेज प्रथा भारतीय जीवन का वह अभिशाप है जो मध्यवर्गीय परिवार की सारी सुख शांति समाप्त करती है।

दहेज न दे सकने की विवषता अनमेल विवाहों का सूत्रपात करती है और फिर त्रासदी की एक लंबी परंपरा आरंभ हो जाती है मैत्रेयी पुष्पा ने अपने उपन्यास में दहेज प्रथा का संकेत मात्र दिया है।

दहेज न दे सकने की असमर्थता के कारण कई समस्याएँ खड़ी हो जाती है जैसे उपर कस्तुरी कुंडल बसे उपन्यास में कस्तुरी की विधवा माँ तथा भाई गरीबी के कारण दहेज देने में असमर्थ थे, इसलिए कस्तुरी को 800/– रूपये में हीरामन नाम के नाकारा अशाय व्यक्ति के हाथों बेच दिया गया। ससुराल में कस्तुरी की कीमत रूपये 800/– में खरीदी हुई चीज से ज्यादा कुछ नहीं रही मुँह दिखाई की रस्म कस्तुरी को पसंद नहीं है इसलिए वह अपने चेहरे की नुमाइश करने को तैयार नहीं थी मुँह दिखाई करने वाली औरतों में से एक बुढ़ी ने सुना दिया ''ओ आठ सौ की घोड़ी तु मुँह नहीं दिखाती तेरी यह मजाल हम तो सोच रहे थे नई छोरी की तरह शरमा रही है पर तू तो जोर आजमा रही है तेरे भईया ने खनखनाते चाँदी के कलदार वसूले है मुफ्त में नहीं आई सो नखरे पसार रही है वधु मूल्य देकर बहु के रूप में ससूराल वालों को एक खरीदी हुई दासी मिल जाती है जिसके लिए उसे सदा ताने ही सुनने पड़ते है।

लड़कियों का ब्याह के नाम पर वस्तु जैसा क्रय–विक्रय करने का घटिया काम किया जाता है स्वयं लेखिका को भी इस समस्या से जूझना पड़ा। माँ के आदर्श सिद्धांतों तथा विवाह में दहेज न देने की माँ की जिद के कारण मैत्रेयी अपने पसंद के लड़कें के साथ विवाह नहीं कर पाई अडू के नगलावाले पाठकजी का इंजीनियर लड़का मैत्रेयी को जीवन साथी के रूप में बहुत पसंद था, परन्तु माँ दहेज के बदले खेती का हक पाठक जी को नहीं दे सकती थी, क्योंकि जीवन निर्वाह का एकमात्र साधन खेती थी।

दहेज के कारण नारियों का वैवाहिक जीवन दुःखों के घोर अंधियारों से घिर जाता है हमारे यहाँ विवाह अभिभावकों द्वारा तय किये जाते है तथा उसे कभी न टूटने वाला धार्मिक संस्कार माना जाता है। अभिभावकों द्वारा आयोजित विवाह में किसी समय कुछ वैवाहिक रीतियाँ भी प्रचलित थी और उनका दुष्परिणाम भी प्रायः नारियों को ही भुगतना पड़ता था। नारी कितनी भी पढ़ लिख ले परन्तु विवाह का निर्णय खुद नहीं ले पाती आज एक शिक्षित नारी भला क्या नहीं कर सकती परन्तु वास्तव में ऐसा कोई भी नहीं सोचता।[32]

3.5.2 वर्ग–संघर्ष की समस्या :

प्राचीन काल से उच्च वर्ग के भूमिधरों सांमतों और पूज्यपतियों ने निम्न वर्ग के लोगों पर अत्याचार और अन्याय किये है। निम्न वर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाली छोटी जातियाँ सदा से ही उच्च वर्ग द्वारा शोषित एवं पददलित होती रही है।

gauravsharma

भारतीय समाज में प्रचलित जात पात की अनिष्ट प्रथा को रोकने के लिए गांधी जी, फूले, अम्बेडकर आदि समाज सुधारकों ने प्रयत्न किये आजादी मिलने पर सरकार ने जात पात के खिलाफ कानून बनाये और उसे मिटाने की कोशिश की है। इतना कुछ करने पर भी ग्रामों में ऊँची जाति के लोग निम्न जाति के लोगों को अछूत और हीन समझते है उनके स्पर्श को भी अपवित्र माना जाता है।

कस्तुरी कुण्डली बसै उपन्यास में लेखिका ने इस समस्या का यथार्थ वर्णन किया है उपन्यास का पात्र एदल्ला चमार जाति का होने के कारण उच्च वर्ग उस पर भयंकर अत्याचार करते है एदल्ला को प्यास लगने पर पानी पीने के लिए मना करते है एकदम लाल होने तक उसका कान उमेंढ़ना, सिर में धूल डालना, जोरो से बाल खींचना आदि अनेक जुल्म उस पर करते

[32] कस्तूरी कुण्डल – मैत्रेयी पुष्पा पृ. सं. 17

है सारे बच्चें एदल्ला के उपर अपने अपने बस्ते लाद देते है, बोझ से एदल्ला की गर्दन लचकने लगी वह ज्यादा बोझ होने के कारण चल नहीं पाया तो एक बच्चे ने फराश की संटी तोडी और एदल्ला की टांगो में मारने लगा तो एदल्ला लड़खड़ाकर गिर पड़ा सारे बस्ते बिखर गये बस्तों में से रोटियाँ और पराठों की पोटलियाँ गिर गई सारा खाना फैल गया एदल्ला के घुटने फुट गए पर वह बिखरे खाने को बटोरने दोड़ पड़ा रोटियों की धूल झाड़ने लगा तभी धनश्याम जाट के लड़कें ने उसकी कमर में लात मारी और कहा, साले बैठ, यह क्या किया पराठे रोटी हम उठा लेते हमारा खाना हूजर धरम बिगाड़ दिया जब हम सारे दिन भूखे रहेगे।

निर्दोष के साथ मारपीट गाली गलौच करके अंगोछ से ही उसके हाथ पॉव बांधकर उसे खेत में लूढका दिया इस अनमानुष सजा को देखकर दिल करूणा से भर उठता है गाँव में जाति को अत्यंत महत्व दिया जाता है। ऊँच नीच श्रेष्ठ कनिष्ठ के स्तर पर भेदभाव किया जाता है। छूआ–छुत को उच्च वर्ग अपने जीवन में बहुत महत्वपूर्ण मानता है।

कस्तुरी ने अपनी बेटी मैत्रेयी के विवाह के समय गाँव की सटिका के हाथों बर्तन मंजवा लिए तो गाँव की नारियाँ तुफान खड़ा कर दिया क्योंकि ब्राह्मण सटिकन से श्रेष्ठ जाती है प्राचीनकाल में भारतीय समाज में नारी को सम्मानीय स्थान प्राप्त था कालान्तर में नारी को अनेक सामाजिक अवरोधों की श्रृंखला में जकड़ कर उसके स्वतंत्र अस्तित्व को समाप्त कर दिया प्रेमचंद ने दहेज प्रथा अनमेल विवाह, बाल विवाह अंतर्जातिय आदि नारी समस्याओं को उठाया है इसके अतिरिक्त कई और समस्याओं को उठाया है अनेक समस्याओं को उन्होंने अपने साहित्य में स्थान दिया तथा इनके समाधान के प्रयास भी किये है वे समाज में नारी को पुरूष के समान अधिकार प्रदान करने के पक्षघर है उनका मानना है कि जब जीवन रूपी गाड़ी के दोनों पहिये बराबर होंगे तभी संतुलित रूप से विकास के पथ पर अग्रसर हो सकती है।

अनेक समाज सुधारकों ने नारी की दयनीय स्थिति को सुधारने का प्रयास किया मुंशी प्रेमचंद ने अपने कथा साहित्य में नारी विषयक समस्याओं को उठाया और यथा सम्भव उनके निराकरण की सार्थक पहल का प्रयास किया समाज व्यवस्था का संतुलन व संगठन दोनों के पारस्परिक व्यवहार पर निर्भर करता है।

नारी और पुरूष का पारस्परिक सहयोग समाज को प्रगति एवं उन्नति की दिशा में अग्रसर करता है। नैतिकता एवं आदर्श के नाम पर समय समय पर भारतीय नारी पर जो अनुज्ञाएँ आरोपित की गयी समय बीतने पर वे उसके लिए सामाजिक अवरोध की बेडियाँ बन गयी इस श्रृंखलाओं में जकड़ी हुई नारी का कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं रहा प्रेमचंद के साहित्य में नारी जीवन की समस्याओं को देखा गया था।

3.5.3 वैवाहिक जीवन की समस्याएँ :

नारी और पुरूष का पारस्परिक सहयोग और साहयर्थ वैवाहिक जीवन का मूलाधार है विवाह एक प्रकार से नारी और पुरूष दोनों के ही आत्म विकास का साधन है लेकिन प्रेमचंद जी के युग में विवाह का वास्तविक अर्थ भुला दिया गया था।

3.5.4 बाल विवाह की समस्या :

बाल विवाह की आज की प्रसन्नता आगे चलकर किस प्रकार दारूण दुखः में परिणत हो जाती है, इसका कारूणिक चित्रण प्रेमचंद जी ने नैराश्य लीला तथा सुभागी कहानी में किया है प्रेमचंद जी के कथा साहित्य में बाल विवाह के अधिक उदाहरण उपलब्ध नहीं होते, परन्तु फिर भी उन्होंने अपनी कहानी में समस्या का चित्र प्रस्तुत किया और वहीं इसकी ज्वलन्ता के लिए पर्याप्त है।

लड़की का छोटी उम्र में विवाह न करना और यदि इस प्रकार की त्रुटी हो गयी हो तो विधवा होने पर पुनर्विवाह के द्वारा उसमें संशोधन करना ही समस्या का हल है।

प्रेमचंद जी ने नारी की वैवाहिक समस्याओं का विशद विवेचन करते हुए यह स्पष्ट कर दिया है कि इन समस्याओं का मूल तत्कालिन दूषित समाज व्यवस्था में विद्यमान है, और विवाह का वास्तविक उद्देश्य भुलाया जा चुका है प्रेमचंद जी ने बाल विवाह के दुष्परिणाम में कन्याओं के माता–पिता को तो दुःखी दिखाया ही है साथ ही बाल विधवाओं के प्रति लोगों के अनुसार दृष्टिकोण को भी व्यक्त किया है लोगों के छोटे दृष्टिकोण के कारण ऐसी बाल–विधवाओं को आदेश दिया जाता है।

" बेटी संसार में रहकर तो संसार की करनी हो पड़ेगी" लेखक माता–पिता की आश्रम त्रुटियों और समाज के लोगों के साहनुभूति पूर्व व्यवहार से दुःखी बाल विधवा में यही आत्मरक्षा के भाव भरना चाहते है क्योंकि हमारा समाज इतना अनुदार है कि इस शक्ति के अभाव में ऐसी विधवाओं का समाज में रहना भी कठिन कर देगा "बिना माँझी के नाँव पार लगाना कठिन है" लेखक बाल–विधवाओं के पुनर्विवाह की ओर संकेत करते है।

3.5.5 अनमेल विवाह की समस्याः

प्रेमचन्द वृद्ध–विवाह के कुपरिणामों को भी प्रकाश में लाये है उन्होंने स्पष्ट किया है कि प्रौढ़ व्यक्ति से विवाह होने पर दाम्पत्य जीवन में अंसतोष की भावना जन्म लेती है लेकिन वृद्ध विवाह का परिणाम और भयंकर होता है।[33]

वृद्ध विवाह प्रायः युवती को समय से पहले ही विधवा बना देता है। नारी जीवन अनेक सामाजिक कुप्रथाओं की श्रृंखला से जकड़ा हुआ है।

[33] प्रेमचंद साहित्य में डॉ. रातपूरी आत्माराम एण्ड संस

अधिकतर दहेज की कुप्रथा के कारण ही अनमेल विवाह होते है प्रेमचंद जी ने अपने सेवासदन और निर्मला उपन्यासों में लिखा है कि किस प्रकार दहेज के अभाव में नारी कृपात्र के गले मढ़ दी जाती है।

निर्मला का विवाह पर्याप्त दहेज के अभाव में मुंशी तोताराम से हुआ जो कि चालीस वर्ष के है निर्मला को तो राम से बोलने में संकोच लगता था प्रेमचंद जी लिखते है अब–तक ऐसा ही आदमी उसका पिता था जिसके सामने वह सिर झुकाकर निकलती थी अब उसकी अवस्था का एक आदमी उसका पति था जिसे वह प्रेम की वस्तु नहीं सम्मान की वस्तु समझती थी प्रेमचंद जी ने तत्कालीन वैवाहिक प्रथा और उसके दोषो पर सूक्ष्म दृष्टि डाली थी उन्होंने सुखदा, सुमन और सुमित्रा के संदर्भ में यह स्पष्ट किया है कि माता–पिता विवाह के संबंध में अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह नहीं करते, इसलिए पति–पत्नी के विचारों और जीवन मूल्यों में बड़ा अन्तर रहता है।

सुमित्रा के माता–पिता ने लाल बद्रीप्रसाद की सम्पन्नता एवं धन का वैभव देखकर सुमित्रा का विवाह किया है कमला प्रसाद के विचारों ओर स्वभाव को उन्होंने जानने की आवश्यकता नहीं समझी इसी प्रकार कर्म–भूमि के अमर और सुखदा का विवाह भी दोनों परिवारों की सम्पत्ति और धन–वैभव को ही दृष्टि में रखकर हुआ है। दाम्पत्य जीवन नरक बन जाता है। सेवासदन और निर्मला उपन्यास में प्रेमचन्द जी ने अनमेल विवाह और उसके कुपरिणामों का चित्रण करते हुए उसके कारणों पर भी प्रकाश डाला है इन उपन्यासों में दिखलाया है कि युवती नारी का विवाह जहाँ प्रौढ़ के लिए दहेज प्रथा उत्तरदायी होता है।

आर्थिक स्थिति अच्छी न होने पर लड़की के माता–पिता पर्याप्त दहेज नहीं दे पाते। सेवासदन और निर्मला में प्रेमचंद ने अनमेल विवाह के कुपरिणामों को भी पूर्वतया उभार दिया है प्रेमचंद जी पति–पत्नी के स्वभाव वैषम्य की अपेक्षा आयु के अन्तर को अधिक भंयकंर मानते है।

स्वभाव में वैषम्य होने पर पति–पत्नी थोड़ी सी उदारता और सहिष्णुता अपनाकर एक दूसरे के अनूकूल बना सकते हैं। वृद्ध से विवाहित युवती की प्रेमाकांक्षा अतृप्त रह जाती है इस कहानी की युवती पति की मृत्यु के बाद प्रेम पाने के लिए तड़पती रहती है प्रेमचंद जी की कहानियों में वृद्ध विवाह का अपेक्षाकृत भयंकर परिणाम उभर कर सामने आया है साथ ही कहानीकार ने नारी मनोभावों का उद्‌घाटन किया है जिसके कारण वृद्ध से विवाहित युवती कुमार्ग पर चलने लगती है।

3.5.6 दहेज प्रथा की समस्याः

हिन्दु विवाह की विभिन्न समस्याओं में दहेज प्रथा प्रेमचंद युगीन समाज की सबसे गम्भीर समस्या थी यह सच है कि हिन्दु समाज में बाल–विवाह अनमेल विवाह आदि बहुत सी रूढ़ियाँ उत्पन्न हो गई थी लेकिन दहेज प्रथा ने व्यक्ति एवं सम्पूर्ण समाज के सामने जितनी गम्भीर सामाजिक और आर्थिक समस्याएँ उत्पन्न की है। कन्या के विवाह के लिये माता–पिता की यह चिन्ता समाज में प्रचलित दहेज प्रथा के कारण है अपने कथा साहित्य में प्रेमचंद जी ने दिखलाया है कि दहेज प्रथा के कुपरिणाम सर्वाधिक धनहीन नारियाँ झेलती है।

दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के बाद धनहीन वर्ग पुत्री के विवाह के लिए अलग से धन बचाकर नहीं रख पाता इसलिये पुत्री का विवाह इस वर्ग के सामने आर्थिक समस्या बनकर आता है। दहेज की मांग दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है गरीब परिवार के लिए कन्या के विवाह की चिन्ता और भी जटिल समस्या बन जाती है।

ऋण लेकर अपने खेतों का लगान चुकाता है लेकिन पुत्री के विवाह कि चिन्ता को प्रेमचंद जी ने इन शब्दों में व्यक्त किया है–वैवाहिक जीवन की कुप्रथाओं के कारण कन्या का विवाह माता–पिता के लिए जटिल समस्या बन

जाता है इसीलिए कन्या के विवाह को लेकर पारिवारिक चिन्ताओं का सूत्रपात होता है।

3.5.7 नारी द्वारा नारी का शोषणः

सामान्यतः देखा जाता है कि जब युवती दुल्हन के रूप में घर जाती है तो वहाँ का वातावरण एक विशेष प्रकार का होता है। और उसे वहाँ के अनुसार स्वयं को ढालना होता है। प्रेमचंद ने नव वधू की समस्याओं का चित्रण वहाँ पर किया है जहॉ शासन–प्रिय सास अपने कुचकों से उसे तंग करना आरम्भ कर देती है।

ननद तो अपनी माँ का पक्ष लेती है फिर ऐसी नारी के दुख की कथा का अंत कहाँ प्रेमचंद ने सास–बहु के पचड़ो को स्वंय अपने ही घर में देखा था चाची मेरी पत्नी पर शासन करती थी उसकी शिकायत मुझसे एकान्त में किया करती थी वह भी अपनी किस्मत को रोती थी।

निर्मला उपन्यास में तोताराम की बहन रूक्मणी ने आरम्भ में तो निर्मला का जीना हराम कर दिया था प्रतिज्ञा उपन्यास में सुमित्रा की सास देवकी का व्यवहार भी कुछ ऐसा ही है नारी द्वारा नारी का शोषण कोई नई बात नहीं है। अपितु यह तो सदियों से चली आ रही परम्परा है प्रेमचंद के युग में भी यह समस्या विद्यमान थी।

3.5.8 अन्तर्जातीय विवाहः

अन्तर्जातीय विवाह को जो लोग एक समस्या मानते है। उनकी इस समस्या के निराकरण के लिए प्रेमचन्द जी ने गोदान उपन्यास में एक बात सुझायी हो यदि समाज इस संदर्भ में असमर्थ है तो ऐसी विपरीत परिस्थियों में यमारिन सिलसिला और मातादीन की भाँति इस समाज को साहस के साथ डटकर सामना करना चाहिए इसके अतिरिक्त इस समस्या को कोई दूसरा

हल नजर नहीं आता, क्योंकि भारतीय समाज इतनी उदारता नहीं रखता कि वह सीधे सरल व्यक्ति को रूढ़िग्रस्त विचारों के विरूद्ध सहयोग दे सके।

प्रेमचंद यद्यपि जाति–पाँति, छूआ–छुत और ऊँच–नीच के पक्षपर नहीं है, उनकी विशालता इस प्रकार के निम्न कोटि के विचारों से ऊपर उठकर है लेकिन अब जब भी उन्होनें विवाह के अन्तर्जातीय प्रश्न को खड़ा किया वहीं पर उनकी लेखनी रूक गयी।

3.5.9 वैवाहिक जीवन की समस्याएँः

नारी की वैवाहिक समस्याओं का कितना विशाल चित्रण प्रेमचंद जी के कथा साहित्य में हुआ है उतना कदाचित हिन्दी का कोई कथाकार नहीं पाया। इनकी नारी के वैवाहिक समस्याओं की एक श्रृंखला सी विद्यमान थी

प्रेमचंद जी का इस दृष्टि से विशेष महत्व है कि इस श्रृंखला की समस्त कड़ियों को क्रमशः खेलते चले गये और इस प्रकार इस समस्याँ के मूल तक अपने पाठकों को ले गये स्त्री और पुरूष का पारस्परिक सहयोग ओर सहयार्थ वैवाहिक जीवन का मूलाधार है विवाह एक प्रकार से नारी जीवन की समस्याओं के संबंध में कथाकार की गहन अर्न्तदृष्टि को रखता है ओर दोनों के लिए आत्म विकास का साधन है

3.5.10 वैवाहिक जीवन में नारी के चरित्र पर सन्देह की समस्याः

वैवाहिक जीवन में नारी के चरित्र पर संदेह करना उसे जिंदा ही निगल जाने के समान है प्रेमचंद ने अपने कथा साहित्य में बड़ा ही मार्मिक चित्रण किया है किसी तरह पुरूष का शंकालु ह्रदय नारी के जीवन लीला अव्यवस्थित करके रख देता है। सेवा सदत् उपन्यास की नायिका सुमन की जिन्दगी तो पहले से नारकीय यातनाओं से भरी थी।

निर्मला उपन्यास में तोताराम अपने ही पुत्र मंसाराम को लेकर अपनी पत्नी निर्मला पर शक करता है और मंसाराम को बोर्डिंग भेज देता है। जहॉ

उसको टी.बी.हो जाती है किन्तु फिर भी अपने मरते हुए बेटे से भी पत्नी के अस्तित्व नष्ट हो जाने का भय है और वह उसे घर न लाकर अस्पताल ले जाता है। अस्पताल में निर्मला उसे देखने जाती है तब तोताराम कहता है कि यहाँ क्या करने आयी हो इन शब्दों में तोताराम की संदेहवादी दृष्टि सामने आ जाती है।

3.5.11 नारियों में पर्दा समस्या

प्रेमचंद नारियों के पूर्ण विकास के लिए पर्दा प्रथा के घोर विरोधी रहे दोनों प्रकार की दुर्गति में बहुत बड़ा हाथ रखती है उन्होंने अन्य समस्याओं की भाँति पर्दे की समस्या को भी उजागर किया है अपनी कहानी कानून कुमार में जहाँ उन्होंने तम्बाकु बहिष्कार, बिल होटल प्रचार बिल आदि को असेम्बली में प्रस्तुत कराने की योजना कुमार द्वारा बनायी है वहाँ उपर्युक्त बिलों में पर्दा हटाव बिल भी सम्मिलित किया गया है वे चाहते है कि एक ऐसा कानून बनाया चाहिए जिसमें कोई नारी पर्दे में न रह सके।

प्रेमचंद पर्दा प्रथा के खिलाफ हो गए थे उन्होंने नारियों के लिए पर्दा को हटाने के लिए प्रयास किया था उनका कहना था सम्मान पर्दा में रहकर नहीं होता पर्दा से बाहर निकल कर भी सम्मान किया जा सकता है।

3.5.12 विवाह विच्छेद की समस्या :

प्रेमचंद जी ने अपने कथा साहित्य में विवाह विच्छेद की समस्या का चित्रण किया है प्रेमचंद जी ने नारी में बदले जीवन मूल्य और उनमें आई चेतना का सशक्त उदाहरण गोदान उपन्यास में रामसहाब की बेटी मीनाक्षी के माध्यम से दर्शाया है गुजारे की मनाश्री को जरूरत न थी मेके में वह बड़े आराम से रह सकती थी मगर वह दिग्विजय सिंह के मुख में कालिख लगाकर वहाँ से जाना चाहती थी।

प्रेमचंद जी विवाह को एक जाना चाहती थी प्रेमचंद जी विवाह को एक सामाजिक समझौते मानते है उसे तोड़ने का अधिकार न नारी को है, औरत व पुरूष को है समझौते से पहले मनुष्य स्वतंत्र है और समझौता हो जाने के बाद दोनों को ही सुझ बुझ से काम लेना पड़ता है। आधुनिक वैयक्तिक जीवन मूल्यों ने हमें आत्मकेंद्रित बनाकर संबंधों के प्रति बेईमान बना दिया है पति पत्नी के कभी न टूटने वाले बंधन को क्षणिक बनाकर परिवारिक व्यवस्था को छिन्न–भिन्न करके विवाह विच्छेद को श्रय दिया जाने लगा है।

गाँवों में नारियों पर तरह तरह के आरोप लगाकर उन्हें छोड़ दिया जाता था किन्तु शिक्षा के बदलाव से शिक्षित समाज में नारी ने पुरूष से मुक्त होने के लिए और पुरूष ने नारी से मुक्त होने के लिए विवाह विच्छेद का माध्यम तलाक को अपनाया घुटन भरे वातावरण में जीने से विवाह विच्छेद को सुविधा जनक माना है कारण यह है कि कोई नारी–पुरूष के अत्याचार सहते, तलवे चाटने खुद को मिटा न ले।

3.5.13 नारी कुरूपता की समस्या :

नारी जीवन की विविध समस्याओं में कुरूपता भी एक समस्या है आभूषण कहानी में इसी तथ्य को स्पष्ट किया गया है। आभूषण कहानी के सुरेश सिंह सौन्दर्य न होने के कारण अपनी पत्नी शीलता को संघर्ष त्याग देते है अनेक कटू वाक्य सुनाते है पत्नी की हर बात को आलोचना की दृष्टि से देखते है एवं उसका तिरस्कार करते है तभी तो पत्नी ग्रह त्यागकर ईश्वर को ललकारती हुई वह कहती है।

ईश्वर के दरबार में पूंछती कि तुमने मुझे सुन्दर क्यों नहीं बनाया सुन्दरता क्यों नहीं दी बदसूरत क्यों बनाया, बहन स्त्री के लिए इससे दुःख की बात क्या होगी कि वह रूपहीन है रूप से प्रेम मिलता है और प्रेम से दुर्लभ और कोई वस्तु नहीं इस प्रकार सुन्दरता नारी जीवन को समुचित

विकास हेतु आवश्यक प्रतीत होती है। कुछ नारी का जीवन समस्यापूर्ण होता है। जो नारी सुन्दर नहीं दिखती उसको कोई सम्मानपूर्वक दृष्टि से नहीं देखता है उसको उसके घर में ही प्रेम व सम्मान नहीं मिलता है वह इस कारण बहुत दुखी रहती है नारी का जीवन दुखमय बन जाता है वह अपने आप में दूसरों से अलग समझने लगती है।

3.6 उपन्यास में नारी वादी दृष्टिकोण

नारीवादी साहित्य अन्याय और बदलाव के लिए एक ही जरूरत व्यक्त करने के लिए जरूरत का जन्म हुआ था निंबंध लेख, किताबे और पत्रिकाओं का एक दिल से बोझ उठाना सार्वजनिक आँख पकड़ा और उन्नीसवीं सदीं में महिलाओं के लिए सुधार की लपटों को हवा दे दी है इतना ही नहीं इस तरह के लेखन एक परिवर्तन एजेंट के रूप में एक बहुत बड़ा प्रभाव पड़ता है लेकिन यह भी महिलाओं के लिए एक स्थायी विरासत और साहित्यिक इतिहास का खजाना छोड़ दिया है।

gaurav shree

नारीवादी साहित्य उपन्यास या गैर कल्पना जो परिभाषित करने की स्थापना और महिलाओं के लिए समान नागरिक राजनीतिक आर्थिक और सामाजिक अधिकारों की रक्षा के नारीवादी लक्ष्यों का समर्थन करता है यह अवसर पुरूषों के उन लोगों के लिए असमान रूप में महिलाओं की भूमिका को दिखाता है स्थिति विशेषाधिकार और शक्ति के संदर्भ में आम तौर पर महिलाओं, पुरूषों, परिवारों, समुदायों और अंवाछनीय के रूप में समाज के लिए परिणामों का चित्रण है नारीवादी साहित्य समाज में प्रांसगिक राजनीतिक मुद्दों, महिलाओं के प्रति नजरिए वर्तमान पतें या लिंग विशेष गलतफेमी को तोड़ने के लिए प्रयास करता है। यह संस्कृति या धर्म भर में ही समिति नहीं है इसलिए विषयों एक व्यापक रेंज अवधि छोड़ के लिए राजनीति धर्म और विवाह की संस्था है दूसरों के बीच में से इन विषयों में साहित्यिक कृतियों में से एक अमीर चिथडे रजाई की हमारी विरासत और इतिहास का हिस्सा है।

नारीवादी साहित्य नारीवादी आंदोलन की विशेषताओं से पहचाना जाता है। नारीवादी साहित्य के लेखकों को समझते है और सेक्सन् और लिंग के बीच अंतर की व्याख्या करने के लिए जाना जाता है उनका मानना है कि हालांकि एक व्यक्ति की सेक्स पूर्व निर्धारित और प्राकृतिक है यह लिंग है, कि समाज द्वारा बनाया गया है। लिंग भूमिकाओं के बारे में एक विशेष धारणा के साथ–साथ है।

लिंग भूमिकाओं उनका मानना है कि समय के साथ बदला जा सकता है। एक दूसरे के उपर लिंग की प्रबलता लगभग सभी समाजों के पार एक आम अवधारणा है, और तथ्य यह है कि यह महिलाओं के पक्ष में नहीं है। एक अंतनिर्हित नारीवादी या महिलाओं के साहित्य का अभी तक स्पष्ट विशेषता है। इधर यह तर्क दिया जाता है कि किसी भी समाज की दोनों लिंग के लिए शिक्षा और ज्ञान के चैनल को प्रदान नहीं करता है।

नारीवादी साहित्य अक्षर या विचार है कि लिंग के मापदंडों को बदलने का प्रयास का चित्रण है यह जाँच का सवाल है और लिखित शब्द के माध्यम से स्थापित किया है और प्राचीन लिंग भूमिकाओं के खिलाफ परिवर्तन के लिए बहाने करने के लिए जाता है। नारीवादी साहित्य सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्रों में कार्यरत हर लिंग के बीच असमानताओं को बदलने के लिए प्रयास करता है। अंत में यह जोड़ने के लिए एक अद्वितीय और अवसर नारी विशिष्ट आँवाज और लिंग के स्वर सामाजिक मुददों के साथ–साथ सामाजिक असमानताओं जहाँ एक नारी आँवाज एक प्रभाव बनाने की जरूरत है।

पुरूष और महिला लेखकों के बीच ज्यादा अंतर नहीं था और साहित्य का एक अलग वर्ग के रूप में निशान देखने के लिए कोई जरूरत नहीं थी हालांकि अगर आप ऐसे किसी भी काम को लेखकों समाज की पुरूष के हित दृष्टिकोण की और विपरीत लिंग की जरूरतों को समझने की नारीवादी प्रकृति के साहित्य में महिलाओं को हमेशा नायक जो अधिक बार नहीं आसानी से

महिलाओं की पारंपरिक भूमिका को स्वीकार नहीं करने के रूप में समाज द्वारा निर्णय लिया के रूप में चित्रित कर रहे है वे व्यक्तिगत निर्णय लेने के इस चुनाव को व्यक्त करने के लिए अपने स्वयं के निर्णय करने के लिए तैयार है और इन विकल्पों कार्यों और निर्णयों के परिणाम के साथ सौदा करने के लिए तैयार कर रहे हैं।

एक बेटी एक माँ, एक बहन या पत्नी हालांकि नारीवादी साहित्य का कोई टुकड़ा पहले एक औरत के रूप में एक महिला के साथ संबंधित है यह इन रिश्तों की भूमिका या छवि है कि साहित्य में इन महिला पात्रों उनकी पहचान देना नहीं है उनकी पहचान उनके विकल्प और उनके विश्वासों तब इन भूमिकाओं के साथ जुड़े रहे है यह ध्यान रखे कि नहीं नारीवादी साहित्य का काम करता है। सब खुश अंत है, दोनों किरदार के लिए और काम के लेखक के लिए महत्वपूर्ण है।

महिलाओं को खुले तौर पर समानता की मांग के लिए समाज से बहिष्कार कर दिया गया है और लहरों के खिलाफ जाने के लिए अपने निर्णय के कई नकारात्मक परिणामों का सामना करना पड़ा है। ।

लेकिन नारीवादी साहित्य के कुछ प्रदर्शन और महिलाओं के मताधिकार पर तनाव और समाज में समानता के लिए एक मांग राजनीतिक सामाजिक और आर्थिक अधिकारों के लिए आधुनिक नारीवादी साहित्य में एक पुरूष प्रधान समाज पर हमले अधिक स्पष्टवादी और सीधा है जहाँ महिलाओं को नारीवाद की और पितृसत्तात्मक और पूंजीवादी दृष्टिकोण में कई देशों की मांग बन गया है।

नारी के आत्म बोध आत्मनिर्भरता एवं आत्मविश्वास के परिप्रेक्ष्य में आधुनिक उपन्यासों में जो नारी चरित्र उभरकर आया है नारी किसी भी वर्ग चरित्र में हो वह अपनी पहचान बनाती है पहले वर्ग में यदि वह डॉक्टर,

प्राध्यापक, अधिकारी नेता है तो वह विद्रोह और रूढ़ियों को चुनौती देती हुई महात्वाकांक्षिणी के रूप में चित्रित है।

मध्यवर्गीय चरित्र के रूप में नारी दोहरे मापदंडों से जूझते हुए झुठी इज्जत के कारण अनेक कष्ट भोगने के लिए बाध्य है यद्यपि वह शिक्षित है परन्तु समाज की झुठी रूढ़ियों में फंसकर अपनी बौद्धिकता से दूर रहकर समाज के अनुरूप रूप को ढालने के लिए विवश है लेकिन तीसरे वर्ग का नारी चरित्र आज सर्वाधिक सशक्त है वह विद्रोह और रूढ़ियों को खुलकर चुनौती दे रहा है तथा समाज के बंधनों और पर्दाप्रथा परम्पराओं की परवाह न करके अपनी आत्म और स्वाभिमान की रक्षा करता है।

उपन्यासों में कुछ चरित्र घरेलू कामकाजी अंतर्मुखी और वस्तुगत है नारी चरित्र के रूप में उन्हें देखा जा सकता है। ये नारी चरित्र शिक्षित योग्य एवं विकास की संभावनाएँ लिए है तथा घर और बाहर दोनों को संभाल रखे है पद पाकर भी अपने परिवार के प्रति उनमें सजगता है तो अपने कैरियर के प्रति भी और कर्तव्य के प्रति भी तीसरी सत्ता की लेडी डॉक्टर कामकाजी होकर भी घरेलू है और अंतर्मुखी है।

नारी सम्मान और पारस्परिक संबंधों के जटिल अंतर्विरोध प्रेम के अंतरंग स्वरूप तथा नारी महत्वाकांक्षाओं ने नारी चरित्र में दोहरे व्यक्तित्व का निरूपण करने के लिए उपन्यासकार को बाह्य किया है अतिशिक्षित एवं बौद्धिक होती नारी अपने सम्मान के प्रति अधिक सजग हो उठी है परिणामता समाज में पारस्परिक संबंधों में अंतिर्विरोध की स्थितियाँ बढ़ गई है।

समाज एवं सामाजिकता को गौर करते हुए व्यक्ति को अधिक प्रतिष्ठा चित्रित की गई है नारी के प्रति पुरूष के भाव बदल गए है और नारी ने भी अपने स्वांतय की घोषणा करते हुए समाज से दया नहीं अपने अधिकारों की मांग की। वास्तव में आज नारी बढ़ते अजनबी विवाह संबंधों में शिथिलता और

परिवार एवं समाज में नारी की स्थिति एवं चेतना का किंचित विकास दिखाई देता है। नारी के पास ना तो अपना व्यक्तित्व है और न उसे आगे बढ़ाने वाला समाज ही फिर आर्थिक विषमताएँ नारी में क्रोध खीज निराशा उत्पन्न करती है।

उपन्यासों में चित्रित नारी चरित्रों में वैयक्तिक रूचि, महत्वाकांक्षा स्वतंत्र चेतना, अस्तित्व और अस्मिता की पहचान से कहीं अधिक जीवन एवं संघर्षों से परिपूर्ण है और उसके समानांतर पीढ़ियों का मोहभंग टूटना विघटन वर्ग संघर्ष की समानांतरण चेतना एवं जीवन का अर्थ बोध उभारा गया है। यद्यपि यह कहा जा सकता है। नारियाँ पुरूषों की अपेक्षा अधिक विद्रोहिणी है।

समाज की नैतिक मान्यताओं रूढ़ियों एवं परंपराओं को तोड़ने में सजग एवं सक्रिय है नारीवाद के बारे में सभी ने सुना होगा इसके दर्शन और सिद्धांत के बारे में ज्यादातर लोगों को नहीं मालूम। इसे पूरी तरह जाने और समझे बिना नारीवाद पर कोई भी बहस या विमर्श बेईमानी है नव उदारवाद के बाद भारतीय समाज में महिलाओं के प्रति बदलाव के बाद इस सिद्धांतो को जानना अब और भी जरूरी हो गया है। समाज में महिलाओं की विशेष स्थिति के कारणों का पता लगाना और उनकी बेहतरी के लिए वैकल्पिक समाधान प्रस्तुत करना किस समाज में नारी सशक्तिकरण के लिए कौन–कौन सी रणनीति अपनाई जानी चाहिए।

महिलाएँ किसी भी मामले में पुरूषों से कम नहीं है इसके बावजूद उन्हें अवसरों से वंचित कर दिया जाता है। किसी भी विचारधारा के अपने कुछ सिद्धांत होते है जिनकी मदद से विचारधारा को अच्छी तरह समझ सकते है नारीवाद दृष्टिकोण को कई दृष्टिकोण से देखा गया है कई प्रकार से नारीवादी दृष्टिकोण को उभारा गया है।

3.6.1 नारीवादी – दृष्टिकोण से नारी अधिकार से होगा सुधार :

नारीवाद का इतिहास बेहद पुराना है यह नारी–पुरूष की समानता के सिद्धांत पर आधारित है अठारहवीं सदी की शुरूआत में उदारवादी नारीवादियों ने आजादी व समानता के जनतांत्रिक मूल्यों और औरतों की अधीनता के बीच के अंतराविरोध को रेखांकित किया उदारवाद की बुनियाद बने आजादी समानता और न्याय के विचार सत्ताहीन और चार दिवारी में बंद महिलाओं की जिंदगी के अनुभवों से बिलकुल विपरीत थे।

महिलाओं के बारे में व्याप्त ऐसी गलत धारणाओं को ठीक करने में शुरूआती उदारवादी नारिवादियों विशेषकर मेरी वोल्स्टोन क्राफ्ट ने जोरदार ढंग से हस्तक्षेप किया। साल 1792 में लंदन से पहली बार प्रकाशित अपने आलेख महिलाओं के अधिकारों का समर्थन में उन्होंने महिला अधिकारों की हिदायत की।

3.6.2 पूंजीवाद है महिला गुलामी की जड़ :

नारिवादियों ने न केवल महिलाओं की गुलामी के उदय के विश्लेषण को अपनाया बल्कि मार्क्सवादी धारणाओं को लागू कर महिलाओं के शोषण चक्र को भी समझने का प्रयास किया ये नारीवादी महिलाओं का महिमन्डन नहीं करते जिन पर विचारधारा का वर्चस्व होता है। और जो महत्वपूर्ण तरीके से रोजमर्रा के जीवन से प्रभावित होते है।

भारत में नारीवादियों ने घरों से काम करने वाली महिलाओं को एकजुट करने के प्रयास किए है महिला खेतिहर मजदूरों के लिए खासतौर से जमीन के स्वामित्व की मांगे उढाई है नारियों की समाज के बारे में सोच केवल अर्थव्यवस्था तक सीमित नहीं है इनका मानना है कि उत्पादन प्रक्रिया में प्रजनन कदम आता है।

लिंग के आधार पर विभाजित श्रम एक तरह से नारी पर थोपा जाता है। इसी प्रकार समाज में नारी के यौन संबंधी कार्य भी पुरूषों की मर्जी के अनुसार निर्धारित होते रहे है ये सारे मानते है किस प्रजनन व यौन कर्म के लिए शोषण को खत्म करना जरूरी है।

3.6.3 अक्षय प्ररेणा का स्त्रोत :

यदि भारत वर्ष की नारी अपने नारीधर्म का परित्याग कर देती तो आर्यवर्त कहलाने वाला हिन्दुस्तान अखिल विश्व की दृष्टि में कभी का गिर गया होता यदि देखा जाय तो हमारे देश की आन बान शान नारी समाज ने ही रखी है हमारे देश का इतिहास इस बात का गवा है कि युद्ध में जाने के पूर्व नारी अपने वीर पति और पुत्रों के माथे पर तिलक लगाकर युद्धस्थल को भेजती थी लेकिन वर्तमान में पाश्चात् शिक्षा के प्रचार–प्रसार के प्रभाव से भारत में नारी के अधिकार का आंदोलन चल पड़ा है। वस्तुत नारी का अधिकार मांगना और देने के पक्ष से बहुत उपर है उसे आधुनिक समाज में स्थान अवश्य मिला है लालसाओं की मोहाश्त प्रतिमूर्ति के रूप में युग परिवर्तन के साथ हमारे आचार विचार में और हमारे अभाव आवश्यकताओं में परिवर्तन होना अनिवार्य है परन्तु जीवन के मौलिक सिद्धांतो से समझौता कदापि ठीक नही।

सृष्टि की रचना में नारी और पुरूष दोनों का महत्व है वे एक दूसरे के पूरक है ओर इसी रूप में उनके जीवन की सार्थकता भी है यदि नारी अपने क्षेत्र को छोड़कर पुरूष के क्षेत्र में अधिकार मांगने जायेगी तो निश्चित ही वह नारी जीवन की सार्थकता को समाप्त कर देगी।

वर्तमान समय में भारतीय सरकार द्वारा महिलाओं के उत्थान के लिए अनेक कार्यक्रम एवं योजनाओं का संचालन किया जा रहा है लेकिन इन योजनाओं का क्रियान्वन निचले स्तर तक उचित ढंग से न पहुँच सकने के

कारण नारियों को उपेक्षित लाभ नहीं मिल पा रहा है यह सत्य है कि वर्तमान समय में नारियों की स्थिति में काफी बदलाव आए है लेकिन फिर भी वह अनेक स्थानों पर पुरूष प्रधान मानसिकता से पीड़ित हो रही है।

इस संदर्भ में युगनायक एवं राष्ट्रनिर्माता स्वामी विवेकानंद का यह कथन उल्लेखित है '' किसी भी राष्ट्र की प्रगति का सर्वोत्तम थर्मामीटर है, वहाँ की महिलाओं की स्थिति हमें नारियों को ऐसी स्थिति में पहुँचा देना चाहिए जहाँ वे अपनी समस्याओं को अपने ढंग से स्वयं सुलझा सके सामाजिकता के निर्वहन में नारी–पुरूष को समान रूप से सहभागी बनाना होगा और इसके लिए नारी–पुरूष को अपना प्रतिद्वंद्वी नहीं समझे और पुरूष भी नारी को एक देह नहीं नारी रूप में एक इंसान स्वीकार करे।

नारी की आजादी और खुले आकाश में उड़ान की शर्त उत्पादन में उसकी भूमिका हो नारी की असली आजादी तभी होगी जब उसके दिमाग की स्वीकार्यता हो न कि केवल उसकी देह की अन्ततः कहीं ऐसा न हो कि नारी स्वतंत्रता और स्वाधीनता का पर्व सशक्तिकरण की अवधारणा पर खड़ा होने के पूर्व ही नष्ट होने लगे और इक्कीसवीं सदी महिला सदी है।

वर्ष 2001 महिला सशक्तिकरण वर्ष के रूप में मनाया गया इसमें महिलाओं की श्रमताओं और कौशल का विकास करके उन्हें अधिक सशक्त बनाने तथा समग्र समाज को महिलाओं की स्थिति और भूमिका के संबंध में जागरूक बनाने के प्रयास किये गए है।

महिला सशक्तिकरण हेतु वर्ष 2001 में प्रथम बार देश में महिलाओं के लिये विभिन्न क्षेत्रों में उत्थान और समुचित विकास की आधारभूत विशेषताएँ निर्धारित किया जाना संभव हो सके इसमें आर्थिक सामाजिक सांस्कृति सभी श्रेत्रों में पुरूषों के साथ समान आधार पर महिलाओं द्वारा समस्त मानवाधिकारों तथा मौलिक स्वतंत्रताओं का सैद्धांतिक तथा वस्तुतः उपभोग पर तथा इस क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी व निर्णय स्तर पुरूष समान पर बल दिया

गया है। आज देखने में आया है कि महिलाओं ने स्वयं को अनुभव के आधार पर अपनी मेहनत और आत्मविश्वास के आधार पर अपने लिए नई मंजिले नये रास्तों का निर्माण किया है।[34]

महिला शिक्षा समाज का आधार है समाज द्वारा पुरूष को शिक्षित करने का लाभ केवल मात्र पुरूष को होता है। जब कि महिला शिक्षा का स्पष्ट लाभ परिवार समाज एवं सम्पूर्ण राष्ट्र को होता है। चूंकि महिला ही माता के शिक्षा एवं संस्कृति को सभी क्षेत्रों में पर्याप्त समर्थन मिला यद्यपि कुछ समय तक महिला शिक्षा के समर्थक कम किन्तु आज समय एवं परिस्थितियों ने महिला शिक्षा को अनिवार्य बना दिया है संयुक्त परिवार के विघटन होने से जैसे – जैसे एकांकी परिवार की संख्या बढ़ी इनमें न केवल महिलाओं को सम्मानित स्थान मिलने लगा बल्कि लड़कियों की शिक्षा को भी एक प्रमुख आवश्यकता के रूप में देखा जाने लगा वातावरण अधिक समताकारी होने से महिलाओं को अपने व्यक्तित्व का विकास करने के अवसर मिलने लगे।

नारी आज भी नदी के दो किनारे की तरह है जो कभी मिल नहीं पाती सही तौर पर देखा जाये तो लगता है कि भारत ही नहीं विश्व पहल पर अपनी पहचान बनाती हुई नारियों ने अपनी पुरानी मान्यताएँ बदली है आज की नारी का दृष्टिकोण बदलता जा रहा है अपने अस्तित्व को बचाये रखने के लिए संघर्ष करती हुई नारियों ने लम्बा रास्ता तय कर लिया है परन्तु आज भी एक बड़ा हिस्सा सदियों से सामाजिक अन्याय का शिकार है जब जब नारी अपनी उपस्थिति दर्ज कराना चाहती है तब तब जाने कितने रीति–रिवाजों परम्पराओं पौराणिक आख्यानों की दुहाई देकर उसे गुमनाम जीवन जिने पर विवश कर दिया जाता है।

महिलाओं को शिक्षा देने तथा सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के लिए जो सुधार आन्दोलन प्रारंभ हुआ है। शैक्षणिक गतिशीलता से पारिवारिक जीवन में परिवर्तन हुआ है एक लड़की की शिक्षा एक लड़कें की शिक्षा की

[34] कमलेश गुप्ता – महिला सशक्तिकरण बुक एन्क्लेव जयपुर।

अपेक्षा ज्यादा महत्वपूर्ण है क्योकि लड़कें को शिक्षित करने पर वह अकेला शिक्षित होता है। किन्तु एक लड़की की शिक्षा से पूरा परिवार शिक्षित हो जाता है। शिक्षा ही वहीं कुंजी है जो जीवन के सभी द्वार खोल देती है जो कि आवश्यक रूप से सामाजिक है शिक्षित महिलाओं को राष्ट्रीय व अन्तंर्राष्ट्रीय स्तर पर सक्रिय होने में मदद मिली है महिलाएँ अपनी स्थिति व अपने अधिकारों के विषय में संचेत होने लगी।

शिक्षा ने उन्हें आर्थिक राजनैतिक व सामाजिक न्याय तथा पुरूष के साथ समानता के अधिकारों की मांग को प्रेरित किया। संवैधानिक अधिकारों में विभिन्न कानूनों के द्वारा महिलाओं को पुरूषों के समान अधिकार मिलने से उनकी स्थिति में परिवर्तन हुआ।

****

gaurav shree

अध्याय – तृतीय

हिन्दी उपन्यास में नारी

हिन्दी नारी महिला उपन्यास में प्रारंभिक पीढ़ी की लेखिकाओं ने जहाँ घरेलू नारी के जीवन की त्रासदी तथा यातना के चित्रण के साथ उसकी स्थिति में सुधारों–मुख विषयों पर उपन्यास लिखे वहीं महिला लेखक ने अपने अनुभव क्षेत्र को विस्तार देते हुए ऐसा उपन्यास लिखा है जिसमें समाज की दोहरी नैतिकता का पर्दाफाश घर परिवार से बहार निकलकर कार्य करने वाली स्त्री को दोहरी भूमिका का यथार्थ अंकलन नारी–पुरूष संबंधों की सुक्ष्मतओं की नये रूप में प्रस्तुती और मानवीय सकारात्मकता तथा संबंधों के बिखराव से उत्पन्न सूनेपन का चित्रण है इसके साथ ही काम संबंधों के यथार्थ को जैविक जरूरत के रूप में खुलेपन के साथ व्यक्त किया गया।

इस काल की लेखिकाओं ने अपने उपन्यास में विषय बनाया इस काल की महिला लेखिकाओं ने समाज में व्याप्त विभिन्न समस्याओं को भी अपने उपन्यासों में विषय बनाया इस काल की महिला लेखिकाओं ने समाज में पर्याप्त लिंगभेदी मानसिकता और व्यवहार में दोहरेपन के प्रति तीव्र आक्रोश व्यक्त किया है पुरूष प्रधान समाज में नारी सदियों से दोयम दर्जे की नागरिक बनकर रही है सारे मूल्य मान्यताएँ परंपराएँ संबंध और रिश्ते नाते नारी चुपचाप सहती रही है नारी रचनाकारों ने पुरूष सत्तात्मक व्यवस्था में पनपती विसंगतियों, विपदाओं, विडम्बनाओं को बड़ी गहराई से एक एक कर उभेरा है।[29]

नैतिकता के परंपरागत नारी निरपेक्ष विचारों व्यवहारों को अपनाने वाली नारी की मूक एक अंतर्व्यथा को वाणी दी है अतः नारी पक्ष को प्रबलता से

[29] डॉ. शैल रस्तोगी, हिन्दी उपन्यासों में नारी पृ. स. 164

प्रस्तुत करना नारी में व्यक्तित्व की पहचान की भूख जगाना इक्कीसवीं सदी के महिला रचनाकार की और एक उपलब्धि है

दाम्पत्य जीवन में पति के व्यक्तित्व का विकास होता रहता है परन्तु नारी का व्यक्तित्व अधिकांशतः कुंठित हो जाता है। अतः दामपत्य जीवन के भीतर से स्वतंत्र व्यक्तित्व की चाह इस काल की लेखिकाओं के साहित्य में मुखरता से व्यक्त हुई है नारी को यदि अपनी स्वतंत्र पहचान स्थापित करनी है तो उसे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होना पड़ेगा आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने के लिए उसे घर की देहली लांघकर कामकाजी नारी के घर बाहर की टकराहट को भावनात्मक संघर्ष के रूप में प्रस्तुत किया है।

रचनाकारों ने सदियों से दबी नारी की अंतपीड़ा को वाणी दी है तथा कई जगह तीखा आक्रोश प्रकट किया है इसके कारण पारिवारिक संबंधों का टूटना भी उन्होंने अनिवार्य माना है इन रचनाकारों में मैत्रेयी पुष्पा, चित्रा, मुद्गल, प्रभा खेतान, असगर, वजाहत, महुआ, माजी, गीतांजली, श्री मनीषा कुलश्रेष्ठ और अलका सराबगी आदि प्रमुख है इक्कीसवीं सदी के दशक के महिला लेखक का एक सशक्त प्रवाह हिन्दी साहित्य में प्रवाहित हुआ। इस काल की रचनाओं में नारी उपन्यास के लिए चर्चा प्रस्तुत करने का प्रयास है नारियों द्वारा किये गये लेखन, पुरूष लेखन यह भी कहना गलत है इससे महिला लेखन को पुरूष लेखन से साबित करने के षड्यंत्र की बू आती है उनकी बात से सहमत होते हुए भी यहाँ केवल अध्ययन की सुविधा की दृष्टि तथा अध्ययन क्षेत्र को सीमित करने की दृष्टि से महिला लेखन कहा जा रहा है।

इस काल की लेखिकाओं ने सामाजिक विषयों पर उपन्यास लिखे है दहेज प्रथा, कन्या विक्रय, वृद्ध विवाह, पुरूषों के दुराचार, पर्दा प्रर्था, बहुविवाह के परिणाम स्वरूप आदि तत्कालीन सामाजिक कुरीतियों को इन लेखिकाओं ने अपने उपन्यासों का विषय बनाया है।

हिन्दी उपन्यास में नारी ने अपने कथा साहित्य में मुख्य सरोकार समकालीन जीवन स्थितियों में मनुष्य के भीतरी संसार का उद्‌घाटन किया लेकिन यह भीतरी कशमकश भी बदलते जीवन परिवेश का आत्मीय ब्यौरों और कलात्मक नजर के साथ अंकन भी करती चली है महिला उपन्यासकारों ने अपने उत्साह में ये भूला देते है कि कथा साहित्य के व्यापक के निवास पर अलग अलग रंगों के रूप में भी उनका कुछ महत्व हो सकता है इन्होंने जीवन रहित संवेदना का या संवेदनाविहीन जीवन स्थितियों के अर्थ को पूर्ण रूप से उजागर किया है।

आज का समय महिला उपन्यासकारों के लिए उपन्यास लेखन की और महिला एवं पुरूष दोनो ही अग्रसर हुए है जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मात्रात्मक ही नहीं अपितु गुणात्मक परिवर्तन भी आया है आधुनिक जीवन में मूल्य की सर्वाधिक चर्चा रही है साहित्य की लोकप्रिय विद्या उपन्यास के माध्यम से वर्तमान में बदलते मूल्य अपना अस्तित्व खोए रहे है आधुनिक युग में उपन्यास के महत्व को प्रतिपादित करते हुए एक विद्वान लिखते है।

मध्ययुग में जो स्थान महाकाव्य का था, उससे भारतेन्दु युग में जो स्थान नाटक का या वहीं युग के अनुकूल उससे भी कहीं अधिक महत्वपूर्ण स्थान आज उपन्यास का है आज की नारी उपन्यास साहित्य में अनेक विशेषताएँ दिखाई दी है अगर हम मूल्य स्तर की बात करें तो उनमें आधुनिकता के बोझ के साथ न्याय और इसके साथ ही समकालिन मानव की संवेदनाओं को कई अभिव्यक्तियों और आशाओं को संक्षेप बनाने का प्रयास किया गया है। इसी प्रकार अनेक महिला कथाकारों एवं पुरूषों के रचना का अवलोकन करने पर पाया गया कि मोहन–राकेश के उपन्यासों में आधुनिक संवेदना को दाम्पत्य जीवन की अभिशप्त और तनावपूर्ण स्थितियों में फैलाया है।

महिला उपन्यासकारों में नारी की नारी के प्रति संपूर्ण दृष्टिकोणों को बड़े ही खुले एवं बेक्षिक ढंग से समाज के सापेक्ष अपने जीवन की अधेड़बुन

को दर्शाया गया है। महिला उपन्यासकारों ने मूल्य विघटन समकालिन जीवन की जटिल संवेदना व्यंग्य दृष्टि के जरिये सामाजिक स्थितियों की जूहडता को खोलकर रखा गया है। इस प्रकार समकालिन उपन्यासों में सामाजिक यथार्थ को पहचानने की क्षमता मिलती है आज की कुसंकटाकूल आर्थिक सामाजिक, राजीनितिक और मनोवैज्ञानिक परिस्थितियों में जीवन संघर्षपूर्ण और उलझन मय हो गया है।

आज का युग राष्ट्रीय सीमाएँ पार कर अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में पर्दाफाश कर रहा है आज की नारी में उपभोक्तावादी संस्कृति को बोलबाला है मानव सभ्यता समाज में परिवर्तित विचारधाराओं से प्रभावित हो रही है अनेक महिला उपन्यासकारों ने बच्चें को केन्द्र में रखकर मुन्नु भण्डारी का आपका बंटी ममता कालिया का बेघर, गिरिराज किशोर की यात्राएँ, कृष्णा सोबती का सूरजमुखी अंधेरे में, अमृता प्रीतम्का समय सरगम उपन्यास है इन उपन्यासों में क्रुर सच्चाइयों का यथार्थ से समाना होता है। आज वैज्ञानिकता के युग में मानव के सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन होने के कारण सामाजिक मूल्यों में बिखराव हुआ है।

हिन्दी उपन्यास में महिलाओं का विशेष योगदान रहा है दूसरा इनके साहित्य की प्रायः उपेक्षा होती रही है यदि उपन्यास साहित्य में महिलाओं को उजागर किया भी गया तो इनके दृष्टिकोण का व्यापक चित्रफल उभरकर सामने नहीं आ सका, नारी होने के नाते इनकी प्रेम समस्या पुरूष की प्रेम समस्या से भिन्न है नारी अपने स्वतंत्र अस्तित्व को न केवल पहचाने लगी है अपितु उसे स्थापित भी करने लगी है।

नारी के जीवन के प्रेम की अनुभूति उसके केन्द्र में है और इसकी अपनी सीमाएँ भी है एक नारी के जीवन में व्याप्त संत्रास, घुटन, त्रासदी प्रेममय भाव और व्यापार को नारी मन की उपेक्षा कौन अधिक सच्चाई से प्रकट कर सकता है आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने नारियों के विषय चुनाव

को संगत बतलाये हुए कहा है यह विचित्र बात है कि स्त्री जब साहित्य लिखती है स्त्रियों के बारे में ही लिखती है और पुरूष जब साहित्य लिखता है तब भी स्त्रियों के संबंध में ही लिखता है दोनों में अंतर यह होता है। कि नारी लेखन का उद्देश्य है अपने विषय में फैला हुए भ्रम को पैदा करना है। महिला उपन्यासकारों का लेखन चुनने के पीछे यह भाव प्रमुख रूप से रहा है।

जाके पांव न फटी विवाई वो क्या जाने पीर पराई।

पुरूष उपन्यासकारों की अपेक्षा नारी मन के चित्रण में महिलाओं की अधिक समर्थ सिंह हो सकी है। सूर्यबाला के अनुसार – अनुभव यही कहता कि लेखिकाओं का क्षेत्र अधिकतर घर और नारी मन रहा है जब कि पुरूष का घर बाहर दोनों, लेकिन हम इस क्षति की पूर्ति भी कर लेती है नारी मन की अचाह गहराइयों में बैठकर और इतना तो मैं दावे के साथ कह सकती हूँ कि नारी के अंदर इतने गढ़ लिपिस्म गुफाएँ और प्राचीन है कि इन्हे भेद पाना आसान नहीं जितनी समस्या से नारी भेद सकती है पुरूष नहीं।

महिला उपन्यासकारों द्वारा रचित रचनाओं में संसार के सभी पक्षों के चित्रों को उजागर किया गया है और अपनी सरलता के कारण जन जीवन की जीवित शास्त्र बन गई है महिला लेखिकाओं ने नारी मन की विभिन्न भावनाओं का चित्रण किया है साथ ही आज की पढ़ी लिखी युवतियों के विचार ईश्वर के संबंध में कहती है कि ''

'भगवान' तो कुछ भी नहीं सिर्फ एक विचार है, जिसे हमने अपने देखे हुए सपने के हिसाब से एक शरीर एक नाम दे दिया है उसे रहने को मंदिर दे दिया है मैं हलावों में किसी झुठ कल्पना और लोगों की बकवास में विश्वास नहीं करती महिला उपन्यास साहित्य मूलतः हमारे समाज के मध्यवर्ग पर आधारित है।

मध्यवर्ग की नींव एक और तो उसकी आर्थिक स्थिति पर है दूसरी और उसके परिवार की केन्द्र बिंदु स्त्री पर हिन्दी उपन्यास में सर्वथा एक नई चेतना आई नारी को देखने समझने मूल्यांकन की नई दृष्टि और जीवन के नवीन विवेचना का सहारा लेकर उपन्यासकारों ने नारी चरित्र को अपने उपन्यासों में संपूर्णता से उभारा है उसके प्रति किए गए सामाजिक अन्यायों का खुलकर पर्दाफाश किया है और उन्हीं के परिप्रेक्ष्य में नारी के उत्थान पतन को आंका है नारी के अंतर्मन के विश्लेषण का कार्य आठवें दशक के उपन्यासकारों में महिला उपन्यासकारों ने बड़ी सजीवता से किया है इन्होंने मानव जीवन के अंकन में मनोविज्ञान के चेतनावादी दृष्टिकोण का सहारा लिया है।

3.1 हिन्दी उपन्यास में स्वतंत्रता से पूर्व नारी :

जब मनुष्य आदिम अवस्था में था सामाजिक दृष्टि से नारी हमेशा एक गुलाम की स्थिति में रही है दोयम दर्जे पर रही है कभी कभी तो वह मनुष्य श्रेणी में भी नहीं गिनी गई आर्य समाज में जहाँ नारी को माता के रूप में पुण्य माना वहीं वह भूल गया कि वह पहले पत्नी है और माता बाद में पत्नी के रूप में तो उसे दासी ही माना गया।[30]

वैदिक काल में उसकी स्थिति में परिवर्तन आया स्वतंत्रता से पूर्व इस पुरूष प्रधान समाज में लिखने का साहस करने वाली जिस नारी को हम सबसे पहले स्मरण करते है दुर्भाग्य से उसका नाम अज्ञात है दरअसल विरोध के जिस तेवर में इसने उस व्यवस्था में चुनौती दी है, उसके दुष्परिणाम का उसे संभवत भली भाँति पता था।

1882 में लिखी गई सामन्ती उपदेश इस अज्ञात हिन्दु लेखिका ने लिखी है जिसकी शैली हालांकि उपदेशात्मक ही है किन्तु मौलिकता के तर्क उसमें

[30] डॉ. शैल रस्तोगी हिन्दी उपन्यासों में नारी पृ. सं. 233

आधुनिक सर्जनात्मक गुणों को समाहित किए सामने आते है इसी अज्ञात लेखिका का लेखन हमें नारी मुक्ति के अनुशासन के प्रथम साक्ष्य के रूप में प्राप्त होता है। जो पुरूष प्रधान समाज की हालत से आरोपित परम्परा में अपनी जाति की घुटता, पिसता देख विद्रोह से भर उठी थी।

डॉ. राजेन्द्र प्रताप का कथन है आजादी से पूर्व उपन्यास के सरोकार राष्ट्रीय और सामाजिक थे तो आजादी के बाद मूल्य विघटन, राजनीतिक प्रपंच सर्वव्याप्त भ्रष्टाचार और व्यवस्थागत दबावों में पिसते लोग इन सबसे उपर वैयक्तित्व मूल्यों की प्रतिष्ठा का प्रयास पूर्व भारतीय समाज में मनुष्य का व्यक्तित्व परिवार प्रथा सामान्यता प्रचलित थी अतः पारिवारिक जीवन आर्थिक रूप से सुरक्षित था

भारत में उपन्यास लेखन का प्रारंभ अठारवीं सदि के उतराई में हुआ यद्यपि इसके लिए परिस्थितयाँ पिछले पचास वर्षों से बन रही थी बंगाल का उच्च मध्यवर्ग अंग्रेजी शिक्षा एवं संस्कृति से प्रभावित होने के कारण उपन्यास के सम्पर्क में सबसे पहले आया।

gaurishree

भारत में अंग्रेजी उपन्यासों का प्रभाव सर्वप्रथम बंगला के पाठकों पर रहा जो अंग्रेजी भाषा एवं सभ्यता के अधिक परिचित थे फोर्ट विलियम कॉलेज ने हिन्दी उर्दु की अनेक ग्रंथ कथाओं का प्रकाशन 19वीं सदि के प्रथम दशक में किया परिणामतः बंगाल में मध्यवर्ग में उपन्यास लेखन की रूचि पनपने लगी।

साहित्य समाज में होने वाले परिवर्तनों से अछुता नहीं रह सकता यूरोप में जहाँ पूंजीवाद के विकास के साथ मध्यवर्गीय चेतना जागृत हुई तथा रिचर्डस, हेनरी फिल्डिंग जैन आस्तिन के उपन्यासों के मध्यवर्ग का सटीक चित्रण हुआ पूर्व भारतीय समाज में मनुष्य का व्यक्ति रूप में कोई स्थान नई

था स्वतंत्रता से पूर्व, संयुक्त परिवार प्रथा सामान्यता प्रचलित थी अतः पारिवारिक जीवन आर्थिक रूप से सुरक्षित था।

भारतेन्द्र जी द्वारा सम्पादित हरिश्चन्द्र चन्द्रिका नामक पत्रिका में 1875 ईवीं प्रकाशित एक कहानी के लिए उपन्यास शब्द का प्रयोग किया गया हिन्दी प्रदीप नामक मासिक पत्रिका के 1879 ईवीं के एक अंग से बालकृष्ण भटट द्वारा रचित रहस्य कथा उपन्यास छपना प्रारंभ हुआ।

डॉ. गोपाल राम गहमरी ने देवरानी जेठानी की कहानी को हिन्दी का पहला उपन्यास माना है जो 1870 ई. में छपी थी आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लाला श्री निवास दास कृत परीक्षा गुरू 1882 ई. को हिन्दी का पहला उपन्यास स्वीकार किया है इन सभी कृतियों में मध्य वर्ग के जीवन को केन्द्र बनाया गया है। तिलस्मी ऐयारी, जासूसी उपन्यास रोमांस बहुल उपन्यास लिखे गए अंग्रेजी व बंगला से कई उपन्यास के अनुवाद हुए। सामाजिक उपन्यासों का लक्ष्य समाज सुधार था।

gaurav shree

प्रेमचंद के उपन्यासों में समाज सुधार की प्रवृत्ति थी इस काल में उपन्यासों में लोकरंजन की प्रवृत्ति है किन्तु लोकरंजन की नहीं प्रेमचंद पूर्व हिन्दी उपन्यास अपने विकास के प्रारंभिक चरण में था अतः इस काल में नारी को अपने अस्तित्व का पूर्ण अधिकार था वह पति की मृत्यु के बाद अपना जीवन अपनी इच्छा से सती के रूप में ले लेती थी।

भारतीय समाज पुरूष प्रधान समाज रहा है जहाँ आदिकाल में नारी–पुरूषों की इच्छानुसार जीवन यापन करती थी उसे किसी ने कभी सार्थक व्यक्तित्व नहीं माना लेकिन राख के भीतर दबी राख की चिंगारी के समान नारी की भूमिका समय समय पर अपना रूप दिखाती आई है।

प्रेमचंद के आगमन से पूर्व हिन्दी कथा साहित्य घुटनों से लड़खड़ाते उस बालक के समान था जिसे अपने पैर जमाने के लिए जीवन की कठौर

वास्तविक धरातल की तलाश थी मनुष्य की चेतना वर्तमान में है, किन्तु उसके दोनों छोर अनोखी रीति से अतीत और भविष्य को छूते रहते है उसकी स्मृतियाँ मन को विगत की और आकृष्ट करती है और उन स्मृतियों में कामनओं का पुट देकर वह भविष्य में होता है।

स्मृति और कामना का यह मेल उपन्यास के चेतन प्रवाह पद्धति की विशिष्ट देन है पुरूषों द्वारा की गई ह्रदय प्रशंसा की आड़ में उनकी कलूषता का पर्दाफाश कर उन्होंने नारियों को गहनों के प्रेम साज श्रृंगार की प्रवृत्ति धन लोलूपता आश्रम और संरक्षण पाने की चाह में पुरूषों के गुलाम बनने जैसी बेडियों के महिन और मजबुत धागों में उलझ जाने की प्रेरणा दी है देवी देवताओं और धर्म की आड़ लेकर नारियों पर ढाये जा रहे पुरूषों के जुल्मों को ललकारती हुई यह साहसी और दबंग नारी लेखिका नारियों के लिए एक सर्वथा नये धर्म का आह्वान करती है ऐसे पुरूषवादी लेख में जितने भी उपन्यास लिखे गए उन सभी उपन्यासों में नारियों के लिए रहन सहन के तरीके धर्म की शिक्षा, नैतिक कर्तव्यों के गढ़े गए उपदेश भरे है।

संसार में हर तरह के अन्याय ओर गुलामी का अंत हो जाएगा पर औरत की गुलामी और अन्याय कभी खत्म नहीं हो सकेगा सारी आधुनिकता और शिक्षा प्रसार के बावजूद बल्कि ज्यों–ज्यों रोशनी बढ़ेगी यह अंधेरा और घना होगा नए–नए ढंग से।

डॉ. रामदर्शन दास के शब्दों में कहते है कि हिन्दी साहित्य कोश में पुरूष साहित्यकारों के समक्ष अपनी अद्‌भुत प्रतिमा के साथ प्रकाश मान कुछ ऐसी देवियाँ है जिन्हाने अपनी प्रतिमा और कृतियों द्वारा हिन्दी साहित्य में चार चांद लगा दिए उसके मष्तिक को और भी उन्नत कर दिया है उनकी कृतियों में हिन्दी साहित्य को प्रगतिशील जीवन की अनुप्रेरणा मिली है इतना होने पर भी आज तक हिन्दी साहित्य में कोई ऐसी पुस्तक नहीं लिखी गई। जिससे

उन साहित्यिक देवियों का परिचय और उनकी कृतियों की झांकी देखने को मिल सकें।

प्रेमचन्द के आगमन से पहले के कथा साहित्य में बंगमहिला अर्थात् राजेन्द्र बाला घोष और उनकी कहानी दुलाई वाली 1907 को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है इससे हम कह सकते है कि जब हिन्दी कथा साहित्य आम आदमी के यथार्थ से कोसों दूर काव्यात्मकता और पाणिनीय भाषा आदर्शों के जंगल में पड़ा था सर्वप्रथम बंग महिला के लेखन में हमें अनेकानेक सृजनात्मक गुण और सामाजिक सरोकारों की प्रधानता देखने को मिलती है।

बंग महिला ने अपनी रचनाओं में सामाजिक जीवन के विराट अनुभव को केन्द्र में रखा था ओर दृश्य–परिदृश्य की अनेक त्रिज्याएँ खींची। शास्त्रीय दृश्यों में उन्हें तथ्य बनाया नारियों की भूल अन्तवेदना ने उन्हें बैचेन किया गाँवों के अनुभूत जीवन ने उन्हें आंचलिक लेखन शिल्प दिया और इन सबके कारण उनमें जिस सृजनसत्ता ने जन्म लिया उसने एकदशक बाद प्रेमचन्द को जन्म दिया।

gaurishree

विकास के इसी क्रम में रामेश्वर नेहरू के संपादन में 1916–1917 में नारी दर्पण पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ हुआ जिसके माध्यम से अनेक नारी कथाकार सामने आई और बौद्धिक विकास को व्यावहारिक और क्रियात्मक बनाने के संपादकीय में छपी थी

आलोच्य युग की ऐसी विषमताओं के बीच कुछ नारी ने उपन्यास लिखने का भी साहस दिखाया हालाकि यह कहने और मानने में उन्हें कोई कठिनाई नहीं है कि प्रेमचन्द से पूर्व जिस मनोरंजन तथा घटना चमत्कारों से भरे काल्पनिक घटनाओं से उपन्यास की विषयवस्तु को ग्रस्त कर रखा था उससे लेखन इन नारियों का नहीं रहा।

मूल्यगत संग्रहण की स्थिति में उन नारी लेखिकाओं ने पुरूष लेखकों के समान की भावुकता और कल्पना के आधार पर नारी आदर्श और सामाजिक नैतिक आचारों की प्रतिष्ठा को ही अपने लेखन का मुख्य विषय बनाया समय और अनुभव के कारण नारी साहित्य के प्रारंभिक उपन्यासों की कमी के कारणों का विश्लेषण करती है।

धर्म और नारी मर्यादा के आदर्शों पर आधारित इस उपन्यास के बाद रूकमनी देवी द्वारा मेम और साहब नामक उपन्यास लिखा गोपाल देवी नामक स्त्री ने दयावती उपन्यास लिखा गिरिजा देवी ने कामना कुसुम नामक उपन्यास लिखा इस बात का बहुत ही आश्चर्य है कि समाज में कड़े प्रतिबंधों को सहती हुई जिन नारियों ने अभिव्यक्ति का साहस दिखा उनके इस लेखन को अपरिपक्व की संज्ञा देकर हाशिये पर धकेल दिया गया।

एक प्रख्यात आलोचन का कहना है कि इन लेखिकाओं ने नारी चरित्र अपरिपक्व अविकसित रहे इनमें आदर्शों का ही अधिक्य है इसलिए इन उपन्यासों का साहित्य में कोई स्थायी मूल नहीं हिन्दी कथा साहित्य में मौलिक उपन्यास लिखने वाली लेखिकाओं में सबसे पहले शैल कुमारी देवी का नाम लिया जाता है। इन्होंने 1926 में उमा सुंदरी नामक प्रथम उपन्यास लिखा है डॉ. नीहार गीते के अनुसार उमा सुंदरी शैलकुमारी देवी दि.सी. 1926 एक महिला द्वारा लिखा हुआ हिन्दी संसार का प्रथम मौलिक उपन्यास है।

3.2 मध्य कालीन उपन्यास लेखिकाएँ :

प्रारंभिक उपन्यासकार साध्वी सती पतिप्राणा अबला इन्होंने सुहासिनी नामक उपन्यास (सन् 1890 धर्मेन्द्र प्रेम वनारस) लिखा जो एक चरित्र प्रधान और पतिपरायण स्त्री की आदर्शवादी कहानी है शब्दों पर बंगला भाषा का गहन प्रभाव तथा लिंग की अनेक त्रुटियाँ देखने को मिलती है।

स्वतंत्रता पूर्व के आरंभिक दौर की लेखिकाओं का लेखन चाहे वह अन्नपूर्णा देवी का हो या उषा देवी मिश्रा या शिवरानी देवी या कौशल्य अश्क का इस में कलम पकड़ने का साहस करना ही कहूंगी उनके अनगठ लेखन के मूल में घर परिवार के ह्रदय और वे पारंपरिक उदात्त चरित्र थे जो पाठक के समक्ष आत्मीय सुदृढ़ नैतिक व्यक्तित्व का पुष्ट खाका रचते हुए मनुष्यता और मूल्यों की वकालत करते थे उनकी नारियाँ समाज में स्थापित स्वीकृत पारंपारिक नारी दबि सतीत्व, पत्नीत्व, मातृत्व को ही अपना अस्तित्व बोध मानकर चलने वाली नारियाँ रही है इस प्रकार प्रारंभिक कालीन उपन्यास ने अपने उपन्यासों के मख्यतः सामाजिक और धार्मिक मर्यादाओं के प्रति श्रद्धा व्यक्त की है, विद्रोह अथवा क्रांति उनका लक्ष्य नहीं था।

इन लेखिकाओं के बारे में चित्रा मुदगल टिप्पणी देते हुए कहती है कि कलम पकड़ने का साहस भी नारियों में पैदा हुआ यह भी तो एक महत्पूर्ण उपलब्धि है।[31]

Gaurav Shete

3.3 स्वतंत्रता के बाद हिन्दी उपन्यास में नारी :

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का कथन है आजादी से पूर्व उपन्यास के सरोकार राष्ट्रीय और सामाजिक ये तो आजादी के बाद मूल्य विघटन, राजनीतिक प्रपंच सर्वपर्याप्त भ्रष्टाचार और व्यवस्थागत दबावों में पिसते लोग और इस सबसे उपर वैयक्तिक मूल्यों की प्रतिष्ठा का प्रयास इन्हीं सबके बीच कहीं टूट रहे थे नैतिकता के प्रतिमान हिन्दी उपन्यास में महिलाओं के उपन्यासों का रचनात्मक स्तर पर उनमें अनेक नवीन प्रवृत्तियाँ दिखाई देती है।

युग संवेद एवं बौद्धिक संवेदना के कारण ऐसी विशेषताओं का प्रभाव स्वाभाविक है क्योंकि रचनाकार का अपना दृष्टिकोण है जिसके माध्यम से वह यथार्थ को अन्वेषित करता है वर्तमान उपन्यास लेखन दृष्टि का परिप्रेक्ष्य

[31] शीला रजवार, महिला उपन्यासकार मूल्य चेतना पृ. सं. 22

सर्जनात्मक रूप में सामाजिक यथार्थ बोध से उत्पन्न मूल्यों प्रवृत्तियाँ एवं युगीन स्थितियों को निरूपित किया ये प्रवृत्तियाँ आज के जीवन में जीवन परिवेश से अदभूत है।

समाज में सर्वत्र संघर्ष व्याप्त है जिसका परिणाम है नवीन स्थापनाएँ नये आदर्श नये मूल्य अर्थात् नया समाज प्राचीनता के प्रति विद्रोह और नवीनता के प्रति आग्रह बढ़ता जा रहा है लगता है कि मानवता पलट रही है और लक्ष्य तक पहुँचने के लिए प्रयासरत है पुरातन के प्रति विद्रोह मानक अपने अतीत से विश्वत होकर वर्तमान को ही सब कुछ समझता हुआ प्रगति के पथ की और बढ़ने का दावा कर रहा है महिला उपन्यासकारों के उपन्यास में समाज के इस बदलते स्वरूप का चित्रण बखूबी हुआ है तथा इसमें नवीनता के दर्शन हो रहे है।

आधुनिक समय की महिला उपन्यास विश्व व्यापी मूल्य संक्रमण के प्रभाव से अछूते नहीं है वैसे भी चेतना का संबंध मनोविज्ञान से है और चेतना हर नारी की विशेषता होती है। नारी उपन्यासकारों के भिन्न भिन्न दृष्टिकोणों में ही इस प्रकार की वैचारिकता प्रक्रिया दिखाई पड़ती है इनमें कुछ विशेषताएँ पूर्ववर्ती उपन्यासों में भी मिलती है।

यथा यथार्थवाद प्रकृतिवाद आदर्शवाद आदि लेकिन यहाँ की प्रवृत्तियाँ सर्जनात्मक धरातल की आवश्यकता के रूप में न आकर लेखकीय चिंतन के रूप में मुखरित हुई है अर्थात् सामाजिक शून्य स्थिति एवं वस्तुपरक दृष्टिकोण से व्यंजित हुई है जीवन की जटिल एवं परम्परा बोध की रूढ़ियों से संबंध भाव चेतना के परिवर्तित ने वर्णित किया है

युग के परिवर्तन के साथ मानव मूल्यों आस्थाओं एवं विचारों में परिवर्तित धारणाओं के प्रत्यत दर्शन आठवें दशक के महिला लेखन में होता है। स्वतंत्रता के बाद भारत में लिखे गए उपन्यासों की सूची बहुत लम्बी है क्योंकि अनेक

उपन्यासों ने अलग अलग कारणों से पाठकों का स्थान आकृष्ट स्वतंत्र्योत्तर उपन्यासों में से कुछ दृश्य की मौलिकता के कारण चर्चित रहे है तो कुछ अपनी चरित्र सृष्टि के कारण कुछ उपन्यासों में किए गए भाषिक प्रयोग उनकी विशिष्टता रेखांकित करते है।

स्वतंत्रता के बाद की महिला उपन्यासकारों ने समाज का संक्रमणकाल समाज में वृद्धजनों और नारियों की स्थिति क्या है यह उसके सांस्कृतिक विकास का सबसे बड़ा मापदण्ड माना जा सकता है उस समाज में नारी–पुरूष के आपसी संबंध कैसे हैं चूंकि हर वर्ग हर पीढ़ी और समुदाय के संबंधों में सर्वाधिक समान्य घटक के रूप में नारी–पुरूष का परस्पर संबंध ही है, भारतीय समाज की मानसिकता थोड़ी संकीर्ण दिखाई पड़ती है।

यह संकीर्णता नारी और पुरूष के आपसी संबंधों की व्याख्या करने में ही नहीं बल्कि नारी–पुरूष को देखने के अलग नजरिए की भी वकालत करती है इस संदर्भ में कृष्णा सोबती का कहना है क्या हम याद करना पसंद करेंगे कि भारतीय मानसिकता अपने समूचें आदर्शों तामझाम के साथ बराबर एक खास तरह की संकीर्णता का शिकार रही है साहित्यिक गतिविधियों को तत्कालीन गतिविधियाँ प्रभावित एवं प्रचलित करती है।

स्वाधीनता आंदोलन के दौरान किए गए संघर्ष में जहाँ हिन्दी उपन्यासों में चित्रित किया गया वहीं स्वाधीनता के उपरांत लिखी गई औपन्यासिक कृतियों में आजादी के मोह, भंग नेताओं की स्वार्थपरता एवं गांधीवादी मूल्यों के विघटन का पर्याप्त चित्रण हुआ।

स्वाधीन भारत में लिखे गए उपन्यासों में विषय वैविध्य है, जीवन की व्यापकता है चिंतन, की प्रोढ़ता है तथा शैली शिल्प के नये प्रयोग है इन्होंने उपन्यासों में परम्परागत रूढ़ियों स्थापित मान्यताओं के विरूद्ध नारी स्थिति का वास्तविक चित्रण किया है प्रेम, वात्सल्य, विवाह वासना, ममता आदि की सशक्त अभिव्यक्ति की है।

3.4 सामाजिक उपन्यास में नारी :

स्वतंत्रता के बाद महिला उपन्यासों में अस्तित्व के प्रति जागरूकता सामाजिक अराजकता नैतिक उच्छृंखला खोखलापन, अनास्था, निराशा एवं तृष्ण, घृणा नवीन मूल्यों का चित्रण हुआ है।

परम्परागत सामाजिक मूल्यों को नकारते हुए युगीन उपन्यासों नें भारतीय जीवन में आधुनिकीकरण के परिवर्तित परिवेश से परस्पर मानवीय संबंधों के विघटित रूप को चित्रित किया है महिला उपन्यासकारों ने व्यक्तित्व के निर्माण में मूल प्रवृत्तियों के महत्व को स्वीकार करते हुए उनकी स्वच्छेद अभिव्यक्ति में बाधक सामाजिक मर्यादाओं मान्यताओं की संगतता पर भी विचार किया है जिससे व्यक्ति और समाज के प्रति अवरूद्ध होती रही है।

आठवें दशक के महिला उपन्यासकारों के मूल्य चेतना, सामाजिक राजनैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक यथार्थ में समाज के स्थान पर व्यक्ति को प्रतिष्ठा मिली अतः समाज निरपेक्ष व्यक्ति चिंतन का विकास हुआ है। परम्परागत बंधन शिथिल हो चुके है इसी प्रकार व्यक्ति की अहं भावना ने व्यक्ति को लक्ष्य और समाज को निर्मित रूप में स्वीकार है नारी का मूल्यांकन नारी के रूप में होने लगा है अब उसकी सत्ता मात्र सापेक्ष नहीं है।

आठवें दशक की महिला उपन्यासकारों ने मुन्नू भण्डारी का महाभोज मृदुला गर्ग का उन पचास दिन अर्मता प्रीतम्का पिंजर कृष्णा अग्निहोत्री का अभिषेक आदि प्रमुख है सामाजिक क्षेत्र में भी नारी प्रतिष्ठा की भावना ने परम्परागत मूल्यों को समाप्त कर दिया है वैवाहिक जीवन की रूढी मान्यताएँ बदल चुकी है।

विवाह के परम्परागत बंधन शिथिल हो गए है तथा विवाह दो आत्माओं का पुनर्मिलन या जन्म जन्मान्तर का संबंध स्वीकार न किया जाकर समझौता अथवा मैत्री संबंधी माना जाने लगा और प्रेम विवाह अंतजार्तिय विवाह विधवा

तलाकोपरांत पुर्नविवाह को समाज में मान्यता मिलने लगी है हिन्दी महिला उपन्यासारों के उपन्यासों में मानव जीवन का आर्थिक पक्ष भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि इसका सामाजिक पारिवारिक या वैयक्तिक रूप होता है।

पारिवारिक संबंध केवल सामाजिक आधारों को लेकर ही नहीं चलता उसके लिए मधुरिमा का आधार दोनों की मानसिक परिपक्वता के साथ आर्थिक सम्पन्नता भी है एक आलोचक लिखती है दाम्पत्य जीवन में आर्थिक सम्पन्नता भी है और मतभेद तथा वाद विवाद होते है वहीं दूसरी और मानसिक तनाव आक्रोश घुटन और निराशा का बीजारोपण हो जाता है जिसके कारण दोनों में संबंध विच्छेद हो जाता है।

महिला उपन्यासकारों ने आर्थिक संबंधों को लेकर पारिवारिक जीवन में जो परिवर्तन आया है तथा परिवर्तन के फलस्वरूप जो चेतना आई है उसका चित्रण किया है आर्थिक चेतना के फलस्वरूप अब न तो नारी का शोषण किया जा सकता है आज बढ़ते हुए प्रगतिशील भौतिकवादी युग में नारी स्वयं भी अपने जीविकोपार्जन के लिए आत्मनिर्भर होने में ही जीवन की सफलता को स्वीकार करने लगी है क्योंकि आर्थिक परिवेश सामाजिक संबंधों को परिवर्तित करता है।

महिला उपन्यासकारों ने वर्तमान में देश को संपूर्ण सामाजिक संबंधों को परिवर्तित करता है शासनतंत्र का संपूर्ण ढांचागत लाल फीताशाही, भाई, भतीजावाद और भ्रष्टाचार की सुदृढ़ नींव पर आधारित है।

कृष्णा सोबती मानती है कि साहित्य और कानून की निगाह एक नहीं हो सकती साहित्य जीवन का दर्पण है जिंदगी की बंदिश नही। अतः नैतिकता का जो पैमाना न्यायाधिकरण में प्रस्तुत किया जाता है। वह मानव पर लागू करना या उसके सांचे में मानव व्यवहार को मर्यादित कर देना अनुचित है

साहित्य सिर्फ इस दृष्टि आंतरिक समय और बंदिश रखता है जो उसके बहाव को चढ़ाव को खुद ही सहेजता–समेटता है सत्य को अपने में संजोता है राजनैतिक चेतना के फलस्वरूप आज उच्चवर्ग के प्रति सचेत है।

गांधी जी भी अराजकतावाद के विरोधी नहीं थे। उनका ख्याल था कि नौकरशाही और पूंजीवाद महिला उपन्यासकारों ने वर्तमान समाज के यथार्थ चित्रण को बहुत ही रहस्मय ढंग से किया नैतिक मान्यताओं में क्रांतिकारी परिवर्तन आया है विश्व की बढ़ती हुई जनसंख्या और उसको रोकने के प्रयतनों ने परम्परागत नैतिक मूल्यों को विखलित कर दिया है यौन संबंधों में स्वेच्छाचरिता बढ़ी है।

स्वतंत्रता युग में नारी जीवन की भूमिका एवं उसकी समस्याओं को लेकर हिन्दी उपन्यास और कहानीकारों ने तेजी से साथ काम किया है आज भी चल रहा है आज के सामाजिक परिवेश में नारी की स्थिति नारी पुष्प के पारस्परिक संबंध नारी के प्रति पुरूष का संकुचित दृष्टिकोण एवं पुरूष के साथ आधुनिक नारी की सहायता का सही चित्रांकन कथा साहित्य के माध्यम से सफल हुआ है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात परिस्थितियों में परिवर्तन के कारण उपन्यास विधा के पश्चात परिस्थितियों में परिवर्तन के कारण उपन्यास विधा को समृद्ध करने में लेखिकाओं का प्रयास सराहनीय रहा है नारी होने के नाते इन्होंने नारी चरित्रों का पुरूषों से भी अधिक सूगम चित्रांकन कर अपनी अपूर्व प्रतिभा का परिचय दिया है।

महिला लेखिकाओं ने नारी मन की विभिन्न भावनाओं का चित्रण किया है साथ ही आज की पीढ़ी में पढ़ी लिखी युवतियों के विचार विमर्श के संबंध में परम्परा से हटकर है महिला कथाकारों के उपन्यास प्रायः नारी जीवन

नारी–पुरूष संबंधों आधुनिक नारी की समस्याओं से जुड़े हुए है इनका लेखन नारी जगत को बेहतर बनाने का प्रंशसनीय प्रयास है।

भारतीय समाज की स्थिति एवं परिवेश में एक नारी की स्थिति व उसके संघर्षमय जीवन की दयनीय स्थिति का चित्रण कर इन्होंने मूल्यों की स्थापना की है इनके कथा साहित्य में जिन्दगी का व्यापक कोलाहल सुनाई देता है आज धर्म के प्राचीन संदर्भ में परिवर्तन हो गया है।

महिला उपन्यासकारों ने भी इस विषय पर सजग दृष्टि से विचार किया है वे मानती है कि धार्मिक रीतियों और नितियाँ आज रूढ़ हो गई है और हमारे लिए बंधन बन गई है वे इनके बारे में कहती है कि हमें बाँधा इस लिए गया है कि हम ठीक से खुद को न जान पाए धर्म की इतनी मोटी परत चढ़ी रही तो जानना हो भी कैसे सकता।

धर्म की परत हमारे व्यवहार को कंट्रोल में रखती है आज का भारतीय समाज छूआ–छूत की भावना को कहीं पीछे छोड़ आया है एक युग था जब उच्च जाति के लोग निम्न जाति के लोगों के हाथ का न खाते थे, न पानी पीते थे।

वर्तमान भारतीय व्यक्ति आर्थिक दबावों से घिरकर स्वकेन्द्रीत हो गया है परिणाम, प्रेम, स्नेहे, करूणा, दया, सेवा जैसे भावनात्मक मूल्यों का दिखावा आ गया है कृत्रिमता व्याप्त हो गई है कथनी और करनी में अंतर से व्यक्तित्व को पहचानना कठिन हो गया है।

एक ध्यानाकर्षक तथ्य यह है कि लेखिकाओं ने अपने कथा साहित्य में पुरूष विचित्र नारी का खण्डन किया पुरूषों की रचना में नारी या तो नारी होती है या फिर दानवी लेकिन महिलाओं ने नारी के रूप में प्रस्तुत किया महिलाओं द्वारा रचे नारी पात्रों में गुण दोष दोनों का समन्वय देखने को मिलता है यही कारण है कि महिला उपन्यासकारों ने जो नारी चरित्र प्रस्तुत किए वे

अपेक्षाकृत प्रभावशील विश्वसनीय और सजीव लगता है यू भी नारी होकर नारी हदय को पढ़ने का सामर्थ्य निर्विवाद है।

देश में आए सांस्कृतिक सामाजिक राजनैतिक पतन की और महिला उपन्यासकार सचेत है इन्होंने समाज की पूर्ण सच्चाई की तस्वीर अपने उपन्यास में उतारी है साथ ही अपना आक्रोश एवं यथार्थ का बखूबी से चित्रण किया है जो संपूर्ण समाज के सापेक्ष एक कड़वा सत्य है।

आजादी के बाद उपन्यासों में नवीन जीवन मूल्यों के वर्णन के साथ विद्रोह का स्वर स्पष्ट दिखाई देता है इस काल में खुद उपन्यासकार मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित हुए और इन्होंने समाज की संपूर्ण समस्याओं का निरूपण यथार्थ रूप में किया। कृष्णा सोबती, अमृता, प्रीतम, मुन्नू भण्डारी आदि महिला उपन्यासकारों का अपना महत्वपूर्ण स्थान है।

3.5 उपन्यास में चित्रित नारी समस्याएँ :

सृष्टि योजना में नारी का स्थान पुरूष की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण है इसी कारण यह वह जगत की पूज्यनीय है पुरूष प्रधान समाज में नारी सुरक्षा नहीं पा रही है पुरूष का सच्चाप्रेम उसे नहीं मिला है पुरूषों की उद्धृत काम वासना का शिकार होकर नारी पतितावस्था को पहुँच रही है परिस्थितियों के बहाव में नारी अनेक पुरूषों के संपर्क में आ रही है और वह अपने सतीत्व की रक्षा नहीं कर पा रही है।

नारी के आत्मसमर्पण का अनूचित लाभ उठाकर पुरूष उसे धोखा दे रहा है पुरूष के द्वारा अनेक स्थानों में छली गयी नारियों का चित्रण इक्कीसवीं सदी के उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में किया है।

3.5.1 दहेज की समस्या :

भारतीय समाज में बेटी के जन्म लेते ही माँ बाप चिंताग्रस्त हो जाते हैं क्योंकि विवाह के समय वर पक्ष को गरीब माँ बाप दहेज देने में असमर्थ होते

है दहेज प्रथा भारतीय जीवन का वह अभिशाप है जो मध्यवर्गीय परिवार की सारी सुख शांति समाप्त करती है।

दहेज न दे सकने की विवषता अनमेल विवाहों का सूत्रपात करती है और फिर त्रासदी की एक लंबी परंपरा आरंभ हो जाती है मैत्रेयी पुष्पा ने अपने उपन्यास में दहेज प्रथा का संकेत मात्र दिया है।

दहेज न दे सकने की असमर्थता के कारण कई समस्याएँ खड़ी हो जाती है जैसे उपर कस्तुरी कुंडल बसे उपन्यास में कस्तुरी की विधवा माँ तथा भाई गरीबी के कारण दहेज देने में असमर्थ थे, इसलिए कस्तुरी को 800/– रूपये में हीरामन नाम के नाकारा अशाय व्यक्ति के हाथों बेच दिया गया। ससुराल में कस्तुरी की कीमत रूपये 800/– में खरीदी हुई चीज से ज्यादा कुछ नहीं रही मुँह दिखाई की रस्म कस्तुरी को पसंद नहीं है इसलिए वह अपने चेहरे की नुमाइश करने को तैयार नहीं थी मुँह दिखाई करने वाली औरतों में से एक बुढ़ी ने सुना दिया ''ओ आठ सौ की घोड़ी तु मुँह नहीं दिखाती तेरी यह मजाल हम तो सोच रहे थे नई छोरी की तरह शरमा रही है पर तू तो जोर आजमा रही है तेरे भईया ने खनखनाते चाँदी के कलदार वसूले है मुफ्त में नहीं आई सो नखरे पसार रही है वधु मूल्य देकर बहु के रूप में ससूराल वालों को एक खरीदी हुई दासी मिल जाती है जिसके लिए उसे सदा ताने ही सुनने पड़ते है।

लड़कियों का ब्याह के नाम पर वस्तु जैसा क्रय–विक्रय करने का घटिया काम किया जाता है स्वयं लेखिका को भी इस समस्या से जूझना पड़ा। माँ के आदर्श सिद्धांतों तथा विवाह में दहेज न देने की माँ की जिद के कारण मैत्रेयी अपने पसंद के लड़कें के साथ विवाह नहीं कर पाई अडू के नगलावाले पाठकजी का इंजीनियर लड़का मैत्रेयी को जीवन साथी के रूप में बहुत पसंद था, परन्तु माँ दहेज के बदले खेती का हक पाठक जी को नहीं दे सकती थी, क्योंकि जीवन निर्वाह का एकमात्र साधन खेती थी।

दहेज के कारण नारियों का वैवाहिक जीवन दुःखों के घोर अंधियारों से घिर जाता है हमारे यहाँ विवाह अभिभावकों द्वारा तय किये जाते है तथा उसे कभी न टूटने वाला धार्मिक संस्कार माना जाता है। अभिभावकों द्वारा आयोजित विवाह में किसी समय कुछ वैवाहिक रीतियाँ भी प्रचलित थी और उनका दुष्परिणाम भी प्रायः नारियों को ही भुगतना पड़ता था। नारी कितनी भी पढ़ लिख ले परन्तु विवाह का निर्णय खुद नहीं ले पाती आज एक शिक्षित नारी भला क्या नहीं कर सकती परन्तु वास्तव में ऐसा कोई भी नहीं सोचता।[32]

3.5.2 वर्ग–संघर्ष की समस्या :

प्राचीन काल से उच्च वर्ग के भूमिधरों सांमतों और पूज्यपतियों ने निम्न वर्ग के लोगों पर अत्याचार और अन्याय किये है। निम्न वर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाली छोटी जातियाँ सदा से ही उच्च वर्ग द्वारा शोषित एवं पददलित होती रही है।

gauravsharma

भारतीय समाज में प्रचलित जात पात की अनिष्ट प्रथा को रोकने के लिए गांधी जी, फूले, अम्बेडकर आदि समाज सुधारकों ने प्रयत्न किये आजादी मिलने पर सरकार ने जात पात के खिलाफ कानून बनाये और उसे मिटाने की कोशिश की है। इतना कुछ करने पर भी ग्रामों में ऊँची जाति के लोग निम्न जाति के लोगों को अछूत और हीन समझते है उनके स्पर्श को भी अपवित्र माना जाता है।

कस्तुरी कुण्डली बसै उपन्यास में लेखिका ने इस समस्या का यथार्थ वर्णन किया है उपन्यास का पात्र एदल्ला चमार जाति का होने के कारण उच्च वर्ग उस पर भयंकर अत्याचार करते है एदल्ला को प्यास लगने पर पानी पीने के लिए मना करते है एकदम लाल होने तक उसका कान उमेंढ़ना, सिर में धूल डालना, जोरो से बाल खींचना आदि अनेक जुल्म उस पर करते

[32] कस्तूरी कुण्डल – मैत्रेयी पुष्पा पृ. सं. 17

है सारे बच्चें एदल्ला के उपर अपने अपने बस्ते लाद देते है, बोझ से एदल्ला की गर्दन लचकने लगी वह ज्यादा बोझ होने के कारण चल नहीं पाया तो एक बच्चे ने फराश की संटी तोडी और एदल्ला की टांगो में मारने लगा तो एदल्ला लड़खड़ाकर गिर पड़ा सारे बस्ते बिखर गये बस्तों में से रोटियाँ और पराठों की पोटलियाँ गिर गई सारा खाना फैल गया एदल्ला के घुटने फुट गए पर वह बिखरे खाने को बटोरने दोड़ पड़ा रोटियों की धूल झाड़ने लगा तभी धनश्याम जाट के लड़कें ने उसकी कमर में लात मारी और कहा, साले बैठ, यह क्या किया पराठे रोटी हम उठा लेते हमारा खाना हूजर धरम बिगाड़ दिया जब हम सारे दिन भूखे रहेगे।

निर्दोष के साथ मारपीट गाली गलौच करके अंगोछ से ही उसके हाथ पॉव बांधकर उसे खेत में लूढका दिया इस अनमानुष सजा को देखकर दिल करूणा से भर उठता है गाँव में जाति को अत्यंत महत्व दिया जाता है। ऊँच नीच श्रेष्ठ कनिष्ठ के स्तर पर भेदभाव किया जाता है। छूआ–छुत को उच्च वर्ग अपने जीवन में बहुत महत्वपूर्ण मानता है।

कस्तुरी ने अपनी बेटी मैत्रेयी के विवाह के समय गाँव की सटिका के हाथों बर्तन मंजवा लिए तो गाँव की नारियाँ तुफान खड़ा कर दिया क्योंकि ब्राह्मण सटिकन से श्रेष्ठ जाती है प्राचीनकाल में भारतीय समाज में नारी को सम्मानीय स्थान प्राप्त था कालान्तर में नारी को अनेक सामाजिक अवरोधों की श्रृंखला में जकड़ कर उसके स्वतंत्र अस्तित्व को समाप्त कर दिया प्रेमचंद ने दहेज प्रथा अनमेल विवाह, बाल विवाह अंतर्जातिय आदि नारी समस्याओं को उठाया है इसके अतिरिक्त कई और समस्याओं को उठाया है अनेक समस्याओं को उन्होंने अपने साहित्य में स्थान दिया तथा इनके समाधान के प्रयास भी किये है वे समाज में नारी को पुरूष के समान अधिकार प्रदान करने के पक्षघर है उनका मानना है कि जब जीवन रूपी गाड़ी के दोनों पहिये बराबर होंगे तभी संतुलित रूप से विकास के पथ पर अग्रसर हो सकती है।

अनेक समाज सुधारकों ने नारी की दयनीय स्थिति को सुधारने का प्रयास किया मुंशी प्रेमचंद ने अपने कथा साहित्य में नारी विषयक समस्याओं को उठाया और यथा सम्भव उनके निराकरण की सार्थक पहल का प्रयास किया समाज व्यवस्था का संतुलन व संगठन दोनों के पारस्परिक व्यवहार पर निर्भर करता है।

नारी और पुरूष का पारस्परिक सहयोग समाज को प्रगति एवं उन्नति की दिशा में अग्रसर करता है। नैतिकता एवं आदर्श के नाम पर समय समय पर भारतीय नारी पर जो अनुज्ञाएँ आरोपित की गयी समय बीतने पर वे उसके लिए सामाजिक अवरोध की बेडियाँ बन गयी इस श्रृंखलाओं में जकड़ी हुई नारी का कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं रहा प्रेमचंद के साहित्य में नारी जीवन की समस्याओं को देखा गया था।

3.5.3 वैवाहिक जीवन की समस्याएँ :

नारी और पुरूष का पारस्परिक सहयोग और साहयर्थ वैवाहिक जीवन का मूलाधार है विवाह एक प्रकार से नारी और पुरूष दोनों के ही आत्म विकास का साधन है लेकिन प्रेमचंद जी के युग में विवाह का वास्तविक अर्थ भुला दिया गया था।

3.5.4 बाल विवाह की समस्या :

बाल विवाह की आज की प्रसन्नता आगे चलकर किस प्रकार दारूण दुखः में परिणत हो जाती है, इसका कारूणिक चित्रण प्रेमचंद जी ने नैराश्य लीला तथा सुभागी कहानी में किया है प्रेमचंद जी के कथा साहित्य में बाल विवाह के अधिक उदाहरण उपलब्ध नहीं होते, परन्तु फिर भी उन्होंने अपनी कहानी में समस्या का चित्र प्रस्तुत किया और वहीं इसकी ज्वलन्ता के लिए पर्याप्त है।

लड़की का छोटी उम्र में विवाह न करना और यदि इस प्रकार की त्रुटी हो गयी हो तो विधवा होने पर पुनर्विवाह के द्वारा उसमें संशोधन करना ही समस्या का हल है।

प्रेमचंद जी ने नारी की वैवाहिक समस्याओं का विशद विवेचन करते हुए यह स्पष्ट कर दिया है कि इन समस्याओं का मूल तत्कालिन दूषित समाज व्यवस्था में विद्यमान है, और विवाह का वास्तविक उद्देश्य भुलाया जा चुका है प्रेमचंद जी ने बाल विवाह के दुष्परिणाम में कन्याओं के माता–पिता को तो दुःखी दिखाया ही है साथ ही बाल विधवाओं के प्रति लोगों के अनुसार दृष्टिकोण को भी व्यक्त किया है लोगों के छोटे दृष्टिकोण के कारण ऐसी बाल–विधवाओं को आदेश दिया जाता है।

" बेटी संसार में रहकर तो संसार की करनी हो पड़ेगी" लेखक माता–पिता की आश्रम त्रुटियों और समाज के लोगों के साहनुभूति पूर्व व्यवहार से दुःखी बाल विधवा में यही आत्मरक्षा के भाव भरना चाहते है क्योंकि हमारा समाज इतना अनुदार है कि इस शक्ति के अभाव में ऐसी विधवाओं का समाज में रहना भी कठिन कर देगा "बिना माँझी के नाँव पार लगाना कठिन है" लेखक बाल–विधवाओं के पुनर्विवाह की ओर संकेत करते है।

3.5.5 अनमेल विवाह की समस्याः

प्रेमचन्द वृद्ध–विवाह के कुपरिणामों को भी प्रकाश में लाये है उन्होंने स्पष्ट किया है कि प्रौढ़ व्यक्ति से विवाह होने पर दाम्पत्य जीवन में अंसतोष की भावना जन्म लेती है लेकिन वृद्ध विवाह का परिणाम और भयंकर होता है।[33]

वृद्ध विवाह प्रायः युवती को समय से पहले ही विधवा बना देता है। नारी जीवन अनेक सामाजिक कुप्रथाओं की श्रृंखला से जकड़ा हुआ है।

[33] प्रेमचंद साहित्य में डॉ. रातपूरी आत्माराम एण्ड संस

अधिकतर दहेज की कुप्रथा के कारण ही अनमेल विवाह होते है प्रेमचंद जी ने अपने सेवासदन और निर्मला उपन्यासों में लिखा है कि किस प्रकार दहेज के अभाव में नारी कृपात्र के गले मढ़ दी जाती है।

निर्मला का विवाह पर्याप्त दहेज के अभाव में मुंशी तोताराम से हुआ जो कि चालीस वर्ष के है निर्मला को तो राम से बोलने में संकोच लगता था प्रेमचंद जी लिखते है अब–तक ऐसा ही आदमी उसका पिता था जिसके सामने वह सिर झुकाकर निकलती थी अब उसकी अवस्था का एक आदमी उसका पति था जिसे वह प्रेम की वस्तु नहीं सम्मान की वस्तु समझती थी प्रेमचंद जी ने तत्कालीन वैवाहिक प्रथा और उसके दोषो पर सूक्ष्म दृष्टि डाली थी उन्होंने सुखदा, सुमन और सुमित्रा के संदर्भ में यह स्पष्ट किया है कि माता–पिता विवाह के संबंध में अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह नहीं करते, इसलिए पति–पत्नी के विचारों और जीवन मूल्यों में बड़ा अन्तर रहता है।

सुमित्रा के माता–पिता ने लाल बद्रीप्रसाद की सम्पन्नता एवं धन का वैभव देखकर सुमित्रा का विवाह किया है कमला प्रसाद के विचारों ओर स्वभाव को उन्होंने जानने की आवश्यकता नहीं समझी इसी प्रकार कर्म–भूमि के अमर और सुखदा का विवाह भी दोनों परिवारों की सम्पत्ति और धन–वैभव को ही दृष्टि में रखकर हुआ है। दाम्पत्य जीवन नरक बन जाता है। सेवासदन और निर्मला उपन्यास में प्रेमचन्द जी ने अनमेल विवाह और उसके कुपरिणामों का चित्रण करते हुए उसके कारणों पर भी प्रकाश डाला है इन उपन्यासों में दिखलाया है कि युवती नारी का विवाह जहाँ प्रौढ़ के लिए दहेज प्रथा उत्तरदायी होता है।

आर्थिक स्थिति अच्छी न होने पर लड़की के माता–पिता पर्याप्त दहेज नहीं दे पाते। सेवासदन और निर्मला में प्रेमचंद ने अनमेल विवाह के कुपरिणामों को भी पूर्वतया उभार दिया है प्रेमचंद जी पति–पत्नी के स्वभाव वैषम्य की अपेक्षा आयु के अन्तर को अधिक भंयकंर मानते है।

स्वभाव में वैषम्य होने पर पति–पत्नी थोड़ी सी उदारता और सहिष्णुता अपनाकर एक दूसरे के अनूकूल बना सकते हैं। वृद्ध से विवाहित युवती की प्रेमाकांक्षा अतृप्त रह जाती है इस कहानी की युवती पति की मृत्यु के बाद प्रेम पाने के लिए तड़पती रहती है प्रेमचंद जी की कहानियों में वृद्ध विवाह का अपेक्षाकृत भयंकर परिणाम उभर कर सामने आया है साथ ही कहानीकार ने नारी मनोभावों का उद्‌घाटन किया है जिसके कारण वृद्ध से विवाहित युवती कुमार्ग पर चलने लगती है।

3.5.6 दहेज प्रथा की समस्याः

हिन्दु विवाह की विभिन्न समस्याओं में दहेज प्रथा प्रेमचंद युगीन समाज की सबसे गम्भीर समस्या थी यह सच है कि हिन्दु समाज में बाल–विवाह अनमेल विवाह आदि बहुत सी रूढ़ियाँ उत्पन्न हो गई थी लेकिन दहेज प्रथा ने व्यक्ति एवं सम्पूर्ण समाज के सामने जितनी गम्भीर सामाजिक और आर्थिक समस्याएँ उत्पन्न की है। कन्या के विवाह के लिये माता–पिता की यह चिन्ता समाज में प्रचलित दहेज प्रथा के कारण है अपने कथा साहित्य में प्रेमचंद जी ने दिखलाया है कि दहेज प्रथा के कुपरिणाम सर्वाधिक धनहीन नारियाँ झेलती है।

दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के बाद धनहीन वर्ग पुत्री के विवाह के लिए अलग से धन बचाकर नहीं रख पाता इसलिये पुत्री का विवाह इस वर्ग के सामने आर्थिक समस्या बनकर आता है। दहेज की मांग दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है गरीब परिवार के लिए कन्या के विवाह की चिन्ता और भी जटिल समस्या बन जाती है।

ऋण लेकर अपने खेतों का लगान चुकाता है लेकिन पुत्री के विवाह कि चिन्ता को प्रेमचंद जी ने इन शब्दों में व्यक्त किया है–वैवाहिक जीवन की कुप्रथाओं के कारण कन्या का विवाह माता–पिता के लिए जटिल समस्या बन

जाता है इसीलिए कन्या के विवाह को लेकर पारिवारिक चिन्ताओं का सूत्रपात होता है।

3.5.7 नारी द्वारा नारी का शोषणः

सामान्यतः देखा जाता है कि जब युवती दुल्हन के रूप में घर जाती है तो वहाँ का वातावरण एक विशेष प्रकार का होता है। और उसे वहाँ के अनुसार स्वयं को ढालना होता है। प्रेमचंद ने नव वधू की समस्याओं का चित्रण वहाँ पर किया है जहॉ शासन–प्रिय सास अपने कुचकों से उसे तंग करना आरम्भ कर देती है।

ननद तो अपनी माँ का पक्ष लेती है फिर ऐसी नारी के दुख की कथा का अंत कहाँ प्रेमचंद ने सास–बहु के पचड़ो को स्वंय अपने ही घर में देखा था चाची मेरी पत्नी पर शासन करती थी उसकी शिकायत मुझसे एकान्त में किया करती थी वह भी अपनी किस्मत को रोती थी।

निर्मला उपन्यास में तोताराम की बहन रूक्मणी ने आरम्भ में तो निर्मला का जीना हराम कर दिया था प्रतिज्ञा उपन्यास में सुमित्रा की सास देवकी का व्यवहार भी कुछ ऐसा ही है नारी द्वारा नारी का शोषण कोई नई बात नहीं है। अपितु यह तो सदियों से चली आ रही परम्परा है प्रेमचंद के युग में भी यह समस्या विद्यमान थी।

3.5.8 अन्तर्जातीय विवाहः

अन्तर्जातीय विवाह को जो लोग एक समस्या मानते है। उनकी इस समस्या के निराकरण के लिए प्रेमचन्द जी ने गोदान उपन्यास में एक बात सुझायी हो यदि समाज इस संदर्भ में असमर्थ है तो ऐसी विपरीत परिस्थियों में यमारिन सिलसिला और मातादीन की भाँति इस समाज को साहस के साथ डटकर सामना करना चाहिए इसके अतिरिक्त इस समस्या को कोई दूसरा

हल नजर नहीं आता, क्योंकि भारतीय समाज इतनी उदारता नहीं रखता कि वह सीधे सरल व्यक्ति को रूढ़िग्रस्त विचारों के विरूद्ध सहयोग दे सके।

प्रेमचंद यद्यपि जाति–पाँति, छूआ–छुत और ऊँच–नीच के पक्षपर नहीं है, उनकी विशालता इस प्रकार के निम्न कोटि के विचारों से ऊपर उठकर है लेकिन अब जब भी उन्होनें विवाह के अन्तर्जातीय प्रश्न को खड़ा किया वहीं पर उनकी लेखनी रूक गयी।

3.5.9 वैवाहिक जीवन की समस्याएँः

नारी की वैवाहिक समस्याओं का कितना विशाल चित्रण प्रेमचंद जी के कथा साहित्य में हुआ है उतना कदाचित हिन्दी का कोई कथाकार नहीं पाया। इनकी नारी के वैवाहिक समस्याओं की एक श्रृंखला सी विद्यमान थी

प्रेमचंद जी का इस दृष्टि से विशेष महत्व है कि इस श्रृंखला की समस्त कड़ियों को क्रमशः खेलते चले गये और इस प्रकार इस समस्याँ के मूल तक अपने पाठकों को ले गये स्त्री और पुरूष का पारस्परिक सहयोग ओर सहयार्थ वैवाहिक जीवन का मूलाधार है विवाह एक प्रकार से नारी जीवन की समस्याओं के संबंध में कथाकार की गहन अर्न्तदृष्टि को रखता है ओर दोनों के लिए आत्म विकास का साधन है

3.5.10 वैवाहिक जीवन में नारी के चरित्र पर सन्देह की समस्याः

वैवाहिक जीवन में नारी के चरित्र पर संदेह करना उसे जिंदा ही निगल जाने के समान है प्रेमचंद ने अपने कथा साहित्य में बड़ा ही मार्मिक चित्रण किया है किसी तरह पुरूष का शंकालु ह्रदय नारी के जीवन लीला अव्यवस्थित करके रख देता है। सेवा सदत् उपन्यास की नायिका सुमन की जिन्दगी तो पहले से नारकीय यातनाओं से भरी थी।

निर्मला उपन्यास में तोताराम अपने ही पुत्र मंसाराम को लेकर अपनी पत्नी निर्मला पर शक करता है और मंसाराम को बोर्डिंग भेज देता है। जहॉ

उसको टी.बी.हो जाती है किन्तु फिर भी अपने मरते हुए बेटे से भी पत्नी के अस्तित्व नष्ट हो जाने का भय है और वह उसे घर न लाकर अस्पताल ले जाता है। अस्पताल में निर्मला उसे देखने जाती है तब तोताराम कहता है कि यहाँ क्या करने आयी हो इन शब्दों में तोताराम की संदेहवादी दृष्टि सामने आ जाती है।

3.5.11 नारियों में पर्दा समस्या

प्रेमचंद नारियों के पूर्ण विकास के लिए पर्दा प्रथा के घोर विरोधी रहे दोनों प्रकार की दुर्गति में बहुत बड़ा हाथ रखती है उन्होंने अन्य समस्याओं की भाँति पर्दे की समस्या को भी उजागर किया है अपनी कहानी कानून कुमार में जहाँ उन्होंने तम्बाकु बहिष्कार, बिल होटल प्रचार बिल आदि को असेम्बली में प्रस्तुत कराने की योजना कुमार द्वारा बनायी है वहाँ उपर्युक्त बिलों में पर्दा हटाव बिल भी सम्मिलित किया गया है वे चाहते है कि एक ऐसा कानून बनाया चाहिए जिसमें कोई नारी पर्दे में न रह सके।

प्रेमचंद पर्दा प्रथा के खिलाफ हो गए थे उन्होंने नारियों के लिए पर्दा को हटाने के लिए प्रयास किया था उनका कहना था सम्मान पर्दा में रहकर नहीं होता पर्दा से बाहर निकल कर भी सम्मान किया जा सकता है।

3.5.12 विवाह विच्छेद की समस्या :

प्रेमचंद जी ने अपने कथा साहित्य में विवाह विच्छेद की समस्या का चित्रण किया है प्रेमचंद जी ने नारी में बदले जीवन मूल्य और उनमें आई चेतना का सशक्त उदाहरण गोदान उपन्यास में रामसहाब की बेटी मीनाक्षी के माध्यम से दर्शाया है गुजारे की मनाश्री को जरूरत न थी मेके में वह बड़े आराम से रह सकती थी मगर वह दिग्विजय सिंह के मुख में कालिख लगाकर वहाँ से जाना चाहती थी।

प्रेमचंद जी विवाह को एक जाना चाहती थी प्रेमचंद जी विवाह को एक सामाजिक समझौते मानते है उसे तोड़ने का अधिकार न नारी को है, औरत व पुरूष को है समझौते से पहले मनुष्य स्वतंत्र है और समझौता हो जाने के बाद दोनों को ही सुझ बुझ से काम लेना पड़ता है। आधुनिक वैयक्तिक जीवन मूल्यों ने हमें आत्मकेंद्रित बनाकर संबंधों के प्रति बेईमान बना दिया है पति पत्नी के कभी न टूटने वाले बंधन को क्षणिक बनाकर परिवारिक व्यवस्था को छिन्न–भिन्न करके विवाह विच्छेद को श्रय दिया जाने लगा है।

गाँवों में नारियों पर तरह तरह के आरोप लगाकर उन्हें छोड़ दिया जाता था किन्तु शिक्षा के बदलाव से शिक्षित समाज में नारी ने पुरूष से मुक्त होने के लिए और पुरूष ने नारी से मुक्त होने के लिए विवाह विच्छेद का माध्यम तलाक को अपनाया घुटन भरे वातावरण में जीने से विवाह विच्छेद को सुविधा जनक माना है कारण यह है कि कोई नारी–पुरूष के अत्याचार सहते, तलवे चाटने खुद को मिटा न ले।

3.5.13 नारी कुरूपता की समस्या :

नारी जीवन की विविध समस्याओं में कुरूपता भी एक समस्या है आभूषण कहानी में इसी तथ्य को स्पष्ट किया गया है। आभूषण कहानी के सुरेश सिंह सौन्दर्य न होने के कारण अपनी पत्नी शीलता को संघर्ष त्याग देते है अनेक कटू वाक्य सुनाते है पत्नी की हर बात को आलोचना की दृष्टि से देखते है एवं उसका तिरस्कार करते है तभी तो पत्नी ग्रह त्यागकर ईश्वर को ललकारती हुई वह कहती है।

ईश्वर के दरबार में पूंछती कि तुमने मुझे सुन्दर क्यों नहीं बनाया सुन्दरता क्यों नहीं दी बदसूरत क्यों बनाया, बहन स्त्री के लिए इससे दुःख की बात क्या होगी कि वह रूपहीन है रूप से प्रेम मिलता है और प्रेम से दुर्लभ और कोई वस्तु नहीं इस प्रकार सुन्दरता नारी जीवन को समुचित

विकास हेतु आवश्यक प्रतीत होती है। कुछ नारी का जीवन समस्यापूर्ण होता है। जो नारी सुन्दर नहीं दिखती उसको कोई सम्मानपूर्वक दृष्टि से नहीं देखता है उसको उसके घर में ही प्रेम व सम्मान नहीं मिलता है वह इस कारण बहुत दुखी रहती है नारी का जीवन दुखमय बन जाता है वह अपने आप में दूसरों से अलग समझने लगती है।

3.6 उपन्यास में नारी वादी दृष्टिकोण

नारीवादी साहित्य अन्याय और बदलाव के लिए एक ही जरूरत व्यक्त करने के लिए जरूरत का जन्म हुआ था निंबंध लेख, किताबे और पत्रिकाओं का एक दिल से बोझ उठाना सार्वजनिक आँख पकड़ा और उन्नीसवीं सदीं में महिलाओं के लिए सुधार की लपटों को हवा दे दी है इतना ही नहीं इस तरह के लेखन एक परिवर्तन एजेंट के रूप में एक बहुत बड़ा प्रभाव पड़ता है लेकिन यह भी महिलाओं के लिए एक स्थायी विरासत और साहित्यिक इतिहास का खजाना छोड़ दिया है।

gaurav shree

नारीवादी साहित्य उपन्यास या गैर कल्पना जो परिभाषित करने की स्थापना और महिलाओं के लिए समान नागरिक राजनीतिक आर्थिक और सामाजिक अधिकारों की रक्षा के नारीवादी लक्ष्यों का समर्थन करता है यह अवसर पुरूषों के उन लोगों के लिए असमान रूप में महिलाओं की भूमिका को दिखाता है स्थिति विशेषाधिकार और शक्ति के संदर्भ में आम तौर पर महिलाओं, पुरूषों, परिवारों, समुदायों और अंवाछनीय के रूप में समाज के लिए परिणामों का चित्रण है नारीवादी साहित्य समाज में प्रांसगिक राजनीतिक मुद्दों, महिलाओं के प्रति नजरिए वर्तमान पतें या लिंग विशेष गलतफेमी को तोड़ने के लिए प्रयास करता है। यह संस्कृति या धर्म भर में ही समिति नहीं है इसलिए विषयों एक व्यापक रेंज अवधि छोड़ के लिए राजनीति धर्म और विवाह की संस्था है दूसरों के बीच में से इन विषयों में साहित्यिक कृतियों में से एक अमीर चिथडे रजाई की हमारी विरासत और इतिहास का हिस्सा है।

नारीवादी साहित्य नारीवादी आंदोलन की विशेषताओं से पहचाना जाता है। नारीवादी साहित्य के लेखकों को समझते है और सेक्सन् और लिंग के बीच अंतर की व्याख्या करने के लिए जाना जाता है उनका मानना है कि हालांकि एक व्यक्ति की सेक्स पूर्व निर्धारित और प्राकृतिक है यह लिंग है, कि समाज द्वारा बनाया गया है। लिंग भूमिकाओं के बारे में एक विशेष धारणा के साथ–साथ है।

लिंग भूमिकाओं उनका मानना है कि समय के साथ बदला जा सकता है। एक दूसरे के उपर लिंग की प्रबलता लगभग सभी समाजों के पार एक आम अवधारणा है, और तथ्य यह है कि यह महिलाओं के पक्ष में नहीं है। एक अंतनिर्हित नारीवादी या महिलाओं के साहित्य का अभी तक स्पष्ट विशेषता है। इधर यह तर्क दिया जाता है कि किसी भी समाज की दोनों लिंग के लिए शिक्षा और ज्ञान के चैनल को प्रदान नहीं करता है।

नारीवादी साहित्य अक्षर या विचार है कि लिंग के मापदंडों को बदलने का प्रयास का चित्रण है यह जाँच का सवाल है और लिखित शब्द के माध्यम से स्थापित किया है और प्राचीन लिंग भूमिकाओं के खिलाफ परिवर्तन के लिए बहाने करने के लिए जाता है। नारीवादी साहित्य सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्रों में कार्यरत हर लिंग के बीच असमानताओं को बदलने के लिए प्रयास करता है। अंत में यह जोड़ने के लिए एक अद्वितीय और अवसर नारी विशिष्ट आँवाज और लिंग के स्वर सामाजिक मुददों के साथ–साथ सामाजिक असमानताओं जहाँ एक नारी आँवाज एक प्रभाव बनाने की जरूरत है।

पुरूष और महिला लेखकों के बीच ज्यादा अंतर नहीं था और साहित्य का एक अलग वर्ग के रूप में निशान देखने के लिए कोई जरूरत नहीं थी हालांकि अगर आप ऐसे किसी भी काम को लेखकों समाज की पुरूष के हित दृष्टिकोण की और विपरीत लिंग की जरूरतों को समझने की नारीवादी प्रकृति के साहित्य में महिलाओं को हमेशा नायक जो अधिक बार नहीं आसानी से

महिलाओं की पारंपरिक भूमिका को स्वीकार नहीं करने के रूप में समाज द्वारा निर्णय लिया के रूप में चित्रित कर रहे है वे व्यक्तिगत निर्णय लेने के इस चुनाव को व्यक्त करने के लिए अपने स्वयं के निर्णय करने के लिए तैयार है और इन विकल्पों कार्यों और निर्णयों के परिणाम के साथ सौदा करने के लिए तैयार कर रहे हैं।

एक बेटी एक माँ, एक बहन या पत्नी हालांकि नारीवादी साहित्य का कोई टुकड़ा पहले एक औरत के रूप में एक महिला के साथ संबंधित है यह इन रिश्तों की भूमिका या छवि है कि साहित्य में इन महिला पात्रों उनकी पहचान देना नहीं है उनकी पहचान उनके विकल्प और उनके विश्वासों तब इन भूमिकाओं के साथ जुड़े रहे है यह ध्यान रखे कि नहीं नारीवादी साहित्य का काम करता है। सब खुश अंत है, दोनों किरदार के लिए और काम के लेखक के लिए महत्वपूर्ण है।

महिलाओं को खुले तौर पर समानता की मांग के लिए समाज से बहिष्कार कर दिया गया है और लहरों के खिलाफ जाने के लिए अपने निर्णय के कई नकारात्मक परिणामों का सामना करना पड़ा है। ।

लेकिन नारीवादी साहित्य के कुछ प्रदर्शन और महिलाओं के मताधिकार पर तनाव और समाज में समानता के लिए एक मांग राजनीतिक सामाजिक और आर्थिक अधिकारों के लिए आधुनिक नारीवादी साहित्य में एक पुरूष प्रधान समाज पर हमले अधिक स्पष्टवादी और सीधा है जहाँ महिलाओं को नारीवाद की और पितृसत्तात्मक और पूंजीवादी दृष्टिकोण में कई देशों की मांग बन गया है।

नारी के आत्म बोध आत्मनिर्भरता एवं आत्मविश्वास के परिप्रेक्ष्य में आधुनिक उपन्यासों में जो नारी चरित्र उभरकर आया है नारी किसी भी वर्ग चरित्र में हो वह अपनी पहचान बनाती है पहले वर्ग में यदि वह डॉक्टर,

प्राध्यापक, अधिकारी नेता है तो वह विद्रोह और रूढ़ियों को चुनौती देती हुई महात्वाकांक्षिणी के रूप में चित्रित है।

मध्यवर्गीय चरित्र के रूप में नारी दोहरे मापदंडों से जूझते हुए झुठी इज्जत के कारण अनेक कष्ट भोगने के लिए बाध्य है यद्यपि वह शिक्षित है परन्तु समाज की झुठी रूढ़ियों में फंसकर अपनी बौद्धिकता से दूर रहकर समाज के अनुरूप रूप को ढालने के लिए विवश है लेकिन तीसरे वर्ग का नारी चरित्र आज सर्वाधिक सशक्त है वह विद्रोह और रूढ़ियों को खुलकर चुनौती दे रहा है तथा समाज के बंधनों और पर्दाप्रथा परम्पराओं की परवाह न करके अपनी आत्म और स्वाभिमान की रक्षा करता है।

उपन्यासों में कुछ चरित्र घरेलू कामकाजी अंतर्मुखी और वस्तुगत है नारी चरित्र के रूप में उन्हें देखा जा सकता है। ये नारी चरित्र शिक्षित योग्य एवं विकास की संभावनाएँ लिए है तथा घर और बाहर दोनों को संभाल रखे है पद पाकर भी अपने परिवार के प्रति उनमें सजगता है तो अपने कैरियर के प्रति भी और कर्तव्य के प्रति भी तीसरी सत्ता की लेडी डॉक्टर कामकाजी होकर भी घरेलू है और अंतर्मुखी है।

नारी सम्मान और पारस्परिक संबंधों के जटिल अंतर्विरोध प्रेम के अंतरंग स्वरूप तथा नारी महत्वाकांक्षाओं ने नारी चरित्र में दोहरे व्यक्तित्व का निरूपण करने के लिए उपन्यासकार को बाह्य किया है अतिशिक्षित एवं बौद्धिक होती नारी अपने सम्मान के प्रति अधिक सजग हो उठी है परिणामता समाज में पारस्परिक संबंधों में अंतिर्विरोध की स्थितियाँ बढ़ गई है।

समाज एवं सामाजिकता को गौर करते हुए व्यक्ति को अधिक प्रतिष्ठा चित्रित की गई है नारी के प्रति पुरूष के भाव बदल गए है और नारी ने भी अपने स्वांतय की घोषणा करते हुए समाज से दया नहीं अपने अधिकारों की मांग की। वास्तव में आज नारी बढ़ते अजनबी विवाह संबंधों में शिथिलता और

परिवार एवं समाज में नारी की स्थिति एवं चेतना का किंचित विकास दिखाई देता है। नारी के पास ना तो अपना व्यक्तित्व है और न उसे आगे बढ़ाने वाला समाज ही फिर आर्थिक विषमताएँ नारी में क्रोध खीज निराशा उत्पन्न करती है।

उपन्यासों में चित्रित नारी चरित्रों में वैयक्तिक रूचि, महत्वाकांक्षा स्वतंत्र चेतना, अस्तित्व और अस्मिता की पहचान से कहीं अधिक जीवन एवं संघर्षों से परिपूर्ण है और उसके समानांतर पीढ़ियों का मोहभंग टूटना विघटन वर्ग संघर्ष की समानांतरण चेतना एवं जीवन का अर्थ बोध उभारा गया है। यद्यपि यह कहा जा सकता है। नारियाँ पुरूषों की अपेक्षा अधिक विद्रोहिणी है।

समाज की नैतिक मान्यताओं रूढ़ियों एवं परंपराओं को तोड़ने में सजग एवं सक्रिय है नारीवाद के बारे में सभी ने सुना होगा इसके दर्शन और सिद्धांत के बारे में ज्यादातर लोगों को नहीं मालूम। इसे पूरी तरह जाने और समझे बिना नारीवाद पर कोई भी बहस या विमर्श बेईमानी है नव उदारवाद के बाद भारतीय समाज में महिलाओं के प्रति बदलाव के बाद इस सिद्धांतो को जानना अब और भी जरूरी हो गया है। समाज में महिलाओं की विशेष स्थिति के कारणों का पता लगाना और उनकी बेहतरी के लिए वैकल्पिक समाधान प्रस्तुत करना किस समाज में नारी सशक्तिकरण के लिए कौन–कौन सी रणनीति अपनाई जानी चाहिए।

महिलाएँ किसी भी मामले में पुरूषों से कम नहीं है इसके बावजूद उन्हें अवसरों से वंचित कर दिया जाता है। किसी भी विचारधारा के अपने कुछ सिद्धांत होते है जिनकी मदद से विचारधारा को अच्छी तरह समझ सकते है नारीवाद दृष्टिकोण को कई दृष्टिकोण से देखा गया है कई प्रकार से नारीवादी दृष्टिकोण को उभारा गया है।

3.6.1 नारीवादी – दृष्टिकोण से नारी अधिकार से होगा सुधार :

नारीवाद का इतिहास बेहद पुराना है यह नारी–पुरूष की समानता के सिद्धांत पर आधारित है अठारहवीं सदी की शुरूआत में उदारवादी नारीवादियों ने आजादी व समानता के जनतांत्रिक मूल्यों और औरतों की अधीनता के बीच के अंतराविरोध को रेखांकित किया उदारवाद की बुनियाद बने आजादी समानता और न्याय के विचार सत्ताहीन और चार दिवारी में बंद महिलाओं की जिंदगी के अनुभवों से बिलकुल विपरीत थे।

महिलाओं के बारे में व्याप्त ऐसी गलत धारणाओं को ठीक करने में शुरूआती उदारवादी नारिवादियों विशेषकर मेरी वोल्स्टोन क्राफ्ट ने जोरदार ढंग से हस्तक्षेप किया। साल 1792 में लंदन से पहली बार प्रकाशित अपने आलेख महिलाओं के अधिकारों का समर्थन में उन्होंने महिला अधिकारों की हिदायत की।

3.6.2 पूंजीवाद है महिला गुलामी की जड़ :

नारिवादियों ने न केवल महिलाओं की गुलामी के उदय के विश्लेषण को अपनाया बल्कि मार्क्सवादी धारणाओं को लागू कर महिलाओं के शोषण चक्र को भी समझने का प्रयास किया ये नारीवादी महिलाओं का महिमन्डन नहीं करते जिन पर विचारधारा का वर्चस्व होता है। और जो महत्वपूर्ण तरीके से रोजमर्रा के जीवन से प्रभावित होते है।

भारत में नारीवादियों ने घरों से काम करने वाली महिलाओं को एकजुट करने के प्रयास किए है महिला खेतिहर मजदूरों के लिए खासतौर से जमीन के स्वामित्व की मांगे उढाई है नारियों की समाज के बारे में सोच केवल अर्थव्यवस्था तक सीमित नहीं है इनका मानना है कि उत्पादन प्रक्रिया में प्रजनन कदम आता है।

लिंग के आधार पर विभाजित श्रम एक तरह से नारी पर थोपा जाता है। इसी प्रकार समाज में नारी के यौन संबंधी कार्य भी पुरूषों की मर्जी के अनुसार निर्धारित होते रहे है ये सारे मानते है किस प्रजनन व यौन कर्म के लिए शोषण को खत्म करना जरूरी है।

3.6.3 अक्षय प्ररेणा का स्त्रोत :

यदि भारत वर्ष की नारी अपने नारीधर्म का परित्याग कर देती तो आर्यवर्त कहलाने वाला हिन्दुस्तान अखिल विश्व की दृष्टि में कभी का गिर गया होता यदि देखा जाय तो हमारे देश की आन बान शान नारी समाज ने ही रखी है हमारे देश का इतिहास इस बात का गवा है कि युद्ध में जाने के पूर्व नारी अपने वीर पति और पुत्रों के माथे पर तिलक लगाकर युद्धस्थल को भेजती थी लेकिन वर्तमान में पाश्चात् शिक्षा के प्रचार–प्रसार के प्रभाव से भारत में नारी के अधिकार का आंदोलन चल पड़ा है। वस्तुत नारी का अधिकार मांगना और देने के पक्ष से बहुत उपर है उसे आधुनिक समाज में स्थान अवश्य मिला है लालसाओं की मोहाश्त प्रतिमूर्ति के रूप में युग परिवर्तन के साथ हमारे आचार विचार में और हमारे अभाव आवश्यकताओं में परिवर्तन होना अनिवार्य है परन्तु जीवन के मौलिक सिद्धांतो से समझौता कदापि ठीक नही।

सृष्टि की रचना में नारी और पुरूष दोनों का महत्व है वे एक दूसरे के पूरक है ओर इसी रूप में उनके जीवन की सार्थकता भी है यदि नारी अपने क्षेत्र को छोड़कर पुरूष के क्षेत्र में अधिकार मांगने जायेगी तो निश्चित ही वह नारी जीवन की सार्थकता को समाप्त कर देगी।

वर्तमान समय में भारतीय सरकार द्वारा महिलाओं के उत्थान के लिए अनेक कार्यक्रम एवं योजनाओं का संचालन किया जा रहा है लेकिन इन योजनाओं का क्रियान्वन निचले स्तर तक उचित ढंग से न पहुँच सकने के

कारण नारियों को उपेक्षित लाभ नहीं मिल पा रहा है यह सत्य है कि वर्तमान समय में नारियों की स्थिति में काफी बदलाव आए है लेकिन फिर भी वह अनेक स्थानों पर पुरूष प्रधान मानसिकता से पीड़ित हो रही है।

इस संदर्भ में युगनायक एवं राष्ट्रनिर्माता स्वामी विवेकानंद का यह कथन उल्लेखित है '' किसी भी राष्ट्र की प्रगति का सर्वोत्तम थर्मामीटर है, वहाँ की महिलाओं की स्थिति हमें नारियों को ऐसी स्थिति में पहुँचा देना चाहिए जहाँ वे अपनी समस्याओं को अपने ढंग से स्वयं सुलझा सके सामाजिकता के निर्वहन में नारी–पुरूष को समान रूप से सहभागी बनाना होगा और इसके लिए नारी–पुरूष को अपना प्रतिद्वंद्वी नहीं समझे और पुरूष भी नारी को एक देह नहीं नारी रूप में एक इंसान स्वीकार करे।

नारी की आजादी और खुले आकाश में उड़ान की शर्त उत्पादन में उसकी भूमिका हो नारी की असली आजादी तभी होगी जब उसके दिमाग की स्वीकार्यता हो न कि केवल उसकी देह की अन्ततः कहीं ऐसा न हो कि नारी स्वतंत्रता और स्वाधीनता का पर्व सशक्तिकरण की अवधारणा पर खड़ा होने के पूर्व ही नष्ट होने लगे और इक्कीसवीं सदी महिला सदी है।

वर्ष 2001 महिला सशक्तिकरण वर्ष के रूप में मनाया गया इसमें महिलाओं की श्रमताओं और कौशल का विकास करके उन्हें अधिक सशक्त बनाने तथा समग्र समाज को महिलाओं की स्थिति और भूमिका के संबंध में जागरूक बनाने के प्रयास किये गए है।

महिला सशक्तिकरण हेतु वर्ष 2001 में प्रथम बार देश में महिलाओं के लिये विभिन्न क्षेत्रों में उत्थान और समुचित विकास की आधारभूत विशेषताएँ निर्धारित किया जाना संभव हो सके इसमें आर्थिक सामाजिक सांस्कृति सभी श्रेत्रों में पुरूषों के साथ समान आधार पर महिलाओं द्वारा समस्त मानवाधिकारों तथा मौलिक स्वतंत्रताओं का सैद्धांतिक तथा वस्तुतः उपभोग पर तथा इस क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी व निर्णय स्तर पुरूष समान पर बल दिया

गया है। आज देखने में आया है कि महिलाओं ने स्वयं को अनुभव के आधार पर अपनी मेहनत और आत्मविश्वास के आधार पर अपने लिए नई मंजिले नये रास्तों का निर्माण किया है।[34]

महिला शिक्षा समाज का आधार है समाज द्वारा पुरूष को शिक्षित करने का लाभ केवल मात्र पुरूष को होता है। जब कि महिला शिक्षा का स्पष्ट लाभ परिवार समाज एवं सम्पूर्ण राष्ट्र को होता है। चूंकि महिला ही माता के शिक्षा एवं संस्कृति को सभी क्षेत्रों में पर्याप्त समर्थन मिला यद्यपि कुछ समय तक महिला शिक्षा के समर्थक कम किन्तु आज समय एवं परिस्थितियों ने महिला शिक्षा को अनिवार्य बना दिया है संयुक्त परिवार के विघटन होने से जैसे – जैसे एकांकी परिवार की संख्या बढ़ी इनमें न केवल महिलाओं को सम्मानित स्थान मिलने लगा बल्कि लड़कियों की शिक्षा को भी एक प्रमुख आवश्यकता के रूप में देखा जाने लगा वातावरण अधिक समताकारी होने से महिलाओं को अपने व्यक्तित्व का विकास करने के अवसर मिलने लगे।

नारी आज भी नदी के दो किनारे की तरह है जो कभी मिल नहीं पाती सही तौर पर देखा जाये तो लगता है कि भारत ही नहीं विश्व पहल पर अपनी पहचान बनाती हुई नारियों ने अपनी पुरानी मान्यताएँ बदली है आज की नारी का दृष्टिकोण बदलता जा रहा है अपने अस्तित्व को बचाये रखने के लिए संघर्ष करती हुई नारियों ने लम्बा रास्ता तय कर लिया है परन्तु आज भी एक बड़ा हिस्सा सदियों से सामाजिक अन्याय का शिकार है जब जब नारी अपनी उपस्थिति दर्ज कराना चाहती है तब तब जाने कितने रीति–रिवाजों परम्पराओं पौराणिक आख्यानों की दुहाई देकर उसे गुमनाम जीवन जिने पर विवश कर दिया जाता है।

महिलाओं को शिक्षा देने तथा सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के लिए जो सुधार आन्दोलन प्रारंभ हुआ है। शैक्षणिक गतिशीलता से पारिवारिक जीवन में परिवर्तन हुआ है एक लड़की की शिक्षा एक लड़कें की शिक्षा की

[34] कमलेश गुप्ता – महिला सशक्तिकरण बुक एन्क्लेव जयपुर।

अपेक्षा ज्यादा महत्वपूर्ण है क्योकि लड़कें को शिक्षित करने पर वह अकेला शिक्षित होता है। किन्तु एक लड़की की शिक्षा से पूरा परिवार शिक्षित हो जाता है। शिक्षा ही वहीं कुंजी है जो जीवन के सभी द्वार खोल देती है जो कि आवश्यक रूप से सामाजिक है शिक्षित महिलाओं को राष्ट्रीय व अन्तंर्राष्ट्रीय स्तर पर सक्रिय होने में मदद मिली है महिलाएँ अपनी स्थिति व अपने अधिकारों के विषय में संचेत होने लगी।

शिक्षा ने उन्हें आर्थिक राजनैतिक व सामाजिक न्याय तथा पुरूष के साथ समानता के अधिकारों की मांग को प्रेरित किया। संवैधानिक अधिकारों में विभिन्न कानूनों के द्वारा महिलाओं को पुरूषों के समान अधिकार मिलने से उनकी स्थिति में परिवर्तन हुआ।

****

gaurav shree

अध्याय – चतुर्थ
नारी जीवन का यथार्थ

उषा प्रियंवदा आदर्श ही नहीं यथार्थ की बात करती है नारी की बदली हुई मान्यताओं परिस्थितियों को अपना विषय बनाया है साथ ही यथार्थ के चित्रण में नारी की कठिनाइयों को महसूस करते हुये साहसपूर्वक उसकी अभिव्यक्ति में विशेष रूचि रखती है इन्होंने यथार्थ के प्रति जो आस्था प्रदर्शित की है। जीवन के यथार्थ और अनुभूत सत्यों को अभिव्यक्त करने में इन्होंने जिस साहस का परिचय दिया वह सहज नहीं है।[35]

नारी जीवन की अछूती भावनाओं एवं उनकी मनः स्थिति का इन्होंने यथार्थ चित्रण किया है इनके कथा साहित्य में नारी शिक्षा के बल पर आवश्यकता पड़ने पर घर की चारदिवारी से निकलकर स्वतंत्र हो सकती है उत्पीड़न होने पर प्रतिशोध कर सकती है शिल्प की दृष्टि से इनकी रचनाओं में नवीनता नहीं है लेकिन सामाजिक संवेदना को वे इस रूप में प्रकट करती है कि उनका प्रभाव हमारे ह्रदय पर पड़ता है। विविधता, मार्मिकता, सहजता इनकी प्रमुख विशेषता होती है।

परिवार मनुष्य जीवन की प्रथम पाठशाला है यही पर मनुष्य अपने जीवन की सम्पूर्णता आर्जित करता है। पारिवारिक संबंधों की अवेहलना कोई मनुष्य नहीं करता परिवार से ही उसे सब कुछ प्राप्त होता है। फिर मनुष्य के परिवार के प्रति भी कुछ कर्तव्य हो जाते है कभी कभी इस कर्तव्यों का लाभ उठाकर स्वयं परिवार के व्यक्ति ही उसके सुखों में व्याघात पहुँचाते है।

कहानी में भी नौकरी करती उस अविवाहित नारी की वेदना चित्रित है, जो पिता की मृत्यु के बाद परिवार को पालने और घर संभालने में टूट जाती

[35] उषा प्रियवंदा – शेश यात्रा – पृ. सं. 73

है इसीलिए बंधे जीवन से अब उसे अरूचि सी हो गई है इतनी अरूचि कि विदेश जाकर भी वह किसी से बंध नहीं पाती है सभी की जिम्मेदारी पूरी करने के बाद भी सभी परिवार वाले उससे और ज्यादा अपेक्षा रखते है और सब इच्छाएँ पूरी करने के बाद भी सभी परिवार वाले नारी से अंसतुष्ट रहते है इसीलिए नारी ज्यादा दुःखों का सामना करती है अधिक रूप से आत्मनिर्भर नारी की भावुकता उसके जीवन को और भी संघर्षमय बना देती है ऐसी स्थिति में मानसिक चोट मार्मिक यातना तथा विशेषताएँ उसे निष्प्राण कर देती है। नारी इसी संघर्ष के बीच टूटकर बिखर जाती है उसका संघर्ष स्वयं अपने से कार्य संभालते हुये अकेलेपन में उसका मन परिवार वालों के प्रति उपालंभ से भर जाता है हमारी संस्कृति में ''मातृ देवों भव, पितृ देवो भव, आचार्य देवो भव'' के अनुसार माता का स्थान पिता और गुरू के स्थान से पहले निश्चित किया गया है इसके अलावा नारी की महानता का वर्णन हमारे प्राचीन ग्रन्थों में माँ पत्नी सखी बहन आदि के रूप में आदर क साथ वर्णित है इनकी उदारता महानता व कर्तव्यनिष्ठा की गौरवगाथा प्राचीनकाल से ही गायी जा रही है।

भारतीय समाज सदैव से ही पुरूष प्रधान रहा है समाज में नारी के स्वतंत्र अस्तित्व का हमारी सांस्कृति मान्यताएँ रूढियाँ परंपराएँ और रीति रिवाज विरोध करते है इसलिए सदैव से ही नारियों को पुरूषों के द्वारा दबाया जाता रहा है।

आजादी के बाद नारी को पुरूषों के बंधन से मुक्त करने के लिए अनेक कानूनी अधिकार दिए गए परन्तु नारियों में शिक्षा की कमी के कारण वे अपने अधिकारों के बारे में जागरूक ही नहीं है उनको प्रयोग करने की तो दूर की बात रही है शहरों की महिलाओं में कुछ जागरूकता है पर गाँवों में आज भी महिलाएँ अशिक्षित है तथा विभिन्न प्रकार के शोषणों की शिकार है ग्रामीण

नारी को स्वतंत्र अस्तित्व सम्मान न होने से उसका शोषण परिवार और समाज में निरंतर हो रहा है।

परिवार में पति, सास, ससूर, देवर, देवरानी, ननद, सौतन आदि विधवा असहाय तथा परित्यकता नारियों पर परिवार तथा गाँव वालों द्वारा अत्याचार किये जाते है 21वीं सदी के उपन्यास में भी नारी शोषण से मुक्त नहीं हुआ है। विभिन्न तरीकों से आज भी नारियों का शोषण कई तरीकों से हो रहा है उषा प्रियंवदा के चित्रण को भारतीय समाज में नारी की स्थिति ने बहुत प्रभावित किया है इनका नारी के यथार्थ चिंतन पर समाज व साहित्य द्वारा थोपे गये दुहरे–तिहरे चेहरों के मुखोटे उतारते हुये नई सामाजिक स्थितियों में अपनी नई बन गई भूमिका और घर बाहर के नये संबंधों पर प्रकाश डाला साथ ही ये नारी व पुरूष दोनों को अपने भीतर झाँककर आत्ममंथन के लिए विवश करता है।

देश समाज और साहित्य में नारी की नई पीढ़ी को अपनी तपशुदा भूमिका से हटकर नई भूमिका निभाने का दायित्व बोध भी प्रदान करता है। उषा प्रियंवदा इस बात से परिचित थी कि बचपन से ही लड़कें और लड़की में अंतर किया जाता है इसलिए पुरूष प्रारंभ से ही अपने को श्रेष्ठ समझने लगता है और नारी हिन भावना से ग्रस्त हो जाती है वह बचपन से ही स्वीकार कर लेती है कि सारी खुशी मान सम्मान सब उसके पति और बच्चों पर आधारित है अगर कभी वह उस संबंध से अलग होती है जैसे वैधत्य या तलाक की स्थिति में तो उसे लगता है जैस जीने का कोई अधिकार नहीं है और यही कारण है कि नारियों में कभी यह बोध जागृत नहीं होता कि वह समाज का एक सृजनात्मक और रचनात्मक हिस्सा है किसी पुरूष के बिना भी नारी सार्थक जीवन जी सकती है यह बात नारी सीख गई है नारी स्वत्रंता का उपभोग करने लगी है लेकिन यही स्वतंत्रता आदि संबधों की दरारें पति

पत्नी में ही नहीं माँ बाप, भाई, बहन, पिता पुत्र आदि के संबंधों को भी कमजोर करती है।

आज के युग में जब संबंधों का आधार मानवीय भावना की बजाय आर्थिक बनता जा रहा है नारी की स्वतंत्रता से आपसी संबंधों में अनेक तनाव जन्म लेने लगे है नारी के लिये आज स्वतंत्रता का अर्थ अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता होने और उन्हें प्राप्त करने के लिये संघर्ष करने के सन्दर्भ में है आज के नये परिवेश में उसकी तृप्त आकांक्षायें जागी है नारी आज अपनी योग्यता और अधिकारों का उपयोग करने को आतूर है यही कारण है कि अपनी आकांक्षाओं की प्राप्ति के लिये उसे बहुत कुछ खोना भी पड़ा है। विशेषकर पारिवारिक स्तर पर।

नवमूल्यों की स्थापना हो जाने के बाद भी उसे अनेक प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष तनावों का सामाना करना पड़ रहा है अनेक संघर्ष के बाद भी नारी को आज समान कानूनी एवं राजनीतिक अधिकार शिक्षाप्राप्ति के नये अवसर तथा अपने गुणों की अभिव्यक्ति के अवसर मिलने से एक नया सामाजिक परिवर्तन के साथ–साथ नारी ने अपनी भूमिका के प्रति युगों पुरानी मान्यताएँ बदली है हिन्दी की लेखिकाओं ने नारी स्वतंत्रता से नारी के स्वरूप को ही सशक्त ढंग से अपनी रचनाओं में ढाला है।

इस लेखिकाओं में उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य में नारी–पुरूष के माध्यम से अभिव्यक्ति पाने वाली नारी नहीं वह अपने जीवन के संकट को झेलती और अपने परिवेश को पूरी तरह जीती हुई नारी है नारी अपने स्वतंत्र विचारों पर किसी का आघात सहन नहीं करती। वह पूर्ण आत्मनिष्ठा और आत्मविश्वासी है नारी अब अपने लिए कदमों को उठाने का प्रयास करने लगी है वह अपने सारे कार्य को करने लगी है।

नारी के व्यक्तित्व का विकास और नारी की रक्षा नारी स्वतंत्र्य के मूलभूत स्तम्भ है असली स्वतंत्रता असली आधुनिकता व्यक्ति के विचारों की होती है केवल आचरण की स्वतंत्रता किसी व्यक्ति के आधुनिक होने या स्वंतत्र होने का चिंतन नहीं है उदाहरण के लिये नारी को समाज के पुरूष के समकक्ष स्थान दिलाने के लिये नित नये कानून बन रहे है परन्तु कानून को व्यवहार में लाने के लिये ध्यान नहीं जाता, इस दिशा में नारी को स्वयं प्रयास करना होगा, अपने विचारों को आधुनिक बनाकर अधिकारों के प्रति सचेत होना होगा नारी व्यक्तित्व के उपार्जन के बाद भी जिन संकोचों व दुविधाओं से अपनी पारंपरिक नारी ग्रंथ से मुक्त होने के लिये छटपटाते हुये भी मुक्त नहीं हो जाती वहीं पहली बार पुरूष सात्यक समाज में पुरूषों द्वारा दी गई अपनी सामाजिक छवि को निडर हो उतार फेंकते हुए मूल्य मर्यादाओं की पुरानी नींवों को हिलाती हुई नियति का खेल स्वीकार नहीं कर अचानक विद्रोह का स्वर बुलंद करती है।

Saurav Steel

प्रियंवदा की स्वाभिमानी आत्मनिर्भर नारियाँ पुराने तरीकों को तोड़ती हुई घर बाहर का दोहरा दायित्व वहन करते हुये समाज में हैसियत अर्जित कर अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व का लोहा मनवाती है अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व व निर्णय के फलस्वरूप ही वह लोगों का सामना होने पर भी उससे सच्चाई कहने से भी नहीं हिचकिचाती।

भारतीय समाज पर पश्चिमी सभ्यता और संस्कृति के प्रभावस्वरूप दाम्पत्य जीवन खण्डित होने लगे अर्थात् विवाह के उपरांत पति पत्नी के जीवन में दरार पड़ने लगे तो पति पत्नी का विश्वास एक दूसरे के ऊपर से उठ जाता और परस्पर एक दूसरे को अविश्वास की दृष्टि से देखने लगे, इस कारण पति पत्नी के मानसिक संतुलन में शिथिलता आ जाती है पति पत्नी के संबंधों में मधुरता के स्थान पर कटुता बढ़ने लगती है, दोनों में अंतर्विरोध

इतना बढ़ जाता है कि यह संबंध छिन्न–भिन्न होने लगता है तथा बाद में विरोध भी खुलकर प्रकट होता है।

फलस्वरूप दोनों के मध्य तकराव होता जाता है दाम्पत्य जीवन अलग होने की कगार पर आ जाता है। पति पत्नी अलग रहने लगते है उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य में नारी यथार्थ का प्रश्न है तो साहित्य मानव चेतना की अभिव्यक्ति है यथार्थ अनुमति की सघनता तथा चिन्तन के सामर्थ्य आधार का स्वरूप ग्रहण करती है हिन्दी साहित्य के श्रेत्र में प्रेमचंद युग में ही नारी चेतना को यथार्थ की अभिव्यक्ति प्राप्ति हो गयी थी किन्तु स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद नारी जागरण व नारी शिक्षा के त्याग प्रचार–प्रसार के फलस्वरूप महिला रचनाकारों की एक सशक्त पीढ़ी का उदय हुआ जिसने नारी की स्थापित व स्वीकृत छवि का विखंडन करके नई छवि को बनाया इन्होंने नारी की इंसानी और सामाजिक गरिमा की व्याख्या करके आगे वाली पीढ़ी के लिये रास्ता साफ किया कि वे नये संस्कार बनाने का काम काज आगे बढ़ा सके जिससे नारी जाति को अपने ऊपर अभिमान हो सके, वे अपने आप को अबला व हीन न समझे अपनी शक्ति अपनी श्रमता पहचाने अपने कार्यों से परिवार समाज देश व जगत के लिए नए आदर्श बन सके। नारी को आधुनिक युग में शिक्षा के प्रचार–प्रसार विज्ञान की प्रगति ने स्वाभिमानी और स्वावलम्बी बनाया। इस कारण नारी में पुरूषों की पार्शिवक इच्छाओं और पुरूष पर निर्भर बने रहने के विरूद्ध चेतना उत्पन्न हुई उसने सामंती बंधनों की जंजीरों को तोड़ते हुए अपने व्यक्तित्व की तलाश की।

नारी को अपने व्यक्तित्व का रूप वास्तविक स्वरूप वर्तमान काल में कड़े संघर्ष के बाद मिलना प्रारंभ हुआ सदियों से पुरूष समाज द्वारा शोषण और अत्याचार करने के षड्यंत्र पर पहली चोट भी उसे ही स्वयं करनी होगी, क्योंकि अपनी जरूरत और परवरता की पीड़ा को वहीं अधिक समझ सकता है जो स्वयं युक्तभोगी होता है। इस प्रकार से नारी को अपने हक के लिये

स्वयं प्रयास करने होंगे कोई भी व्यक्ति स्थापित विचारों यथास्तिवाद वर्चस्ववाद को तोडता है उसके अंतविरोधी विचारधाराओं को सामने लाने की हिम्मत करता है तो उसे जबर्दस्त विरोध का सामना करना पड़ता है इसी तरह का विरोध नारियों को सुनना पड़ रहा है महत्वपूर्ण बात तो यह है कि नारी ने स्वयं नारी विमर्श के लिखे स्वत्वराधिकारों की इच्छा के विकास के लिए सदियों पुरानी भरी हुई चुप्पी मौन को वाणी दी है ये अपने कुचले अनुभव को आँवाज दे उड़ाने लगी है।

स्वतंत्रता के बाद आधुनिकता के त्यामोह में नारी जीवन में जो विसंगतियाँ उत्पन्न हो गयी है और पुरात्तव संस्कारों से मुक्ति मिले बिना नूतन से तालमेल बैठने में नारी के जीवन में जो समस्या पैदा हो गयी है उस पर प्रियंवदा जी ने लेखनी ने चलाई है इनका कथा साहित्य वैयविक्त्व और सामाजिक दोनों प्रकार के मूल्यों से संबंधित है इनके लेखन की धारा समाविष्टगत चिंतन से व्यष्टि चिंतन की और मुड़ी है स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद नारी जीवन में तमाम परिवर्तन हुये है आज की नारी नये मूल्यों को अपनाना चाहती है और पुराने मूल्यों को छोडने के लिये तत्पर है।

इस स्वीकार अस्वीकार में विवेक का प्रयोग कम है और भावना तथा आधुनिकता का असंतुलित आकर्षण ज्यादा है नारी की इस स्थिति का प्रियंवदा ने यथार्थता से प्रस्तुत किया है आज नारी के पास आधुनिक साधन है परिस्थितियाँ काफी उनके पक्ष में है ऐसी स्थिति में वे स्वयं की चेतना में सार्थक भागीदारी निभा सकती है और निभा भी रही है।

वस्तुतः जब तक नारी अपने अनुभवों को व्यक्त करने के लिये नई भाषा की तलाश नहीं करती तब तक नारी दिशा ग्रहण नहीं कर सकती वह तभी संभव है जब वह अपनी नई भाषाओं एवं अवधारणों का विकास करें जिसमें अपने नये अनुभवों को व्यक्त कर सकेगी सभी नारियों के लिये यह आवश्यक

है कि वे अपने बारे में अपने अनुभवों की अभिव्यक्ति के लिये ऐसी चेतना का विकास करें जो उनकी अनुभूतियों को सहज अभिव्यक्ति दे सके।

आर्थिक जीवन की मुख्यधारा में प्रवेश करती हुई नारी कई गतिविधियों के क्षेत्र में अग्रणी स्थान बना चुकी है। आज की महिलायें प्रत्येक उस क्षेत्र में प्रवेश कर रही है जिन्हें पहले विशिष्ट रूप से पुरूषों का आधिपत्य क्षेत्र कहा जाता था गत कुछ दशकों में नारी अपने अधिकार व व्यक्तित्व के प्रति जागरूक हुई है प्रबंधन, शिक्षा, संस्थानों व विश्वविद्यालयों, प्रबंधन विभागों में छात्राओं की संख्या में निरन्तर बढ़ोतरी देखने को मिल रही है बैकिंग व बीमा जैसे संगठनों में प्रबंधक स्तरों के पद पर नारी कार्यरत है अधिकांश उद्योग व संगठन जिनमें पहले पुरूष ही कर्मचारी थे वे भी अब प्रतिभावना नारियों के लिये अपने प्रवेश के द्वार खोल रहे है नारियों को आज अधिक अवसर प्राप्त हो रहे है नारी कि जो दूसरी स्थिति हमारे समक्ष प्रस्तुत होती है वह यह है कि शिक्षा और नौकरी के कारण नारी घर के सीमित वातावरण से निकलकर बाहर खुले में आयी है।

Gaurav shree

पुरूष से उन्मुक्त मेल जोल और उसे देखने परखने का अवसर प्राप्त हुआ है। स्वतंत्रता के पश्चात् बदली हुई आर्थिक परिस्थितियों में महिलाओं की शिक्षा व रोजगार के अवसरों में काफी वृद्धि हुई है नई परिस्थितियों के फलस्वरूप इनके लिये अपनी समानता की अभिव्यक्ति और उसकी प्रतिष्ठा के नये रास्ते खुल गये है नारी का आर्थिक क्षेत्र में पर्दाफाश करने के पीछे सामाजिक व मनोवैज्ञानिक कारण भी है अपनी प्रतिभा का सदुपयोग करना अपने लिये उच्च दर्जा प्राप्त करना आर्थिक रूप से बाहर निकलना समाज में अपने विशेष व्यवसाय के प्रति मोह आदि करना यदि नारी आर्थिक रूप से सबल होती है तो उसे अपनी छोटी छोटी इच्छाओं की पूर्ति छिप छिप कर नहीं करनी पड़ती है।

आर्थिक रूप से जागृत नारी कुंठाओं से ग्रस्त नहीं होती और दूसरों को भी वह साहसपूर्वक जीने के लिए प्रेरित करती है आर्थिक रूप से सक्षम होने के कारण नारी में एक हिम्मत बनी रहती है और वह कोई भी कार्य साहसपूर्वक सबके सामने करती है वह बेहिचक कह देने और करने की आदी है नारी में किसी भी प्रकार का काम्पलेक्स नहीं होता है।

हिन्दी साहित्य में नारी का आर्थिक पक्ष भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि इसका सामाजिक आधारों को लेकर ही नहीं चलता मानसिक परिपक्वता के साथ आर्थिक सम्पन्नता भी है आज के बढ़ते हुये प्रगतिशील भौतिकवादी युग में नारी स्वयं जीवीकोपार्जन के लिये आत्मनिर्भर होने में ही जीवन की सफलता को स्वीकार करने लगी है क्योंकि आर्थिक परिवेश सामाजिक संबंधों को परिवर्तित करता है।

शिक्षा एवं आर्थिक स्वतंत्रता ने नारी को नवीन सोच दी है अब पुरूष नारी के लिए देवता नहीं है। अर्धांगिनी सहधर्मिण के अर्थ स्तरों को उसने उतार फेंका है अब नारी अनेक चुनौतियों का सामना करती हुई अपना रास्ता निकाल लेती है।

पुरूष नियंत्रित समाज में ये आत्मविश्वास से परिपूर्ण है आज उसे आर्थिक आत्मनिर्भरता की आवश्यकता है और नारी अब अपने आप को प्रभावी बनाना जानती है आज वह आत्मविश्वास के आधार पर ही आगे कदम बढ़ा रही है और वह आत्मविश्वास के आधार पर ही पुरूषों को परखती है और आगे बढ़ने के लिये अपना मार्ग निर्धारित करती है अपनी आजीविका स्वयं अर्जित करने और पुरूष पर निर्भर न रहने की सुविधा ने जीवन में अकेलेपन की समस्या को जन्म दिया है।

समानता व स्वावलम्बन की शाब्दिक सच्चाइयाँ जब व्यवहारिक जीवन में उतरी तो उससे कभी कभी नई नई समस्याओं का सामने आना स्वाभाविक

था प्रारंभिक दौर में संघर्ष नई परिस्थितियों और पुराने संस्कारों के बचा रहा फलस्वरूप नारी टुटती बिखरती रही नई टूटन आदर्शों और नवमूल्यों के टकराव का कारण बनी कुछ नारियाँ पुरूष वर्ग से हटकर किसी के भी नियंत्रण में रहकर अपना जीवन व्यतीत करना नहीं चाहती। आज भी नारी केवल प्रेम बनावटी रोमांस सौन्दर्य या अर्थ स्वतंत्र्य पर सफल जीवन व्यतीत करना चाहती है।

परिणामस्वरूप वे नारी सुलभ मधुर वृत्तियों से वंचित ही नहीं हो जाती, अपितु पुरूष की तरह स्वच्छन्दता का उपयोग कर अपने मधुमय जीवन को विषयुक्त बना लेती है आज नारी दोहरी भूमिका निभा रही है गृहलक्ष्मी और राजलक्ष्मी होने का गौरव प्राप्त कर लिया है आधुनिक युग में आर्थिक इच्छाओं की मांग प्रबल बनती जा रही है नारी की इच्छाओं को उषा प्रियंवदा भरपूर समझती है इसलिये इनके कथा साहित्य में नारियाँ आर्थिक चेतना के साथ अग्रसर होती है साथ ही इनकी नारियों के सम्मुख स्वभावतः यह प्रश्न उठता है कि क्या सभी प्रताड़नाएँ अथवा ठोकरे वे इसलिये सहन करे कि वे पुरूषों पर आश्रित है अथवा आर्थिक रूप से परतंत्र है, प्रियंवदा जी का प्रयास यही रहता है कि वे नारी को आर्थिक परतन्त्रता की श्रृंखलाओं को तोडने के लिये जागृत करती है क्योंकि आर्थिक स्वतंत्रता के वातावरण में न तो हार्दिक इच्छाएँ तथा भावनाएँ कुंठित होगी और न ही समाज उन्हें अवहेलना अथवा निरादर की दृष्टि से देखेगा।

आर्थिक चेतना के परिणामस्वरूप नारी जीवन में जो परिवर्तन आये तथा जिन जिन स्थितियों से नारी को गुजरना पड़ा नारी के जीवन के विभिन्न मोड़ो की अवधारणा कई प्रकार से देखने को मिली है आर्थिक स्वतंत्रता शिक्षा और आत्मनिर्भता ने नारी जीवन में अनेक परिवर्तनों का प्रादुर्भाव किया है जब तक नारी आश्रित थी या भरण पोषण के लिये पुरूष पर ही निर्भर थी तब तक उसके स्वतंत्र जीवन का कोई प्रश्न नहीं था अपनी आजीविका स्वयं

अर्जित करने और पुरूष पर निर्भर न रहने की सुविधा ने नारी में आर्थिक चेतना को जन्म दिया।

अधिकांश नारीयाँ माँ बाप की जिम्मेदारी पूरी करते करते जीवन के ऐसे मोड़ पर आ जाती है जब उन्हें उपयुक्त जीवनसाथी नहीं मिल पाता अथवा कई बार पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण घर में सबसे बड़ी बेटी अविवाहित रह जाती है शादी अगर हो भी जाती है तब भी उसे अपने ससूराल के साथ पीहर पक्ष का भी ध्यान रखना होता है। इन नारियों को पूरी तरह स्वतंत्रता तो प्राप्त हो जाती है।

प्राप्त सुविधा का पूरी तरह उपभोग भी करती है लेकिन समाज में वह असामाजिक बनकर रह जाती है नारियों ने अपने को विलास की साधन सामग्री के रूप में निकाल कर जिस दोराहे पर ला खड़ा कर दिया था उसमें परतंत्रता जैसे किसी भी भाव के लिये स्थान न था नारियाँ किसी भी रूप में पुरूषों के अधीन नहीं रहना चाहती थी।

भार की स्थिति ऐसी थी जिसमें नारियों ने अन्य क्षेत्रों में सफलता अनेक सीमाओं तक प्राप्त कर ली थी पर आर्थिक रूप से अभी भी उनको स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिये अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा था जिसमें प्रमुख कार्य की लघुता के संबंध में नारी–पुरूषगत भेदभाव दृष्टिकोण की प्रमुखता है अनेक कार्य ऐसे थे जिनके संबंध में यह धारणा निर्मित कर ली गई थी कि यह नारियाँ नहीं कर सकती, बल्कि पुरूषों के योग्य ही यह कार्य है पर नारियों ने इस क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त करने और अपने को आर्थिक रूप से पूर्ण स्वतंत्र होने का प्रयत्न शिथिल नहीं होने दिया है घर के बाहर आकर कार्य करने से इन्हे एक सर्वथा नवीन दृष्टि प्राप्त हुई।

घर के सीमित संसार के कार्यक्षेत्र से भी अधिक विस्तृत एवं व्यापक कार्यक्षत्र में जब उन्हें कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ तो वे प्राचीन विरासते

स्वतः ही धराशयी हो गई जिन पर नारियों का प्राचीन आदर्श स्थित था इससे नारियों की आर्थिक स्वतंत्रता की मांग भी कुछ सीमा तक पूर्ण होने लगी प्राचीन परम्पराओं मान्यताओं एवं आदर्शों का विरोध हो रहा है किन्तु स्वस्थ नये मूल्यों का अभाव है यह अभाव अन्तर्विरोधी जीवन मूल्यों का निर्माण कर रहा है अपने को आधुनिक कहलाने की आकांक्षा में नारी पश्चिमी आदर्शों को ग्रहण तो कर लेती है किन्तु ये अस्थाई आदर्श उसे कुंठित कर देते है अपनी संस्कृति व आदर्शों से अनामित फैशन की होड में नारी वर्ग पश्चिम व अन्धानुकरण किये जा रहा है यह समझे बिना कि पाश्चात्य आदर्श भारतीय वातावरण अनुकूल नहीं है। स्वतंत्रता से पहले भारतीय नारी को मानसिक दासता में जकडने के लिये अंग्रेजों ने पाश्चात्य सभ्यता व संस्कृति का प्रचार किया।

अंग्रेजी पढ़े लिखे भारतीय पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति को उच्च मानते थे। पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति से भारतीय आदर्श एकदम भिन्न है एक विशिष्ट वर्ग के अतिरिक्त पाश्चात्य सभ्यता से शेष भारतीयों ने संबंध स्थापित नहीं किये थे। इस आकर्षण और विकर्षण की स्थिति ने संघर्ष को जन्म दिया समाज व्यक्ति जीवन के प्रति दोनों के विभिन्न मूल्य थे। आज जिस पाश्चात्य जीवन पद्धति फैशन हिप्पी संस्कृति पार्टी आदि के चकाचौंध के पीछे दूनिया भाग रही है उसने यद्यपि भारतीय नारी को पाश्चात्य रहना सहना और इस स्तर को अपनाकर उनके समक्ष बनने का भ्रम जरूर दिया हो, किन्तु संयम शांति अनुशासन एवं शीतलता जो हमारी संस्कृति की विशेषता रही उसे मलिन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

नारी एवं पुरूष दिग्भ्रमित होकर अपने चारों और पाश्चात्य घुटन, अब, युवा आक्रोश या प्रतियोगिता का भ्रमित संसार रचकर क्लब, चरस या नशीली दवाओं की गुलाम बन रही है दो संस्कृतियों के बीच भटकती नारी की त्रासदी इनका कृत्य है।

भारत से वह उखड़ गई है और पाश्चात्य परिवेश को वह स्वीकार नहीं कर पाई है बार बार जड़े तलाश करने की बैचेनी उसे मानसिक आध्यात्मिक स्तरों पर भटकाती है भावना और संवेदना के धरातल पर टूटती इस छिन्नमूल नारी को केन्द्र बनाकर प्रस्तुत किया है नारी आज अपने किसी भी संदर्भ में स्वतंत्र बनकर जीना चाहती है।

प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में स्वातंत्र्य पाश्चातय प्रभाव से ही आयी है आधुनिक जीवन में नवीन एवं परिवर्तनशील दृष्टि से मुक्त हर नारी धर्म, विवाह, परिवार, दाम्पत्य पीढ़ी, अन्तराल, परम्परागत संस्कार, रीति रिवाज, शिक्षा एवं स्वातंत्र्य सभी पहलुओं में अपने आपको बदला हुआ पाती है अपने प्राचीन संस्कारों को अपनाकर भी अपने नवीन आयामों को लेकर चल रही है एवं इस कोशिश में कहीं तो अपने आपको बंधा हुआ महसूस करती है।

4.1 यथार्थ परम्पराओं का नवीनीकरण

सर्वप्रथम 1792 में मेरी वॉल्सटन क्रॉफ्ट ने नारी अधिकारों का घोषणा पत्र लिखकर आजादी, समानता व न्याय के सिद्धांतो को बिना किसी लिंग भेद के सार्वजनिक रूप से लागू करने की मांग की।

रूसों ने नारी शिक्षा के बारे में भेदभावपूर्ण नीति को अपनाते हुए कहा था कि नारी की दृष्टि केवल पुरूष को प्रसन्न करने व अधीनता स्वीकार करने के लिए ही हुई है इसलिए दोनों को भिन्न भिन्न प्रकार की शिक्षा मिलनी चाहिए वैसे भी रूसों का प्रबल आग्रह था कि मस्तिष्क से रहित एक युवास्त्री की काया अधिक आकर्षण होती है दरअसल वॉल्सटन क्रॉफ्ट मानती है कि शिक्षा के संदर्भ में समाज के ये पक्षातापूर्ण तर्क ही नारी को दमघोटू वातावरण में जीने के लिए विवश करते हैं और बचपन से ही उसे व्यक्तित्व के स्थान पर 'देह' को विकसित करने के लिए प्रेरित करते है।[36]

[36] उषा प्रियवंदा अंतर्वशी प. सं. 237

1844 ई में फ्रांस की फ्लोश ट्रिस्टन ने महिलाओं की मांगे प्रस्तुत करने के लिए एक महिला संगठन की स्थापना की। इंग्लैंड की कैरोलिन नारटन ने महिलाओं को पुरूष के समान अधिकार दिये जाने की मांग को लेकर आंदोलन शुरू किया जो कुचल दिया गया था नारी और पुरूष के बीच सामाजिक संबंधों का संचालन करने वाले नियम जो एक सेक्स को श्रेष्ठ और दूसरे को अधीन बताते है अपने आप में गलत है इन्हे पूर्ण समानता के नियम द्वारा बदल दिया जाना चाहिए ताकि न तो किसी एक के पक्ष में अधिक शक्ति रहे और न ही किसी एक की अधीनता।

मार्च 1857 ई. से न्यूयार्क सड़कों पर कपड़ा मिलों की कामगार नारियों ने अधिक वेतन और काम के घंटे घटाने की मांग को लेकर एक असफल प्रदर्शन किया था जिसे उस समय की ट्रेड युनियनों ने भी पसंद नहीं किया किसी भी समर्थन के अभाव में यह आंदोलन पुलिस द्वारा कुचल दिया गया था, पर महिला इतिहास में एक अमिट लकीर छोड़ गया था आज भी उसी संघर्ष की याद में 8 मार्च का दिन अंतर्राष्ट्रीय महिला संघर्ष दिवस के रूप में मनाया जाता है।

इक्कीसवीं सदी महिला सदी है वर्ष 2001 महिला सशक्तिकरण वर्ष के रूप में मनाया गया इसमें महिलाओं की श्रमताओं और कौशल का विकास करके उन्हें अधिक सशक्त बनाने तथा समग्र समाज को महिलाओं की स्थिति और भूमिका के संबंध में जागरूक बनाने के प्रयास किये गए।[37]

महिला सशक्तिकरण हेतु वर्ष 2001 में प्रथम बार राष्ट्रीय महिला उत्थान नीति बनाई गई जिससे देश में महिलाओं के लिये विभिन्न क्षेत्रों में उत्थान और समुचित विकास की आधारभूत विशेषताएँ निर्धारित किया जाना संभव हो सकें इसमें आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक सभी क्षेत्रों में पुरूषों के साथ समान

[37] अनुराधा पाण्डेय– महिला सशक्तिकरण पृ. सं. 216

आधार पर महिलाओं का सैद्धांतिक तथा वस्तुता उपभोग पर तथा इन क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी व निर्णय स्तर तक समान पहुँच पर बल दिया गया है।

नारी और स्वतंत्रता आज भी नदी के दो किनारे की तरह है जो कभी मिल नहीं पाती सतही तौर पर देखा जाये तो लगता है कि भारत ही नहीं विश्व पटल पर अपनी पहचान बनाती हुई नारियों ने अपनी पुरानी मान्यताएँ बदली है आज की नारी के व्यक्तित्व का प्रश्न मुखर होता जा रहा है अपने व्यक्तित्व को बचाये रखने के लिये संघर्ष करती हुई नारियों ने लम्बा रास्ता तय कर लिया है परन्तु आज भी एक बड़ा हिस्सा सदियों से सामाजिक अन्याय का शिकार है जब जब नारी अपनी उपस्थिति दर्ज कराना चाहती है तब तब जाने कितने रीति रिवाजों परम्पराओं पौराणिक आख्यानों की दुहाई देकर उसे गुमनाम जीवन जीने पर विवश कर दिया जाता है। महिला शिक्षा समाज का आधार है।

Gaurav Shree

समाज द्वारा पुरूष को शिक्षित करने का लाभ केवल मात्र पुरूष का होता है। जब कि महिला शिक्षा का स्पष्ट लाभ परिवार समाज एवं सम्पूर्ण राष्ट्र को होता है। चूंकि महिला ही माता के रूप में बच्चें की प्रथम अध्यापक बनती है महिला शिक्षा एवं संस्कृति को सभी क्षेत्रों में पर्याप्त समर्थन मिला यद्यपि कुछ समय तक महिला शिक्षा के समर्थक कम किन्तु आज समय एवं परिस्थितियों ने महिला शिक्षा को अनिवार्य बना दिया है आज देखने में आया है कि महिलाओं ने स्वयं के अनुभव के आधार पर अपने लिए नई मंजिले, नये रास्तों का निर्माण किया मात्र इस आधार पर उस सफलता के पीछे भी किसी कठोर दण्ड की व्यवस्था की गयी जो दहेज की मांग को लेकर महिलाओं का उत्पीड़न करते है।

अब सरकार लिव इन पर विचार कर रही है संयुक्त परिवारों के विघटन होने से जैसे–जैसे एकांकी परिवार की संख्या बढ़ी इनमें न केवल महिलाओं

को सम्मानित स्थान मिलने लगा बल्कि लड़कियों की शिक्षा को भी एक प्रमुख आवश्यकता के रूप में देखा जाने लगा।

वातावरण अधिक समताकारी होने से महिलाओं को अपने व्यक्तित्व का विकास करने के अवसर मिलने लगे। वर्तमान समय में भारतीय सरकार द्वारा महिलाओं के उत्थान के लिए अनेक कार्यक्रम एवं योजनाओं का संचालन तो किया जा रहा है लेकिन इन योजनाओं का क्रियान्वयन निचले स्तर पर उचित ढंग से न पहुँच सकने के कारण नारियों को उपेक्षित लाभ नहीं मिल पा रहा है यह सत्य है कि वर्तमान समय में नारियों की स्थिति में काफी परिवर्तन आया है लेकिन फिर भी वह अनेक स्थानों पर पुरूष प्रधान मानसिकता से पीड़ित हो रही है इस सन्दर्भ में युगनायक एवं राष्ट्रनिर्माता स्वामी विवेकानंद का यह कथन है किसी भी राष्ट्र की प्रगति का सर्वोत्तम थर्मामीटर है वहाँ की महिलाओं की स्थिति। हमें नारियों को ऐसी स्थिति में पहुँचा देना चाहिए

जहाँ वे अपनी समस्याओं को अपने ढंग से निपटा सकें।

सामाजिक के निर्वहन में नारी–पुरूष को समान रूप से सहयोगी बनाना होगा और इसके लिए नारी–पुरूष को अपना प्रतिद्वंदी नहीं समझे और पुरूष भी नारी को एक देह नहीं नारी रूप में एक इंसान स्वीकार करे नारी की आजादी और खुले आकाश में उड़ान की शर्त उत्पादन में उसकी भूमिका हो नारी की असली आजादी तभी होगी जब उसके दिमाग की स्वीकार्यता हो न कि केवल उसकी देह की अन्ततः कहीं ऐसा न हो कि नारी स्वतंत्रता और स्वाधीनता का पर्व सशक्तिकरण की अवधारणा पर खड़ा होने के पूर्व ही विनष्ट होने लगे और आने वाली पीढ़ी फिर वहीं सदियों पुराना प्रश्न दोहरा दे कि मैं कौन हूँ। ऐसी समस्या नारी जीवन में आने लगती है।

नारी सम्मान और पारस्परिक संबंधों के जटिल अंतर्विरोध प्रेम के अंतरंग स्वरूप तथा नारी महत्वाकांक्षाओं ने नारी चरित्र में दोहरे व्यक्ति का निरूपण करने के लिए उपन्यासकार को बाध्य किया है मध्यवर्गीय नारी चरित्र एक

प्रकार से अंतर्मुखी चेतना का विकास दृष्टत्य होता है। अतिशिक्षित एवं बौद्धिक होती नारी अपने सम्मान के प्रति अधिक सजग हो उठी है परिणामतः समाज में पारस्परिक संबंधों अंतर्विरोध की स्थितियाँ बढ़ गई है सदियों से नारी का एक वस्तु तथा पुरूष की सम्पति समझा जाता रहा है।

पुरूष नारी को पीट सकता है उसके मनोबल को तोड़कर रख सकता है साथ ही उसकी जान भी ले सकता है मानों की उसे नारी के साथ यह सब करने का अघोषित अधिकार मिला हुआ है मगर यह भी सच है कि अनेक नारियों ने हर प्रकार की विपरीत और कठिन परिस्थतियों का डटकर सामना करते हुए उन पर विजय प्राप्त की और इतिहास में अपना नाम अमर कर दिया आज की बदली हुई तथा अपेक्षा अनुकूल स्वयं को आजाद करवाने हेतु कृतसंकल्प है इस बात में कोई संशय नहीं है कि नारी अपने जीवन में घर के सीमित दायरे के लिए नहीं बनी है फिर भी नारी को यह भुलना नहीं चाहिए कि उनका किला और सबसे बड़ा कार्यक्षेत्र है जिसकी वे अकेली ऑक्रिटेक्ट है।

gaurav shree

नारी के द्वारा घर को घर जैसा बनाने रखने में किया प्रयास महान होता है। जिसमें वह अपने बच्चों का पालन पोषण कर उनका और देश का भविष्य संवारती है घर की हर जिम्मेदारी को निभाकर वह अपने पति की पुरी और खुशहाल घर की नींव बनकर दिखाती है ऐसे खुशहाल घरों से ही देश ताकतवर बनता है यह जरूरी नहीं कि घर संभालने में नारी अपने आपको इतना झोंक दे कि उसे अपने स्वास्थ एवं अन्य सामान्य जरूरतों का ध्यान ही नहीं रहे उसे यह भी सुनिश्चित करना होगा कि उसे घर में उतना ही सम्मान मिले जितना कि घर का पुरूष के बाहर काम करके अर्जित करता है। जरूरत पड़ने पर उसे इसके लिए कठोर बनकर भी दिखाना पड़ता है। समाज की जो रूढ़ियाँ नियम या परंपराएँ होती है। वे सारी गलत नहीं होती है अतः जो

भी बदलाव हो वे तर्कसंगत होने चाहिए और उसमें दूसरों के हितों का अतिक्रमण नहीं होना चाहिए।

नारी को समय स्थान अपने परिवार अपनी परिस्थति और क्षमता के अनुसार ही उपयुक्त बदलाव को अपनाना होगा और वह भी क्रमिक तरिके से ताकि अनावश्यक टकराव को टाला जा सके। नारी ने साबित कर दिया है कि जीवन की दौड़ में वह पुरूषों के समकक्ष ही नहीं बल्कि उनसे बेहतर है वहीं जीवन की असली कलाकार है और पुरूष उसके हाथों का मात्र रंग और कागज है।

यह दुनिया पल पल बदलती रहती है और नारियों को भी स्वयं को मौजूदा परिस्थितियों के अनुसार लगातार बदलते रहना होगा यह तय है कि नारी कोई वस्तु या दया की पात्र नहीं है सभी को पता है कि माँ के रूप में एक कमजोर दिखने वाली नारी को भी जब लगता है कि उसके बच्चों पर कोई खतरा है तो उनकी रक्षा करने के लिए कोई देर नहीं लगाती है अब नारी अपने जीवन के अंसख्य क्लेशों का इतिहास अपनी ही जुबानी बताने को तत्पर है एक जिद के साथ उसे यह घोषित करना पड़ रहा है कि इतनी बड़ी दुनिया में उसकी अनुभूतियों को कोई स्थान नहीं मिल पाया है।

महादेवी वर्मा जी ने लिखा है कि विस्तृत नभ का कोई कोना मेरा न कभी अपना होना, में नीर भरी दुखः की बदली दूसरी और प्रसिद्ध नारिवादी लेखिका वर्जीनिया वुल्फ को जब इंग्लैंड के विश्वविद्यालय में उदबोधन के लिए आमंत्रित किया गया तो उन्होंने कहा मैं पहले में अपने कमरे के विषय में बोलना चाहती हूँ श्रोताओं की शंका का समाधान करते हुए फिर उन्होंने बताया कि इसका नारी लेखन का गहरा संबध है क्योंकि कोई जगह होनी चाहिए जहाँ वे बैठकर अपनी मानसिक दुरियाँ के सुख दुख और संघर्ष पर अपने आपसे विमर्श कर सके।

नारियों की यह पीड़ा दर्शाते हुए उनकी कुछ अनसुलझी गुत्थियाँ थी जो सभ्य समाज पर सबसे बड़ा प्रश्नचिन्ह लगाती है किसी सभ्य समाज के विकास की प्रक्रिया में नारी को अलग अलग ही नहीं बल्कि पराई माने जाने के कुछ और भी उदाहरण बहुत मिलते है जिस प्रकार सभ्य नारी का शरीर उसके मकान के अन्दर बन्द रहता है वैसे ही उसका नाम भी बंद रहना चाहिए सुकरात यह मानते थे कि नारी सभी बुराइयों का मूल है उसका प्यार पुरूषों की घृणा से अधिक है।

नारी स्वयं भी वह अनुभव करती है कि नारी स्वयं में भी यह चिन्तायँ सामने आयी है कि नारी दुनिया को अपनी नहीं पुरूष की आँखों से समझना और भोगना चाहती है वे नारियाँ जो पुरूष की अनुकम्पा पर जीवन बसर करना अपनी निर्यात मानकर स्वीकार कर चुकी है उनकी गिरवी रखी हुई आत्माओं पर किसी प्रकार का बोझ नहीं है उनकी दिक्कत यह है कि वे अपने आपसे प्रश्न पुछने लगी है जैसे कि नारी के जनम से मृत्यु तक के मसले है और ना के बीच क्यों तैरते है क्यों लड़का चिरंजीवी और लड़की सौभाग्यकांक्षिणी कहलाती है सौभाग्यवती होकर जीना यदि नारी की पहली खुशी है तो वह सौभाग्य भी उसे सही अर्थो में प्राप्त क्यों नहीं है ऐसी सौभाग्यशाली को दहेज के कारण जला देना गलत नहीं है क्या यही सही है कि नारी को बुद्धिमान न माना जाए, देह से शुरू होकर देह पर ही उसकी इति मान ली जाए यह सारा झगड़ा अन्तहीन है अन्तहीन भी इसलिए है कि कुछ तो नारी जीवन का इतिहास और वर्तमान विडम्बनाओं से घिरा हुआ है दूसरी तरफ पुरूष प्रधान समाज की सोच भी संकीर्णताओं से घिरी हुई है नारी बचपन से ही समाज द्वारा बनाए गए साँचे में ढाल दी जाती है लड़कियों पर बहुत से निषेध थोप दिये जाते है।

लड़की और लड़कें के भेद को इस कहानी में बड़ी सुगमता से बताया गया है। किसी भी स्त्री की ऑख कितनी भी सुन्दर क्यों न हो और बड़ी क्यों

न हो वह दुनिया नहीं देख सकती उस पर पुरूष प्रधान परिवार के लाख पहरे होते हैं। । आज नारी नैतिकता और सच्चाई का दामन पकड़े वह जिस रास्ते पर चलना चाहती है इसमें बहुत सी बाधाएँ आ जाती है उस पर झुठा मुकदमा भी चलता है वह हर जगह अपनी नेक नियती की सफाई देती है किन्तु निराशा ही हाथ लगती है इस सारे संघर्ष में से बदली हुई नारी की जो चौंकाने वाली छवि सामने आयी उसने नारी के आदर्शवादी नकाब को उतारकर फैंक दिया।

प्रेमविहीन जीवन नारियों को कितना साथ दे इसका वर्णन किया गया है विवाह संबंध कम समझौता अधिक है कितना बड़ा झुठ कहानी की किरण नौकरी पेशा आधुनिक नारी है वह चाहती है सैक्स का स्पर्श दैहिक सुख विवाहोत्तर संबंधों का यह सहज स्वीकार नारी को नये सोच विचार को आगे की और कदम बढ़ाने का प्रयास कर रहा है किन्तु विवश और लाचार वह झूठे से सही पति और बच्चों को अपनाने के लिए स्वयं का त्याग कर देती है वह अपनी सारी इच्छाओं का दमन कर देती है।

जीवन के जितने विविध पक्ष उजागर हुए है उनमें नारी का संघर्ष और विद्रोह नाराजगी और तिरस्कार घृणा के भाव के रंग और अधिक गहरे होते गए है पहले नारी–पुरूष संबंधों का आधार विवाह होता था किन्तु विवाह संस्थाओं की जटिलताएँ कहे या संबंधों की स्वच्छदंता का हवाला दिया जाए अथवा नारी–पुरूष के मध्य बदलते प्रेम संबंधों का सवाल हो रिश्ते अब उतने सहज ईमानदारी से भरे और एकनिष्ठता की और बढ़ते हुए प्रतीत नहीं होते हैं। ।

मानवीय व्यवहार की मांग कर रही नारी के साथ यह एक असामाजिक तौर पर किया गया धोखा और छल ही है कि जब प्रेम और विवाह के संबंध बनते है तब उसके भागीदार नारी–पुरूष दोनों ही होते हैं। किन्तु जब प्रेम असफल होता है। वैवाहिक बंधन टूटता है विवाहोतर संबंध बनते है तब कठघरे

में नारी को ही खड़ा किया जाता है इतना होने पर भी प्रेम पर केन्द्रित जितनी अधिक संख्या में कहानियाँ लिखी गयी है उनसे पता लगता है कि नारी और पुरूष के जीवन में प्रेम का निषेध नहीं है किन्तु जो दैहिक भूख, शारीरिक थकान, संत्रास और पीड़ा का बोध है वह प्रेम के बदलते हुए स्वरूप के कारण ही है।

प्रेम और प्रेम विवाह और विवाहोत्तर संबंधों पर उत्तरशती में सर्वाधिक कहानियाँ लिखी गयी। अधिकार कहानियों में प्रसाद युगीन आदर्श से मुक्ति की राह तलाशी गयी है जैसे कि स्वतंत्र्योत्तर तर हिन्दी कहानी के दौर में मुन्नू भण्डारी ने कहा है यही सच है और एक बार फिर कहानियों में एकाधिक प्रेम का पत्र लिया और रोमांटिसिज्स की अवधारणा को तोड़ते हुए प्रेम के अधिक यथार्थपरक स्वरूप का पक्ष लिया तो फिर यह सिलसिला विवाहोत्तर संबंधों की अनेक कहानियों में लक्षित हुआ।

नारी किसी भी प्रकार की परिस्थिति में अपने आप को वह ढालती है नारी अपमान होने के बाद भी, वह अपमान के घूंट पीकर भी ठोकरे खाकर भी नारी शांत रहती है वह हर स्थिति में अपने आप को ढालकर एक मजबुत होने का दावा करती है लेकिन अब ऐसा नहीं है।

नारियों में हो रहे उनके खिलाफ जुर्म पर आँवाज उठाना शुरू कर दिया है वह अपने हक के लिए लड़ना शुरू कर दिया है किसी भी प्रकार का अपमान वह स्वीकार नहीं करती है नारी अब पढ़कर आगे विकसित होने के लिए कदम उठाना शुरू कर दिये है जिससे एक स्वस्थ समाज का निमार्ण हो सके नारी को बराबरी का हक मिलने लगा है अब वह पुरूषों के बराबर कंधे से कंधा मिलाकर चलने लगी है आज नारी खुद भी किसी के आसरे नहीं रहना चाहती है वह खुद भी कामयाबी के दायरे में आ खड़ी है नारी का सम्मान अब पुरूष के सम्मान के बराबर ही होने लगा है।

नारी का सम्मान करना तथा उसके हितों की रक्षा करना हमारे देश की सदियों पुरानी संस्कृति है भारतीय समाज में कई जगह नारियों की स्थिति अत्यंत अच्छी हो गई है वह अपने अधिकारों की भी मांग को जानने लगी है तथा अपने अधिकार की मांग को पूरा करने के लिए हर तरह के कदमों को भी उठाने लगी है नारी ने साबित कर दिखाया है कि अब वह अबला नहीं सबला है जिस प्रकार से नारी के प्रति सोच में बदलाव आया है उसी प्रकार से हमारे भारतीय समाज को नारी के विकास के लिए साथ देना चाहिए नारी के उठाए गए कदमों की साहरना करनी चाहिए जिससे कि नारी के विकास में किसी प्रकार की कोई बाधा न आ सके।

भारतीय समाज का अस्तित्व शायद ऐसी ही प्रथाओं के बलबूते पर खड़ा है भारतीय संस्कृति जीवन के परम्परागत ढांचे में हस्तक्षेप करती प्रतीत होती है। नारियों के जीवन के उस पाखण्ड का पर्दाफाश करती है जो धर्म के नाम पर सदियों से चलता आ रहा है वृत, अनुष्ठान, पूजापाठ के कर्म विधानों में नारी वैसे ही जकड़ी हुई है फिर अब उनके व्यस्त कार्यक्रमों में सीरियल भी आ जुड़े है अब उन्हें दुनिया देखने की फुर्सत ही कहाँ है नारी ने अपनी व्यवस्ता को बढ़ा लिया है।

लड़कियों तथा नारियों ने उत्साह के कार्य को करना शुरू कर दिया है नारी की आस्था टूट जाती है जब वह पति पत्नी शासक यही बल्कि पुरूष मानवीयता की तलाश करना एक तरह से रूढ़ियों के प्रति विद्रोह है नारी को गलत बोलते आए है वह इसी प्रकार के माहौल में रहने को असुरक्षित अनुभव करती है वृतों की अतिवादी भूमिका को तोडती यह कहानी जो भी पढ़ेगा वह सोचेगा जरूर वह सत्य को साक्षात्कार करेगा बहुत ही खुबसूरती से नारियों के लिए घेरा बना लिया गया जिसमें रहते रहते नारी की क्षमताएँ चुकती जा रही है हजारों वर्षों के नारी का आदर्श सीता और सावित्री ही रही है इन मिथकों के सहारे ही शेष जीवन बिताने की चाह रखना कितना खतरनाक हो

गया था एक नारी के लिए अब वह ऐसी कोई सोच नहीं रखती है वह आगे बढ़ने का प्रयास निरंतर कर रही है जिससे की नारीशक्ति का विकास होता रहे भारत में सदैव नारी को उच्च स्थान दिया गया है। समुत्कर्ष और निःश्रेयस के लिए आधारमूल श्री ज्ञान तथा शौर्य की अधिष्ठात्री नारी रूपों में प्रगट देवियों को ही माना गया है।

आदिकाल से ही हमारे देश में नारी की पूजा होती आ रही है यहाँ अर्द्धनारीश्वर का आदर्श रहा है आज भी आदर्श भारतीय नारी में तीनों देवियाँ विद्यमान है अपनी संतान को संस्कार देते समय उसका सरस्वती रूप सामने आता है। ग्रह प्रबंध की कुशलता में लक्ष्मी का रूप तथा दुष्टों के अन्याय का प्रतीकार करते समय दुर्गा का रूप प्रगट हो जाता है। अतः किसी भी मंगलकार्य को नारी की अनुपस्थिति में अपूर्ण माना गया।

पुरूष यज्ञ करे, दान कर राजसिंहांसन् पर बैठे या अन्य कोई श्रेष्ठ कर्म करे तो पत्नी का साथ होना अनिवार्य माना गया विद्यामियों ने हमारी संस्कृति आधारित जीवन पद्धती पर अनेको बार कुठाराघात किया है लेकिन हमारे देश की महान नारियों ने उनको मुंहतोड़ जवाब दिया है अपने शौर्य व तेजस्वितः से यह बता दिया कि भारत की नारी समाज में अपना स्थान मांगने नहीं गयी मंच पर खड़ें होकर अपने अभावों की मांग पेश करने की आवश्यकता उसे कभी प्रतीत ही नहीं हुई और न ही विविध संस्थायें स्थापित कर उसमें नारी के अधिकारों पर वाद विवाद करने की उसे जरूरत हुई उसने अपने महत्वपूर्ण क्षेत्र को पहचाना था जहाँ खड़ी होकर वह सम्पूर्ण संसार को अपनी तेजस्वितः निःस्वार्थ सेवा और त्याग के अमृत प्रवाह से पल्लवित कर सकी थी।

व्यक्ति परिवार समाज देश व संसार को अपना अपना भाग मिलता है। नारी से फिर वह सर्वस्वदान देने वाली महिमाम्यी नारी सदा अपने सामने हाथ पसारे खड़ें पुरूषों से क्या मांगे और क्यों मांगे आधुनिक समाज में स्थान अवश्य मिला है लालसाओं की मोहावृत प्रतिमूर्ति के रूप में पूजनीय माता के

रूप में नही। अवश्य ही युग परिवर्तन के साथ हमारे आचार विचार में और हमारे अभाव आवश्यकताओं में परिवर्तन होना अनिवार्य है परन्तु जीवन के मौलिक सिद्धांतो से समझौता कदापि ठीक नहीं है।

सृष्टि की रचना में नारी और पुरूष दोनों का महत्व है वे एक दूसरे के पूरक है और इसी रूप में उनके जीवन की सार्थकता भी है यदि नारी अपने क्षेत्र को छोड़कर पुरूष के क्षेत्र में अधिकार मांगने जायेगी तो निश्चित ही वह नारी जीवन की सार्थकता को समाप्त कर देगी। यदि भारतवर्ष की नारी अपने नारीधर्म का परित्याग कर देती तो आर्यावर्त कहलाने वाला हिन्दुस्तान अखिल विश्व की दृष्टि में कभी का गिर गया होता। यदि देखा जाय तो हमारे देश की आन बान शान नारी समाज ने ही रखी है हमारे देश का इतिहास इस बात का गवाह है कि युद्ध में जाने के पूर्व नारी अपने वीर पति और पुत्रों के माथे पर तिलक लगाकर युद्धस्थल को भेजती थी लेकिन वर्तमान में पाश्चात्य शिक्षा के प्रचार–प्रसार के प्रभाव से भारत में नारी के अधिकार का आन्दोलन चल पड़ा है। वस्तुता नारी का अधिकार मांगने और देने के प्रश्न से बहुत ऊपर है उसे मात्र इस आधार पर उस सफलता के पीछे क्षणांश भी किसी पुरूष के हाथ होने की सम्भावना को नकार दिया जायेगा यदि नहीं तो फिर समस्याँ कहाँ है जवाब हमारे सभी के अन्दर ही है पर उसको सामने लाने में हम घबराते भी दिखते है।

नारी को एक देह से अलग एक नारी के रूप में देखने की आदत को डालना होगा नारी के कपड़ों के भीतर से नग्नता को खींच–खींच कर बाहर लाने की परम्परा से निजात पानी होगी कोड ऑफ कंडक्ट किसी भी समाज में व्यवस्था के संचालन में तो सहयोगी हो सकेगें किन्तु इसके अपरिहार्थ रूप से किसी भी व्यक्ति पर लागू किये जाने से इसके विरोध की सम्भावना उतनी ही प्रबल हो जाती है जितनी कि इसको लागू करवाने की। क्या बिकाऊ है और किसे बिकना है अब इसका निर्धारण स्वयं बाजार करता है, हमें तो किसी

को बिकने और किसी को जोर जबरदस्ती से बिकने के बीच में आकर खड़ा होना है किसी की मजबूरी किसी के लिए व्यवस्था न बने यह समाज को ध्यान देना होगा।

नग्नता और शालीनता के मध्य की बारीक रेखा समाज स्वयं बनाता और स्वयं बिगाड़ता है। एक नजर में उसका निर्धारक पुरूष होता है। तो दुसरी निगाह उसका निर्धारक नारी को मानती है।

4.2 नारी जीवन के विभिन्न पहलू

मुस्लिम स्त्री शिक्षा जागरूकता के क्षेत्र में शेख अब्दुल्ला तथा उनकी बेगम वाहिद जहाँ खाँ का भी महत्त्वपूर्ण योगदान है। शेख साहब सन् 1902 ई.में अलीगढ़ में शिक्षा विभाग में सचिव बनकर आए। उन्होंने महिला शिक्षिकाओं के प्रशिक्षण हेतु अनेक स्कूल स्थापित कराए। उनकी बेगम स्वयं भी एक प्रशिक्षण स्कूल में शिक्षिका थीं। उनकी बहिनें भी शिक्षिका थीं। उन्होंने अपने पति एवं बहिनों के साथ मिलकर कन्या प्रशिक्षण स्कूलों में गृह प्रबन्धन, सिलाई–कढ़ाई आदि की शिक्षा का प्रबन्ध किया। महिलाओं की लेखन प्रतिभा को मंच प्रदान करने के उद्देश्य से उन्होंने उर्दू में 'खातून' नामक पत्रिका निकाली, जिसमें नवोदित प्रतिभाशाली महिलाओं के लेख एवं कविताएँ प्रकाशित की जाती थीं। इन कन्या प्रशिक्षण स्कूलों के लिए आर्थिक सहायता भोपाल के नवाब की बेगम सुल्तान जहाँ प्रदान किया करती थीं।[38]

महादेव गोविन्द रानाडे ने महिलाओं की स्थिति सुधारने हेतु पहल करते हुए स्वयं एक बाल विधवा से विवाह किया तथा जनता को भी विधवा विवाह के लिए जागरूक किया। उनकी पत्नी रमाबाई रानाडे ने परदा प्रथा, बाल विवाह, विधवा के प्रति अमानवीय व्यवहार आदि कुरीतियों के विरुद्ध जमकर संघर्ष किया तथा पूना में महिला सेवा सदन नामक संस्था की स्थापना कर

[38] डॉ. चित्रा मुद्गल – एक जमीन अपनी – पृ. सं. 29

स्त्री अधिकारों के प्रति जनसाधारण में जागरूकता जगाने का कार्य किया। इस संस्था के माध्यम से उन्होंने महिलाओं हेतु नर्सिंग तथा मेडिकल शिक्षा की व्यवस्था की। बाद में उन्होंने अखिल भारतीय महिला परिषद के माध्यम से महिलाओं में चेतना लाने का प्रयास किया।

आजकल नारी स्वतंत्रता को बहुत ही सीमित अर्थ में लिया जाता है। नारी स्वतंत्रता का अर्थ किसी नारी द्वारा किसी भी बंधन को न मानना, इस रूप में लगाया जाता है इसमें नारी को आर्थिक आत्मनिर्भरता प्राप्त होने की समाज के सभी नियमों को ठुकराकर स्वच्छंद आचरण करने का बल मिलता है। चित्रा मुद्गल अपने उपन्यासों के माध्यम से नारी स्वतंत्रता को वास्तविक तथा तर्कशुद्ध रूप में प्रस्तुत करती है।

चित्रा मुद्गल के अनुसार नारी स्वतंत्रता का अर्थ स्वच्छंद आचरण या समाज में .पुरूषों के समकक्ष नारियों को प्राप्त अधिकारों का सही उपयोग है पुरूष द्वारा नारी को केवल शरीर समझने वाली बिमारी मानसिकता का विरोध कर नारी की बौद्धिक प्रतिमा को प्रमाणित करने का प्रयास है एक जमीन अपनी उपन्यास में अंकिता के माध्यम से लेखिका ने नारी विमर्श का मुद्दा जोर शोर से उठाया है नारी के मस्तिष्क को नकार कर उसे केवल शरीर समझने वालों के लिए अंकिता कहती है ऐसे पुरूष जो कि नारी को मात्र जिस्म समझते है उन्हें औरत स्वयं ठुकराकर यह जता देना चाहिए कि वह भी आत्मसम्मान रखती है इसी कारण अंकिता बिना वजह औरतों के मामलों के गोपनीय रिपोर्ट चटकारे लेने वाले तिलक को फटकारते हुए कहती है, यह कुछ और नहीं पुरूष की बीमार मानसिकता ही है जिसकी विरासत अब भी आप जैसे ओछी मनोवृत्ति वाले पुरूष हो रहे है और मौका पाते ही दूसरों पर उल्टी करने लगते है।

अंकिता नारी स्वतंत्रता के संदर्भ में पुरूष को प्रतिपक्ष नहीं बनाती बल्कि नारी–पुरूष साझेदारी की वकालत करती है उसका कहना है कि मैं नारी और

पुरूष की समान साझेदारी की पक्षघर हूँ। उसके अहंवादी शोषण स्वरूप ही नहीं पुरूष को उसे बांड से मुक्त कर बराबरी का दर्जा देना होगा नहीं देता तो नारी को घर परिवार और समाज के आतंक से आतंकित न होकर खोखली दीवारों से सिर पटक पटककर प्राण देने के बजाय बाहर निकलने का सहास जुटा आत्मनिर्भर हो नये सिरे से जीवन जीने के विकल्पों को खोजना चाहिए यहाँ लेखिका विवाह के नाम पर नारी के व्यक्तित्व के कुंठित होने पर संबंध विच्छेद को आवश्यक मानती हुई यह आवश्यक प्रतिपादित करती है नारी स्वयं आत्मनिर्भर बने।

एक जमीन अपनी उपन्यास में नीता वर्जनाहीन जीवन शैली को ही नारी स्वतंत्रता समझती है इसके विपरीत मि. सुधीर के साथ रहने में उसे कोई अनैतिकता महसूस नहीं होती इसके विपरीत वह विवाह को माता–पिता द्वारा दी गई व्यवस्था का नाम देती है उसकी दृष्टि में विवाह एक स्वांग है अपना समर्थन करती हुई वह कहती है उनकी पत्नी है तो क्या पत्नी या मात्र एक व्यवस्था माता–पिता द्वारा सौपी गई व्यवस्था जो उन्हें सास ससूर बनने के संतोष से ही नहीं पूरती तथा कथित उसके सामाजिक दायित्व से भी चित्रण करती है जितनी खोखली रीति निति उतनी ही आडम्बर पुत्री का महत्ता उपर से पृष्ट भीतर से पोली सात फैरों के स्वॉग में रची बसी वास्तविक अर्थों में अर्चना उसकी पत्नी होती तो वह नारी के साथ ढूँढता, आकर्षित होना अलग बात है, साथ ढूँढना वह असंतुष्टि है।

अनुपलब्धि है, बोध है जिसकी सधन, ललक उसे अनायास मेरी और खींच लाई है जानती हूँ सुधीर के मन प्रांगण का वह कोना सर्वथा रिक्त है और मैं पत्नी नहीं सहचरी बनना चाहती हूँ पत्नी शब्द में मुझे दासित्व की बू आती है इस शब्द ने हमारे समाज में अपनी गरिमा खो दी है नारी स्वतंत्रता की इस संकीर्ण मानसिकता से नीता को आग्रह कर समझाते हुए अंकिता कहती है सुधीर जी अगर अपनी पत्नी से असंतुष्ट है तुममें उनकी साथ की

तलाश पूरी होती है तो पत्नी से अलग हो जाएँ नहीं जानती पत्नी का दोष कहाँ तक और कितना है है भी या नहीं दोनों ही स्थितियों में यह अन्याय है बच्चें पैदा किये है उसके बावजूद इसके तुमसे जुड़ने का साहस दिखाया है तो थोड़ा साहस और करे खुल्लम खुल्ला अपने उपन्यास को स्वीकृति दे।

संबंधों के प्रति ईमानदार होने के लिए अविश्वास के नरक से किसी एक को मुक्ति मिले चाहे वह मुक्ति प्राणलेवा ही हो दोनों हाथों में लड्डू बनाये रखने की चतुरता, अनैतिक नहीं आगे चलकर सदियों से चली आ रही विवाह संस्था का समर्थन करती हुई अंकिता नीता को समझती है जिस वर्जनाहीन समाज की परिकल्पना की तुम वकालत कर रही हो या तुम्हारी तरह विचारशील होने का दंभ भरती अनेक आधुनिकाएँ क्या तुम्है नहीं लगता कि इस थोथे तर्कों की आड़ में तुम पुरूष को वह छुट दे रही हो कि वह अनुत्तरदायित्वपूर्ण होकर आत्मसुख को किसी भी सीमा तक भोगने के लिए स्वतंत्र है और उसकी इन उच्छृंखला के लिए नारी स्वयमेव उसे उपलब्ध है वैसे समाज में पुरूषों के लिए बीज नया नहीं है।

समाज में यह औरत पहले भी मौजूद रही है और अब भी मौजूद है अंतर है तो सिर्फ इतना कि तब तक इस तरह का जीवन जीने के लिए वह अभिशप्त थी किसी न किसी विवषता के चलते रखेल शब्द से लांछित तिरस्कृत बहिष्कृत तब उसके पास अपने को नैतिक सिद्ध करने के लिए ये कौशलपूर्ण वर्क नहीं थे न वह आत्मनिर्भर थी कि परिवार और समाज के विरोध के बावजूद समाज में तनकर खड़ी रह सके सोचो सदियों पूर्व के वर्जनाहीन जीवन से वर्जनापूर्ण सामाजिक व्यवस्था को अंगीकार करने के पीछे आखिर कोई ग्म्ण चिंतन रहा होगा वर्जनाहीन जीवन के परिणामों की और भी आँखें खोलकर देखों इस प्रकार समाज में नारी स्वतंत्रता को गलत अर्थ में लेकर यौन उच्छृंखला को ही नारी मुक्ति समझों के भ्रम में जीने वाली नारियों की प्रवृत्ति पर करारा तमाचा लगाया है।

नारी और पुरूष समाज के दो पहिए है एक पहिया भी अगर कमजोर पड़ेगा तो परिवार की गाड़ी ठीक से नहीं चल पायेगी महिलाओं को शुरू से दबाया जाता है ताकि वह किसी भी तरह के अन्याय के खिलाफ आँवाज ना उठा सके आज महिलाओं को शुरू से ही अपना परचम लहराएँ पर उन्हें घर में ही वह सम्मान नहीं मिलता जो उन्हें मिलना चाहिए यह बातें रविवार को ऑक्सीजन मूवमेंट के रविवार चर्चा के दौरान कहीं गयी है ऑक्सीजन पल की तरफ से रविवार को छात्र छात्राओं के लिए नारी के सम्मान पर परिचर्चा आयोजित की गई चर्चा के दौरान विभिन्न स्थानों पर नारियों ने अपनी बात रखना सीख लिया है।

भारतीय इतिहास में नारी और दलितों की स्थिति एक समान ही रही है स्वतंत्रता और समानता पर आधारित भारतीय संविधान में नारी–पुरूष को समान अधिकार देने के बावजूद भी व्यवहारिक जगत में आज भी नारी को दूसरा दिया जाता है लेकिन उसके अन्दर जो सार्मथ्य है उसका कोई मूल्य नहीं है समाज की अधिकांश मान्यताएँ पुरूषों द्वारा निर्मित होने के कारण नारी के स्वतंत्र अस्तित्व को मान्यता नहीं मिली। आज नारी के द्वारा उच्चपदों पर काम किए जाने के बावजूद उसे उसके स्वतंत्र अस्तित्व के साथ सहजतापूर्वक स्वीकार नहीं करते नारी का अस्तित्व तथा नारी स्वतंत्रता की भावना केवल पुरूष वर्चस्व से मुक्ति के संदर्भ में ही नहीं है बल्कि समूचे परिवेश में नारी की अस्मिता और महत्व पाने के लिए है इस प्रकार सदियों से पुरूष द्वारा नारियों का शोषण होता हुआ दिखाई देता है। नारी को जीवन में कई प्रकार के पहलू में देखा गया है।

नारी के व्यक्तित्व पहचान के लिए विभिन्न पहलू के लिए आन्दोलन हो रहे है इस समस्त आन्दोलन का उद्देश्य नारी व्यक्तित्व अपनी पहचान अपना स्वतंत्र अपनी क्षमता तथा नारी के लिए सुखद भविष्य निर्माण करना है आज नारी विभिन्न उच्च पदों पर कार्यरत् होने के बावजूद भी उसका स्वतंत्र

व्यक्तित्व सहजतापूर्वक स्वीकार नहीं किया जाता पुरूष प्रधान सत्तात्पम समाज में अपना सम्मानित स्थान सुरक्षित करने की लालसा ही नारी का दुश्मन बना रही है पुरूष प्रधान समाज में नारी को एक वस्तु या जाति मानकर एकांगी दृष्टि से देखा गया है। नारी–पुरूष समाज से कोई अलग वस्तु नहीं है। पुरूष और मानव समाज के बीच उनसे संबंधित होकर भी वह एक स्वतंत्र व्यक्ति है उसका अपना एक स्वतंत्र रूप एवं व्यक्तित्व है नारी का जैविक रूप में पुरूष से अलग एक स्वतंत्र रूप प्रदान करता है तो उसका मानवीय रूप उसे व्यक्तित्व प्रदान करता है।

नारी को मानव रूप में व्यक्ति रूप अपनी पहचान बनाने के लिए उसे पुरूष पर अपना वर्चस्व स्थापित करने की आवश्यकता नहीं है नारी किसी एक विचार पर आधारित न होकर उसमें अनेक विचार समाहित है नारीवाद पुरूषों के विरोधी नहीं बल्कि पुरूष प्रधान व्यवस्था के विरोधी है भारतीय संविधान में नारी–पुरूषों को समान दर्जा देने के बावजूद भी पुरूष धर्मशास्त्र से बहार नहीं आया है आज भी नारियों पर अनगिनत अत्याचार होते है उन्हें रोकने के लिए नारी–पुरूष को साथ मिलकर संघर्ष करना है नारी के कई विभिन्न रूप है कि अब नारी–पुरूषों के पीछे न रहकर उसे बराबर चलना है अपनी अस्तित्व और पहचान की लड़ाई लड़नी है।

4.3 नारी व्यक्तित्व का विकास :

नारी के विकास और शोषण की दासता का इतिहास उतना ही पुराना है जितना असमानता और शोषण पर आधारित सामाजिक संरचनाओं का विकास और व्यक्तित्व का इतिहास बतलाया जाता है। प्रत्येक युग में नारी को लेकर विभिन्न समाज चिन्तकों ने अपने अपने दृष्टिकोण से नारी की समस्याओं पर सोच कर अपने विचार प्रकट किया है।

प्राचीन साहित्य में अनेक मिथक और कथाएँ दिखाई देते है जो पुरूष प्रधान समाज के विरूद्ध में नारियों के प्रतिरोध और विद्रोह का सादय् प्रस्तुत करता है। उत्तर वैदिक काल में नारी की स्थिति में गिरवाट आती गई है नारी का स्थान गौण समझा गया इसी काल में नारी चेतना का आरंभ भी हुआ है जनक के दरबार में गार्गी ने याज्ञा वलक्य को शास्त्रार्थ को चुनौती दी तथा उसे अपने प्रश्नों से चकित कर दिया था वेदकालीन एवं उत्तर वेदकालीन नारियों ने ज्ञान प्रकाश में अपनी बहुमुखी प्रतिभा का परिचय दिया तथा ऋषियों के दार्शनिक चिन्तन के विकास में सहयोग दिया।

नारी का विकास महाभारत तथा रामायण की नारियों में दिखाई देता है जिसमें कुन्ती, गान्धारी एवं द्रौपती जैसी महिलाओं ने समाज की बनाई रूढ़ी वादिता रूढ़ियों पर चलने से मना कर दिया रामायण की सीता चुपचाप दुःख झेलती हुई बल्कि एक जागरूक महिला के रूप में सामने आती है।

रामायण की सीता अपनी मर्जी से वनवास के लिए निकलती है लक्ष्मण रेखा को लांघती है, सीता रावण जैसी पराक्रमी राजा का निडर भाव से सामना करती है लेकिन सीता को बिना किसी अपराध से जंगल में जाकर रहना पड़ा। नारी के प्रति अन्याय और अत्याचार का इससे बढ़कर उदाहरण कहीं नहीं मिलेगा। सीता नारी विकास का उदाहरण है जब राम सीता को अपनाना चाहते है। परंतु सीता राम के पास न जाकर धरती में समा जाना पसंद करती है।

सुमन केसरी के अनुसार लवकुश प्रसंग के बाद राम द्वारा पुनः अयोध्या लौटने के आग्रह पर वह निछावर हो जाती है, किन्तु सीता ने ऐसा नहीं किया, बल्कि अपने अपमान से पीड़ित हो धरती में समा जाने का फैसला किया। सीता का प्रतिरोध मौन प्रतिरोध है सीता के धरती में प्रवेश को केवल कारूणिक

बनाकर प्रस्तुत किया जाता है इस तरह प्रसंग में निश्चित विरोध को करूणा के आवरण से ढ़क दिया जाता है।[39]

रामायण में चित्रित राक्षस समाज की नारियाँ मजबूत स्वतंत्र व्यक्ति के रूप में नजर आती है शूर्पनखा पूर्णरूप से आजाद है और जंगलों में निर्भीक घुमती है कुम्भकर्ण भी एक राक्षस होकर नारी का सम्मान करता है वह अपने भाई रावण से कहता है भाई जिसे सामान्य नारी समझकर तुमने हरण कर लिया है, वह साक्षात् जगत जननी है अतः स–सम्मान सीता को श्री राम को सौंप दो वैसे भी नारी पर कुदृष्टि धर्माचरण नहीं है। मैं राक्षस होकर भी यह अभिव्यक्ति करना उचित समझता हूं कि नारी का सम्मान होना चाहिए महाभारत काल की नारियों का प्रतिनिधित्व करती द्रौपती भारतीय नारी की परम्परागत छवि का व्यापक निषेध करती है।

द्रौपती प्रतिशोध की हिंसक ज्वाला मात्रा नहीं वहा अत्यंत संवेदनशील और मानवीय नारी है द्रौपती भरी सभा में अपमानित होने के बावजूद अपने पतियों और उनके कुल की मर्यादा को धिक्कारने के बावजूद वनवास और अज्ञातवास में पूरी निष्ठा से उनके साथ रहती है और द्रौपती तब तक अपने बाल नहीं संवारती जब तक वह अपने अपमान का बदला दुशासन के खून से नहीं लेगी। तब तक उसने अपने बाल न संवारने की प्रतिज्ञा ली। द्रौपती का अपने अपमान पर आँसू न बहाना न आत्महत्या करना बल्कि अपमान करने वाली व्यवस्था का नाश करने की प्रतिज्ञा लेने वाली द्रौपती नारी चेतना के लिए क मिशाल है।

मध्यकाल में मीराबाई भी नारी विकास का एक स्त्रोत है सोलहवीं शताब्दी में मीरा ने साहसपूर्वक सामाजिक मर्यादाओं का विरोध किया है उन्होंने घर से बाहर निकलकर सार्वजनिक क्षेत्र में कदम रखा। मीराबाई ने स्वतंत्रता

[39] सिंह करण बहादुर – महिला अधिकार व सशक्तिकरण कुरतंत्र मार्च 2006

के ऊपर लगे प्रतिबन्धों को चुनौती दी। वह निर्भीक होकर हारना वृन्दावन जैसे धार्मिक स्थलों पर घूमी। मीरा के लिए जाति और कुल की मर्यादा को लाँघना कठिन कार्य था फिर भी उसने इस व्यवस्था को लांघकर बाहर निकल आई इन सीमाओं को तोड़ने के कारण मीरा को विद्रोही कहा जाता है। मीराबाई ने अपने पदों में विद्रोह का आकोश, आक्रमकता और विध्वंस की अभिव्यंजना ही नहीं बल्कि वे असीम आत्मबल, आत्मविश्वास तथा निर्भीकता के साथ खुलकर अपनी बात कहती है।

यह नारी विकास का सबसे बड़ा कदम है जो नारी अभिव्यक्त हो रही है अपने दुख दर्द को गीतों के माध्यम से या पदों के माध्यम से व्यक्त कर रही थी अहिल्याबाई होलकर एक नारी विकास की मिसाल है उन्होंने पति के निधन के बाद सती न होकर हाथ में तलवार लेकर एक कुशल शासक बनी। भारत की स्वतंत्रता में महारानी लक्ष्मीबाई महारानी अवन्तीबाई बेगम हजरत महल, बेगम जीनत महल, मैना, अजीजन बाई, सुलतान जमानी बेगम, वेदकुमारी आजावती, जमलाने हर जमुना देवी, कल्पना जोशी आदि महिलाओं ने विशेष योगदान दिया नारी विकास आधुनिक काल में प्रखर रूप में दिखाई देती है इस कारण नारी विकास को आधुनिक युग की देन कहा जा सकता है। प्राचीन मध्यकालीन भारतीय समाज में नारी को केवल उपभोग की वस्तु ही माना जाता था यह मानसिकता आज भी हमारे समाज में दिखाई देती है। एक वस्तु के रूप में नारी को देखना एक साधन के रूप में उसका महत्व आँकना और उसे उपभोग का औजार समझना नारी के प्रति दुषित मानसिकता का प्रतीक है।

वर्तमान युग के प्रति दूषित मानसिकता का प्रतीक है वर्तमान युग में जो परिवर्तन हो रहे है उसकी वजह शिक्षा है शिक्षा का प्रचार और प्रसार तथा वैश्वीकरण का माहौल ये वे दो मुख्य कारण कहने होगें जिन्होंने नारी विकास को गतिमानता प्रदान की, आज भी नारी का शोषण हो रहा है चाहे वह शिक्षित

है, नौकरी करती हो, नारी के सामने विभिन्न समस्याएँ है उसका समाधान वह खुद खोज रही है वह अपने अधिकारों के प्रति अधिक सजग रहते हुए नारी के उपर होने वाले अन्याय अत्याचार का साहसपूर्ण विरोध कर रही है।

सदियों से पीड़ित नारी अब अपने शोषण या उत्पीड़न के विरोध में खड़ें रहने का साहस दिखा रही है अब नारी के विकास के लिए अंग्रेजी शिक्षा का प्रचार–प्रसार स्वतंत्रता का मिलना भारतीय संविधान में नारी–पुरूष को समान अधिकार देना औद्योगिक विकास नारी शिक्षा पर विशेष बल देना वैज्ञानिक उन्नति होना और अंतर्राष्ट्रीय संपर्क का उत्तरोतर बढ़ना नारी विकास के लिए महत्वपूर्ण है समानता पर आधारित भारतीय संविधान में नारी विकास के लिए महत्वपूर्ण प्रावधान किया है।

दहेज प्रथा का विरोध सती प्रथा का विरोध हिंसाचार आदि अधिकारों के वजह से नारी में स्वयं के प्रति एहसास जाग गया और वह अपने आत्मसम्मान और स्वाभिमान के लिए लड़ने के लिए तैयार हो गई यह कह सकते है कि पुरूष प्रधान व्यवस्था में नारी सदैव पीड़ित रही परंतु इस प्रकार की व्यवस्था में भी नारी हमेशा अपने उत्तरदायित्व के प्रति प्रयत्नशील रही है।

4.4 नारी जीवन में नारी का परंपरागत रूपः

भारतीय समाज में नारियों की स्थिति विभिन्न कालों में और विभिन्न समाजों में भिन्न भिन्न प्रकार की रही है प्रागैतिहासिक भारतीय समाज से लेकर आदिकालीन मध्यकालीन तथा आधुनिक समाज की विभिन्न परिस्थितियों में नारी का बदलता रूप देखेगें तो प्राचीन से लेकर आज तक नारी का अस्तित्व हमेशा नकारा गया है। वैदिक काल में भारतीय नारी–पुरूषों के समान शिक्षा प्राप्त कर सकती थी।

वैदिक काल में मैत्री, गार्गी, लोपा, मुद्दा आदि विख्यात नारियों का नाम आता है जो विभिन्न शास्त्रों का गहन ज्ञान अर्जित किया करती थी वैदिक काल में नारी को शक्ति ज्ञान एवं सम्पत्ति के प्रतीक रूप में क्रमशः दुर्गा सरस्वती तथा लक्ष्मी के रूप में माना गया इस काल में कृषि से लेकर आखेट, परिवार से लेकर समूह भी जगह वह पुरूष के बराबर थी एक तरफ उसे पुरूषों के बराबरी का स्थान और पुरूषों के समान अधिकार थे और दुसरी तरफ प्रतिबंध भी लगे हुए थे यह प्रतिबंध उतर वैदिक काल में और अधिक मजबूत होते गए और नारी जहाँ पूज्य तथा सम्मानीय मजबूत मानी जाती थी वह अब सहयोगिनी बाधा बन गई।

उत्तरवैदिक में नारी को सफलता में बाधा मानकर उसकी निंदा की जाने लगी धीरे–धीरे वर्णव्यवस्था के नियमों में कठोरता आने के कारण नारी का ह्रास होता गया युद्ध में जाती हुई नारी के साथ विवाह न कर पाने के कारण उसे दान में पुरोहितों तथा ऋषियों को दी जाने लगी। परिणामता नारी की स्थिति में परिवर्तन होने लगा।

इस काल में नारी को शिक्षा से वंचित रखा दिया इस कारण नारी अपना व्यक्तित्व विकास करने में असफल रही है मध्यकाल में नारी की स्थिति बहुत ही दयनीय होती गई इस काल में नारी पर जो अत्याचार अन्याय हुए सब खौफनाक थे नारी के अधिकार छीनकर उसे घर की चार दीवारी में कैद किया मुसलमानों के आक्रमणों और मुगलों के राज्य के बाद नारी की स्थिति और दर्दनाक बनी इस काल में सुंदर नारी का अपहरण कर उसको मध्यएशिया के बाजारों में बिकते व इस काल की नारी को हिन्दु धर्म की रक्षा तथा नारी सतीत्व की रक्षा रक्त की शुद्धता आदि के नाम पर अनेक प्रतिबंध लगाए जिससे उसका स्वतंत्र अस्तित्व ही समाप्त होता गया और इसी काल में पर्दाप्रथा का प्रचलन हुआ।

पर्दे की दीवारे इतनी कठोर कर दी गयी कि उन्हें सिर्फ घर की दीवारे ही दिखाई दे इस काल में नारी के लिए परदे के भीतर मीना बाजार लगते थे और उन बाजारों में राजा नवाब आदि सुंदर नारियों को चुनने हेतु वहां जाते थे इस काल में नारी की विवाह योग्य आयु घट गयी विधवा विवाह पर प्रतिबंध लगने आरंभ हुए नारियों का प्रमुख गुण व कर्तव्य पति सेवा और आज्ञा पालन हो गया इस काल में नारी निम्न से निम्नस्तर होती गयी वह परतंत्र और निस्सहाय समझी जाने लगी।

पत्नी का स्थान गौण हुआ और पति को श्रेष्ठत्व इस कारण पुत्र प्राप्ति को महत्व प्राप्त हो गया था इस काल में पतिव्रता का एक आदर्श प्रस्तुत किया गया नारी को पूरी तरह विभिन्न बंधनों में जकडकर रखा मध्य युग तक आते आते यह बंधन अधिक कठोर होते गये और नारी की स्थिति दयनीय होती गई इस युग में नारी को एक उपयोग की वस्तु समझकर उसका उपयोग किया नारी को पूर्णतः अपने परिवार वालों या बेटों पर निर्भर रहना पड़ता था राम अहुजा के अनुसार इस काल में विधवा विवाह का निषेध होने लगा नारियों के लिए शिक्षा का पूर्ण निषेध प्रारंभ हुआ।

सती प्रथा प्रचलन में आई पर्दा प्रथा आरंभ हुई बहुपत्नी प्रथा व्यवहार में स्वीकार की जाने लगी गुप्तकाल भारतीय इतिहास में स्वर्ग युग से जाना जाता है यह काल कला, साहित्य, संस्कृति आदि क्षेत्रों में उन्नति का काल है लेकिन नारियों के लिए यह काल और भी दुखतः रहा है इस काल में नारियों की नग्नता को पूजा जाने लगा जैसे अजन्ता, सत्रव, वसंत और सिगिरिया के चित्र प्रमाणित करते है जैन धर्म में नारी को मोक्ष की अधिकारिणी नहीं माना उसे सर्पिणी से भी भयंकर मानकर उसे नरकमय जीवन का द्वार माना है।

बौद्ध धर्म में नारी के स्वतंत्र व्यक्तित्व को स्वीकार किया गया था महाप्रजापती गौतमी के बार–बार आग्रह करने पर भी बुद्ध ने उन्हें संध्या में प्रवेश देने से इंकार कर दिया था सदियों से उपेक्षित, शोषित, पीड़ित नारी

की स्थिति पर चिंतन किया गया और उसे ऐसी दयनीय स्थिति से बाहर निकालने का प्रयास किया स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद नारी जीवन मूल्यों में तेजी से परिवर्तन आया आज 1960 में नारी अपने अधिकार, शिक्षा, जागरण, स्वतंतत्रता आंदोलन वैज्ञानिक आविष्कार, संविधान से प्राप्त, अधिकार, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक विधि में नारी का सहयोग के कारण नारी जीवन में परिवर्तन होने लगा इस युग में नारी शिक्षित बनकर व्यक्तित्व विकास में उचित पथ का अनुसरण कर रही है।

4.5 नारी जीवन के विभिन्न पहलू में शिक्षा का अभावः

हम देखते हैं कि प्राचीन काल से लेकर वर्तमान युग तक नारी को विभिन्न रूपों में सामने लाया गया है कभी आदर्श माँ, आदर्श बेटी, आदर्श पत्नी, बहन, प्रेयसी तो कभी शक्तिशील देवी के रूप में प्रतिष्ठित किया हिन्दी साहित्य में भी आदि काल से लेकर रीतिकाल तक नारीत्व से लेकर शिख तक का चित्रण किया गया है परन्तु मानव या व्यक्ति के रूप में नहीं वह एक मानव या व्यक्ति के रूप में उसकी इच्छा आंकाक्षा हो सकती है यह बात समाज आसानी से भूल गया है।

नारी को एक सामान्य मनुष्य के रूप में स्थापित करना चाहता है वह एक स्वतंत्र आसमान में उड़ना चाहती है जहाँ वह खुद के लिए जी सके। नारी या मानव समाज की स्थिति सुधारनी है तो शिक्षा बहुत अनिवार्य है इसलिए महात्मा ज्योतिबा फुले जी ने शिक्षा का महत्व जानकर सावित्रीबाई को पढ़ाया लिखाया इसका परिणाम आज हम देखते है हमारे देश की राष्ट्रपति महिला है यदि हम इतिहास में जाकर देखेंगे तो नारी को पढ़ाई लिखाई से दूर रखा गया इस कारण उसकी दुर्गति हुई है।

शिक्षा के कारण नारी अन्याय अत्याचार का विरोधकर सम्मानजनक जीवन जी सकती है नवजागरण काल के सुधारक पुरूषों ने इस तथ्य को

जाना समझा कि निरंतर पिछड़ी अधिकार विहीन माताओं की गोद में पलकर पुरूषों ने भी कम नहीं खोया तो वे नारी शिक्षा कुरीति निवारण और समाज–सुधार के कार्यक्रम लेकर सामने आए राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल ने अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस के सुअवसर पर महिलाओं को साक्षरता और शिक्षा में प्राथमिकता देते हुए कहा है कि समाज को सही मायनों में विकसित करना है तो इसके लिए महिलाओं को शिक्षित होना बेहद जरूरी है।

महिलाओं की साक्षरता की दर में कमी पर भी गहरी चिंता व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा ग्रामीण क्षेत्रों में खास ध्यान देना चाहिए अतः महिला शिक्षित होने पर आत्मनिर्भर बनकर अपने अधिकारों का सही उपयोग कर सकेगी। वर्तमान युग में अधिकांश महिलाओं को तकनीकी ज्ञान एवं उच्च शिक्षा से वंचित रखा जाता है जिसके कारण उन्हें अधिक क्षम और निम्नस्तरीय कार्य करने पड़ते है हमारे देश की प्रथम आय.पी.एस. महिला किरण बेदी जी का कहना है कि महिलाएँ शिक्षित हो ज्ञानवान बने सिर्फ साक्षर होने से कुछ नहीं होगा इसके मध्य ही समाज को भी अपनी मानसिकता में बदलाव लाना जरूरी है महिलाएँ शिक्षित होगी तभी उनको बराबरी का अधिकार प्राप्त हो सकता है।

वर्तमान युग में भी शिक्षित महिलाओं का प्रतिशत कम ही दिखाई देता है नारी विकास के लिए नारी का शिक्षित होना बहुत जरूरी है सुरक्षित नारी ही भावी समाज की सुरक्षा और अस्मिता की रक्षा कर सकेगी तकनीकी तथा व्यावसायिक शिक्षा के समान अवसरों के बावजूद भी इन क्षेत्रों में लड़कियों को प्रोत्साहित नहीं किया जाता। आज आवश्यकता है कि व्यावसायिक शिक्षण के लिए लड़कियों को प्रेरित और प्रोत्साहित करके उन्हें अपने पैरों पर खड़ा करना चाहिए ताकि वह अपनी लड़ाई खुद लड़ सकें।

भारतीय संविधान में नारी–पुरूष को समान दर्जा देने के बावजूद भी वास्तविक रूप में स्वीकार नहीं किया गया है। आज भी भारतीय नारी केवल

साहित्य के पृष्ठों में ही अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में दिखाई दे रही है लेकिन वह व्यावहारिक जगत में स्वतंत्र रूप में नहीं दिखाई देती है। राष्ट्र के विकास के लिए नारी की स्वतंत्रता आवश्यक है।

वर्तमान युग में नारी अपनी इच्छानुसार विवाह, नौकरी, व्यापार, व्यवसाय आदि करने लगी है वह अपने निर्णय स्वयं करने लगी, नौकरी की जगह अनेक पुरूषों के सम्पर्क में है उनसे दोस्ती या मित्रता रखना अब उसे कोई गुनाह या अनैतिक कार्य नहीं लगता।

नारी स्वतंत्रता के कारण नारी अपनी संकुचित सोच से बाहर आ रही है उसने जान लिया है कि विश्व में बहुत ऐसे क्षेत्र है जिस में वह अपना साम्यर्थ का परिचय दे सकती है इस विशाल जीवन में वह घर की चार दिवारी में घुटन भरा जीवन जीने के बजाए मुक्त आसमान में जीना चाहती है आधुनिक युग में तंत्र ज्ञान विज्ञान, तकनीकी मीडिया तथा शिक्षा की वजह से प्रशासनिक तथा सामाजिक क्षेत्र में भाग लेने के कारण नारी अपने कर्तव्य के प्रति अधिक जागृत दिखाई देती है।

समाज में दहेज प्रथा एवं विवाह संबंधों में बदलाव पारिवारिक स्थिति में परिवर्तन तथा अंतर्जातीय विवाह विज्ञापनों द्वारा विवाह आदि के कारण नारी में जन जागृति होती हुई दिखाई देती है वह अपने अधिकारों के प्रति सजग हो गई है

4.6 नारी के जीवन में सामाजिक परिवर्तन :

नारीवाद का यह मुख्य उद्देश्य है कि नारी अपने ऊपर हो रहे अन्याय को प्रतिरोध करें चाहे वह दहेज प्रथा हो या बालिका भ्रूण हत्या, बाल विवाह परिणाम स्वरूप माताओं की मृत्यु समाज में पल रही कुरीतियों का विरोध कर समाज में परिवर्तन लाना वर्तमान युग में लड़कें के मुकाबले लड़कियों का जन्म दर प्रमाण बहुत कम होता जा रहा है लड़का–लड़की में जो भेदभाव

समाज में बढ़ता जा रहा है उसका विरोध करना पड़ेगा तभी सामाजिक परिवर्तन हो सकता है।

नारी समाज का अस्तित्व बनाए रखने के लिए नारी को आगे आकर पुरूष प्रधान व्यवस्था को मुहतोड़ जवाब देना होगा नारी के उपर होने वाले अत्याचारों को रोकना होगा तभी नारी का विकास सफल होगा।

नारी को आत्मनिर्भर बनाना है शिक्षा के बाद नारी को कामकाजी नारी बनी तो अर्थ व्यवस्था उसके हाथ में आ जाएगी। अब तक सारे फैसले पुरूष ही करता था जिस कारण अर्थ व्यवस्था उनके हाथ में थी आज की नारी ने अर्थ व्यवसायिक पर अपना अधिकार जमाए है आज वह खुलकर सांस ले सकती है वह आज किसी के ऊपर निर्भर नहीं है वह अपने पैरों पर खड़ी हो चूकी है। पहले नारी चार दिवारी तक ही सीमित थी इस कारण उसकी पूरी चेतना चार दिवारी में ही समाप्त हो जाती थी आज की नारी हर क्षेत्र में अपनी पहचान बना रही है इस बात पर हम गर्व महसूस कर रहे है।

आधुनिक कामकाजी नारी के सामने अनेक समस्याएँ भी आती है इन समस्याओं का मुकाबला कर नारी को आगे बढ़ना है, और अपना अस्तित्व स्थापित करना है नारी समाज का प्रमुख अंग है।

4.7 नारी विकास के लिए विभिन्न पहलू:

भारत में नारीवाद आन्दोलन 1970 के आसपास शुरू हुआ है नारी का व्यक्तिरूप में पुरूषों को समान प्रतिष्ठा मिले यही नारी की अपेक्षा है इसी बुनियाद पर नारी आंदोलन की शुरूआत हुई। पुरूष प्रधान संस्कृति में नारी को भोग–विलास के रूप में देखा जाता है। जबकि नारी में जो जज्बा है उसका मूल्याकंन कभी नहीं किया उसके अंग प्रत्यंग का चित्रण अधिक दिखाई देता है जिस दिन नारी के गुणों को स्वीकृत किया जाएगा उसी दिन उसे नारी बराबरी का दर्जा प्राप्त होगा।

नारी के विभिन्न पहलू कुछ इस प्रकार से भी है

(1) समाज में नारी की शिक्षा के महत्व को स्थापित करना।

(2) नारी को पुरूषों के समान प्रतिष्ठा एवं बराबरी का दर्जा मिले।

(3) नारी–पुरूष के विरोधी न होकर पुरूष प्रधान समाज व्यवस्था के विरोधी है

(4) महिलाओं के संपूर्ण विकास के लिए सकारात्मक आर्थिक एवं सामाजिक वातावरण का निर्माण करना आदि।

(5) समाज में नारी–पुरूष के साथ कदम से कदम मिलाकर चले ऐसे अधिकारो का निर्माण करना

(6) नारी में आत्मसम्मान की भावना को जागृत करना

(7) महिला सशक्तिकरण के लिए सशक्त कदम उठाना।

(8) सम्पूर्ण नारी समाज के लिए खुला आसमान तथा उसके अस्तित्व को स्थापित करना।

(9) नारी के अपने अधिकारों के प्रति सजग करना।

(10) नारी पर होने वाले अन्याय अत्याचार को रोकना।

(11) नारी चिंतन का उद्देश्य है कि ऐसे समाज की रचना करना जो नारी के प्रति उदार दृष्टिकोण लेकर आए है।

(12) नारी को आत्मोप्रति और आत्मसम्मान का अवसर प्रदान करना।

(13) नारी का नारी के प्रति स्वाभिमान को जागृत करना।

(14) नारी को व्यावसायिक शिक्षा की और प्रेरित करना।

(17) नारी को मानव रूप में प्रतिष्ठित करना।

(18) नारी को परम्परागत मूल्यों से रूढ़िगस्त समस्याओं से बाहर निकालकर खुले आसमान में लाना यानी उसका स्वतंत्र अस्तित्व निर्माण करना आदि।

****

gaurav shree

अध्याय – पंचम
नारी अस्तित्व की खोज और नारी मुक्ति

नारी अस्तित्व की परिभाषा किसी वैचारिक दृष्टिकोण के अंतर्गत नहीं आ सकती। ऐतिहासिक एवं सामाजिक कारणों की खोज के बावजूद समाज में नवीन विकास और परिवर्तन अनेक अन्तर्विरोधों से मुक्त है परम्परा की विरासत और आधुनिकता का स्वीकार जिस निर्णायक क्षितिज की अपेक्षा रखता है वह बहुत ही धुंधला है नारी के सार्वभौमिक अस्तित्व की अनिवार्यता के संबंध में इंदिरा गांधी ने कहा है कि नारी स्वतंत्रता भारत के लिए विलासिता नहीं है। अपितु राष्ट्र की भौतिक वैचारिक और आत्मिक संतुष्टि के लिए अनिवार्य बन गई है।

डॉ. बी.आर. अम्बेडकर ने भारतीय संविधान में नारी मुक्ति के लिए अनुच्छेद 15(1) द्वारा लिंग के आधार पर किए जाने वाले भेद को समाप्त किया और अनुच्छेद 14 द्वारा नारी को पुरूष के समान बराबरी का दर्जा दिलाया एवं समान कार्य के लिए समान वेतन दिलाने की व्यवस्था की किन्तु सीमोन द बाउवार का कहना है कि आज की नारी पारम्परिक नारी की भूमिका में स्वयं को पंगु नहीं बना देना चाहती किन्तु इससे बाहर आते ही उसे अपने नारीत्व का उल्लंघन करना पड़ता है।[40]

पुरूष यदि अपनी लैंगिकता के कारण पूर्ण व्यक्ति बने तब नारी भी उसके बराबर अपनी प्रधान नारीत्व को बनाए रखकर ही हासिल कर सकती है 20वीं सदी में भूमण्डलीकरण सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्थितियों के कारण भारतीय समाज में नारी अस्तित्व की अवधारणा को बल मिला प्रारम्भिक दौर में समाज सुधार आन्दोलनों, राष्ट्रीय, स्वतंत्रता

[40] विनोद मिश्र – नारीमुक्ति का सवाल मार्क्सवाद के परिप्रेक्ष्य में

संग्राम और शिक्षा के विकास की मांग के कारण नारी की जड़ प्रायः स्थितियों ने करवट बदलनी शुरू की।

20वीं सदी का उत्तरार्द्ध एक ऐसे दौर का संक्रमण काल बना गया जो उत्तरोत्तर पुरानी मान्यताओं स्थापनों और परम्पराओं को परे धकेल कर एवं पुरी शक्ति के जागने समझने का समय है प्रचार–प्रसार माध्यमों ने एवं पत्रकारिता के व्यापक प्रसार ने भी नारी मुक्ति संगठनों और आन्दलनों को हवा दी स्वयं नारियों ने भी ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में अपनी पहचान का आकलन किया परिणात्मक विषय चुनौतियों का सामना कर जीवन के हर क्षेत्र में उन्होनें उदाहरण भी प्रस्तुत किए है।

नारी अस्तित्व की परिभाषा किसी निश्चित वैचारिक फ्रेमवर्क के अन्तर्गत नहीं की जा सकती ऐतिहासिक एवं सामाजिक कारणों की खोज के बावजूद समाज में नवीन विकास और परिवर्तन अनेक अन्तर्विरोधों से मुक्त है परस्पर की विरासत और आधुनिकता को स्वीकार जिस निर्णायक क्षितिज की अपेक्षा रखता है वह बहुत ही धूंधला है नारी के सार्वभौतिक अस्तित्व की अनिवार्यता के संबंध में इंदिरा गांधी ने कहा है कि नारी स्वतंत्रता भारत के लिए विलासिता नहीं है। अपितु राष्ट्र की भौतिक वैचारिक और आत्मिक संतुष्टि के लिए अनिवार्य बन गई है अस्तित्व शब्द प्रमुखता 20वीं शताब्दी से प्रचलन में आया है एक विचारधारा के रूप में एक अवधारणा के रूप में इसका प्रयोग आधुनिक युग की देन है।

अभिधात्मक दृष्टि से अस्तित्व का सामान्य अर्थ है अपने आप की पहचान अपने स्वयं की पहचान अंहकार स्वाभिमान गर्व अथवा अपनी सत्ता बोध आदि। लेकिन अब जब इसका प्रयोग अवधारणा के रूप में किया जाता है तब इसके अनेक निहितार्थ सामने आते हैं व्यक्ति विशेष अपनी पहचान एक नहीं दो धरातलों पर बनाता है एक वह जो उसका निजी व्यक्तिगत लघु समाज है जिसका वह अभिन्न अंग है दुसरा वह वृद्ध समाज जिसमें वह प्रवेश

पाना चाहता है ताकि वह अपने आपको बाध्य जगत से जोड़ सके एवं किसी प्रमुख इकाइ का भाग बन सके अस्तित्व सिद्धांत विश्वास करती है कि विकल्प की संभाव्यता मानवीय जीवन या अस्तित्व है जो मानवीय आचरण स्थापित करते है।

स्त्री किसी भी धर्म या जाति की हो, उसके साथ शूद्रवत व्यवहार किया जाता था। पति के साथ सती होना ही पुण्य का काम था। महाराष्ट्र में पेशवाई शासन में हिन्दवी स्वराज्य की धूमधाम थी। ऐसे समय में महान क्रान्तिकारी महिला शासक महारानी अहिल्याबाई होल्कर का उद्‌भव हुआ। । गरीब घर की अहिल्या बनी होलकर राज्य की बहू अहिल्याबाई का जन्म 31 मई 1725 को अहमदनगर जिले के चौंडी नाम के गांव में हुआ था। वह मालवा राज्य की होलकर रानी थीं, जिन्हें लोग प्यार से राजमाता अहिल्याबाई होलकर भी कहते हैं। उनके पिता मनकोजी राव शिंदे गांव के पाटिल यानी कि मुखिया थे। जब गांव में कोई स्त्रीशिक्षा का ख्याल भी मन में नहीं लाता था, तब मनकोजी ने अपनी बेटी को घर पर ही पढ़ना–लिखाना सिखाया। हालांकि अहिल्या किसी शाही वंश से नहीं थीं लेकिन उनकी किस्मत में महारानी बनना लिखा था। दरअसल, पुणे जाते समय उस समय मालवा राज्य के राजा या फिर पेशवा कहें, मल्हार राव होलकर चोंडी गांव में विश्राम के लिए रुके। तभी उनकी नजर आठ साल की अहिल्या पर पड़ी, जो भूखों और गरीबों को खाना खिला रही थीं। इतनी कम उम्र में उस लड़की की दया और निष्ठा को देख मल्हार राव होलकर ने अहिल्या का रिश्ता अपने बेटे खांडेराव होलकर के लिए मांगा। साल 1733 को खांडेराव के साथ विवाह कर 8 साल की कच्ची उम्र में अहिल्याबाई मालवा आ गईं। पर संकट के बादल अहिल्याबाई पर तब घिर आए जब साल 1754 में कुम्भार के युद्ध के दौरान उनके पति खांडेराव होलकर वीरगति को प्राप्त हुए। इस समय अहिल्याबाई केवल 21 साल की थीं।। पति के साथ सती नहीं हुई और संभाली सत्ता की बागडोर पति की

मौत के बाद अहिल्याबाई ने सती होने का निर्णय किया तो उनके ससुर मल्हार राव होलकर ने धर्म की पाखंडी परंपरा तोड़ते हुए अहिल्याबाई को सती होने से रोक दिया और यही नहीं उन्होंने बहू को राज्य की बागडोर भी सौंपने की बात कही। तब अहिल्या ने भी सतीप्रथा के खिलाफ

आवाज बुलंद करते हुए कहा, "मेरी मृत्यु हो जाने पर मुझे सुख मिलेगा, किन्तु मेरे जीवित रहने पर लाखों प्रजाजनों को सुख मिलेगा, ऐसा मानते हुए और लोकनिंदा की परवाह न करते हुए अहिल्याबाई ने धर्म के पाखंड के विरुद्ध यह पहला विद्रोह किया। धर्म के नाम पर स्त्री को शिक्षा व राज्य करने का अधिकार तब नहीं था। इसके विरुद्ध अब अहिल्याबाई ने दूसरा विद्रोह करते हुए राज्य की सत्ता स्वयं संभाल ली! हर एक परिस्थिति में अहिल्या के ससुर उनके साथ खड़े रहे। पर साल 1766 में जब उनकें ससुर भी दुनिया को अलविदा कह गए तो उनको अपना राज्य ताश के पत्तों के जैसा बिखरता नजर आ रहा था। अहिल्या ने राज्य की जिम्मेदारी अपने नेतृत्व में बेटे मालेराव होलकर को दी। पर विधाता का आखिरी कोप उन पर तब पड़ा जब 5 अप्रैल, 1767 को शासन के कुछ ही दिनों में उनके जवान बेटे की मृत्यु हो गई। तब उन्होंने शासन–व्यवस्था को अपने हाथ में लेने के लिए पेशवा के समक्ष याचिका दायर की। 11 दिसंबर, 1767 को अहिल्या इंदौर की शासक बन गईं। हालांकि राज्य में एक तबका ऐसा भी था, जो उनके इस फैसले के विरोध में था, पर होलकर सेना उनके समर्थन में खड़ी रही और अपनी रानी के हर फैसले में उनकी ताकत बनी। उनके शासन के एक साल में ही लोगों ने देखा कि कैसे एक बहादुर रानी अपने राज्य और प्रजा की रक्षा मालवा को लूटने वालों से कर रही हैं। अस्त्र–शस्त्र से सुसज्जित होकर अहिल्या ने कई बार युद्ध में अपनी सेना का नेतृत्व किया। वह हाथी पर बैठकर दुश्मनों पर तीर–कमान से वार करती थीं। प्रभावशाली शासक होने के साथ कुशल राजनीतिज्ञ भी थीं उन्होंने अपने विश्वसनीय सेनानी सूबेदार तुकोजीराव

होलकर (मल्हार राव के दत्तक पुत्र) को सेना प्रमुख बनाया। मालवा की यह रानी एक बहादुर योद्धा और प्रभावशाली शासक होने के साथ–साथ कुशल राजनीतिज्ञ भी थीं। जब मराठा–पेशवा अंग्रेजों के इरादे न भांप पाए तब उन्होंने दूरदृष्टि रखत हुए पेशवा को आगाह करने के लिए साल 1772 में पत्र लिखा। इस पत्र में उन्होंने अंग्रेजों के प्रेम को भालू के जैसे दिखावा बताते हुए लिखा, "चीते जैसे शक्तिशाली जानवर को भी अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगाकर मारा जा सकता है पर भालू को मारना उससे भी मुश्किल है। इसे केवल सीधे उसके चेहरे पर ही मारा जा सकता है। क्योंकि अगर कोई एक बार इसकी पकड़ में आ जाए तो यह उसे गुदगुदी कर ही मार डाले। अंग्रेजों की भी कहानी ऐसी ही है इन पर विजय पाना आसान नहीं।" । इंदौर ही नहीं, अयोध्या, हरिद्वार, कांची, द्वारका, बद्रीनाथ को भी संवारने में भूमिका निभाई इंदौर उनके 30 साल के शासन में एक छोटे से गांव से फलते–फूलते शहर में तब्दील हो गया। मालवा में किले, सड़कें बनवाने का श्रेय अहिल्याबाई को ही जाता है। इसके अलावा वे त्योहारों और मंदिरों के लिए भी दान देती थी। उनके राज्य के बाहर भी उन्होंने उत्तर में हिमालय तक घाट, कुएं और विश्राम–गृह बनाए और दक्षिण में भी तीर्थ स्थानों का निर्माण करवाया। भारतीय संस्कृतिकोश के मुताबिक, अहिल्याबाई ने अयोध्या, हरिद्वार, कांची, द्वारका, बद्रीनाथ आदि शहरों को भी संवारने में भूमिका निभाई। उनकी राजधानी माहेश्वर साहित्य, संगीत, कला और उद्योग का केंद्रबिंदु थी। उन्होंने अपने राज्य के द्वार मेरठ कवि मोरोपंत, शाहिर अनंतफंदी और संस्कृत विद्यवान खुसाली राम जैसे दिग्गजों के लिए खोले। अहिल्याबाई हर दिन लोगों की समस्याएं दूर करने के लिए सार्वजनिक सभाएं रखतीं थीं। इतिहासकार लिखते हैं कि उन्होंने हमेशा अपने राज्य और अपने लोगों को आगे बढ़ने का हौसला दिया। उनके शासन के दौरान सभी उद्योग फले–फुले और किसान भी आत्म–निर्भर थे। अपने समय से आगे की सोच रखने वाली रानी को केवल

एक ही गम था कि उनकी बेटी अपने पति यशवंतराव फांसे की मृत्यु के बाद सती हो गई थी। 13 अगस्त 1795 ई. को रानी अहिल्याबाई ने 70 वर्ष की उम्र में अपनी अंतिम सांस ली और उनके बाद उनके विश्वसनीय तुकोजीराव होलकर ने शासन संभाला।

कुछ परिवारों में बेटी को ज्यादा पढ़ाना नहीं चाहते है उनकी वहीं रूढ़िवादी मानसिकता होती है कि बेटी को तो आगे चलकर चूल्हा चौका ही संभालना है उसे पढ़ने की क्या जरूरत है उसकी क्या इच्छा है वो समझने की कोशिश ही नहीं करते। उसका विवाह कर देते है विवाह के बाद जब वो लड़की ससुराल आती है तो वहाँ पर भी वो पूरी कोशिश करती है उस परिवार को अपना बनाने मे।

ससुराल वाले भी उससे यही उम्मीद करते है कि वो सबका सम्मान करें धीरे–धीरे वो लड़की उस घर में उसी प्रकार से रहने लगती है सबको अपना बना लेती है ऐसा एक नारी ही कर सकती है लेकिन इस ओर किसी का ध्यान नहीं जाता कि घरवाले भी उसको उतना अपनापन दे रहे है या नहीं क्योंकि कई बार उनके व्यवहार से उसे यह अहसास होने लगता है कि वो उस घर का हिस्सा नहीं है क्योंकि कई बार उनके व्यवहार से उसे पराया महसूस कराया जाता है जिस अपनेपन से वो अपने बेटे या भाई से बात करते है वो अपनापन बहू को नहीं दे पाते। वो लड़की जो पूरी निष्ठा के साथ उस घर में पूरी जिम्मेदारी संभाल लेती है फिर भी जाने अनजाने में सुनने को मिलता है कि पराई लड़की है वो क्या समझेगी ऐसी बातें नहीं होना चाहिए जब एक पराई लड़की उस घर को और उस घर के लोगों को अपना बना सकती है तो सब मिलकर उस एक लड़की को अपनापन क्यों नहीं दे सकते यहाँ पर यह सवाल उठता है कि नारी की क्या पहचान उसका क्या अस्तित्व है।

आज भी कुछ मध्यमवर्गीय परिवारों में हम वह रूढ़ीवादी विचारधारा देखते है और वह सड़ी गली मानसिकता देखते है कि अगर बेटी है तो वह एक जिम्मेदार से ज्यादा कुछ नहीं है। बेटे और बेटी में भेदभाव किया जाता है। बेटी को जब तक वह अपने माँ बाप के घर है उसे बार बार यही अहसास कराया जाता है। कि बेटी तो पराया धन है उसे पराये घर जाना है इन सब बातों से उसके कोमल मन पर प्रभाव पड़ता है। ये वो जान ही नहीं पाते आज हमारे समाज में नारियों के व्यक्तित्व में बहुत ही बदलावा आया है।

आधुनिक सुरक्षित नारी हर क्षेत्र में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर उस व्यवस्था को चुनौती दे रही है जो उसके हितों को चोट पहुँचाते है नारी की मुक्ति तभी हो सकती है जब उसे आर्थिक आत्मनिर्भरता के साथ सामाजिक स्वतंत्रता भी मिले हमारे समाज में लड़कियों को आगे बढ़ाया जा रहा है नारी शिक्षा एवं संवैधानिक अधिकारों से नारी की स्थिति में बहुत परिवर्तन आया है

किन्तु सामाजिक संदर्भ में नारी आज भी परम्पराओं, रूढ़ियों, संस्कारों से पूर्वतः स्वतंत्र नहीं हुई है।

नारी के स्वतंत्र व्यक्तित्व एवं स्वाभिमान ने अनेक अंतर्द्वन्द्व, कुण्ठा, एवं संघर्ष को जन्म दिया उसका स्वाभिमान स्वतंत्रता ने नारी आन्दोलन को सशक्त वाणी प्रदान की पश्चिमी नारी आन्दोलन ने भारतीय समाज में नारी स्वतंत्रता के नए रूपों को जन्म दिया नारी अस्तित्व का दृष्टिकोण पुरूष विरोधी नहीं है बल्कि पुरूष वर्चस्व का विरोधी है समाज में नारी की पहचान और क्षमता मंगवाने का एक सार्थक एवं कारगर प्रयास है।

20वीं सदी में भूमण्डलीकरण सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्थितियों के कारण भारतीय समाज में नारी अस्तित्व को बल दिया नारी अस्तित्व अपने स्थूल रूप में नारी की वैयक्तिकता व्यक्ति या मनुष्य के रूप में उसकी गरिमा, प्रतिष्ठा तथा पहचान है, जिसमें अपने जीवन पर खुद उसकी सत्ता होती है। नारी अस्तित्व नारी के व्यक्तित्व की विशिष्ट एवं

विलक्षण पहचान है जो उसके समाज की विलक्षण ऐतिहासिकता एवं वास्तविक अथवा मध्यकीय अतीत से जोड़ती है यह नारित्व का भाव है जिसमें नारी की इच्छा–अनिच्छा महत्वपूर्ण होती है यह नारी में अध्म उत्पन्न करते हुए स्वयं को श्रेष्ठ सिद्ध करने की ख्वाईश भी व्यक्त करती है नारी साहित्य मूलतः हमारे समाज के मध्यमवर्ग पर आधारित है।

मध्यमवर्ग की नींव एक ओर तो उसकी आर्थिक स्थिति पर है दुसरी ओर उसके परिवार की केन्द्र बिन्दु नारी पर नारी अस्तित्व में सर्वथा एक नई चेतना आई–नारी को देखने समझने मूल्यांकन की नई दृष्टि और जीवन के नवीन परिवर्तित प्रतिमानों को लेकर जीवनगत बाध्य व्यापारों की विवेचना का सहारा लेकर उपन्यासकारों ने नारी चरित्र को अपने उपन्यासों में संपूर्णता से उभारा है उसके प्रति किए गए सामाजिक अन्यायों का खुलकर पर्दाफाश किया है और उन्हीं के परिप्रेक्ष्य में नारी के उत्थान पतन को आंका है।

नारी के अंतर्मन के विश्लेषण का कार्य 8वें दशक के उपन्यासकारों में महिला अस्तित्व ने निखारा है नारी ने अपने कथा साहित्य में मुख्य सरोकार समकालीन जीवन स्थितियों में मनुष्य के भीतरी संसार का उद्घाटन किया है लेकिन यह भीतरी कशमकश भी बदलते जीवन परिवेश का आत्मीय ब्योरा और कलात्मक नजर के साथ अंकन भी करती चली है।

महिला ने अपने उत्साह में ये भुला दिया है कि कथा साहित्य के व्यापक के निवास पर अलग–अलग रंग के रूप में भी उनका कुछ महत्व हो सकता है। इन्होंने जीवन स्थितियों से रहित संवेदना का या संवेदनाविहीन जीवन स्थितियों के अर्थ को पूर्ण रूप से उजागर किया है।

महिला अस्तित्व में रचित रचानाओं में संसार के सभी पक्षों के चित्रों को उजागर किया है अपनी सरलता के कारण जन जीवन की जीवित शास्त्र बन गई है नारी मन की विभिन्न भावनाओं का चित्रण किया है साथ ही आज

की पढ़ी–लिखी युवतियों के विचार ईश्वर के संबंध में परम्परा से हटकर है नारी के प्रति संपूर्ण दृष्टिकोणों को बड़े ही खुले एवं बेझिझक ढ़ंग से समाज के सापेक्ष अपने जीवन की उधेड़बुन को दर्शाया गया है।

आज हमारे समाज में नारियों के व्यक्तित्व में बहुत बदलाव आया है आज वो एक पढ़ी–लिखी आत्म विश्वास से भरी एक सशक्त नारी के रूप में उभरी है जो आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर है उसने समाज में नारी के व्यक्तित्व को नई पहचान दी है उन महिलाओं को सलाम है जो अपने घर परिवार के साथ–साथ बाहर नौकरी पर जाकर अपने परिवार को आर्थिक रूप से भी मजबूत करती है पर साथ ही वो महिलाएँ भी सम्मान की हकदार है जो घर पर रहकर अपने पूरे परिवार की देखभाल करती है अपने पति और बच्चों परिवार के लिए अपना जीवन समर्पित कर देती है उसके बदले में उन्हें सिर्फ सम्मान ही चाहिए होता है।

नारी का अस्तित्व तभी संभव है जब वो अपने परिवार और समाज में एक उचित सम्मान पा सके वर्तमान में नारी अपने अस्तित्व की पहचान जानते हुए भी अपने अस्तित्व को पुरूष के प्रति समर्पित करके अपने को जटिल परिस्थितियों में डाल दिया है।

नारी की मुक्ति चाहते हुए नारी और पुरूष दोनों ही विकल्पहीनता की स्थिति में इधर–उधर भटक रहे है नित नये प्रयोग नारी की स्थिति को सुधारने के लिए हो रहे है फिर भी नारी की समस्याएं सुलझने के बजाए उलझती चली जा रही है इस संदर्भ में एम.ए. अंसारी के ये विचार प्रासंगिक है आज का पुरूष जीवन जीते–जीते अपना बोझ उठाते उठाते थक सा गया है अब वह नारी को दूर से आँवाज देकर अपनी सहायता के लिए बुलाना चाहता है। किन्तु उसने नारी को तो शैया पर लिटा कर नारी को पुरूष पर सहज विश्वास नहीं हो पाता कि वास्तव में पुरूष उसको अपनी सहायता के लिए बुला रहा है।

पुरूष ने पश्चाताप कर लिया है ऐसा विश्वास पुरूष रूपी इस निष्ठुर प्राणी पर संवेदनशील प्राणी नारी को सहज ही क्यों नहीं हो पा रहा है।

नारी के लिए एक ओर जहाँ उसमें अपने अस्तित्व के प्रति जागरूकता आयी है, वहीं उसके प्रति हिंसा भी बढ़ी है आज हमारे सामने उसके प्रश्न है जो नारी के अस्तित्व से जुड़े हुए है अनेक समस्याएँ और असमानताएँ है जिनका कारण है समाज के संस्कारों का न बदलना जो वस्तु अथवा सोच हमारे संस्कारों में शामिल हो जाती है वह चाहे सही हो अथवा गलत हमारी मानसिकता का अंग बन जाती है।

नारी की सारी लड़ाई इन्हीं रूढ़ियों से है जो यह सवाल खड़ा करती है कि क्या नारी इन सारी परम्पराओं और रूढ़ियों को तोड़कर नई दुनिया को रचने का साहस रखती है भारतीय समाज में नारी शब्द और नारी अस्तित्व को लेकर चर्चा तो हर काल में होती रही नारी के लिए चर्चा हर समाज में होती रही है भारतीय समाज में नारी शब्द और उसके अस्तित्व को लेकर प्रारंभ से ही दो तहर की धाराएँ प्रचलित रही है एक श्रद्धा के रूप में और दुसरी वस्तु के रूप में पारम्परिक समाज में नारियाँ श्रद्धा के रूप में मान्य थी किन्तु मुख्य धारा में निर्णायक स्थिति में वे कभी नहीं रही परन्तु आधुनिक समाज में तो उनकी स्थिति और खराब होती गयी।

पूंजीवाद के विकास और बाजार के वर्चस्व के कारण धीरे–धीरे वे वस्तु के रूप में तब्दील होती गयी श्रद्धा से वस्तु के रूप में तब्दील होने की प्रक्रिया इतनी भयावह पीड़ादायक और अपमानजनक रही है कि चिंतकों और समाज सुधारकों ने इस पर ध्यान देते हुए इसे बहुत ही पीड़ा के साथ प्रकट किया था कि गुलामी की यातना को जो सहता है वहीं जानता है और जो जानता है वहीं पुरा सच कह सकता है।

नारी को सामाजिक आर्थिक राजनैतिक न्याय और अंतर्द्वन्द्व से मुक्ति दिलाने के लिए केवल भारत में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व में प्रयास जारी है नारी मुक्ति का सवाल सबके सामने खड़ा है और मुक्ति का रास्ता तलाशने के लिए प्रेषित कर रहा है यह सोचना गलत होगा कि नारी का मुक्ति पुरूषों के विनाश से संभव है पुरूष और नारी में किसी का भी विनाश दूसरे के उत्थान और मुक्ति का कारण नहीं बन सकता इस संदर्भ में विनोद मिश्र का निम्न विचार दर्शनीय है नारी मुक्ति आज भी करीब–करीब सारी दुनिया के नारी समाज का नाश है इसका मतलब हुआ कि मानवता का आधा हिस्सा आज भी पराधीन है वर्तमान सामाजिक व्यवस्था का सम्पूर्ण ताना–बाना पुरूषों द्वारा पुरूषों के लिए निर्मित है।

पुरूष द्वारा नारी पर थोपी हुई गुलामी ठोस रूप है घर की चार दिवारी में नारी को कैद रखना और उसे सन्तान उत्पत्ति की मशीन समझना नारी मुक्ति पुरूषों के विनाश के जरिए नहीं बल्कि नारी–पुरूष के बीच समानता के मानवीय संबंधो को स्थापित करने के जरिए ही हासिल हो सकती है आज वह समय आ गया है। जब नारी की स्थिति पर नये तरीके से विचार–विमर्श किया जाय आज प्रगतिशील विचारों की नारी लेखिकाओं ने कमर कस ली है नित नये अध्ययन और अनुभव के जरिये अनुसंधान करना प्रारंभ कर दिया है।

पुस्तकें, लेख, नारे आदि लिखे जा रहे हैं ताकि नारी की पीड़ा से समाज परिचित हो सके ओर नारी को समस्याओं के मकड़जाल से मुक्ति मिल सके। नारी को अपने अस्तित्व के लिए सदा से संघर्ष करना पड़ा है। समाज में नारी के प्रति जागृति लाना तथा नारी के अस्तित्व के पहचान को स्थापित करने के प्रयास किए गए नारी के व्यक्तित्व की पहचान हेतु अनेक संघर्ष तथा आन्दोलन हो रहे है जिनका मुख्य उद्देश्य नारी के लिए एक सुखद भविष्य का निर्माण करना है।

नारी को निष्पक्ष न्याय मिले तथा उसके प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण का निर्माण हो तभी समाज में व्याप्त भेद समाप्त हो सकेगा।

नारी स्थिति के सुधार के लिए नित नये कानून और नियम बन रहे है फिर भी उनकी स्थिति में गुणात्मक सुधार नहीं हो पा रहा है इसके लिए समाज और सरकार की सोच को सकारात्मक गति प्रदान करने की जरूरत है दुनिया के इतिहास में जहाँ कहीं भी नारी के स्वामित्व के अधिकारों की बात उठी है तो वह एक प्रमुख नारी व्यक्तित्व के द्वारा ही उन नारियों में अपने अधिकारों के प्रति जबर्दस्त चेतना थी इसलिए उन्होंने उन तमाम बराबरी के अधिकारों को भिक्षावृत्ति से न प्राप्त कर संघर्ष करके ही प्राप्त किया। इसके लिए उन्हें बहुत बड़ी कीमत भी चुकानी पड़ी।

महादेवी जी ने ठीक ही कहा है कि हमें न किसी पर जय चाहिए ना किसी से पराजय न किसी पर प्रभुत्व चाहिए केवल अपना वह स्वत्व चाहिए, जिसका पुरूषों के निकट कोई उपयोग नहीं है परन्तु जिनके बिना हम समाज का उपयोगी अंग नहीं बन सकेगा। बराबरी के लिए नारी का संघर्ष दरअसल एक ऐसी समाज व्यवस्था के लिए संघर्ष है जिसमें बराबरी हासिल करने की आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक परिस्थितियाँ मौजूद हो, ऐसा समाज एक समतावादी समाज ही हो सकता है, जो व्यक्तिगत सम्पत्ति और वर्ग विभाजन को समाप्त करेगा। जिसमें नारी का प्रथम परिचय घर में उसकी भूमिका से नहीं बल्कि समाज में उसके योगदान से होगा।

भारतीय नारी की पारम्परिक त्रासदी पूर्ण जीवन एवं उनके ऊपर पड़ने वाले सामाजिक राजनैतिक आर्थिक पहलुओं को उद्घाटित करते हुए, वर्तमान समय में उनके भीतर उठते हुए अंतर्द्वन्द्व को चित्रित करने का प्रयास किया है इस संदर्भ में अनेक लेखकों विचारकों, समाजसेवियों, समाज सुधारकों के मन्तव्यों का हवाला देकर नारी की जिन्दगी रूपी गाड़ी को पटरी पर लाने के लिए क्या उपाय हो सकते है इस पर भी एक दृष्टि डालने की मैंने कोशिश

की है। अनेक नारी लेखिकाओं जैसे कृष्णा सोबती, महादेवी वर्मा एवं मुन्नू भण्डारी आदि लेखिकाओं के लेखों में मुखर हुई की पीड़ा को प्रकट किया है।

स्वतंत्रता के पूर्व तथा स्वतंत्रता के बाद नारी विषयक चेतना को आधार मानकर उनके दुख दर्द से पुरूष समाज को संवेदना से भरने के लिए मैंने इस अध्याय में पूरा प्रयास किया है मुझे आशा और विश्वास है कि मेरे द्वारा मेरे शोध विषय निष्कर्ष नारी को मुक्ति प्रदान करने में सहायक सिद्ध होंगे।

5.1 महिला दृष्टिकोण में नारी मुक्ति

महिलाओं के सम्मान शिक्षा और सुरक्षा को लेकर पूरी दुनिया में 8 मार्च को एक साथ महिला दिवस मनाने का निश्चय किया गया था इसके बावजूद कई देशों में महिला दिवस या तो रस्म अदायगी भर होता है। या तो माना भी नहीं जाता भारत में इसका आयोजन निश्चित तौर पर होता है। जिसका असर नगरों में ज्यादा ओर देहातों में मामूली सा होता है।

अतीत में हमारे देश में नारी का सम्मान बहुत था जबकि अन्य देशों में यहाँ तक माना गया कि नारी को केवल इसलिए बनाया गया है कि वह पुरूष का वंश चला सकें कमोबेश 19वीं शताब्दी तक यही मान्यता रही मगर हमारे देश में ऐसी किसी मान्यता में विश्वास नहीं था यूरोप में नारियों की दयनीय हालत का इससे भी पता चलता है कि इग्लैण्ड में उन्हें वोट का अधिकार सन् 1918 में फ्रांस में सन् 1920 में और अमेरिका में तो यह अधिकार सन् 1944 में मिला हमारे देश की स्थिति को लेकर एकदम उलट रही भारतीय मानस का अतीत सिद्धांत स्वीकार्यता और मान्यता तीनों दृष्टि से नारी को श्रेष्ठ और सम्मानीय स्थान देता आया है यहाँ नारियों को अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए किसी संघर्ष आंदोलन की जरूरत ही नहीं पड़ी। हमारे यहाँ नारी शक्तिकरण के जितने आंदोलन चले वे मानसिकता को बदलने और व्यवहार में आई जड़ता को तोड़ने के लिए ही चलाए गए सैद्धांतिक तौर पर

तो हमारे यहाँ नारी अधिकार निर्विवाद रहा है जिन दिनों इंग्लैंड में नारी को अधिकार देने और न देने की बहस चल रही थी तब सन् 1916 में एनीऐसेन्ट कांग्रेस की सभापति बन चुकी थी और सन् 1925 में दुसरी महिला सरोजनी नायडू ने इस पद को सुशोभित किया जबकि वह समय परतंत्रता का था और स्वतंत्रता के बाद तो पहले ही दिन से संविधान में नारियों को बराबरी का न केवल सर्वत्र अधिकार है अपितु कहीं कहीं तो विशिष्ट अधिकार भी है।

आज के दौर में हमारे देश में संवैधानिक अधिकारों की दृष्टि से महिलाएँ किसी से किसी भी तरह से कम नहीं है मगर वे आज उतनी सुरक्षित और सम्मानित नहीं दिखती, जितने अधिकार ओर अवसर उन्हें संविधान द्वारा प्राप्त है वह पीड़ित प्रताड़ित व भयभीत है इसके साथ ही अपने अस्तित्व को लेकर आशांकित भी जो निराधार भी नहीं है।

संविधान में सम्पूर्ण अधिकार प्राप्त महिला अपराध का शिकार है आज हमें महिला सशक्तिकरण के दिखावे की बजाय उन्हें अपराध मुक्त जीवन के अवसर देने और संत्रास से उबारकर ऊपर लाने की चिंता करने की आवश्यकता है यह चिंता इस नजरिये से भी जरूरी है कि आधी दुनिया को अशिक्षित असम्मानित और उपेक्षित छोड़ कर उन्नति की कल्पना भी नहीं की जा सकती। अगर गौर करें तो स्पष्ट होता है। कि समाज में कहीं भी किसी भी किस्म के घटने वाले अपराध से प्रत्यक्ष या परोक्ष महिला ही पीड़ित होती है मगर इस नजरिये को लेकर आडम्बर की बजाय ठोस उपायों के साथ महिला दिवस मनाया जाए। तभी इसकी सार्थकता होगी अन्यथा इसका आयोजन एक वर्षिक तमाशा ही बनकर रहेगा। वैसे हमारे देश में महिलाओं को लेकर दो तस्वीरे है एक अतीत ओर आज के समाज ने उनके असम्मान को कभी बर्दाश्त भी नहीं किया क्योंकि हमारा समाज लंबे समय तक अपनी माताओं के नाम से होती रही है।

रेणुकानंदन, देवकीनंदन राधेय, सौमित्र और गौरीनंदन का संबोधन इस प्रसिद्ध परम्परा का ही प्रतीक है दरअसल हमारे अतीत की नारी गौरवगाथा अनंत है उसके भावों की प्रतिष्ठा अनूठी और अद्वितीय है मगर आज की स्थिति बदल गई है स्थिति यह है कि वह घर की बाजार या कार्यस्थल सभी स्थानों पर मानसिक व शारीरिक हिंसा और प्रताड़ना झेलने को मजबूर है सवाल है कि देश की नारी का स्थान इतना ऊँचा था वहाँ उनकी इतनी दुर्दशा क्यों हुई। अगर आज हम महिला दिवस उसके सशक्तिकरण की बात करते है तो उसकी भागीदारी की चिंता करते है तो इस मानसिकता और व्यवहार पर विचार करना होगा यह विचार किसी को दोषी ठहराने के लिए नहीं बल्कि भविष्य में सावधानी बरतने के लिए आवश्यक है और दुनिया के अन्य देशों की तरह नहीं बल्कि हमारे अतीत और वर्तमान परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए महिला दिवस का आयोजन भिन्न प्रयोजन ध्येय और उपायों के लिए किए जाने के लिए भी आवश्यक है सही दिशा में उठाया गया सही कदम होगा।

Saurav shree

आधुनिक युग की महिलाएँ समाज से अपने लिए देवी का संबोधन नहीं मांगती है नारियों को देवी समझा जाए या नहीं लेकिन कम से कम उन्हें मानव की श्रेणी से नीचे न गिराया जाए हजारों साल पहले महिलाओं की स्थिति पुरूषों से कहीं कम नहीं थी लेकिन कुछ ऐतिहासिक कारणों से वे नीचे धंसती चली गई आज यह पूरे समाज का दायित्व है कि वह नारी को बराबरी का स्थान दे अब इसको कोई नारी मुक्ति का नाम दे या नारी शक्तिकरण का उससे कोई विशेष अंतर नहीं पड़ता नारी और पुरूष एक दूसरे के शत्रु नहीं है बल्कि पूरक है कहा भी गया है कि शिव शक्ति के बिना शव के समान है राधा के बिना कृष्ण आधा है।

नारियों की समस्या है या यूं कहिए सामाजिक समस्या का एक अंग है साफ है कि नारी स्थिति में बदलाव लाने के लिए पूरे सामाजिक ढांचे एवं

सोच में बदलाव लाना जरूरी है स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत में महिलाओं की दशा को सुधारने के लिए अनेक प्रयास किए गए और विविध व्यूह–रचानाएँ बनाई गई परन्तु कल्याणकारी योजनाओं का वांछित प्रभाव भारतीय महिलाओं पर समान रूप से नहीं पड़ा।

पंचवर्षीय योजनाओं के क्रियान्वयन के दरमियान गरीबी उन्मूलन एंव रोजगार सृजन के जो प्रयास हुए, उन सब का लाभ महिलाओं तक नहीं पहुँच पाया इसके परिणामस्वरूप महिलाओं की सामान्य स्थिति में कोई उल्लेखनीय सुधार नहीं हुआ और गरीबों में भी ठेठ निम्नतम स्तर पर महिलाएँ सबसे ज्यादा गरीब रही इसके अलावा महिलाएँ हिंसा और अत्याचारों का शिकार भी बनती रही है सन् 1975 से सन् 1985 की अवधि में अंतर्राष्ट्रीय महिला दशक मनाया गया, उस दरमियान राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अनेक परिषदों की बैठके आयोजित हुई और नीति–विषयक अनेक अध्ययन लेख लिखे गए बल्कि सन् 1995 में चीन की राजधानी बीजिंग में प्रथम अंतर्राष्ट्रीय महिला परिषद का आयोजन भी हुआ इन तमाम प्रयत्नों के बावजूद महिलाओं के विकास के क्षेत्र में प्रगति अत्यंत धीमी रही।

विगत चार दशकों के दरमियान महिलाओं संबंधी नीतियों में बराबर परिवर्तन आता रहा है महिलाओं को माता और गृहणि के रूप में देखते हुए सन् 1950 के दशक से सन् 1970 के दश तक विकासोन्मुखी आयोजन और नीतियों में उनकी जरूरतों को कल्याणकारी प्रवृत्तियों द्वारा पूरा करने की बात सोची गई थी उनमें महिलाओं का स्वास्थ्य और परिवार कल्याण कार्यक्रम लक्ष्य बिन्दु थे जिसमें समानता, शांति एवं विकास के विषय शामिल थे महिलाओं पर ध्यान केन्द्रित करने वाली शोधों के प्रयासों को प्रोत्साहन दिया गया महिला स्थिति जांच आयोग की स्थापना की गई।

संयुक्त राष्ट्र के द्वारा घोषित महिला दशक सन् 1980 में कहा गया है कि विकास का अर्थ यहाँ सम्पूर्ण विकास है महिलाओं की दशा में सुधार के

लिए नारियों और पुरूषों दोनों की दशा के दृष्टिकोण की दशा में परिवर्तन की जरूरत है महिलाओं के विकास को सामाजिक विकास का सवाल नहीं मानना चाहिए बस विकास के प्रत्येक पहलू के आवश्यक घटक के भाग के रूप में गिनने चाहिए

महिलाओं की ओर विकास की प्रक्रिया में उनकी भूमिका को सुधारने के लिए तमाम राज्यों के सहयोग, समान, हित, समता, सार्वभौमत्व समानता और परस्परावलंबन पर आधारित नूतन अंतर्राष्ट्रिय आर्थिक व्यवसायिक की स्थापना हेतु बौद्धिक परियोजना के आंतरिक भाग के रूप में विकास को देखा जाना चाहिए महिलाओं के दृष्टिकोण में महिलाओं की भूमिका के सोचने विकासोन्मुखी अनुसंधान एवं नीति में महिलाओं को दृश्यमान बनाया। परन्तु मुख्य प्रवाह की विचारधारा में महिलाएँ एक नई श्रेणी के रूप में उभरी इतना ही इस दृष्टिकोण में निपुर्णता और कार्य दोनों ने परावलम्बन ओर पूंजीवादी व्यवस्था के ढांचागत सिंद्धांतो के द्वारा आकार गृहण किया जबकि सामाजिक संबंधों के अभिगम ने ऐतिहासिक रीति से विद्यमान महिलाओं की दासता और नारी–पुरूष संबंधों पर ध्यान केंद्रित किया।

महिला दशक के दौरान हुए समस्त अनुसंधानों का एक सर्वमान्य निष्कर्ष था कि कई अपवादों के सिवाय आर्थिक संसाधन आमदनी और रोजगार में महिलाओं की पहुँच की स्थिति तुलनात्मक रूप से बिगड़ी है ऐतिहासिक दृष्टिकोण से भारत में महिलाओं के आंदोलन ने आंतरिक और बाहर दोनों तरह की ताकतों से आकार गृहण किया है वह महिलाओं या महिलाओं कार्मिकों की आंकाक्षाओं और अनुभवों का परिणाम नहीं था।

19वीं सदी के पुरूष सामाजिक सुधारकों की हलचल का परिणाम था सांस्कृतिक राष्ट्रवादियों ने परिवार नामक संस्था के द्वारा सांस्कृतिक पर पकड़ को मजबूत बनाने के साधन के रूप में महिला शिक्षा पर बल दिया था महिलाओं को सांस्कृतिक मूल्यों की संरक्षक के रूप में देखा गया।

महात्मा फुले ने नारियों और बालिकाओं को शिक्षा से वंचित रखने को वर्तमान जाति प्रथा और असमानता को यथावत् रखने के प्रयास के रूप में देखा संस्थानवादी काल के दौरान राजनीतिक संघर्ष में तथा मजदूर किसान व आदिवासी आंदोलन में महिलाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

स्वदेशी और स्वराज हेतु गांधीजी के आह्वान में असहयोग आंदोलन और भारत छोड़ों आंदोलन में महिलाएँ बहुत बड़ी संख्या में शामिल हुई थी पालन–पोषण प्रेम एवं अंहिसा आदि नारियों गुणों का मूल्य आंकते हुए गांधीजी ने इन मूल्यों को सार्वजनिक व राजनैतिक जगत में लाने का तथा राजनीति को महिलामय बनाने का प्रयास किया था आज के नारीवादियों को उनके कई मंतव्य संभव है पसंद न आएं उदाहरण, राजनैतिक सत्ता हासिल करने से महिलाओं को दूर रहना चाहिए ऐसा उन्होंने कहा था परन्तु काम की प्रतिष्ठा पर उन्होंने जो बल दिया वह स्वाश्रयी महिला सेवा संघ (सेवा) के संस्थापकों एवं सदस्यों के लिए आज भी प्रेरणास्पद है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के दशक में महिलाएँ फिर से एक बार घर के अंदर चली गई दिखती थी और राजनैतिक क्षेत्र में वे अदृश्य नजर आती थी संसाधनों पर अनका कोई अंकुश न था वे उन्हें प्राप्त न थे। पर जनसंख्या नियंत्रण में उन्हें लक्ष्यबिन्दु बनाया गया था महिलाओं के प्रति कल्याकारी अभिगम के परिणामस्वरूप ही सन् 1953 में केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड की स्थापना हुई थी महिलाओं के लिए एक अन्य बड़ा नीतिगत दस्तावेज महिलाओं हेतु राष्ट्रीय दृष्टिकोण योजना है

7वीं पंचवर्षीय योजना के दौरान महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा यह दस्तावेज प्रकाशित किया गया था इसमें नारी–पुरूष असमानता के उल्लेखनीय उदाहरण विस्तार के साथ दिये गए थे इसमें प्रशिक्षण की कार्यनीति सरकारी विभागों में कल्याणकारी एवं विकासात्मक प्रवृत्तियों को अलग करने तथा स्वैच्छिक संस्थाओं को अधिक से अधिक सम्मिलित करने की सिफारिश

की गई थी इस योजना ने सन् 2000 तक महिलाओं के समग्र विकास की जरूरतों पर बल दिया और अंतर्संबंधित व परस्पर संलग्न व्यूह रचनाओं के बारे में सुझाव देने के साथ–साथ आलोचनात्मक क्षेत्रीय समीक्षाएँ महिलाओं की पसंद और स्थिति पुरूषों की पंसद और स्थिति से भिन्न होती है पर ज्यादातर सरकारी कार्यक्रम जिस तरह से बनाये और क्रियान्वित किए जाते है उसमें लक्ष्य परिवार रहता है और परिवार की आंतरिक सत्ता को ध्यान में नहीं लाया जाता। ऐसे कार्यक्रम महिलाओं को किनारे कर देते है और सिर्फ पुरूषों की जरूरतों को ही ध्यान में लाते है तथा अधिकांश पुरूषों को ही तकनीकी व अन्य साधनों से सुसज्जित करते है।

वर्तमान एवं ऐतिहासिक सबूत यह बताते है कि विकास से महिलाएँ अपनी परंपरागत भूमिका से खिसक गई है जो उन्हें महत्वपूर्ण संसाधनों पर कुछ अंकुश प्रदान करती थी महिलाओं का विस्थापन मात्र तकनीकों से होता है। ऐसा नहीं वरन पुरूषों को नए ढंग का काम मिलने से भी होता है। क्योंकि नारीयाँ बच्चों और परिवार के पोषण की जिम्मेदारी के कारण नये कार्य के लिए गतिशील होती है उनके पास नये शिक्षण और कौशल भी कम होते है परिणामतः वे नए प्रकार की रोजी प्राप्त नहीं कर सकती फिर औपचारिक क्षेत्र में महिलाओं को काम पर रखने की प्रवृत्ति कम होती है।

भारत में महिलाओं ने सरकारी नौकरी समेत विविध पुरूष प्रधान व्यवसायों में प्रवेश करने का कार्य अब महिला कर रही है ग्रामीण महिलाओं के जीवन में कुछ परिवर्तन लाने के लिए जिन लोगों ने काम किया है और जो कर रहे है ऐसे अनेक लोगों में से ही मैं एक हूँ एक समान लक्ष्य की तरफ आगे बढ़ने के लिए हम सब अलग अलग तरीके से कर रहे है प्रत्येक व्यक्ति दूसरों के सुझावों और परिवर्तनों को क्रियान्वित कर रहा है।

प्रौढ़ शिक्षा की कक्षाएँ चलाने वाले लोगों के द्वारा प्रक्रिया शुरू हुई थी महिलाओं के लिए आरक्षण की व्यवस्था करना जरूरी है लेकिन वहीं काफी

नहीं मूलभुत समस्या यह है कि आज की चुनावी राजनीति का स्वरूप ही ऐसा है कि जो महिलाओं के सामने अमेद्य अपरोध उपस्थित करता है अतः यदि चुनावों में सुधार लाने हेतु यदि पर्याप्त कदम उठाये जाएंगे, तभी महिलाओं में काफी संख्या में बदलाव देखा जायेगा।

सन् 1947 में भारत स्वतंत्र हुआ अंग्रेजों के शासन से मुक्ति मिली भारतीय नारी के मुक्ति का मार्ग प्रशस्त होने लगा परन्तु यह एक प्रयास मात्र बन कर रह गया स्वतंत्रता के बाद नारी उत्पीड़न का एक और तरीका भारतीय समाज में उभर कर सामने आने लगा।

नारी दशा के लिए दृष्टिकोण में सुधार के नाम पर भोली भाली जनता को गुमराह करके राजनैतिज्ञों ने अपना वोट बैंक बनाने का कार्य शुरू किया और इस तरह से नारी राजनीति में भी घसीटी जाने लगी।

समय की गति बढ़ती रही और वह समय आया जब स्वयं नारी ही नारी के उत्पीड़न में सक्रिय हो गयी इस संदर्भ में सारा समय 14 जनवरी 2006 में घुटन ओर मुक्ति के बीच शीर्षक से छपे लेख का कुछ अंश दृष्टव्य है आज शोषण घर से बाहर बीच चौराहे होने लगा है और सबसे बड़ा बदलाव है वो ये कि आज की सशक्त नारी ने औरत शोषण की जिम्मेदारी भी खुद ही संभाल ली है वह खुद भी इन कार्यों को अंजाम देती है अब आप इसे युगों तक की उसकी शोषित मानसिकता का परिणाम समझे या नारी दृष्टिकोण की उपलब्धि सच तो यह है कि वर्तमान में महिला हिंसा दहेज, हत्या या भ्रूण हत्या शोषण का स्वरूप जो भी हो पर इसके पीछे हाथ स्वयं औरत का ही होता है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद नारी के दृष्टिकोण में पर्याप्त परिवर्तन आया एक ओर परिवार की परंपरागत व्यवस्था इतनी और दुसरी और नारी स्वतंत्रता के कारण युवा नारियों के दृष्टिकोण में बदलाव आया आजीविका के साधन

स्वयं पाने वाली नारियाँ स्वतंत्र जीवन में आस्था रखने लगी उन्होंने जीवन और चिंतन के स्तर पर पुरूषों के समान ही अपने व्यक्तित्व को स्थापित कर लिया आज की नारी ने अपने व्यक्तित्व को स्थापित कर लिया आज की नारी अपने व्यक्तित्व को महत्व देने लगी वह आगे बढ़कर जीवन अपनी समस्या का समाधान करने लगी तथा अपने हक के लिए खुलकर सामना करने लगी है।

आजीविका के साधना स्वयं जुटा पाने वाली नारियाँ स्वतंत्र जीवन में आस्था रखने लगी उन्होंने जीवन और चिंतन के स्तर पर पुरूषों के समान ही अपने व्यक्तित्व को स्थापित कर लिया आज की नारी पूर्वत्व की खोज में प्रयत्नशील है, लेकिन इस कोशिश में उसे हर तरफ से विरोध का सामना करना पड़ता है परम्परागत वर्जनाओं से मुक्त नारी दृष्टिकोण नारी जीवन समस्याओं का सामना कर रही है फिर भी वह स्वतंत्र व्यक्तित्व की खोज में अग्रसर है।

gaurav shete

हिन्दी कथा साहित्य में नारी कथाकारा ने अपनी महत्वपूर्ण हिस्सेदारी निभायी है स्वतंत्रता के काल में महिला कथाकारों ने नारियों की मानसिक गुलामी, सामाजिक गतिरोध, नारी, जीवन के तनाव और संघर्ष आदि को मुक्त ह्रदय से व्यक्त किया है।

शिक्षा एवं स्वतंत्रता के अभाव के कारण स्वतंत्रता से पूर्व हमारे देश में नारी की स्थिति बड़ी दयनीय रही है इसलिए राष्ट्रीय आन्दोलन में महिलाओं की भूमिका नगण्य रही है स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश की स्थिति में जो परिवर्तन हुआ है उसका प्रभाव नारी वर्ग पर भी पड़ा है।

शिक्षा प्रचार–प्रसार के कारण नारी जीवन के सभी क्षेत्रों में सक्रिय दिखाई देने लगी यद्यपि प्रारंभ में इनकी मात्रा कम ही रही है सन् 1960 के

बाद महिलाओं ने अपनी शक्ति एवं योग्यता के कारण यह प्रमाणित करना प्रारंभ कर दिया कि नारियाँ पुरूषों से किसी भी रूप में कम नहीं है।

नारी की इसी चेतना शक्ति एवं योग्यता को साठोत्तरी काल कथाकारों ने अपना विषय माना व नारी मुक्ति से संबंधित अनेक रचनाओं की रचना की जिनमें महिलाओं कथाकारों का भी योगदान रहा।

5.2 नारीवाद विचारधारा का नया रूपः

डॉ. राजेन्द्र प्रताप का कथन है "आजादी से पूर्व उपन्यास के सरोकार राष्ट्रीय और सामाजिक थे तो आजादी के बाद मूल्य विघटन राजनैतिक प्रपंच व्याप्त भ्रष्टाचार और सामाजिक व्यवस्थागत दबावों में पिसते लोग और इस सबसे ऊपर वैयक्तिक मूल्यों की प्रतिष्ठा का प्रयास इन्हीं सबके बीच कहीं टूट रहे थे।

नैतिकता के प्रतिमान हिन्दी उपन्यास में महिलाओं के उपन्यासों का रचनात्मक स्तर पर उनमें अनेक नवीन प्रवृत्तियाँ दिखाई देती है। युग संवेदना एवं बौद्धिक संवेदना के कारण ऐसी विशेषताओं का प्रभाव स्वाभाविक है क्योंकि रचनाकार का अपना एक दृष्टिकोण का परिप्रेक्ष्य सर्जनात्मक रूप में सामाजिक यथार्थ बोध से उत्पन्न मूल्यों प्रवृत्तियों एवं युगीन स्थितियों को निरूपित किया ये प्रवृत्तियाँ आज के जीवन में जीवन परिवेश से अद्‌भुत है महिला के जीवन में भिन्न भिन्न दृष्टिकोणों में ही इस प्रकार की वैचारिक प्रक्रिया दिखाई पड़ती है इनमें कुछ विशेषताएँ पूर्ववर्ती उपन्यासों में भी मिलती है।

यथार्थवाद, प्रकृतिवाद, आदर्शवाद आदि लेकिन यहाँ की प्रवृत्तियाँ सर्जनात्मक धरातल की आवश्यकता के रूप में ना आकर लेखकीय चिंतन के रूप में मुखरित हुई है अर्थात् आज के रचनात्मक अनुभवों पर आरोपित न होकर सामयिक शून्य स्थिति एवं वस्तुपटक दृष्टिकोंण से त्याजित हुई है जीवन की जटिल विविध एवं परम्परा बोध की रूढ़ियों से संबंध भाव चेतना

के परिवर्तित के साथ मानव मूल्यों आस्थाओं एवं विचारों में परिवर्तित धारणाओं के प्रत्यक्ष दर्शन आठवें दशक के महिला लेखन में होता है।

समाज में सर्वत्र संघर्ष व्याप्त है जिसका परिणाम है नवीन स्थापनाएँ नये आदर्श, नये मूल्य अर्थात् नया समाज प्राचीनता के प्रति विद्रोह और नवीनता के प्रति आग्रह बढ़ता जा रहा है लगता है। मानवता भटक रही है और लक्ष्य तक पहुँचने के लिए प्रयासरत है पुरातन के प्रति विद्रोह मानव अपने अतीत से विरक्त होकर वर्तमान को ही सब कुछ समझता हुआ प्रगति के पथ की ओर बढ़ने का दावा कर रहा है।

महिला उपन्यासकारों के उपन्यास में समाज के इस बदलते स्वरूप का चित्रण आरंभ हुआ है तथा इसमें नवीनता के दर्शन हो रहे है। आधुनिक समय में महिला उपन्यास विश्वव्यापी मूल्य संक्रमण के प्रभाव से अछूते नहीं है वैसे भी चेतना का संबंध मनोविज्ञान से है और चेतना की प्रमुख विशेषताएँ है साहित्यक गतिविधियों को तत्कालीन गतिविधियाँ प्रभावित एवं प्रचलित करती है।

gujarat shree

स्वाधीनता आंदोलन के दौरान किए गए संघर्ष में जहाँ हिन्दी उपन्यासों में शिक्षित किया गया वहीं स्वाधीनता के उपरांत लिखी गई, औपन्यासिक कृतियों में आजादी के मोह भंग नेताओं की स्वार्थपरता एवं गांधीवादी मूल्यों के विघटन का पर्याप्त चित्रण हुआ स्वाधीन भारत में लिखे गए उपन्यासों में विषय वैविध्य है जीवन की व्यापकता है, चिंतन की प्रौढ़ता है तथा शैली शिल्प के नये प्रयोग है व्यंग्य को धारदार हथियार बनाकर जीवन के हर क्षेत्र में व्याप्त विसंगति को राग दरबारी जैसे सशक्त उपन्यास में श्री लाल शुक्ला ने व्यक्त किया स्वतंत्रता के बाद भारत में लिखे गए उपन्यासों की सूची बहुत लम्बी है क्योंकि उनके उपन्यासों ने अलग–अलग कारणों से पाठकों का स्थान आकृष्ट किया है।

स्वतंत्रता उपन्यासों में से कुछ तो कदम की मौलिकता के कारण चर्चित रहे है तो कुछ अपनी चरित्र सृष्टि के कारण कुछ उपन्यासों में किए गए भाषिक प्रयोग उनकी विशिष्टता रेखांकित करते है स्वतंत्रता के बाद हिन्दी उपन्यासों में महिलाओं का भी विशेष योगदान रहा है।

सदियों से परम्परा और रूढ़ियों की जंजीरों में जकड़ी महिलाओं की कलम यौन संबंधों, काम चेष्टाओं और रति विषयक नारी दृष्टि को अंकित करने में अपनायी थी आज की महिलाओं में कृष्ण सोबती, अमृत प्रीतम्, चित्रा मुद्गल नासिर रागु ममता कालिया मुन्नू भण्डारी आदि महिलाओं ने उपन्यास जगत में अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाई है इन्होंने नारी विषयक सम्यक दृष्टिकोणों को देखते हुए उसके संपूर्ण जीवन की व्यथा को अपनी लेखनी के माध्यम से एक सुन्दर चित्र के रूप में उभारा है इन्होंने उपन्यासों में परम्परागत रूढ़ियों स्थापित मान्यताओं के विरूद्ध नारी स्थिति का वास्तविक चित्रण किया है प्रेम, वात्सल्य, विवाह, वासना, ममता आदि का सशक्त की है उन्होनें अपने समकालीन जीवन का यथार्थ चित्रण किया।

स्वतंत्रता के बाद की महिला उपन्यासकारों ने समाज का संक्रमणकाल समाज में वृद्धजनों और नारियों की स्थिति क्या है यह उसके सांस्कृतिक विकास का सबसे बड़ा मापदण्ड माना जा सकता है। उस समाज में नारी–पुरूष के आपसी संबंध कैसे है, चूंकि हर वर्ग हर पीढ़ी हर समुदाय के संबंधों में सार्वाधिक सामान्य घटक के रूप में नारी–पुरूष का परस्पर संबंध ही है।

भारतीय समाज की मानसिकता थोड़ी संकीर्ण दिखाई पड़ती है यह संकीर्णता नारी और पुरूष के आपसी संबंधों की व्याख्या करने में ही नहीं बल्कि नारी और पुरूष को देखने के अलग–अलग नजरिए की भी वकालत करती है इस संदर्भ में कृष्णा सोबती का कहना है क्या हम याद करना पसंद करेंगें कि भारतीय मानसिकता अपने समूचे आदर्शों तामझाम के साथ बराबर

एक खास तरह की संकीर्णता का शिकार नहीं है ऐसे में कोई भी समूह या भीड़, धर्म, वर्ण और जाति–पाति की सीमाओं को लांघ एक बड़ी दुनिया में जीना चाहे जीकर दिखाएं तो उसका हमें अभिनंदन करना है जहाँ पहले नारी अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए मृत्यु तक का वरण कर लेती थी वहीं आज भी नारी विभिन्न समस्याओं को झेलकर अपना जीवन सुखमय बनाना चाहती है।

पुरूषों ने ही नारियों को बाजार में ला कर खड़ा किया है उनकी लोलुपता ने ही नारी की यह स्थिति की है।

नारीवाद की कुछ शाखाएँ वृद्ध समाज के राजनैतिक झुकाव को बारिकी से नजर रखती है जैसे उदारवाद और रूढ़िवाद या पर्यावरण पर ध्यान केन्द्रण उदारवादी नारीवाद समाज की संरचना को बदले बिना राजनैतिक और कानूनी सुधार के माध्यम से पुरूषों और महिलाओं की व्यक्तिवादी समानता की तलाश करता है।

gaurav shree

नारीवादी में नवउदारवादी चोले द्वारा नारीवाद के उस स्वरूप को सामूहिकता के बजाय व्यक्तिगत रूप से अलग–अलग किया जा रहा है और सामाजिक असमानता से अलग हो रहे है इसके कारण वह तर्क देती है कि उदारवादी, नारीवाद पुरूष प्रयुत्व शक्ति या विशेषाधिकार की संरचनाओं के किसी भी निरंतर विश्लेषण की पेशकश नहीं कर सकता है।

नारीवाद या यौगिकवादी रूप पश्चिमी मार्क्सवादी विचार से विकसित हुआ है और कई अलग अलग आंदोलन के लिए प्रेरित किया है जो सभी पूंजीवाद की आलोचना में शामिल है और महिलाओं के लिए विचारधारा के संबंधों पर केंद्रित है नारीवाद का तर्क है कि पूंजीवाद महिलाओं के उत्पीड़न का मूल कारण है और घरेलू जीवन और रोजगार में महिलाओं के खिलाफ भेदभाव पूंजीवादी विचारधाराओं का एक परिणाम है।

नारीवादी विचार के कुछ आयोजन परिसरों के लिए एक चुनौती परेशान करती है अपने अधिकांश इतिहास के दौरान पश्चिमी यूरोप और उत्तरी अमेरिका की मध्यम वर्ग की श्वेत महिलाओं द्वारा नारीवादी आंदोलनों और सैद्धांतिक विकास का नेृतत्व किया गया था हालांकि अन्य जातियों की महिलाओं ने वैकल्पिक नारीवाद का प्रस्ताव रखा है।

1960 के दशक में संयुक्त राज्य अमेरिका में नागरिक अधिकारों के आंदोलन और अफ्रीका, अमेरिका के कुछ हिस्सो और दक्षिण पूर्व एशिया में यूरोपीय उपनिवेशवाद के पतन के साथ इस प्रवृत्ति में तेजी आई उस समय से विकासशील देशों और पूर्व उपनिवेशों में रहने वाली महिलाएँ जो रंग या विभिन्न जातीयता की है या गरीबी में रह रही है।

नारीवादी विचाराधारा भिन्न है कुछ नारीवादी महिलाओं को महिलाओं के रूप में नहीं देखते है उनका मानना है कि जन्म के समय उनके लिंग के कारण उन्हें अभी भी पुरूष विशेषाधिकार प्राप्त है इसके अतिरिक्त कुछ नारीवाद की विचारधारा के कारण अस्वीकार करते है कि लिंग के बीच सभी व्यवहारिक मतभेद समाजीकरण का परिणाम है इसके विपरीत कई नारीवादियों और ट्रांस नारीवादियों का मानना है कि लिंग परिवर्तित महिलाओं की मुक्ति नारीवादी लक्ष्यों का एक आवश्यक हिस्सा है।

नारीवाद की तीसरी लहर अधिकारों का अधिक समर्थन करते है। नारीवादी में एक प्रमुख अवधारणा की है। जहाँ लिंग परिवर्तित महिलाओं या नारीलिंग गैर अनुरूपता के प्रति तर्कहीन डर, घृणा या भेदभाव किया जाता है लेकिन समय के बदलने पर नारी ने अब अपनी विचारधारा को भी बदल लिया है अब वह सब कुछ भूलकर त्याग कर आगे बढ़ने के लिए लड़ रही है नारी स्त्री महिला चाहे जिस नाम से पुकारों नारी तो एक ही है ईश्वर की वो रचना जिसे उसने सृजक की शक्ति की है।

ईश्वर की वो कल्पना जिसमें प्रेम, त्याग, सहनशीलता, सेवा और करूणा जैसे भावों से भरा ह्रदय है क्योंकि कल तक जो नारी और पुरूष एक दूसरे के पूरक थे जो एक होकर एक दूसरे की कमियों को पूरा करते थे जो अपनी–अपनी कमजोरियों के साथ एक दूसरे की ताकत बने हुए थे आज एक दूसरे से बराबरी की लड़ाई लड़ रहे है लेकिन यह समझ नहीं पा रहे कि इस लड़ाई में वे एक दूसरे को नहीं बल्कि खुद को ही कमजोर और अकेला करते जा रहे है पहले नारी का स्थान घर की चारदिवारी तक सीमित था लेकिन आज वो हर सीमा को चुनौती दे रही है चाहे राजनीति का क्षेत्र हो चाहे सामाजिक चाहे हमारी सेनाएँ हो चाहे कारपोरेट जगत आज की नारी हर क्षेत्र में सफलता पूर्वक दस्तक देते हुए देश की तरक्की में अपना योगदान दे रही है।

समय के साथ नारी ने परिवार और समाज में अपनी भूमिका के बदलाव को एक चुनौती के रूप में स्वीकार किया है अपनी इच्छा शक्ति के बल पर सफल भी हुई लेकिन आज वो एक अनौखी दुविधा से गुजर रही है आज उसे अपने प्रति पुरूष अथवा समाज का ही नहीं बल्कि उसका खुद का भी नजरिया बदलने का इंतजार है।

आधुनिक समाज में नारी स्वतंत्रता महिला शक्ति महिला उदारीकरण जैसे भारी भरकम शब्दों के जाल में न केवल ये दोनों ही बल्कि एक समाज के रूप में हम भी उलझ कर रह गए है इन शब्दों की भीड में हमारे कुछ शब्द इन कल्पनाओं में हमारी कुछ कल्पनाएँ इन आधुनिक विचारों में हमारे कुछ मौलिक विचार कहीं खो गए क्योंकि कल तक जो नारी और पुरूष एक दूसरे के पूरक थे जो एक होकर एक दूसरे की कमियों को पूरा करते थे जो अपनी–अपनी कमजोरियों के साथ एक दूसरे की ताकत बने हुए थे आज एक दूसरे से बराबरी की लड़ाई लड़ रहे हैं लेकिन यह समझ नहीं पा रहे कि इस

लड़ाई में वे एक दूसरे को नहीं बल्कि खुद को ही कमजोर और अकेला करते जा रहे है जब प्रकृति का अस्तित्व ही अर्द्धनारीश्वर में है।

पुरूषों और नारी दोनों ही में है तो दोनों में अपने अपने अस्तित्व की लड़ाई व्यर्थ है इसलिए नारी गरिमा के लिए लड़ने वाली नारी यह समझ ले कि उसकी गरिमा पुरूष के सामने खड़ें होने में नहीं उसके बराबर खड़ें होने में है उसकी जीत पुरूष से लड़ने में नहीं उसका साथ देने में है इसी प्रकार को कमजोर मानने वाला पुरूष यह समझे कि उसका पुरूष महिला को अपने पीछे रखने में नहीं अपने बराबर रखने में है उसका मान नारी को अपमान नहीं सम्मान देने में है इसी प्रकार नारी को एक संघर्षपूर्ण जीवन देने वाले समाज के रूप में हम सभी समझे कि नारी न सिर्फ हमारे परिवार की या समाज की बल्कि वो सृष्टि की जीवन धारा को जीवित रखने वाली नींव है इस नई शब्दावली और उसके अर्थों को समझने की कोशिश में हम अपने कुछ खुबसूरत शब्द और उनकी गहराई को भूल गए अपनी संस्कृति में नारी और पुरूष की उत्पत्ति के मूल अर्द्धनारीश्वर को भूल गए भूल गए कि शिव के अर्द्धनारीश्वर के रूप में शीर्ष पुरूष का प्रतीक है और शक्ति नारी का आज हमारे देश में जिस प्रकार से नारी के जीवन में बदलाव आया है और वो जिस तरह से अपने जीवन में संघर्षों से लड़कर निरंतर आगे बढ़ रही है वो बहुत सराहनीय है अब वो एक पढ़ी लिखी आत्म विश्वास से भरी महिलाएँ है।

अकसर हम अपने आस पास या समाचार पत्रों में घरेलू हिंसा के बारे में पढ़ते रहते है कि पति अपनी पत्नी के साथ मारपीट करता है या दहेज के लिए प्रताड़ित करता है कई बार हम सुनते है कि पत्नी बिचारी समाज के डर से चुपचाप सहती रही यही सोच कर कि अगर वो अपने मायके गयी तो आज पड़ोस के लोग कहेगे कि पति का घर छोड़कर मायके में आकर बैठ गयी माँ बाप पर बोझ बन गयी है और न जाने क्या क्या और बाद में पता चलता है कि ससूराल वालों ने उसे जला कर मार दिया इस तरह के समाचारों से मन

बहुत विचलित हो जाता है ये कितना गलत है इस अन्याय को बिलकुल नहीं सहना चाहिए हमारे समाज में आज भी ऐसे लोग है जो बेटी को एक बोझ समझते है और भ्रूण हत्या जैसे अघन्य अपराध करते है थोड़े दिन पहले समाचार पत्र में एक घटना पढ़ी जिसने मन को झकझोर दिया, घटना थी कि बेटी पैदा होने के कारण ससूराल वालों ने बहु को जलाकर मार दिया इस तरह के समाचारों से मन बहुत विचलित हो जाता है ये कितना गलत है इस अन्याय को बिलकुल नहीं सहना चाहिए।

हमारे समाज में आज भी ऐसे लोग है जो बेटी को एक बोझ समझते है और भ्रूण हत्या जैसे जघन्य अपराध करते है समाज की इस कुरीतियों से आज भी हम जुझ रहे है इन कुरीतियों को जड़ से खत्म करने के लिए ठोस कदम उठाने चाहिए लोगों की विचारधारा बदलने की जरूरत है बेटी या बेटा दोनों बराबर है आज बेटी जिस तरह से अपने देश का नाम रोशन कर रही है वो किसी से छिपा नहीं है और ये बहुत गर्व की बात है।

बेटी हो या बेटा दोनों में से किसी की तुलना नहीं की जा सकती बेटे अगर माथे का तिलक है तो बेटियाँ सर का ताज होती है। नारी किसी भी समाज धर्म जाति व समुदाय का एक बहुत ही मजबुत व अहम हिस्सा है अगर आसान शब्दों में कहे तो नारी एक आधारभूत स्तंभ है जो एक समाज श्रेष्ठ धर्म व श्रेष्ठ समुदाय के निर्माण में सहायक होती है।

पुरूष जितना भी प्रयास करें उसके पीछे प्रोत्साहन नारी का ही होता है। आश्चर्य तो तब होता है जब आज के युवाओं की भी विचारधारा में ऐसी बीमार सोच मिलती है हद तो तब हो जाती है जब दोस्ती भाई बहन और बाप बेटी के रिश्ते भी शर्मसार और सहमें सहमें से नजर आते है फिर भी तब एक नारी की दयनीय स्थिति दिखाती है जब उस पर अत्याचार होते है नारी का मानसिक शारीरिक शोषण होता है। कुछ घरों में एक बहन, बहू, बेटी और माँ को उचित स्थान व सम्मान प्राप्त नहीं होता तो नारी को देवी बताने वाली

सभी बातें बेईमानी ही लगती है इतना ही नहीं कुछ लोग तो लड़कियों को बोझ मान कर कन्या भ्रूण हत्या जैसा घोर पाप कर बैठते है परन्तु बिना नारी के हम किसी भी समाज की कल्पना भी नहीं कर सकते शायद इसकी वजह एक ऐसी मानसिकता है जिसके अंतर्गत महिलाओं को बराबरी का नहीं बल्कि दोयम दर्जे का समझा जाता है उसी मानसिकता के चलते कुछ लोग महिलाओं को एक भावनाओं से भरी इंसान की जगह उपयोग की कोई वस्तु समझते है यदि घरों में बच्चों को नैतिक मूल्यों और महिलाओं का सम्मान सिखाया जाये तो महिलाओं को शोषित होने से बचाया जा सकता है इसके साथ ही हमारा समाज एक बहुत बड़ा कलंक से भी बच सकता है हमें जरूरत है तो महिलाओं के प्रति अपनी सोच और विचारधारा बदलने की किसी व्यक्ति को विचारधारा उसके समाज घर परिवार व स्कूल से ही प्राप्त होती है।

ऐसा प्रतीत होता है कि बीसवीं सदी के अंतिम दशक में जब विज्ञान तथा सामाजिक विज्ञानों, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र जन सेवाएँ और मानव विज्ञान जैसे विभिन्न क्षेत्रों में महान परिवर्तन हुए पुरूष एवं महिलाओं से जुड़े सामाजिक समानता के मुद्दों को ध्यानाकर्षण केन्द्र रूप में एक नई दिशा मिली इसी प्रकार से लोक प्रशासन को भी विषय के नारीवादी खोजों के संदर्भ में पुनर्भाषित किया गया जिसकी परिणति उसकी सीमाओं या क्षेत्र के विस्तार और उसके मूल्यों के पुनर्भाषित किया गया है। किसी भी राष्ट्र के सामाजिक और आर्थिक विकास में महिलाओं की भूमिका को अनदेखा नहीं किया जा सकता महिला और पुरूष दोनों समान रूप से समाज के दो पहियों की तरह कार्य करते है और समाज को प्रगति की और ले जाते है दोनों की समान भूमिका को देखते हुए यह आवश्यक है कि उन्हें शिक्षा सहित अन्य सभी क्षेत्रों में समान अवसर दिये जाए क्योंकि यदि कोई एक पक्ष भी कमजोर होगा तो सामाजिक प्रगति संभव नहीं हो पाएगी परन्तु देश में व्यवहारिकता शायद कुछ अलग ही है।

आधुनिक पारी परम्परागत मान्यताओं को दिखाए रखने के लिए अपने व्यक्ति का बलिदान देने को तैयार नहीं आधुनिक महिला कथाकारों का कृत्य साधारणतः प्रेम पर आधारित है सभी लेखिकाओं ने प्रेम को पावन और महान माना है आज नारी–पुरूष संबंध अब साधारण न होकर वास्तविकता के धरातल पर आ गए है।

निष्कर्ष–

मैरे शोध विषय 21वीं सदी के उपन्यासों में नारी चिंतन की विस्तृत अध्ययन करने के लिये मैं हिन्दी साहित्य में नारी के बदलते रूप का अध्ययन किया है। इसमें मैने महिलाओं के बदलते नजरिये अपने अधिकारो के लिए, साहित्य में नारी का सम्मान, नारी में शिक्षा का महत्व, नारी शक्ति पर विचार, आदमी की निगाहों में औरत का स्थान, समाज के आधार पर नारी का चित्रण, नारी का स्वरूप एवं नारी और मनोविज्ञान शिक्षा, व्यवसाय राजनीतिक सांस्कृतिक, धार्मिक कानूनी संदर्भ में नारी का विस्तृत अध्ययन किया है। और इस निष्कर्ष पर कि 21 वीं सदी में नारी ने हर क्षेत्र में पुरूष के बराबरी का दर्जा हासील किया है। आज की स्त्री में नारी पुरूष से कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है। जैसे वह शिक्षा का क्षेत्र, व्यापार का क्षेत्र, या फिर राजनैतिक क्षेत्र सभी क्षेत्रो में नारी ने अपना वर्चस्व फहराया है।

विवेकानंद ने कहा था यदि किसी देश की प्रगति देखनी है तो वहां की नारी की स्थिति देख लो वास्तव में नारी की प्रगति ही देश की प्रगति है।

21 वीं सदी के उपन्यासों में नारी शोषण में नारी शोषण के साथ–साथ उनके सेवाएं संघर्षों को उजागार किया गया है आज की नारी पुरुषों के अन्याय व अत्याचार को चुपचाप सहन नहीं करती वह तो उनका कडा प्रतिरोध करती है यद्यपि ग्रमीण औरतो में उतनी ही शिक्षा की कमी है पढ़ी लिखी स्त्रियाँ उन्हें शिक्षित करने के लिये आगे आ रही है स्त्रियाँ आज न केवल गाँवों की मुखिया बल्कि उच्च अधिकारी भी बन रही है।

इक्कीसवी सदी तक आते हुए भी उपन्यास मुख्य विधा के रूप में ही स्थिर है। इसका कारण इस समय की जटिल यथार्थता को उपन्यास के विस्तृत फलक पर ही स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त किया जा सकता है। मानव जीवन का बहुआयामी चित्रण युगीन समस्याओं, अनुभूतियों तथा संवेदनाओं का व्यापक रूप इन उपन्यासों में किया गया है। नैतिक मूल्यों के बदलते मापदंडो ने उपन्यास को सबसे अधिक प्रभावित किया है। मूल्य केवल मानव व्यवहार को दिशा प्रदान नहीं करते बल्कि वे अपने आप में एक आदर्श भी प्रस्थापित करते हैं। तकनीकी एवं अन्य संचार माध्यम के प्रसारण से हमारे सोचने समझने के तरीके में जबरदस्त बदलाव आया है। जिससे नैतिक मूल्यों में कमजोरी आ गई है। भारत जैसे विकासशील देश में सकारात्मक नैतिक मूल्यों की आवश्यकता महत्वपूर्ण है परंतु बदलते परिवेश में पुराने मूल्य नकारे जा रहें है और आस्थाहीन समाज नए मूल्यों को भी सहजता से नहीं अपना रहा है इस टकराहट की स्थिति का लेखा जोखा प्रस्तुत उपन्यासो द्वारा हुआ है।

निष्कर्ष रूप में इक्कीसवीं सदी की लेखिकाओं ने साहित्य की सभी विधाओं में स्त्री विमर्श का शंख फूंका है। स्वी साहित्य में स्त्री विमर्श पर भरपूर लेखन हुआ है। कहानी, उपन्यास, आत्मकथा, आलोचना, कविता सभी विधाएँ स्त्री की सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्थिति का यथार्थ चित्रण करती है। पुरुषों द्वारा लिखा गया साहित्य सहानुभूति परक होता है, वही स्त्री द्वारा लिखा साहित्य अनुभूति परक होता है। इसका प्रमाण साहित्य के पठन से मिलता है। सभी विधाओं में नारी पर होने वाले पितृसत्तात्मक सत्ता के अत्याचार का विरोध

किया गया है। सभी लेखिकाएं स्त्री की स्वतंत्र सत्ता के युग की आकांक्षा करती नजर आती है। स्थापित मान्यताओं का विरोध करती है। आत्मकथाओं में सूक्तियों का प्रयोग भाषा को सारगार्भित बनाता है। शैली का उचित प्रयोग भाषा में जीवंतता लाने में सक्षम है। लेखक एवं पाठक में स्थापित एकात्मकता का कारण आत्मकथा का शिल्प है। परपरागत परिपाटी पर नवीन शिल्प का गठन हुआ। परिवेश को व्यक्त करने में भाषा सक्षम दिखायी देती है। नए प्रतीकों का प्रयोग हुआ। शिल्प ने आत्मकथाओं को अन्य विधाओं से पृथक बनाया है।

gaurav shree

संदर्भ ग्रंथ सूची

1.	रेखा कस्तवार	–	प्रकाशन राजकलम प्रकाशन
2.	रेखा सेठी	–	प्रकाशन राजकलम प्रकाशन
3.	सुप्रिया पाठक	–	रंगमंच एवं स्थिति
4.	मैत्रेयी पुश्पा	–	कस्तुरी कुण्डल बसै– पृ. सं. 218
5.	चित्रा मुदगल	–	आँवां पृ. सं.– 105
6.	चित्रा मुदगल	–	आँवां पृ. सं.– 106
7.	चित्रा मुदगल	–	आँवां पृ. सं.– 110–111
8.	चित्रा मुदगल	–	एक ज़मीन अपनी – पृ.सं. 86
9.	चित्रा मुदगल	–	एक ज़मीन अपनी – पृ.सं. 93
10.	चित्रा मुदगल	–	एक ज़मीन अपनी – पृ.सं. 29
11.	जैनेन्द्र कुमार	–	त्याग पत्र, पूर्वोदय प्रकाशन पृ.सं. 82–83
12.	डॉ. नीलम गुप्ता	–	त्याग पत्र में स्त्री विमर्श पृ. स. 232–41
	महादेवी वर्मा	–	नारीतत्व का अभिशाप – पृ. सं. 75, 76
13.	डॉ. राजकुमार	–	नारी के बदले आयाम, अर्जून पब्लिशिंग हाउस 2005
14.	गुप्ता कमलेश कुमार	–	महिला सशक्तिकरण, जयपूर
15.	सिंह करण बहादुर	–	महिला अधिकार व सशक्तिकरण
16.	महादेवी वर्मा	–	श्रृंखला की कड़िया लोकभारती 2001
17.	संगीता शर्मा	–	अध्यक्ष रोटरी क्लब ऑफ कोडरमा
18.	नलिका शर्मा	–	आधा आबादी और इलाहबाद हिन्दी अनुशीलनरत
19.	आशारानी	–	कल आज और कल पृ. सं. 23

gatakshee

20.	चित्रा मुदगल	–	एक ज़मीन अपनी पृ. सं. 29
21.	चित्रा मुदगल	–	एक ज़मीन अपनी पृ. सं. 183
22.	मधु कांकरिया	–	पप्ताखोर पृ.सं. 8
23.	मधु कांकरिया	–	पप्ताखोर पृ.सं. 12
24.	संजीव	–	जंगल जहाँ शुरू होता है। पृ. सं. 92
25.	महादेवी वर्मा	–	श्रृंखला की कड़ियाँ, नई दिल्ली पृ. सं. 43
26.	अरूण त्रिपाठी	–	राजकिशोर (सं.) स्त्री के लिए जगह पृ.सं. 92
27.	कृष्णा सोबती	–	गर्दिश के दिन (आत्मरचना) सारिका– अक्टूबर 1973 पृ.सं. 43
28.	कृष्णा सोबती	–	गर्दिश के दिन (आत्मरचना) सारिका– अक्टूबर पृ.सं. 41
29.	डॉ. उर्मिला गुप्ता	–	हिन्दी कथा साहित्य के विकास में महिलाओं का योगदान पृ. सं. – 1047
30.	चित्रा मुदगल	–	एक ज़मीन अपनी पृ. सं. 161
32.	चित्रा मुदगल	–	एक ज़मीन अपनी पृ. सं. 162
33.	कस्तूरी कुण्डल	–	बसै में मैत्रयी पुष्पा प्र. सं. 17
34.	मैत्रेयी पुष्पा	–	कस्तूरी कुण्डल, पृ. सं. 40
35.	इण्डिया टुडे	–	साहित्य वार्षिकी पृ. सं. 23 लेखन–लेखन छोटा है।
36	प्रेमचंद सेवासदन प्रथम	–	सरस्वती सीरीज
37.	कायाकल्प संस्करण	–	1986 प्रकाशन
38.	निर्मला संस्करण	–	1986 प्रकाशन
39.	डॉ. उमेश माथुर	–	आधुनिक युग की हिन्दी लेखिकाएँ पृ. सं. 241
40.	डॉ. शैल रस्तोगी	–	हिन्दी उपन्यासों में नारी पृ. सं. 164–237

gaurav sharma

41.	प्रेमचंद साहित्य में व्यक्ति	–	डॉ. राक्षपूरी आत्माराम एण्ड सन्स
42.	शीला राजवार	–	महिला उपन्यासकार मूल्य चेतना पृ. सं. 22
43.	प्रेमचंद	–	भारतीय साहित्य के निर्माता प्रकाशचंद चंद्रगुप्त साहित्य अकादमी
44.	मन्नु भंण्डारी	–	बिना दीवारों के घर अक्षर प्रकाशन 1965
45.	मन्नू भंण्डारी	–	असुरक्षित सन्मार्ग प्रकाशन दिल्ली 1982
46.	सिंह करण बहादुर	–	महिला अधिकार व सशक्तिकरण कुरतंत्र मार्च 2006
47.	भारतीय संविधान	–	अनु. 14, 15, 16, 19, 21
48.	डॉ. राजकुमार	–	नरी के बदले आयाम अर्जून पब्लिशिंग हाउस 2005
49.	डॉ. मृत्युंजन आध्याय	–	पत्रिका 1 मई 196 दसवे दशक के हिंदी उपाध्याय नारी चेत्या लेख
50.	उषा प्रियंवदा	–	शेष यात्रा पृ.सं. 73
51.	उषा प्रियंवदा	–	शेष यात्रा पृ.सं. 77
52.	उषा प्रियंवदा	–	शेष यात्रा पृ.सं. 76
53.	उषा प्रियंवदा	–	अन्तर्वशी पृ.सं. 233
54.	उषा प्रियंवदा	–	अन्तर्वशी पृ.सं. 237
55.	उषा प्रियंवदा	–	शेष यात्रा पृ.सं. 111
56.	उषा प्रियंवदा	–	शेष यात्रा 79
57.	उषा प्रियंवदा	–	शेष यात्रा 62
58.	उषा प्रियंवदा	–	शेष यात्रा 152
59.	कमलेश गुप्ता	–	महिला सशक्तिकरण बुक एन्क्लेव जयपुर
60.	करण सिंह बहादुर	–	महिला अधिकार व सशक्तिकरण कुरूक्षेत्र मार्च 2006

gaurav shodh

61.	प्रेमचंद	–	कर्मभूमि पृ. सं. 222
62.	महादेवी वर्मा	–	क्षृंखला की कड़िया प्र. सं. 113
63.	डॉ. सौ मंगल कंपीकेरे	–	साढोतरी हिंदी लेखनाओं की कहानीयों में नारी पृ. 47
64.	बलदेव वंशी	–	भारतीय नारी सत परम्परा पृ. सं. 9
65.	राजकिशोर	–	(सरपा.) स्त्री के लिये जगह पृ.सं. 74
66.	शिवशंकर	–	पटनायक आदर्श नारियों प्र.सं. 6
67.	डॉ. बातो सरताज	–	भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं का योगदान प्र.सं. 78
68.	आशारानी व्होरा	–	नारी सरोकार पृ.सं. 34
	अनुराधा पाण्डेय	–	महिला सशक्तिकरण प्र.सं. 216
69.	डॉ. सुदेश वत्रा	–	नारी अस्मिता हिन्दी उपन्यासों में प्र.सं. 01
70.	डॉ. राम आहुजा	–	भारतीय सामाजिक व्यवस्था प्र.सं. 84
71.	दिनेश धर्मपाल	–	नारी पृ.सं. 73
72.	आन्वीक्षिकी अंक	–	5 मार्च अप्रेल 2008 पृ.सं. 69
73.	महादेवी वर्मा	–	श्रृंखला की कडिया प्र.सं. 23
74.	पुनीतबिसरिया	–	वेद बुक से फेस बुक तक – पृं. सं. 195
75.	मेरी वोल्सटन कापट	–	स्त्री अधिकारों का औचित्य साधन पृष्ठ 15
76.	नारी मुक्ति का सवाल मार्क्सवाद के परिप्रेक्ष्य में विनोद मिश्र		
77.	डॉ. टी.डी.एस.	–	आलोक सांस्कृतिक पत्रकारिता पृष्ठ सं. 110
78	डॉ. उषा यादव	–	हिन्दी की महिला उपन्यासकारों की मानवीय संवेदना पृ.सं. 162

79	डॉ. उषा यादव	–	हिन्दी की महिला उपन्यासकारों की मानवीय संवेदना पृ.सं. 12
80	डॉ. उषा यादव	–	हिन्दी की महिला उपन्यासकारों की मानवीय संवेदना पृ.सं. 28
81	श्यामाचरण दूबे	–	परम्परा इतिहास बोध और संस्कृति प्र.सं. 128
82	रूपा सिंह	–	नारी अस्मिता और कृष्णा सोबती –प्र.सं. 55
83	राजकिशोर	–	नारी पुरूष कुछ पुनर्विचार पृ.सं. 27

****

gaurav shree

SDPS WOMEN'S COLLEGE

4th National Conference

on

"The Challenges & Changes in Art, Design, Management & Education"

Certificate

This is to certify that Dr./Ar./Prof./Mr./Ms. प्राप्ति राजौरिया

from रेडियंट इंस्टीयूट ऑफ मेनेजमेंट एण्ड सांइस, इन्दौर has presented a research paper/chaired/participated in "4th National Conference" held at SDPS Women's College, Khandwa Road, Indore dated 8th & 9th January 2019. The title of the paper presented by him/her jointly/soley was स्त्री चिन्तन और संघर्ष की चुनौतियां

Chairperson	Convener	Secretary
Prof. Lata Manglani	Ar. Soma A. Mishra	Pro. Rikhil Nagpal

SWADESHI RESEARCH FOUNDATION

A MONTHLY JOURNAL OF MULTI DIMENSIONAL RESEARCH

Peer Reviewed ISSN : 2394-3580
www.srfresearchjournal.com Email : srfjbp@gmail.com

Certificate of Publication

Ref. No. 864
Date 27-08-2020

This is to Certify that the paper ID : 820 entitled

नारीवादी परम्पराओं का नवीनीकरण

Authored by

श्रृष्टि राज़ौरिया, डॉ. विक्रांत शर्मा

has been published in Volume 7 issue 10 Month Aug. Year 2020

in National Journal

The Mentioned paper is measured upto the required standard

Print & Published by :- SRF International & National
Research Journal & Book Publication House
Off.- 320, Sanjeevani Nagar, Garha, Jabalpur-482003 M.P.-India
Ph.: 0761-4036611

Managing Editior

Organised by

In Association With

Research Foundation of India
रिसर्च फाउंडेशन ऑफ़ इंडिया

CERTIFICATE
OF APPRECIATION

23rd International Conference

On *"Innovative Research on Engineering, Science, Pharmacy, Humanities and Management" (ICIR-2019)*

27-28 September, 2019

ICIR-2019/136

Organised By : Dr. A. P. J. Abdul Kalam University, Indore, India

It is Certified that Pro./Dr./Mr./Ms./Mrs. ....साक्षि राजौरिया (सहा. प्राध्यापक)....

of....रीडिंग इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एण्ड साइंस इंदौर (म. प्र.)....

Participated in the 23rd International Conference on "Innovative Research on Engineering, Science, Pharmacy, Humanities and Management" (ICIR-2019) held at Dr. A. P. J. Abdul Kalam University, Indore, India on 27-28 September, 2019 as Presented / Participated Paper title....""भारतीय समाज में नारी की भूमिका"....

....

shared in technical session....III....

Dr. Sandeep Salodkar	Dr. Basant Kumar	Dr. Revathi A Gupta	Dr. Dhanraj Verma	Dr. Santosh Pawar	Dr. A. k. Gupta
Conference Chairman	Organising Chairman	Organising Chairman	Organising Chairman	Convenor	South Asian Country Head & V.P.
Vice Chancellor-Dr. A.P.J. AKU Indore	ICIR-2019	ICIR-2019	ICIR-2019	ICIR-2019	Research Foundation of India
ICIR-2019					

Rel-01

// प्रमाणिकरण //

प्रमाणित किया जाता है । कि श्रृष्टि राजौरिया पुत्री श्री कृष्णकान्त राजौरिया शोधार्थी पी.के विश्वविघालय जिला शिवपुरी पंजीयन कमांक

PH16ART003HN ने साहित्य कार्य हेतू हमारे गृन्थालय मे 15.20 दिवस अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है ।

gaurav shree




Samsung Quad Camera
Shot with my Galaxy A31

Rel-01

// प्रमाणिकरण //

प्रमाणित किया जाता है । कि श्रृष्टि राजौरिया पुत्री श्री कृष्णकान्त राजौरिया शोधार्थी पी.के विश्वविघालय जिला शिवपुरी पंजीयन कमांक PH16ART003HN ने साहित्य कार्य हेतू हमारे गृन्थालय मे 15.20 दिवस अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है ।

26/02/21

ग्रन्थपाल

शासकीय महाविद्यालय,
पिछोर (शिवपुरी) म.प्र.

gaurav shree


Samsung Quad Camera
Shot with my Galaxy A31

Rel-01

// प्रमाणिकरण //

प्रमाणित किया जाता है । कि श्रृष्टि राजौरिया पुत्री श्री कृष्णकान्त राजौरिया शोधार्थी पी.के विश्वविघालय जिला शिवपुरी पंजीयन कमांक PH16ART003HN ने साहित्य कार्य हेतू हमारे गृन्थालय मे 15.20 दिवस अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है ।

gaurav shree

Librarian
Radiant Institute of
Management & Science
Bhanwar Rana Nagar, Indo.


Samsung Quad Camera
Shot with my Galaxy A31

MPHIN/2013/53431 UGC Approved Research Journal No. 64428 ISSN 2231-0428



वर्ष : 27
Year : 27

अप्रैल से सितम्बर 2018
April to September 2018

अंक : 59-60
Vol. : 59-60

अक्टूबर 2018
October 2018

शोध यात्रा

(मानविकी, विज्ञान, समाज विज्ञान, वाणिज्य की अंतर्राष्ट्रीय सन्दर्भ शोध पत्रिका)

SHODH YATRA

(An International Quarterly Multifaculty UGC Approved Research Journal)

दशहरा एवं दीपावली की हार्दिक शुभकामनायें

महिला कथा साहित्य में स्त्री विमर्श

*सृष्टि राजोरिया

नारी के अस्तित्व की लड़ाई प्राचीन समय से आज तक अनवरत रूप से चल रही है। जिसे महिला कथाकारों ने अपने–अपने ढ़ग से कथा के माध्यम से प्रस्तुत कर समाज को नई दिशा और दशा दी है।

मध्ययुग की नारी का इतिहास शोषण अत्याचार और अनाचार का इतिहास है। आधुनिक काल में आते आते इस इतिहास में कुछ धुँधला सा परिवर्तन हुआ शिक्षा के प्रसार ने इतना तो किया है कि नारी को अपने प्रति होने वाले अन्याय की चेतावनी दी है। अपनी पीड़ा को मुखर करने की क्षमता दी है।

महिला कथाकारों ने नारी जीवन को गहराई से व्यक्त किया है। एक नारी ही नारी के अन्तर्मन को समझने और उसके मानसिक द्वंदों को महसूस करने में सफल हो सकती है। महिला कथाकारों ने हिन्दी साहित्य के माध्यम से नारी चिन्तन को विशय बनाकर उसके जीवन की स्थिति को उकेरते हुए समाज को नारी चिंतन करने पर विवश किया।

जिससे नारी की दिशा और दशा में महत्वपूर्ण परिवर्तन आये।

इन कथाकारों में मन्नू भंडारी, शशि प्रभा शास्त्री, डॉ. चंद्रकिरण, मालती जोशी, ममता, कालिया, महरूनिसा पखेज डॉ. कुशणा अग्निहोत्री, अलका सारावंगी, प्रभा खेतान, डॉ. मृणाल पांडे, मृदुला गर्ग आदि महिला कथाकारों ने अपनी कथाओं में स्त्री पुरूश के सह–अस्तित्व की स्थिति कायम रखी है। साथ ही साथ स्त्री पुरूश की समान भूमिका को स्वीकार है। मूल रूप से नारी का विकास और उसका समाज में सम्मान जनक स्थान स्थापित करना ही उनका मुख्य ध्येय रहा है।

मालती जोशी ने अपने कथा साहित्य के माध्यम से नारी मन की सूक्ष्मातिसूक्ष्म अभिव्यक्ति प्रस्तुत की है। परिवार व समाज में उसकी भूमिका उसके अर्न्तसंघर्ष, उसकी विडम्बना, और उसकी संवेदनाओं को व्यापक रूप से प्रस्तुत किया है।

मन्नू भंडारी का कथा साहित्य मानवीय जीवन का यथार्थ दस्तावेज है, जिसमें राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आदि सभी पहलुओं को उजागर किया है। आपकी कहानियाँ मानवीय अनुभूतियों को प्रकट करती है।

"क्यों री रूप। तू अपनी बात पर टिकती क्यों नहीं। विरोध तो बड़े जोर–शोर से करेगी दुनिया भर की अकड़ दिखाएगी पर करेगी वही जो दूसरे चाहते है।"

मृदुला गर्ग के 'चितकोबरा' की नायिका मनु और महेश एक दूसरे से संतुष्ट नहीं होते। मनु स्वयं ही कहती है। 'सच कितने बेमेल हैं हम लोग'।

कृष्ण सोबती की कहानी 'एक दिन की नायिका' के माध्यम से एक ऐसी पत्नि की समस्या को उठाया गया है। जिसे अपने पति से इतना प्रेम है कि वह अपने पति द्वारा दूसरी औरत श्यामा को घर में लाने का कोई विरोध नहीं करती और न ही

*शोधछात्रा (हिन्दी), जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)

कभी शिकायत करती है। ये स्त्री के समर्पण की कहानी है।

ममता कालिया ने भी प्रेम और विवाह के विविधरूपों को अपने साहित्य में वर्णित किया है। मैत्रेयी पुश्पा ने अपनी आत्म कथा में लिखा है7

"मालिक के पीछे चलना लुगाई का धरम माना गया है। गाँव का हल जोता आदमी तक अपनी जोरू का शील सौ तरह से परखता है। शहर के आदमी तो फिर अकल के पूतरा चतुर सुजान है।"

"स्त्री साहित्य वह है जो स्त्री रचित है स्त्री रचित होने के कारण ही उसे स्त्री साहित्य की कोटि में रखा जाता है। इसे अनुभूति का साहित्य कहा गया है। ये ऐसीं अनुभूतियाँ है जो अभी तक वमित तथा उत्पीड़ित थीं। जिसे महिला कथाकारों नें उजागर किया और समाज को इस स्थिति का चिंतन करने पर विवश किया।

निष्कर्ष :– जब स्त्री की भूमिका को समाज में अनदेखा कर दिया जाता है। तब स्थिति में तनाव और समाज में विकृति उत्पन्न होती है। जिसका अहसास साहित्य के माध्यम से समाज को कराया गया है।

महिला कथाकारों ने अपने–अपने ढंग से साहित्य सृजन में नारी जीवन को उकेरा है पर मूल रूप से नारी का विकास और उसका समाज में सम्मानपूर्वक स्थान स्थापित करना ही मुख्य ध्येय रहा है। स्त्री की परिवार और समाज में स्थिति, उसका मूल्यांकन कर नवीन मार्ग प्रशस्त किया है जिसमें उन्होंने नारी की चार दीवारी में कैद आवाज को समाज के सामने खोला है, साथ ही उसे शिक्षा जगत से भी जोड़ा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. कस्तूरी कुण्डल बसै – मैत्रेयी पुष्पा पृ. 258
2. मृदुला गर्ग – चितकोबरा – पृ. सं. 97
3. आखरी भार्त – मालती जोशी प्र. सं. 1997 (राजेशर प्रकाशन दिल्ली)
4. कृष्ण सोबती – एक दिन की नायिका – प्र. सं. दिल्ली
5. मन्नू भंडारी – आपका बंटी

सूचना

ऐसा पाया गया है कि हमें प्राप्त आलेखों का प्रेषण बिना पूर्व वाचन अथवा परीक्षण के होता है जिससे कोई न कोई त्रुटि की संभावना रहती है। ''शोधयात्रा'' एक रिसर्च जर्नल और संदर्भित पुस्तिका होने के कारण इसमें दी जाने की जानकारियाँ विशुद्ध और सही होना नितांत आवश्यक है। अत: विज्ञजनों से अनुरोध है कि अपने आलेखों को प्रेषित करने के पूर्व उसे ठीक तरह से पढ़ ले और उसके संदर्भों आदि को जाँच लें, जिनसे किसी प्रकार की कोई त्रुटि न रह जायें। साथ ही आलेखों के शब्द, वाक्यांश आदि का भी ठीक तरह परीक्षण से कर लें।

– संपादक

Gaurav shree

Peer Reviewed Journal for M.Phil., Ph.D. & Appointment of Teacher in Universities & College

ISSN : 2394-3580 VOLUME - 7 No. : 10 August - 2020

Swadeshi Research Foundation

A MONTHLY JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

Indian Tech

GLOBAL CERTIFICATION SERVICES

Research Journal SRF Book Publication

International Scientific Research Solution

Referred & Review Journal

Indexing & Impact Factor 5.2

Published by :

Swadeshi Research Foundation & Publication

Seva Path, 320 Sanjeevani Nagar,
Veer Sawarkar Ward, Garha, Jabalpur (M.P.) - 482003

Swadeshi Research Foundation A Monthly Journal of Multidisciplinary
International Peer Refereed, Review, Indexing & Impact Factor - 5.2, Ex- UGC S.N. 4990
ISSN : 2394-3580, Vol. – 7, No. – 10, August – 2020, Special Issues

2020

नारीवादी परम्पराओं का नवीनीकरण

श्रृष्टि राजौरिया
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)
डॉ. विक्रांत शर्मा
प्राध्यापक, हिन्दी पी.के यूनिवर्सिटी

नारीवादी के बारें में सभी ने सुना होगा। मगर यह है क्या ? इसके दर्शन और सिध्दांत के बारे में ज्यादातर लोगों को नही मालूम। इसे पूरी तरह जाने और समझे बिना नारीबाद पर कोई भी बहस नहीं की जा सकती नव उदारवाद के बाद भारतीय समाज में महिलाओं के प्रति आप बदलाव के बाद इन सिध्दांतों को जानना अब और भी जरूरी हो गया है।

दरअसल नारीवाद ऐसा दर्शन है। जिसका उदेश्य है। समाज में महिलाओं की विशेष स्थिति के कारणों का पता लगाना और उनकी बेहतरी के लिए वैकल्पिक समाधान प्रस्तुत करना। महिलाए किसी भी मामले में पुरूषों से कम नही है। इसके बावजूद उन्हे अवसरों से वंचित कर दिया जाता है। नारीवाद ऐसी तमाम परिस्थितियों के विषय में बताता है। किसी भी विचारधारा के अपने कुछ सिध्दांत होते है, जिनकी मदद से हम उस विचारधारा को अच्छी तरह समझ सकते है। अब हम जिक्र करेंगें नारीवाद परम्पराओं का नवीनीकरण का कई प्रकार से नारीवाद परम्पराओं का नवीनीकरण देखने में आया है। विधर्मियों ने हमारी संस्कृति आधारित जीवन पद्वति पर अनेकों बार कठाराघात किया है। लेकिन हमारे देश की महान नारियों ने उनको मुँहतोड़ जवाब दिया है। अपने शौर्य व तेजस्थिता से यह बता दिया कि भारत की नारी साहसी व त्यागमयी है।

प्राचीन भारत की नारी समाज में अपना स्थान माँगने नही गयी मंच पर खडे होकर अपने आभावों की माँग पेश करने की आव यकता उसे कभी प्रतीत ही नही हुई। और न ही विविध संस्थाये स्थापित कर उसमें नारी के अधिकारों पर वाद–विवाद करने की उसे जरूरत हुई। उसने अपने महत्वपूर्ण क्षेत्र को अपनी तेजस्विता निस्वार्थ सेवा और त्याग के अमृत प्रवाह से आलांवित कर सकी थी।

भारत में सदैव नारी को उच्च स्थान दिया गया है। समत्कर्ष और निश्रेयास के लिए आधारभूत ज्ञान तथा शौर्य की अविष्ठात्री नारी रूपों में प्रकट देवियों को ही माना गया है। आदिकाल से ही हमारे देश में नारी की पूजा होती आ रही है। यहाँ अर्ध्दनारीश्वर का आदर्श रहा है। आज भी आदर्श भारतीय नारी में तीनों देवियाँ विद्यमान है। अपनी संतान को संस्कार देते समय उसका सरस्वती रूप सामने आता है। गृह प्रबन्धन की कुशलता में लक्ष्मी का रूप तथा दुष्टों के अन्याय का प्रतिकार करते समय दुर्गा का रूप प्रकट हो जाता है। अतः किसी भी मंगलकार्य को नारी की अनुपस्थिति में अपूर्ण माना गया है। पुरूष यज्ञ करें दान करे राजसिंहासन पर बैठे या अन्य कोई श्रेष्ठ कर्म करें तो साथ होना अनिवार्य माना गया। नारी अपने नारीधर्म का परित्याग कर देती तो आर्यावर्त कहलाने वाला हिन्दुस्थान अखिल विश्व की दृष्टि में कभी का गिर गया होता है। यदि देखा जाय तो हमारे देश की आन बान–शान नारी समाज ने ही हमारे देश का इतिहास इस बात का गवाह है कि यह युध्द में जाने के पूर्व नारी अपने वीर पति और पत्रों के माथे पर तिलक लगाकर युध्दस्थल को भेजती थी। लेकिन वर्तमान में पाश्चात् शिक्षा के प्रचार–प्रसार के प्रभाव से भारत में नारी के अधिकार का आन्दोलन चल पड़ा है। वस्तुतः नारी का अधिकार माँगने और देने के प्रश्न से बहुत ऊपर है। नारीवादियों ने न केवल महिलाओं की गुलामी के उदय के एंगेल्स के विश्लेषण को अपनाया, नई धारणाओं को लागु कर महिलाओं के शोषण चक्र को भी समझने का प्रयास किया। महिलाओं के उन मौजूदा विश्वासों और प्रवृातियों का महिमंडन नही करते। जिन पर पितृसप्ता विचारधारा का वर्चस्व होता है। और जो महावपूर्ण तरीके से रोजमर्रा के जीवन के ढाँचे से प्रभावित होते है। नारीयों ने घरों से काम करने वाली महिलाओं को एकजुट करने के प्रयास किए है। महिला ने आगे बढने का प्रयास कई हद तक किया है। समाज में नारीयों की विचारधारा विकसित हुई है। भारत में नारीवादियों की समाज के बारें में सोच केवल अर्थव्यवस्था तक सीमित नही है। इनका मानना है कि उत्पादन प्रक्रिया में प्रजनन करम जो घर में नारी द्वारा किया जाता है। लिंग के आधार पर विभाजित श्रम एक तरह से नारी पर थोपा जाता है।

नारीवाद का इतिहास बेहद पुराना हैं यह नारी–पुरूष की समानता के सिध्दांत पर आधारित है। उदारक की बुनियाद बने आजादी,समानता और न्याय के विचार

Gaurav Sharma

सप्ताहीन और चहारदिवारी में अंद महिलाओं की जिदंगी के अनुभवों से बिल्कुल विपरीत थे। महिलाओं के बारें में शुरूआती उदारवादी नारीवादियों विशेषकर मेरी बोल्स्टोन क्राप्ट ने जोरदार ढंग से हस्तक्षेप किया।

समाजिक परंपराओं का नवीनीकरण और आधुनिक बोध निम्नवर्ग की श्रमशक्ति और उसके शोषण को ही निरूपित करते है। महाननगरीय सभ्यता के बीच गाँव और कस्बों से आप हुए निम्नवर्ग की जिंदगी पिस जाती है। तभी कुछ महिलाए आधुनिक पंरपराओं के बीच जूझती है। और अपने वर्ग की समस्त संबंधों के साथ जीवन को रेखांकित करती है। महिला शिक्षा समाज कर आधार है। समाज द्वारा पुरूष को शिक्षित करने का लाभ केवल मात्र पुरूष को होता है। जबकि महिला शिक्षा का स्पष्ट लाभ परिवार समाज एवं सम्पूर्ण राष्ट्र को होता है। चूकि महिला ही माता के रूप में बच्चे की प्रथम अध्यापक बनती है। महिला शिक्षा एवं संस्कृति को सभी क्षेत्रों में पर्याप्त समर्थन किया किन्तु आज समय एवं परिस्थितियों ने महिला शिक्षा को अनिवार्य बना दिया है।

स्त्री और मुक्ति आज भी नदी के दो किनारे की तरह है जो कभी मिल नही पाती सतही तौर पर देखा जाये तो लगता है कि भारत ही नही विश्व पटल पर अपनी पहचान बनाती हुई नारीयों ने अपनी पुरानी मान्यताये बदली है। आज की नारी की अस्मिता का प्रश्न मुखर होता जा रहा हैं। अपने अस्तित्व को बचाये रखने के लिए संघर्ष करती हुई नारीयों ने लम्बा रास्ता तय कर लिया है। परन्तु आज भी एक बड़ा हिस्सा सदियों से सामाजिक अन्याय का शिकार है। जब–जब नारी अपनी उपस्थिति दर्ज कराना चाहती है। जब–तब उसे कितने रीति–रिवाजों परम्पराओं पौराणिक आख्यानों की दुहाई देकर उसे गुमनाम जीवन जीने पर विवश कर दिया जाता है।

आज देखने में आया है कि महिलाओं ने स्वंम के अनुभव के आधार पर अपनी मेहनत और आत्मविश्वास के आधार पर अपने लिए नई मंजिले नये रास्तो का निर्माण किया है। महिलाओं को शिक्षा देने तथा सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के लिए जो सुधार आन्दोलन प्रारंभ हुआ। उससे समाज में एक नई जागरूकता उत्पन्न हुई है। बाल–विवाह भ्रुण हत्या पर सरकार द्वारा रोक लगाने का अथक प्रयास हुआ है। शैक्षणिक गतिशीलता से पारिवारिक जीवन में परिवर्तन हुआ है। एक लड़की की शिक्षा एक लड़के की शिक्षा की उपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण है। क्यों कि लड़के को शिक्षित करने पर वह अकेला शिक्षित होता है। किन्तु एक लड़की की शिक्षा से पूरा परिवार शिक्षित होता है। शिक्षा वह कुंजी है जो जीवन के वह सभी द्वार खोल देती हैं जो कि आवश्यक रूप से सामाजिक है। शिक्षित महिलाओं को राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सक्रिय होने में बहुत मदद मिली। महिलाए अपनी स्थिति व अपने अधिकारों के विषय में सचेत होने लगी। शिक्षा ने उन्हे आर्थिक राजनैतिक व सामाजिक न्याय तथा पुरूष के साथ समानता के अधिकारों की मांग करने को प्रेरित किया।

संवैधानिक अधिकरों में विभिन्न कानूनों के द्वारा महिलाओं को पुरूषों के समान अधिकार मिलने से उनकी स्थिति में परिवर्तन हुआ। महिलाओं की विवाह विच्छेद परिवार की सम्पति में पुरूषों के समान अधिकार दिये गये। दहेज पर कानूनी प्रतिबन्ध लगा तथा उन व्यक्तियों के लिए कठोर दण्ड की व्यवस्था की गयी। यदि विकास करना है तो महिलाओं का उत्थान करना होगा। मलिलाओं का विकास होने पर समाज का विकास स्वत हो जायेगा। इक्कीसवी सदी महिला सदी है। वर्ष 2001 महिला सशक्तिकरण वर्ष के रूप में मनाया गया। इसमें महिलाओं की क्षमताओं और कौशल का विकास करके उन्हे अधिक सशक्त बनाने तथा समस्त समाज को महिलाओं की स्थिति और भूमिका के संबंध में जागरूक बनाने का प्रयास किये गए। महिला सशक्तिकरण हेतु वर्ष 2001 में प्रथम बार राष्ट्रीय महिला उत्थान नीति बनाई गई जिससे देश में महिलाओं के लिए विभिन्न क्षेत्रों का उत्थान और समुचित विकास की आधारभूत विशेषताए निर्धारित किया जाना संभव हो सके। इसमें आर्थिक सामाजिक सांस्कृतिक सभी क्षेत्रों में पुरूषों के साथ समान आधार पर महिलाओं द्वारा समस्त मानवधिकारों तथा मौलिक स्वतंत्रताओं का सैध्दान्तिक तथा वस्तुतः उपयोग पर तथा इन क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी व निर्णय स्तर तक समान पहुँच पर बल दिया गया है।

आज देखने में आया है कि महिलाओं ने स्वयं के अनुभव के आधार पर अपनी मेहनत और आत्मविश्वास के आधार पर अपने लिए नई मंजिले नये रास्तों का निर्माण किया है। मात्र इस आधार पर उस सफलता के पीछे श्रवांश भी किसी पुरूष के हाथ होने की सम्भावना को नकार दिया जावेगा। यदि नही तो सम्भावना कहाँ है? मे कोन हूँ। का प्रश्न अभी भी उत्तर की आस में क्यों खडा है जवाब हमारे सभी के अंदर ही है पर उसको सामने लाने में हम घबराते भी दिखाते है। नारी को एक दह से अलग एक नारी के रूप में देखने

gairav sharma

की आदत को डालना होगा। हमें किसी को बिकने और किसी को जोर जबरदस्ती से बिकने के बीच में आकर खड़े होना है। किसी की मजबुरी किसी के लिए व्यवसाय न बने यह समाज को ध्यान देना होगा। नग्नता और शालीनता के मध्य की बारीख रेखा समाज स्वमं बनाता और स्वमं बनाता और स्वयं बिगाडता है। एक नजर में उसका निर्धारक पुरूष होता है। तो दूसरी निगाह उसका निर्धारक नारी को मानती है। उचित और अनुचित न्याय और अन्याय विवेकापूर्ण और अविवेकापूर्ण स्वाधीनता और दायित्व और दायित्वहीन के मध्य के धुँधल को साफ करना होना।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. डॉ. राजकुमार नारी के बदले आयाम, अर्जुन पब्लिसिंग हाउस 2005
2. • गुप्ता कमलेश कुमार महिला सशक्तिकरण बुक नक्लेव जयपुर
3. सिंह करण बहादुर, महिला आधिकार व सशक्तिकरण कुरुक्षेत्र मार्च 2006

gaurav shree

Innovative Research on Engineering, Science, Pharmacy, Humanities and Management (ICIR - 2019)

Organised By: Dr. A. P. J. ABDUL KALAM UNIVERSITY, INDORE, M.P.

Editors

Dr. Sandeep salodkar, Dr. Basant Kumar

Dr. A.K. Gupta, Prof. Ajay jain, Dr. S.K.Jain



भारतीय समाज में नारी की भूमिका

श्रृष्टि राजौरिया
रेडियंट इस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एण्ड सांइस इंदौर (म.प्र)

नारी का सम्मान करना एवं उसके हितों की रक्षा करना हमारे देश की सदियों पुरानी संस्कृति है। यह एक विडम्बना ही है कि भारतीय समाज में नारी की स्थिति अत्यन्त विरोधाभासी रही है। एक तरफ तो उसे शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है तो दूसरी और उसे बेचारी अबला भी कहा जाता है। इन दोनों ही अतिवादी धारणाओं ने नारी के स्वतन्त्र विकास में बाधा पहुंचाई है।

प्राचीनकाल से ही नारी को इंसान के रूप मे देखने के प्रयास सम्भवतः कम ही हुये है। पुरूष के बराबर स्थान एवं अधिकारों की मांग ने भी उसे अत्यधिक छला है। अतः वह आज तक मानवी का स्थान प्राप्त करने से भी वंचित रही है।

जीवन के हर क्षेत्र में पुरूष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने वाली नारी की सामाजिक स्थिति में फिर भी परिवर्तन 'ना' के बराबर हुआ है। घर बाहर की दोहरी जिम्मेदारी निभाने वाली महिलाओं से यह पुरूष प्रधान समाज चाहता है। कि वह अपने को पुरूषों के सामने दूसरे दर्जे पर समझें। आज की संघर्षशील नारी इन परस्पर विरोधी अपेक्षाओं को आसानी से नही स्वीकारती। आज की नारी के समाने जब सीता या गंधारी के आदर्शो का उदाहरण दिया जाता है। जब वह इन चरित्रों के हर पहलू को ज्यों का त्यों स्वीकारने में असमर्थ रहती है। देशः कालः परिवेश और आवश्यकताओं का व्यक्ति के जीवन में बहुत महत्व है, समाज इनसे प्रभावति हुए बिना नही सकता ।

अवध की बेगमहजर तमहत के बारे में तो हम सिवा इसके कुछ याद नही करते कि वह 1857 के नताओं में से एक थी, जबकि बेगम हमरतमहल वह व्यक्ति थी, जिन्होने विक्टोरिया की 'गदर' के बाद जारी की गयी घोषणा का प्रतिवाद विद्रोही पक्ष की और से जारी किया था। लक्ष्मीबाई हो या हजरतमहल मोतीबाई हो या अलकाजी ये स्त्रिया अपवाद नही थी, बल्कि उस दौर की सामान्य राजनीतिक चेतना से ही इनके व्यक्तित्व परिभाषित होते थे। 1857–58 के दमन के बाद राजनीतिक चेतना का जो उभार आया उसका सामाजिक आधार नये विकसित हो रहे माध्य वर्ग में था। इस उभार में एक लंबे अरसे तक स्त्री की स्थिति प्रतिकात्मक बनी रही इस बात को अच्छी तरह समझने की जरूरत है। जिस विद्रोह (1857) की जड़ परंपरा में थी, उसमे स्त्री की साझेदारी लगभग बराबरी की थी। और जिस विद्रोह का सामाजिक आधार अंग्रेजीदा मद्रलोक में था, उनसे स्त्री की हैसियत व प्रेरणा और प्रतीक की थी। यह इस बात का एक और प्रमाण है कि भारतीय समाज में प्रगति और जड़ता का दवंद परंपरा बनाम आधुनिकता के दवंद्व का पर्यायवाची नही है। परंपरा में निहित प्रगतिहीनता और अमानवीयता के पहलू तो अपनी जगह है सब कुछ गतिशील–प्रगतिशील हो ऐसा नही है। स्वंय गांधीजी की ही एक हिन्दु राष्ट्रवादी द्वारा हतया की जरूरत क्या थी। नैतिक प्रभाव को व्यावहारिक बनाने के लिए भी शक्ति जरूरी है। और नैतिक प्रभाव को रोकने कि लिए भी कुछ लोग शक्ति का सहारा लेते है। जैसे गोड़से ने लिया। इसीलिए स्त्री को सबलीकरण और लैंगिक न्याय की प्रक्रियाएं केवल सदाशमता के भरोसे नही छोड़ी जा सकती है।

विद्यमान आधुनिक भारतीय समाज में स्थितियों एवं परिस्थितियाँ परिवर्तित हो चुकी है। प्राचीन से मध्यकाल तक यद्यपि भारतीय नारी ने समाज को शुध्दता प्रदान की किन्तु फिर भी उस समय वह शोषण एवं अत्याचारों से मुक्त नही हुई थी। शायद उसकी नियति ही यही है। बड़े अधिकारी नेतागण : अन्य सभी बुध्दिजीवी लोग सभाओं गोष्ठियों एवं मैचों पर नारी के समान अधिकार,महिला उत्पीडन के मुद्दों पर लच्छेदार भाषण झाड़ते है। लेकिन इस पुरूष प्रधान समाज का नारी के प्रति वास्तविक नजरिया कुछ और ही होता है। इसलिए भारत के संविधान की उद्देशिका मूल अधिकारी तथा राज्य के नीति निर्देशक तत्वों में ऐसे प्रावधान किए गये जिसमें महिलाओं, अल्पसंख्याओं और समाज के निर्बल वर्गो को आगे आने का अवसर मिल सके, ताकि वे भी देश की मुख्यधारा से जुड़ सकें। भारत के स्वतंत्रता संग्राम मेंमहिलाओं ने बढ़ – चढ़कर हिस्सा लिया तथा अनेक यातनाएं एवं अज्याचार सहे थे। इसलिए संविधान निर्माताओं ने यह जरूरी समझा कि राष्ट्र को मजबुत, संगठित एवं प्रगतिशील बनाने के लिए महिलाओं युवतियों एवं बच्चों की सुरक्षा संरक्षण एवं उन्नति के लिए विशेष व्यवस्था की जाए, ताकि उनका पिछडापन समाप्त हो सके। सौभाग्यवश राजनीतिक क्षेत्र में एक व्यक्ति एक वोट के आधार पर समाज के प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह किसी जाति संप्रदाय लिंग अथवा धर्म से संबंधित हो, को समानता का अवसर प्रदान किया गया है। प्रजातंत्र एवं गणतंत्र में सरकार अथवा शासक बदलने में वास्तविक शासक अर्थात् मतदाता का कितना महत्व है। यह समय – समय पर सरकारें बदलकर प्रस्तुत किया गया है।

महिलाओं को मताधिकार एवं सरकार में भागीदारी का अधिकार अनेक देशों विशेषकर इस्लामिक देशों की महिलाओं से पहले प्राप्त था। केवल सामाजिक समानता के क्षेत्र में महिलाओं और बालिकाओं को आवश्यक

संन्दर्भ ग्रंथ सूची

(1) डॉ. अनूपा आर्या – भारतीय समाज में नारी और अहम् भूमिका।
(2) सुप्रिया पाठक – रंगमंच एवं स्त्री।

#####

पर्याप्त एवं प्रभावी समानता प्राप्त नही हो सकी है। दूसरी और महिलाओं के विरूध्द अत्याचार एवं अपराधों में निरंतर वृध्दि हो रही है। जोकि चिंता का विषय है, यह स्थिति जब और सोचनीय हो जाती है। जब संविधान के भाग तीन में उल्लेखित मूल अधिकारों में यह स्पष्ट व्यवस्था है कि समानता के अधिकार के अंतर्गत भारतवर्ष में किसी व्यक्ति को विधि के समक्ष संरक्षण से वंचित नही करेगा। आज जरूरत है नारी को समय की मुख्यधारा से जोड़ने की आज भी नारी ममतामयी है त्यागमयी है नारीत्याग और साधना के बलबुते पर समाज के प्रत्येक पहलु से जुड़ी है। वह पढी – लिखी है। आत्मनिर्भर है अपने अधिकार एवं कर्तव्यों के प्रति सचेत है। संघर्षरत है यद्यपि नारी शिक्षा से आज कामकाजी महिलाओं की संख्या में वृध्दि हुई है। हमारे समाज में उसकी निःस्वार्थ सेवा हर क्षेत्र में है। तथापि वह नौकरी पेशा न होकर गृहणी होते हुये भी घरेलु दायित्वों का निर्वाह निष्ठापूर्वक करती है। किन्तु फिर भी उन्हे अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। कामकाजी महिलाएँ तो दोहरे स्तर पर पारिवारिक और सामाजिक शोषण की शिकार है।

जैसे – जैसे समय आगे बढ़ रहा है। वैसे वैसे भारतीय नारी के भी कदम आगे बढ़ रहे है। आज वह 'देवी' नही बनना चाहती वह सही और सच्चे अर्थो में अच्छा इंसान बनना चाहती है। नैतिक मूल्यों की धरोहर है, संसद में उनके हितों की रक्षा हेतु 33 प्रतिशत आरक्षण की मांग की जा रही है। इससे आधी दुनिया कही जाने वाली महिलाओं की दशा में कोई परिवर्तन आऐगा इसकी तो कोई संभावना नही है। मगर लोगों का ध्यान कुछ देर के लिए इस और अवश्य जाऐगा क्योकिं इस अवसर पर पत्र– पत्रिकाओं में महिलाओं की समस्याओं से सम्बन्धित कुछ लेख भी छपेंगे और कुछ गोष्ठियों आदि के आयोजन भी होंगें ।

इसके अलावा महिलाओं से कई अन्य क्षेत्रों में भी भेदभावहोता है, भले ही कानून इस प्रकार के भेदभाव को वर्जित करता है। रोजगार व सम्पत्ति के अधिकार में इस प्रकार का भेदभाव स्पष्ट दिखाई देता है। जहाँ तक पैतृक सम्पति का मामला है। पुरूष ही वहां सम्पत्ति का वारिस व नियंत्रणकर्ता होता है। इसी प्रकार रोजगार के क्षेत्र में महिलाओं को समान अवसर दिये जाने की बात कही जाती है। लेकिन वास्तविकता यह है कि वहाँ भी उनसे भेदभाव होता है। ऐसे भी कई अवसर आते है, जबकि उनका कई तरीकों से शोषण होता है।

निष्कर्ष

महिलाओं के हित में विधेयक लाना तथा सरकार द्वारा उनके विकास के लिए विभिन्न परियोजनाएं बनाने के लिए प्रयास उचित है, लेकिन जिस बात की सर्वाधिक आवश्यकता है। वह यह है कि इसे एक सामाजिक आंदोलन बनाया जाए। नि : संदेह सरकार इस बारें में एक जागरूकता तो उत्पन्न कर सकती है। लेकिन इसके प्रति गतिशीलता की भावना तो जनता के मध्य से ही उठनी चाहिए।